–"अस्वीकार नहि, ई तऽ सम्पूर्ण समर्पण थिक । एकर बादो किछु रहि गेल अछि हमरा लग ?" शीला आर स्निग्ध आ कोमल स्वरमे कहलकै ।

प्रणवक स्वर थरथरायल छलैक–"मुदा हमरा लग रहि गेल अछि अहाँक अमानत । ओकरा आब अहींकें पठा देब । जकर छैक, से आब कहियो नहि घुरत । हम एकसरे रहब सभदिन ।"

शीला कनेक अधिकारपूर्ण दुलारसँ बजलैक–"एकसर किएक रहब अहाँ ? सभ तऽ अहींक लग अछि– मामी आ हमहूँ । आ अमितो अबस्स घुरत । ओ कतऽ जायत अहाँकें छोड़िकऽ ? हमर अमानत अपने लग राखू । जकर छैक तकरे दऽ देबैक । ओ घुरत, फेर अहाँकें चिन्हत, हम जनैत छी ।"

प्रणव शीलाक हाथ अपन मुट्ठीमे लैत कहलकै–"सैह होअय शीला ! प्रार्थना करब जे अहाँक विश्वास सत्य बनि सकय ।"

दूर मन्दिरमे शंख-ध्वनि भऽ रहल छलैक ।

●

नवारम्भ

(पहिल भाग)

हवेली मोहनपुर

बड़की टा गाम— अकादारुण । घनगर बस्ती धारक ओइ पार– सटले-सटल घर । करीब दू हजारक आबादी । गामक बीचोबीच बहैत कमला । उत्तरे-दक्षिणे बहैत पूबे-पश्चिमे भऽ गेल छैक गामक लग आ फेर गामक पश्चिमी सिमान लग उत्तरे-दक्षिणे भऽ जाइत छैक । घनगर बस्ती उत्तरे-दक्षिणे बहैत धारक पूबमे छैक आ धारक पश्चिममे बसल छेहर आबादीकेँ धार फेर पूबे-पश्चिमे छेकैत छैक आ तकर बाद गामक पश्चिमी सिमान लग फेर दक्षिण दिस मुड़ि उत्तरे-दक्षिणे बहऽ लगैत छैक । अइ पारक आबादी कम्म । मोस्किलसँ पाँच सय । दुनू पारक नाम एक्के छैक– मोहनपुर ! छेहर आबादीवला मोहनपुरकेँ, पछबारि पारकेँ, लोक कहैत छैक–हवेली मोहनपुर । अइ पारमे कहियो जमींदारसभ रहैत छलाह जनिकर पैघ-पैघ हवेलीसभ बिला गेल छैक आब, मुदा पुरना नाम सुरक्षित छैक–हवेली मोहनपुर । हवेली मोहनपुरक लोक पुबारि पारक नाम रखने छैक–लंका मोहनपुर । पुबारिपारक लोक पढ़ल-लिखल कम्म, बेसी लठियाकुमैत । तेँ हवेलीक लोक कहैक— लंकाटोल, माने लंका मोहनपुर, माने मोहनपुर पुबारिपार । इलाकाक लोक सेहो मोहनपुर पुबारिपार, पछबारिपार नहि कहैत छैक । प्रचलित नाम छैक हवेली मोहनपुर आ लंका मोहनपुर । लंका मोहनपुरक लोककेँ बादमे ई नाम अखरऽ लगलैक । गाममे जखन पोस्ट ऑफिस खुजलैक तँ जबर्दस्ती पहिने हबेलिएमे जगह-मकान दऽ पछबारिपारक लोक ओकरा हथियौलक । मुदा, पुबारियोपारक लोक चैनसँ नहि बैसल । जोर लगाकऽ पोस्ट ऑफिसकेँ अप्पन पार लऽ गेल आ ओइमे मोस्तैजीसँ पता लिखबौलक–मोहनपुर पुबारिपार । पछबारिपारक चिट्ठी-पत्री एखनो पुरने प्रचलित नामसँ अबैत छैक–हवेली मोहनपुर । इलाकाक लोक मोहनपुर

पुबारिपारकेँ एखनो कहैत छैक–लंका मोहनपुर । मुदा ई सभ गप्प बादमे । पहिने हबेली मोहनपुरक गप्प ।

हवेली मोहनपुरमे सभसँ पहिने धारक कात पहुँचैत छलाह उतरबारि टोलक मङनू मिसर । अन्हरोखे ओ जोर-जोरसँ मंत्र पढ़ि भरि गामकेँ जगबैत धार दिस जाइत छलाह । हुनकर मंत्रो बड़ विचित्र रहनि–'गौतम मुनिकेँ नोत पड़ैए ।' अइ मंत्रकेँ बेर-बेर दोहरबैत ओ धार दिस जाइत छलाह । बीच-बीचमे पंचकन्यालोकनिकेँ सेहो स्मरण करथि–'अहिल्या, द्रौपदी, तारा, कुन्ती, मन्दोदरी...अइ मंत्रक अर्थ कहैत छलथिन नामी बाबू गाम भरिकेँ । मतलब जे कोनो वर्षी-तिथि, मूड़न, उपनयन होअय आङनमे तँ मङनू मिसरकेँ नोत होइनि ।

हुनक पीठेपर जाइत छलीह गौरी धारक कात । प्रायः सभ दिन ओ मङनू मिसरक मंत्रक प्रत्याशामे रहैत छलीह आ मंत्रकेँ भोरक आह्वान मानि झट धार दिस बिदा होइत छलीह । गौरीकेँ भरि गाम छोटकी बाबी कहैत छलनि । कम्मे लोककेँ बूझल छलैक जे हवेली मोहनपुरसँ छोटकी बाबीक कोनो सम्बन्ध नहि छलनि । सम्बन्ध एतबे जे जेठ बहिन मंगला हवेली मोहनपुरक जमींदार श्रीकान्त चौधरीक संग बियाहलि छलथिन । एकबेर अपन बाबिए कहने रहैक रविकेँ–'अभागलि अछि गौरी । दुइए वर्ष तऽ छोट अछि हमरासँ आ बियाहलियो हमरे जकाँ पचमे वर्षमे गेलि छलि । वर हमर वर जकाँ बड़का जमींदार नहि रहथिन । रहथिन बड़का जातिबला— हमर बापोसँ पैघ पाँजि । जतबे पैघ जाति, ततबे पैघ दरिद्रता । ऊपरसँ पचासम वयसमे चारिम वियाह । दसे वर्षक बाद ऊपरसँ बजाहटि आबि गेलनि ! पन्द्रह वर्षक गौरी विधवा भऽ गेलि । दुरागमनक बाद आठम वर्षमे सासुर गेलि रहय । पाँच दिन रहलि । फेर घूरिकऽ जयबाक संयोगे नहि भेलैक । नैहर दरिद्र, सासुर महादरिद्र । विधवाक गुजरक दुनू ठाममे कतहु उपाय नहि भेलैक । लऽ अनलिऐक अपने संग । आब तँ पैंतालीस वर्ष बिता लेलक अही गाममे ।'

सत्ते, छोटकी बाबीकेँ सभ गामेक लोक बुझैत छलनि । कतहु कोनो आङनमे कोनो काज होइ, छोटकी बाबी सभसँ आगू । छोटकी बाबीसँ नीक अरिपन गाममे क्यो नहि दैत छलि । छोटकी बाबी सन चुमाओनक गीत 'शुभऽभऽभऽऽऽ... हेऽहेऽऽ...' दोसर क्यो ने गबैत छलि । छोटकी बाबी सन भानस गाममे क्यो नहि करैत छलि । छोटकी बाबी सन लुरिगरि क्यो नहि छलि गाममे । एक्को टा नहि ।

छोटकी बाबी छलीह मुदा बड़ तमसाहि । बाबी जतबे शांत आ सुद्ध छलीह, छोटकी बाबी ओतबे रुच्छ आ कठोर । वस्तुतः दूनू बहिन सभ दृष्टिएँ

विपरीत छलीह । मंगला छलीह पिण्डश्याम, वयस भेलासँ ओ पिण्डश्याम रंग आर झामर भऽ गेल छलनि, देह आ चेहराक चमड़ी घोकचि गेल रहनि । देहपर रहैत छलनि मैल सन धोती मात्र आ छोट-छोट काटल केश, काँट जकाँ ठाढ़ । मंगला एकदम पातर आ नमछर छलीह । बुढ़ारी अवस्थामे सेहो देह लगभग सोझे छलनि । कने पताइत चलैत छलीह ।

गौरी रहथि छोट आ सोँटल-साटल । रंग एकदम दपदप गोर । चेहरो तेहने सुन्नर । केश पकलोपर छलछल आ मोलायम लगैत छलनि । देहपरक धोती एकदम साफ । चालिमे एक टा गरिमा । अपूर्व सुन्दरी छलीह गौरी । आँखिक दृष्टि प्रखर, जेना भीतर तक छेदि देत । मुदा, तेहने तमसाहि । एकबेर एक टा भड़ारी नव आयल रहथि हवेलीमे । भानस लेल जे बड़का टाड़ामे नित्य तेल जाइनि, से हुनका फाजिल लगलनि । एकदिन टाड़ा दैत काल किछु बाजि बैसलाह । एक्के लातमे ओ टाड़ा ओंघरा देलथिन गौरी । प्राते भेने भड़ारी निकालल गेलाह । श्रीकान्त चौधरी तक डेराइत छलखिन हुनकासँ ।

हवेली मोहनपुरक जमींदार श्रीकान्त चौधरीसँ सौँसे गाम डेराइत छलनि । तेहन कड़ा आ कट्टर रहथि जे भरि गामक लोक डरेँ थरथर करनि । अपन बेटो-बेटीकेँ लग बैसि बजबाक साहस नहि होइनि, सामने अबैत देखथिन तँ पतनुकान लऽ लेथिन । दलानमे जतबा काल बैसैत छलाह, सामनेसँ क्यो बिना माथ झुकौने, आ बिना खड़ाम खोलने नहि जाइत छल । जमींदारी तँ तीनू भैयारीकेँ रहनि, मुदा रोब रहनि खाली बड़के टाक । माने श्रीकान्त चौधरीक ।

बड़ विशाल व्यक्तित्व रहनि– छौ फीटसँ बेसी ऊँच, चौड़ा कपार आ तेहने ठाढ़ नाक । गोराइयो तेहने बेसी आ गठल बलिष्ठ शरीर । धोतीक साँची जमीनपर लेटाइत आ कुर्ता कतहुसँ कनियोँ मोचड़ल नहि रहनि । दहिना हाथमे छड़ी आ बामामे नोसिदानी ! नोकर सदिखन संग । अबैत देखि बाट चलैत लोक पतनुकान लऽ लैत छल वा माथ झुका ठाढ़ भऽ जाइत छल ।

आ, तनिका गौरी एकदमसँ डाँटि लैत छलखिन–'आइ अबेर कोना भेल ? सभदिन तऽ दस बजे स्नान कऽ भोजन लेल तैयार भऽ जाइत छलहुँ । आब अहूँ दोसरे लोकक ढाठी सिखने जाइत छी चौधरी !'

श्रीकान्त चौधरी छलाह समयक एकदम पाबन्द । भोरे पाँच बजे ऊठि टहलऽ निकलि जाइत छलाह । घूमिकऽ सात बजे अबैत छलाह । नौकर तखन घण्टो मालिस करैत छलनि । दस बजैत-बजैत स्नान कऽ भोजन लेल तैयार भऽ जाइत

छलाह आ छोटकी बाबीक भानस घड़ीक सुइ जकाँ तैयार रहैत छलनि । दुइए बेर भोजन करैत छलाह- दिनमे दस बजे आ रातिकेँ आठ बजे । जलखै एक्को बेर नहि । दुपहरियामे फल-फलहरी । राति आठ बजेक बाद ककरोसँ भेँट नहि । दिनोमे भोजनक बाद आराम । संध्या पाँचसँ आठ धरि दलानमे बैसक । सभ टा समयसँ बान्हल । तेहन श्रीकान्त चौधरीकेँ सेहो गौरी डाँटि देथिन-'आब अहूँ अनके ढाठी सिखने जाइत छी चौधरी !'

ओ हँसिकऽ रहि जाइत छलथिन । शुरू-शुरूमे मंगलाकेँ बड़ डर होइनि जे कहीँ बमकि ने जाथिन ! अपन विधवा छोट बहिनकेँ किछु कहैत माया होइनि मंगलाकेँ । बेचारी अभागलि अछि । अही आश्रममे मोन लागि जाइ तँ नीक । गौरीक मोन लगैत गेलनि । मंगलाकेँ धीया-पूता भेलनि देरीसँ, मुदा भेलनि तँ तीन टा लगले-लागल । पहिने भेलनि मीरा । गौरी सभ टा भार उठा लेलथिन ओकर । तकर बाद राम । आ, अन्तमे लाल । सभक पालन-पोषण गौरिए कयलथिन । मंगला जन्म दऽ निश्चिन्त भऽ जाइत छलीह ।

तैयो कोनो धीया-पूता लेल कोनो बेसी माया-ममता जेना नहि रहनि गौरीक मोनमे । जखन जकरापर बिगड़ि जाथिन, कोनो दशा बाँकी नहि रखथिन । मंगलोकेँ नहि छोड़ैत छलथिन-'बस्स करऽ आब ! गजर-बजर कुकूर-बिलाड़ि जकाँ बिआयब बन्द करऽ ! कहाँ तऽ होइते ने छलह, आ आब लगले-लागल तीन टा । खाली जनमा लैत छह । देखबहक तकर तऽ फुरसतिए नहि । खाली अनेरोक गप्पमे लागलि रहबऽ सभक संग । दिन-राति हमरे जानक आफत । नेनोसभ तेहने प्रचण्ड छऽ तोहर ! आ छौँड़ी तऽ सभसँ तिलबिखनी ।' मीरा बेसी तंग करनि गौरीकेँ । छूतिक हुनका बाय छलनि । जहाँ क्यो छूबि दैनि, स्नान कऽ आबथि । भनसाघरमे ककरो टपऽ नहि देथिन । अपने अन्हरोखे स्नान कऽ आबथि आ पूजा-पाठमे लागि जाथि । सात बजे धरि पूजा आ तकर बाद भनसाघर । बीचमे क्यो कनियो छूति कऽ दैनि तऽ प्रलय ! फेर स्नान, रातियोकऽ आ से माघो मासमे ।

मीरा अधिक काल तंग करनि । केम्हरोसँ दौड़लि आबनि आ गौरी हाँ-हाँ करिते रहि जाथि, ओ भनसाघरक चिनबारपर चढ़ि जाइनि । रान्हल अन्न अस्पृश्य भऽ जाइनि । आ, गौरी फेरसँ स्नान करथि, भानस करथि । हुनकर भनसामे विधवे खाइनि– मंगलाक दू टा विधवा ननदि रहथिन, बड़की दाइ आ छोटकी दाइ । श्रीकान्त चौधरी सेहो अही भनसामे खाइत छलाह । एकदम निरामिष भोजन !

माछ-मासुक भनसाघर फराक रहैक–दोसर आङनमे । ओइ लेल एक टा

भनसिया रहैक । ओइ भनसासँ रिकबीमे भात-माछ लेने मीरा गौरीक भनसामे हूलि जाइनि आ तखन चिकरा-चिकरी आ फेका-फेकी शुरू । फेर स्नान, फेर भानस !

ई पुरना गप्प भेलैक । तहिया अङना बड़ विशाल रहैक आ तेहने विशाल रहैक दलान । दलान रहैक आङनसँ बेस हँटिकऽ, दलान कोन— एक टा पैघ-सन बङला रहैक । बाहरक बैसारीक अलाबा पैघ सन सटल कोठली रहैक । ओइ कोठलीकेँ सभ कहैक कबरा । बेशकीमती झाड़-फानूस टाङल, जाजिम-गद्दी बिछाओल । कहियो काल नाच-गान होइत छलैक । नामी-नामी गबैया । प्रसिद्ध नटुआसभक नाच । रण्डी-पतुरियाक नाच नहि । बड़ कट्टर छलाह श्रीकान्त चौधरी । नवतुरियासभ कतबो लुसुर-फुसुर करय, रण्डी-पतुरियाक नाच नहि होबऽ देथिन । खाली नटुआक नाच आ नीक-नीक गबैयाक गीत । दुर्गापूजामे धमगज्जर । स्त्रीगणसभ लेल सिरकीक परदा लगैक । कबराक कातमे दोसर कोठली रहैक । ओहीमे बैसिकऽ स्त्रीगण नाच-गान देखय-सुनय । कबरामे बैसल पुरुष स्त्रीगणसभक छायो ने देखि पबैक, तेहन सिरकीसभ टाङल रहैक । सभ टा इन्तजाम श्रीकान्त चौधरी अपने करबैत छलाह, तहियो, जहिया तीनू भाइक परिवार साझी रहनि आ भानस एक्केठाम होइनि ।

ततेक दूर रहैक आङन जे आङनक कोनो स्वर दलान धरि नहि पहुँचैक । अङनो रहैक अकादारुण । बीचमे बड़का मड़बा रहैक । मड़बाक चारूकात दक्षिण आ पश्चिममे दोमहला आ पूब आ उत्तरमे सेहो पक्काक एकमहला । भूकम्पमे सभ टा ध्वस्त भऽ गेलैक । टिनक डिब्बा जकाँ ढनमना गेलैक । कोठासभक अलाबा पछबरिया-उतरबरिया खण्डमे एक टा पैघ मकान रहैक, जाहिमे रहैक भगवतीक घर, भंडार आ भनसाघर । निरामिष भनसाघर । सधवाक प्रवेश निषिद्ध । भनसाघरक बाहर आबि थारी दैत छलथिन गौरी । एकबट्टीक बादे अन्न जाइत छलैक दोसर घर वा ओसारा ।

सधवालोकनिक भनसाघर पछबरिया-दछिनबरिया खण्डमे रहैक । पैघ सन खपड़ैल कोठली । भनसिया रहथि पित्तू ठाकुर । कहियो काल सधवालोकनि अपनो बना लेथि माछ-मासु । धीया-पूताक आकर्षण अही भनसाघरमे छलैक । घरक सभ स्त्रीगण, धीया-पूता, आ श्रीकान्त चौधरीकेँ छोड़ि बाँकी भैयारी अही भनसामे खाइत छलाह ।

श्रीकान्त चौधरी सभ दिन गौरीक रान्हल अन्न खाइत छलाह । निरामिष भऽ गेल छलाह । मंगला खाइत छलीह माछ-मासु— जा धरि स्वामी जिबैत

छलथिन । मंगलोकेँ नहि छूबऽ दैत छलथिन गौरी अपन थारी-बाटी–'तोरा कोनो विचार छऽ ? खाद्य-अखाद्य सभ खाइ छऽ, पियाजो-लहसुन खाइत हेबऽ ।'

मंगला हँसिकऽ अनठा देथिन । श्रीकान्तो चौधरी हँसिकऽ अनठा देथिन । मुदा, नोकर-चाकर भनसिया-मैनेजर लोहछि जाइत छलनि । ककरोसँ सोझ-मुँह गप्प नहि करैत छलथिन गौरी । एकदम रुच्छ, कटाह बोल । मालिक-मलिकाइनक स्नेह देखि ककरो बजबाक साहस नहि होइत छलैक । सभपर शासन चलनि गौरीक ।

फेर ने ओ आङन रहलैक, ने रहलाह श्रीकान्त चौधरी, जकरा दऽ गौरी अपन जेठ बहिनकेँ कहैत छलथिन–'तोरो भाग अलबत्त छऽ मंगला ! नै तऽ तोरा सन अपरोजकिकेँ एहन स्वामी आ एतेक पैघ राजपाट ! तोरापर छोड़ि दितियऽ तऽ नोकर-चाकर सभ टा लूटि-पाटिकऽ कऽ खा जैतऽ ।'

मंगला तैयो हँसि दैत छलथिन । मंगलाक ओ हँसी अजेय छलनि । ओकरा आगू सभ हारि मानि जाइत छल–पराक्रमी आ क्रोधी श्रीकान्त चौधरी, मुँहगर आ स्पष्टवक्ता गौरी आ घर-आङन आ गाम-घरक सभ टा लोक । मंगलाक ओ अजेय हँसी ओहू दिन लुप्त नहि भेल रहनि जहिया स्वामी बिछौन धऽ लेने छलथिन । नहि जानि की भऽ गेल रहनि ! रट मारऽ लगलथिन-'कहाँ गेलौँ ? कहाँ छी ?' आ, लग जाइत मंगलाकेँ नवकनियाँ जकाँ लाज होइनि । कहियो एना भऽ सोर नहि पाड़ने छलथिन । लालक जन्मक बाद तँ हुनका घरो जायब छूटि गेल छलनि । देखा-देखी भरि होइत छलनि। से स्वामी दिन-देखार रट मारऽ लगलथिन– 'आउ, ...लग बैसू कने !'

मंगला लग जा बैसि रहैत छलीह । खाली एकटक हुनकर मुँह देखैत छलथिन आ बाजऽ लगैत छलथिन— नै, कोनो चिन्ता नहि ! अहाँ लेल चिन्ता करबाक कोनो प्रयोजन नहि । चिन्ता अहाँ धरि नहि पहुँचि सकैत अछि...अहाँ ओकर पहुँचिसँ ऊपर छी । अनेरो मोन नहि मानैत अछि । होइत अछि जे अहाँकेँ निरुपाय छोड़ने जा रहल छी । भूकम्पसँ जे बाँचल छल ताहिमे अधिक रास तऽ अपने बेचि-बिकिन समाप्त कयलहुँ । बचलाहामे एतेक पैघ परिवार अछि । भाइयोलोकनि हिस्सा बँटा फराके भऽ गेलाह । राम बुझनुक छथि–मुदा नेन्ने छथि एखन, लाल ओहूसँ छोट । मीराक धीयापूतासभ छैक आ दू टा विधवा ननदि छथि । एतेक टा जंजाल— कोना सम्हरत अहाँसँ ?'

पहिल बेर मंगलाक बकार फुटलनि स्वामीक आगाँ— 'अहाँ अनेरो चिन्ता करै छी हमरा लेल ! जखन अहाँ छी तऽ चिन्ताक कोन प्रयोजन ? अपन सभ टा चिन्ता-फिकिर अहाँकेँ सौंपि निश्चिन्त रहै छी हम ।'

–'तेँ अहाँक मोनमे एतेक शान्ति आ स्नेह अछि । कोनो कटुता नहि अछि । मुदा आब ? हमर बाद...'

मंगला स्वामीक बात काटि देलथिन–'तकरो कोनो चिन्ता नहि । भगवान छथि । अपन सभ टा चिन्ता आ अशान्ति हुनका सौंपि दियनु । हुनके ध्यान करू ।'

आ, तकर बाद श्रीकान्त चौधरीक उद्विग्न मोन जेना एकदम शान्त भऽ गेलनि । जतबा दिन जीलाह ओकर बाद, चेहरापर अपूर्व शान्ति छलनि । हुनकर ओ सुन्दर आकृति जे जिनगी भरि घमण्डसँ तनल आ क्रोधसँ तमतमायल रहलनि, अन्तिम क्षणमे खूब कोमल आ स्निग्ध भऽ गेल छलनि ।

ओइ मुँहकेँ निहारैत आङनमे तुलसी-चौरा लग बैसलि छलीह मंगला— ओहिना शान्त आ सहज ! लगेमे ठाढ़ि छलथिन छोट बहिन गौरी । स्तब्ध आ कातरि । ऊठिकऽ छोट बहिनक कान्हपर हाथ रखैत मंगला बजलीह–'एना अधीर नहि होअऽ गौरी ! हम अखन छी...हम छी अखन..."

हम किएक छी ? ककरा लेल छी ?

यैह प्रश्न गौरीक मोन ओइ दिन हौँड़ि रहल छलनि । मंगलाक मुइना एक मास बीति गेल छलैक आ बहिनक बाद, बहिनक सासुरमे ओकर धीया-पूताक आश्रममे पड़लि रहब गौरीकेँ कोनादन लागि रहलि छलनि । बहिनक मुइलोक बाद ककरो व्यवहारमे उपेक्षा वा तिरस्कारक भाव नहि आयल छलैक, मुदा गौरी सदिखन संत्रस्त रहैत छलीह । यदि कोनो आँखिमे, कतहु ओ भाव झलकि जयतैक; तँ एतेक दिनक, जीवनक पचास वर्षक साधना नष्ट भऽ जायत । ओइसँ पहिनहि अइ गामसँ चल जयबाक चाही ।

मुदा से बहुत बादक गप्प छैक । ओइसँ पहिने बहुत-किछु घटल छलैक— मंगला आ ओकर स्वामीक मृत्युक पूर्व । हवेली मोहनपुरक प्रतापी जमीन्दार श्रीकान्त चौधरीकेँ वैहसभ घटना मारि देने छलनि । शरीर तँ ओकर बहुत बाद त्यागने छलाह ।

पहिल घटना छलैक भूकम्प । सभ टा पुरना कोठा ढनमना गेल रहनि । राम आ लाल मौजेपर छलथिन, बाँचि गेलथिन । अपने परिवार आ नौकर-चाकरक संग

बाहर मैदानमे भागि आयल रहथि । मुदा जमाय रहि गेलथिन कोठेमे । जातिक नामपर गरीब भलमानुषकेँ बिआहलि गेलि रहथि मीरा । स्वामी अधिक काल सासुरेमे रहैत छलथिन । ओइ दिन ओही कोठामे समाधि बनि गेलनि । तीनू नेन्नाकेँ छातीसँ सटने मीरा बताहि जकाँ ईंटा-माँटिक ढेरीकेँ तकैत रहलीह । सात दिन धरि तकाइ होइत रहलैक आ तखन बहरयलनि पिचाकऽ विकृत भेल निर्जीव शरीर । मीरा बेहोश भऽ गेलीह । शान्त आ नियंत्रित रहऽवला श्रीकान्त चौधरीक आकृति दुःखसँ निरीह आ झामर भऽ उठलनि ।

मीरा जेठ आ दुलारू बेटी छलीह मायक । बापोक स्नेह रहनि, यद्यपि ओ बड़ कम्म मुखर होइत छलनि । से, मीरा अठारहम वयसमे विधवा भऽ गेलीह । बारहममे बियाह भेलनि आ अठारहममे विधवा । विधवा आ तीन सन्तानक माय । दू टा बेटा आ एक टा बेटी । जेठ बेटा चारि वर्षक आ कोराक बेटा छौ मासक । बीचमे दू वर्षक एक टा बेटी ! मंगला कखनो बेटीक धोअल सीथ, खाली हाथ आ उज्जर नूआ देखथि आ कखनो तीनू अबोध नेनाक मुँह ! मुदा, मंगलाक सहनशक्ति अजेय छलनि । उदास आ मरणासन्न बेटीकेँ कोरामे लऽ एक दिन कहलथिन–'कोनो चिन्ता नहि बेटी ! हम छी— हम छी अहाँसभक लेल । ...अहाँ हँसू-खेलाउ, पहिरू-ओढ़ू, अहाँक वयसे की अछि ? हँसू-खेलाउ अखन..."

आ मीरा सत्ते हँसऽ-खेलाय लगलीह । ओ वीभत्स आ उत्पीड़क अतीत जेना पिण्ड छोड़ि देलकनि । चेहराक लाली आ देहक शक्ति फेर घुरि अयलनि । सुन्दरि छलीह मीरा— एकदम बापपर गेलि छलीह । बापेक रंग, ओहने मुखाकृति आ ओहने उग्र स्वभाव । नेन्नामे गौरीकेँ अकच्छ कऽ देथिन–विधवाक भनसाघरमे माछक रिकबी लेने हूलि जाथिन–'मौसी कने भात दिअऽ ।" गौरी हाँ-हाँ करिते रहि जाथि ।

ओही विधवाक भनसाघरमे एक दिन मीरोक भानस होबऽ लगलनि । गौरीक मोन शुरू-शुरूमे बड़ करुणासँ भरि गेलनि मीराक लेल । नेन्नामे देल अपन गारि-सराप लेल कतेको बेर अफसोचो भेलनि । मुदा किछुए दिन । फेर मीरा हँसऽ-खेलाय, पहिरऽ-ओढ़ऽ लगलीह । ओकरो तीनू नेन्नाक छार-भार हुनके कप्पार । मंगला बुते अप्पन धीया-पूता पोसले ने भेलनि, नाति-नातिन की पोसितथि ? मुदा छौँड़ीक रंग-ढंग देखि गौरीक मोन फेर उनटि गेलनि । विधवाक एहन लच्छन ! एतेक सिङार पटार ! केश नहि कटौतीह ! नमरिकऽ डाँड़सँ नीचाँ चल गेलैक आ सौँसे पीठपर कोना छिड़िया लैत अछि ! जकरो ने देखबाक सेहो देखैत छैक । एहन कपड़ा लत्ता ! सादे साड़ी-आङी, मुदा आङी-तरमे पहिरबाक कोन

काज ? सेहो विधवाकेँ ? लोकक आँखिमे गड़ैत हेतैक, मौगी भऽकऽ हमरा अखरैत अछि तँ पुरुषक कोन कथा ? आ, राति-विराति कतऽ निपत्ता रहैत अछि ? पोखरि-धार अन्हारमे किएक बौआइत अछि ? गौरी मीराकेँ फेर जखन-तखन कटाह बात कहऽ लगलथिन । मंगला सूनिकऽ हँसि देथिन । गौरी आर जरि जाथि– 'बहसा ले' बेटीकेँ ! एकदिन हकन्न-नोरे कनबऽ ।'

कनली गौरी अपने आ ओहो छाती पीटि-पीटिकऽ । जे गौरी कहियो ने कानलि रहथि, से आसमर्द उठा देलनि । भरि गामक लोक सम्हारैत अपस्याँत भऽ गेल, गौरी शान्त नहि भेलीह । अन्तमे श्रीकान्त चौधरी अपने बहरयलाह आ शान्त, मुदा दृढ़ स्वरमे कहलथिन-'चुप्प भऽ जाउ गौरी दाइ ! लोककेँ मुर्दा लऽ जाय दियौक ।'

'नै ।' गौरी फेर चीत्कार कयलनि । आङनमे चचरी-बान्हल मीराक देह पड़ल छलैक आ चचरी उठबऽ लेल लोक जमा छल । आगि देबो लेल जेठका नेन्ना मोहन सेहो संग जाय लेल तैयार छल । एगारह वर्षक भऽ गेल छल मोहन । बापक मुइलाक साते साल बाद माइयो बिदा भऽ गेलैक । टूगर भऽ गेल छल मोहन आ ओकर छोट भाइ विक्रम आ बहिन गंगा ।

मुदा, हाक्रोश कऽ रहलि छलीह गौरी । मीराक मृत शरीरपर ओँघरा जाइत छलीह । श्रीकान्त चौधरी दोबारा कहलथिन–'शान्त होउ गौरी दाइ ! लोककेँ अप्पन काज करऽ दियौक ।'

गौरीकेँ जेना होश भेलनि । देहपरसँ हँटि गेलथिन । लोकसभ मुर्दा उठा बाहर बिदा भेल । श्रीकान्त चौधरी अपन कोठलीमे चल गेलाह । बाँकी स्त्रीगणो सभ अपन-अपन घर गेलि । आङनमे बैसलि छलीह मंगला— मीराक माय मंगला । आँखिमे नोर नहि छलनि, मुदा सम्पूर्ण शरीर जेना संज्ञाविहीन भऽ गेल रहनि, दृष्टि एकदम पथरायल । गौरीकेँ लग जा ऊठिकऽ घर चलबा लेल कहबाक साहस नहि भेलनि ।

प्रात भेने जहिना मोटरी-चोटरी बान्हऽ लगली गौरी कि मंगला टोकि देलथन— 'तोँ नहि जा सकैत छऽ ।'

गौरी दृढ़तापूर्वक कहलथिन— 'हम अबस्से जायब । आब कोन मुँह लऽकऽ रहब एहिठाम ? नहि जाय देबऽ, तऽ पुलिसकेँ बजाकऽ हथकड़ी लगा दैह । हम अपराधी छी । हम खून कयने छी ।'

मंगला कने स्नेहसँ डँटलथिन–'बताहि जकाँ गप्प जुनि करऽ । अपराध ककरो नहि छैक । अपराध थिक हमर पूर्वजन्मक पापक आ ओइ अभगलीक

कर्मक । एतबे जिनगी लऽकऽ आयलि छलि । तों निरर्थक अपनाकें दुख दऽ रहलि छऽ । तोरासँ बेसी ओकर दुख के बूझि सकैत छलैक ? तों तऽ ओकरोसँ कम्म वयसमे स्वामीकें गमौलह । सन्तानहीन छलीह । एतेक टा जीवन...'

गौरी बीचेमे टोकि देलथिन–'नहि । हम ओकर दुख नहि बुझलिऐक । ओकरा पापिन बुझलिऐक । हमरा भगवानो माफ नहि करताह । हमरा जाय दैह ।' मोटरी लेने गौरी दनदनाइत कोठलीसँ बहराइत अङनाक मुँहथरि दिस बढ़लीह । मुँहथरिपर ठाढ़ छलथिन हबेलीक मालिक श्रीकान्त चौधरी । गौरी सकपका कऽ ठाढ़ि भऽ गेलीह ।

–'कतऽ जाइ छी गौरी दाइ ?' स्वर आरो बेसी गम्भीर छलनि ।

–'नहि जानि कतऽ जायब ? मुदा एहि आङनमे नहि रहि हैत आब ! हमरा जाय दियऽ ।'

–'जायब तऽ एक दिन सभ क्यो । हमहूँ जायब । मुदा जाउ, अखन अपन कोठलीमे जाउ ! मीरा लेल अहाँकें जे दुख अछि से हम बुझैत छी । मुदा उपाय कोन ?'

–'नै, हमरा मीरा लेल दुख नहि अछि । हमहीं मारलिऐक ओकरा, हमरा निकालि दियऽ अपना आङनसँ !' सभ दिनक शान्त आ बुझनुक गौरीक जेना मानसिक संतुलन बिगड़ि गेल छलनि ।

–'अहाँ जाउ कोठलीमे गौरी दाइ, अहाँक मोन ठीक नहि अछि ।' एतबा कहि मुँहथरि लगसँ घूरि गेला श्रीकान्त चौधरी । गौरी ओतहि आङनमे पड़ि रहलीह । ऊठिकऽ घर नहि जा भेलनि । घर जाइत देरी लगैत छलनि जेना चारू कातसँ घरक सभ देबाल-खिड़की-दरबज्जा हुनका कहि रहल होइनि–हत्यारिणी !

हत्या ठीके कयने छलीह ओ । हुनका सहि नहि भेल छलनि ओसभ । विधवाक ओहन पहिरब-ओढ़ब, ओना टोले-टोले बौआयब, ओना ठिठियाकऽ हँसब, माथ उघारि घूमब । ओहू दिन हँसिते आङन आयलि छलि मीरा । साँझ भऽ गेल रहैक । भनसाघरक खिड़कीसँ देखने छलथिन गौरी । पोखरिक भीड़पर हँसि-हँसिकऽ गप करैत सतीशसँ । सौंसे देह जरि गेल रहनि । आङनमे पयर दिते ओकर बाट छेकि लेने रहथिन ।

–'लाज नहि होइ छौ मीरा ! विधवा भऽकऽ एहन चालि !' मीराक मुँह विवर्ण भऽ गेल रहैक–'की कयलहुँ अछि हम मौसी ? कथीक लाज हैत हमरा ?"

ओकर विवर्ण मुँहकें बिनु देखने कठोरता आ निर्दयतासँ गौरी बजलीह–'निर्लज्जिकें कथीक लाज हेतैक ? मुदा हमरालोकनि लेल तऽ लाजे मरि जयबाक गप्प थिक । जकरा-तकरा संग अन्हार-कुठाममे बौआयलि फिरै छैं, आ पुछै छें जे की कयलहुँ अछि ? आब बाँकिए की छौक ? कोना बिसरि गेलौ जे अही आङनमे स्वामी देबाल तर थकुचाकऽ मुइल छलौ...हमहीं लहठी फोड़ने रहियौक ।'

बोली सूनि अपन कोठलीसँ मंगला बहरा गेलि रहथि । गौरीक उग्र रूप देखि रोकबाक साहस नहि भेल रहनि । गौरीक उग्र स्वरपर नहि जानि कोम्हरसँ आबि श्रीकान्त चौधरि सेहो ठाढ़ भऽ गेल रहथि । मौसीक भर्त्सनासँ सुन्न भऽ गेलि छलि मीरा । सम्हरिकऽ एम्हर-ओम्हर तकलक तँ लाजे मरि गेलि । झलफलो अन्हारमे स्पष्ट चिन्हलकै— एक कात माय- एक कात बाप । सामने तनलि ठाढ़ि मौसी । किछु काल ओहिना ठाढ़ि रहलि । फेर एक टा दृढ़ निश्चयक संग मूड़ी उठा बाजलि–'अहाँ ठीके कहै छी मौसी ! हमरा बिसरि गेल छल जे हम विधवा छी । हताश आ मरणासन्न रही तऽ एक दिन माय कहलक— तों हँस-बाज, पहिर-ओढ़, खेलो । तोहर हँसब-खेलयबाक वयस छौक । लागल, नहि हँसब-बाजब तऽ अपना संग मायो उदास रहति, घरभरि उदास रहत । विधवा तऽ आरो रहथि आङनमे–अहाँ रही मौसी, दुनू पीसी रहथि, मुदा हमरा लागल जे विधवा आ निरुपाय बेटीकें उदास देखि माय-बाप अनेरे कष्ट पौताह । सभ टा बिसरि हँसऽ-बाजब हमर अधिकार नहि थिक । मुदा, एक टा बात हम कहने जाइ छी मौसी ! हमरा लेल कहियो ककरो लज्जित नहि होबऽ पड़तैक । कोनो पाप नहि कयने छी कोनो दिन...'

एक झोंकमे सभ टा बाजि मीरा अपन कोठली चल गेलि । तीन स्थानपर तीनू गोटे स्तब्ध ठाढ़ रहल— गौरी, मंगला आ श्रीकान्त चौधरी ।

प्रात भेने मीराक कोठलीक केबाड़ नौ बजे धरि नहि खुजलैक । दरबज्जा तोड़ल गेलैक । निर्जीव लटकल छलैक मीराक शरीर । छतक कड़ीसँ ससरफानी लगा लटकि गेलि रहैक । आत्महत्या कयने छलैक ।

नहि, ओकर हत्या कयने छलैक गौरी । गौरी हत्यारिणी अछि । ओकरा पुलिसमे दौक । ओकरा हथकड़ी लगबौक । गौरी सभकें नेहोरा-विनती कयलथिन, हुनकर क्यो नहि मानलकनि । ओ गाम छोड़िकऽ जाय चाहलनि, जाय नहि देलकनि । ओ घरक मुँहथरि लग आङनमे पड़ि रहलीह । घूरिकऽ अपन कोठलीमे जयबाक साहस नहि भेलनि । चारूकातसँ हत्यारिणी कहि-कहि घर-आङन काटऽ दौड़ैत छलनि । ओ आङनेमे पड़लि छलीह ।

नहि जानि, कतेक कालक बाद माथपर ममत्व भरल स्पर्शक ज्ञान भेलनि। आङनक अन्हारोमे बुझा गेलनि जे लगमे जेठ बहिन बैसलि छथि। ओ ऊठिकऽ बैसयबाक चेष्टा कयलथिन। बाँहि धऽ हुनका ठाढ़ होयबामे सहायता कयलथिन मंगला आ संग-संग घर दिस लऽ जाइत कहलथिन–'अनेरो अपनाकेँ बेसी दुख नहि दे गौरी! तोँ ओकरा कोना मारि सकैत छलहिक? ओ तऽ तोँही छलीह–तोरे दोसर जन्म। तोँ अपने तँ बहुत दिन पहिने मरि गेलि छलऽ। जहिया मीरा विधवा भेलीह, तोँ फेर जन्म लेलह। तोहर हँसी, तोहर शृंगार सभ किछु छिना गेल छलऽ, मीरोकेँ छिना गेलैक। ओकरा परताराऽ लेल हम ओकरा उकसौलिऐक। तोरा नहि सहि भेलऽ। ककरो खेलायब, हँसब-बाजब, सिङार-पटार करब, तोरा कहियो नहि सहि भेलऽ। तेँ भरि जन्म हमहूँ सादा-सादी रहलहुँ, सधवो भऽकऽ विधवे जकाँ रहलहुँ। मात्र तोरे लेल। तमसा जुनि गौरी, हम ठीके कहै छियऽ। मात्र तोरे लेल हम ओहन सादा रूप धारण कयलहुँ। तैयो तोरा नहि सहि होइत छलऽ। हमर माछ-मासु खयनाइ धरि तोरा नहि बर्दाश्त होइत छलऽ। हम जे सधवा छी! आ मीरा तऽ विधवा छलि, तोरे जकाँ। तोरा नहि सहि भेलऽ। ओकरा हम सहकौलिऐक। तोहर दुख सहि गेल रही, मुदा मीराक नहि सहि भेल। हमही हँसऽ-बाजऽ कहलिऐक ओकरा। जे तोरा नहि भेटलह से अनका भेटैत देखि तोरा सहि नहि भेलऽ। मुदा, अइमे तोहर कोनो दोष नहि। सभ टा कप्पारक दोष— मौगीक कप्पार। ओकर यैह नियति छैक। मात्र एक गोटेक नहि रहलासँ जे किछु बाँचल रहैत छैक, से सभ अर्थहीन आ अप्राप्य भऽ जाइत छैक। चाहे मोनसँ, चाहे जबर्दस्ती।'

बहिनक संग कोठली दिस जाइत गौरीक पयर लोथ भेल जाइत रहनि, ई के बाजि रहलि छलथिन? अपरोजकि मंगला, अबढङाहि मंगला! विस्मयसँ हुनकर मस्तिष्को सुन्न भेल जाइत रहनि।

मंगला फेर कहलथिन–'सहकौने हम तोरो रहियऽ गौरी! तोँ भरिसक बूझि नहि सकलऽ। तोँ विधवा भऽ गेलि रहऽ–छोट आ प्रिय बहिन। बड़ दया लागल। तोरा एतऽ अनलियैक। लबिते लागल जे पैघ गलती भऽ गेल। तोहर दर्प जागि उठलैक। तोँ सुन्दरि आ हम कुरूप। तोँ गुनगरि आ हम अबढङाहि। तोँ सभ ठाम हमर जगहपर अपनाकेँ राखिकऽ सोचऽ लगलऽ। तोहर चौधरियो बड़ सुन्नर छथुन। दुनूक स्वभावो मिलैत छऽ। हुनकर काज करबामे तोरा सुख भेटैत छलऽ। हम हुनकर सभ काज तोरे दऽ देलियऽ। हुनकर सन्तानोकेँ पोसबाक काज। ओइमे तोरा सुख भेटैत छलऽ। ऊपरसँ तोँ खौँझाइत छलीह, मुदा मोनमे तोरा नीक लगैत छलऽ। हुनकर संग हमरा देखब तोरा नहि सहि होइत छलऽ। लालक जन्मक बाद तोँ स्पष्ट कहलऽ–'आब बस्स करऽ। कुकूर-बिलाड़ि जकाँ गज्जर-बज्जर नहि बिआ।' हम छोड़ि देलहुँ। तहियेसँ हुनकर घर जयबो छोड़ि देलहुँ। तैयो तोहर मोनक आगि नहि मिझयलऽ, मीरा ओइमे जरि गेलि। मुदा मीरा आइ नहि मुइल अछि। मुइल तऽ पहिने छलि। तोरापर हमरा कहियो कोनो क्रोध नहि भेल गौरी! स्त्रीजातिक यैह नियति छैक–हमरो, तोरो, मीरोक। सभ भोगलहुँ अपन-अपन भोग। तोँ अपनाकेँ अनेरो बेसी सन्ताप नहि दैह।'

गौरी जोरसँ कानि उठलीह। बहिनक छातीमे मूड़ी नुका चिकरि उठलीह जेना प्राण बाहर भऽ जयतनि। कनैत-कनैत कण्ठ बाझि गेलनि, मंगला पीठपर हाथ फेरैत रहलथिन। आस्ते-आस्ते क्रन्दनक संग हिलैत देह मंगलाक छातीपर निःशब्द स्थिर भऽ गेलनि। हुनका लगभग कोरामे उठा घरमे बिछौनपर पाड़ि देलथिन मंगला। आ, बड़ी काल धरि हुनकर देहकेँ ममत्वक स्पर्श दैत रहलथिन आ हाथ उठा ईश्वरकेँ कहलथिन–'एकर आत्माकेँ शान्ति दियौक दयामय!"

दयामय प्रायः नहि सुनलथिन। छौ मासक भीतर दोसर आघात। मीराक मृत्युक आघात बापकेँ नहि सहल गेलनि। स्वामीक मृत शरीर लग बैसलि मंगला साहस कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि छलीह आ स्तब्ध आ कातरि गौरीक कान्हपर ओहिना ममत्वभरल हाथ राखि कहने छलथिन–'हम छी अखन गौरी, अखन हम छी...'

मुदा वैह अन्त नहि छलैक। विधि बाम छलथिन जेना! आघातपर आघात। रामक कनियाँ असक्क छलथिन। पूरा मास। ससुरक श्राद्धमे जान लगा खटलीह। माछे-मासुक राति दर्द शुरू भऽ गेलनि। खा-पी सभ ऊठि गेल रहनि। घरेक लोक बाँकी रहनि। चमाइन अयलनि। रामक कनियाँक चीत्कारसँ सम्पूर्ण आङन– सम्पूर्ण गाम स्तब्ध रहि गेल। मंगला बेर-बेर पुतहुक लग जा कहथिन–'साहस करू कनियाँ, भगवानक नाम लियऽ, सभ ठीक भऽ जायत।' कनियाँकेँ कथूक होश नहि छलैक। चिकरब बन्दे नहि होइ, सम्पूर्ण शरीर ऐँठल जाइ। गामक सभ अनुभवी स्त्रीगण जमा रहथि। चमाइन अपन सभ अनुभव, सभ हुनर अजमा गेलि, मुदा कोनो लाभ नहि। डाक्टर लेल साइकिलसँ आदमी शहर दौड़ाओल गेल। सभ व्यर्थ। प्रात होइत-होइत एक टा नेनाकेँ जन्म दऽ रामक कनियाँ शान्त भऽ गेलीह।

बापक उतरी गरासँ उतरले रहनि कि स्त्रीक उतरी गरामे आबि गेलनि।

राम अपने संस्कार कयलथिन। मंगला बताहि जकाँ भऽ गेलीह। कोरामे रामक नेनाकेँ लेने सदिखन कनैत रहैत छलीह। श्राद्धक बाद एकदिन साहस कऽ

उठलीह आ नेनाकें गौरीक कोरामे दैत बजलीह— 'लहक एकरो, सभकें पोसलहक । एकर तऽ माइओ नहि छैक ।'

गौरी नेनाकें आपस मंगलाक कोरामे दैत बजलीह-'नै, आब नहि, आब थाकि गेलहुँ । तोहर तीनूकें पोसलियऽ । मीराक तीनू नेनाकें पोसि देलियनि । आब छुट्टी दैह...आब नहि पार लागत । नहि देखि हैत अइ बिनमाइक नेनाक मुँह । एकरा छोटकी कनियाँकें दहुन, ओ चिलकाउर छथि, ओ पोसि लेथिन एकरा ।'

मंगलाकें बाट सुझलनि । लालोक विवाह भऽ गेल छलैक-अठारहमेमे । बीसममे बापो बनि गेल छल । छौ मासक बेटा छलैक कनियाँक कोरामे । मंगला छोटकी कनियाँक कोरामे बच्चाकें दैत बजलीह— 'एकरो माय अहीं बनियौक कनियाँ !'

नाम रखबाक गप्प उठलैक तँ राम हँसिकऽ कहलथिन-'भोरक सूर्यक संग आयल छथि । मायक जिनगीक दीप मिझा गेलनि तें की ? हिनक नाम रहऽ दियनु रवि...'

आ रविए नाम पड़ि गेलैक नेनाक ।

उनैस सय चौंतीसक भूकम्पक बाद हवेलीक नक्शा बदलि गेल छलैक ।

सभसँ पहिने खसल रहैक दक्षिणबरिया दोमहला । मीराक बर ओहीमे छलथिन सूतल । ऊठिकऽ पड़ाइयो ने सकलाह । तकर बाद खसलैक पछबरिया दोमहला । लोक कहैक-'लगलैक जेना कोठाक छत दू बेर झुकिकऽ जमीन छूलकै आ फेर सभ टा हड़हड़ाकऽ खसलैक ।' सभ पड़ा गेल रहैक ओहू कोठासँ, मुदा दुनू बहिन रहि गेलि रहथि— हवेलीक मालिक श्रीकान्त चौधरीक दुनू जेठकी विधवा बहिन— बड़की दाइ, छोटकी दाइ । मीरा, राम आ लाल कहथिन— बड़की पीसी आ छोटकी पीसी । रवि, मनोज कहनि— बड़की पीसी-बाबी आ छोटकी पीसी-बाबी । ओ दूनू रहि गेलीह । कोठाक भीतरे । छोटकीक जाँघपर एक टा पाया खसल रहनि- हिलि-डोलि नहि भेलनि । बड़कीकें कतहु कोनो चोट नहि लागल रहनि, मुदा चारूकात ईंटा माँटि सुर्खीक ढेरी लागल रहनि, कोम्हरोसँ निकलबाक बाटे नै रहनि । किलोल करैत रहि गेलीह, क्यो नहि सुनलकनि ।

ककरा सुनबाक होस रहैक ? दिनमे तारा निकलि गेल रहैक । आसमान गर्दासँ तोपल आ राति जकाँ लगैत दिन । चारूकात खसल घरक माटि, सुर्खी, ईंटाक ढेरी । मैदानसभमे दरारि फाटि गेल रहैक । दुनू दोमहले टा नहि, सभ घर खसि पड़ल रहैक । दलान-बङली सेहो भहरि गेल रहैक । सभ टा अन्न-पानि भड़ारक माँटि सुर्खीमे मिलि गेलैक । खाली चारूकात लोकक किलोल, घायलक आर्त्तनाद आ हेरायलक तक्काहेरी ।

तक्काहेरीमे पहिने छोटकी दाइक किलोल सुनलकनि लोक । कहुना ढेरी हँटा लग पहुँचल । पाया पयरसँ हँटायब मोसकिल छलैक-पूरा पाया नहि खसल रहनि, तैयो विशाल पायाक ओ टूटल अंश पर्याप्त भारी छलैक । जांघक हड्डी एकदम तोड़ि देने रहनि । फेर ऊठिकऽ नहि चलि सकलीह कहियो । घिसरी काटथि । जा धरि जिबैत रहलीह, घिसरिए कटलनि ।

बड़की दाइ मुदा एकदम बाँचि गेलि रहथि । छोटकी दाइक किलोल कम्म भेलनि तँ लोककें लगलैक जेना भीतर क्यो सोर पाड़ि रहल अछि । बड़ मेही सुर । आर माँटि हँटाओल गेल । बहुत भीतर जाकऽ बड़की दाइ भेटलथिन । अपन पेटार संग लेने बैसलि छलीह । भगबोकाल अपने पेटार उठा लेने रहथि आ ओही पेटारपर बैसलि किलोल कऽ रहलि छलीह ।

ओहूकालमे सभकें हँसी लगलैक । बड़की दाइक पेटार नामी छलनि । तहियासँ आर नामी भऽ गेलनि । ओकर कुंजी ककरो दैत नहि छलथिन । अपनो सभक सामने नहि खोलैत छलीह कहियो । नुकाकऽ एकसरमे, कने पल्ला उठा काजक चीज निकालि लैत छलीह । पेटार की रहनि, छोटछीन सन्दूकचे रहनि । ओहन भारी सन्दूकचीकें ओइ विपत्ति-कालमे घिसियौने अबैत रहथि बड़की दाइ । सभकें हँसी लागल रहैक ।

रविकें दुनू बहिनपर हँसी लगैक । कखनो दुनू पाकिटमे लताम भरने आबय रवि तँ दुनू बहिन घेरि लेथिन-'कने दे बौआ, एक टा पकलाहा लताम दे ।'

रवि बहाना करैक-'पाकल नहि छै । अहाँसभकें नहि खा हैत ।'

दुनू नेहोरा करऽ लगथिन-'दे ने तों, कने सिलौटपर थूरि देबैक ।'

रवि दोसर बहाना करय-'अइँठ छैक । अहाँसभ अइँठ खयबैक ?'

छोटकी दाइ घिसरी कटैत लग चल अबथिन-'कथीक अइँठ ? तों नेन्ना छैं । तोहर अइँठ केहन अइँठ ?'

हारिकऽ लताम दऽ दैनि रवि । मुदा जखन कहियो माछ-मासु खाइत देखि लेथिन, घिसरी कटैत छोटकी पीसी-बाबी किलोल करऽ लगथिन— एम्हर आ रब्बी ! हमरे कोठलीमे चल आ...'

आ, लग अबैत देरी रिकबीसँ माछ उठा खाय लगथिन हब्बर-हब्बर ! रवि अवाक् । टोकैत कहनि— 'अहाँ माछ खाइ छिऐ छोटकी पीसी-बाबी ?'

—'चुप्प-चुप्प । क्यो सुनि लेतौक । ककरो ने कहियहिक ।'

कहबाक काजे नहि पड़ैक । केम्हरोसँ गंध पाबि बड़की पीसी-बाबी आबि जाथिन । हुनका टाङ छलनि, घुमै-फिरै छलीह । छोटकी जकाँ घिसरी कटैत किलोल नहि करैत छलीह । हाथसँ माछ छिनैत डँटैत छलथिन— 'अंतमे सभ मति नष्ट भऽ गेलौक तोहर ! विधवा भऽ माछ खाइ छऽ ?'

आ, घूमिकऽ बचलाहा माछ अपन मुँहमे दऽ देथि । रवि देखि लैनि— 'बड़की पीसी-बाबी, अहूँ ! अहूँ खाइ छिऐ ?'

बड़की दाइ नेहोरा करऽ लगथिन-'चुप्प, चुप्प रह बाउ ! एक टा पाइ देबौ ।' आ पेटारसँ एक टा पाइ बहारकऽ दैत छलथिन बड़की दाइ । एक टा पाइ भेटबाक लोभमे बेर-बेर माछक रिकबी लऽ ओही घर चल जाइत छल रवि ।

एक दिन गौरी पकड़ि लेलथिन-'छि:छि:छि:, बड़की दाइ छोटकी दाइ ! हद कयल अहाँसभ ! ऐना भऽ नेनासँ ठकिकऽ माछ-मासु भकोसैत छी ? बुढ़ारीमे मति हेरा गेल अहाँ दुनूक ! भरि जीवनक तपस्याकेँ एना नष्ट कयलहुँ ?'

भरि जीवन ठीके तपस्ये कयने छलीह दुनू बहिन । पहिल कहियो सासुरे नहि गेलीह । विवाहक यात्राक बाद वर घूरिकऽ दोबारा नहि अयलथिन । नहि जानि की भेलनि, क्षणमे छनाक भऽ गेलनि । सभसँ पैघ बेटी छलीह, पैघ जमींदारक । सासुर कहियो नहि जाय देलथिन बाप । भाइक राजमे आरो मान छलनि । बहिनक मुँह कखनो मलिन नहि देखऽ चाहैत छलाह श्रीकान्त । सभ सुविधा, मुदा तपस्विनीक जीवन छलनि बड़की दाइक । दूधसङ आलता मिलल रंग, पैघ आँखि, पातर ठोर आ सुरेबगर नाक । सादा कोरा धोतियोमे बड़की दाइ राजरानी लगैत छलीह— ऊँच आ बलिष्ठ काठी । जीवन मुदा तपस्विनीक छलनि— सभ टा व्रत-उपवास । सप्ताहमे मोस्किलसँ दू दिन अन्न, सेहो अछिंजलेमे रान्हल, पहिने अपने बनबैत छलीह । जहियासँ गौरी अयलथिन, ओही भनसामे इन्तजाम भऽ गेलनि । देहपर धोती छोड़ि दोसर कोनो वस्त्र नहि—जाड़-गर्मी, सर्दी-बोखार कथूमे

नहि । साँझ-परात स्नान । बारहो मास । गामसँ बाहर धारक पारो कहियो पयरो नहि देने छलीह बड़की दाइ !

छोटकी दाइ सासुर गेलि रहथि । एक टा नेन्नो भेलनि, मुदा जीलनि नहि । फेर स्वामियो नहि रहलथिन । बाप हवेलीमे बजबा लेलथिन । फेर ने कहियो क्यो सासुरसँ लेबऽ अयलनि आ ने बाप पठौलथिन । दुनू बहिनक एक्के घरमे डेरा भऽ गेलनि—एक्के रंग जीवन । संगे व्रत-उपास, संगे प्रातःस्नान, एक्के भनसामे भोजन । दुनू बहिनक नियति एक्के लिखा गेल रहनि ।

ओना, मुँह-कान फराक-फराक लिखल रहनि । छोटकी दाइ भुट्टि आ पिण्डश्याम छलीह—मायपर गेलि रहथि । बड़की दाइ अपन बापपर गेलि रहथि, श्रीकान्तो बापे सन रहथि । माय सन रहथि छोटकी दाइ आ गोवर्धन । नामी सेहो बापे सन छलाह— वैह छौफुट्टा शरीर आ पैघ ललाट, पैघ माथ आ लम्बा-लम्बा हाथ पयर । रंग ओहिना चमकैत आ आकृतिपर राजसी गरिमा । गोवर्धन भुट्ट रहथि, मुदा रहथि चाकर, बेस पहलवान । कुस्ती खेलाथि । गरदनि कन्हामे नुकायल रहनि आ डाँड़सँ ऊपर देह बेसी भारी रहनि । पाँचो भाइ-बहिनमे बड़ मेल रहनि ।

मुदा से नहि रहलनि । भूकम्पक बाद लगले बटवाराक विवाद ठाढ़ भऽ गेलनि । गोवर्धन अगुआ रहथि । हुनक स्त्री बुधियारि रहथिन, खटबास लऽ लेलथिन । गोवर्धन डेराइत भाइ लग पहुँचलाह— 'हमरा बासक दोसर जमीन दियऽ । ई डीह अलच्छ अछि, सभ टा नष्ट भऽ गेल । हम फराके बसब ।'

गोवर्धन विस्फोटक आशंकासँ सहमल छलाह । श्रीकान्त किछु काल छोट भाइक मुह तकैत रहलाह, फेर कहलथिन-'फराक बसबऽ ? बेस, अपनेसँ चुनि लैह डीह ।'

ओहो अपन डीह चुनि लेलनि । पछबारिए टोलमे, पुरान डीहसँ हँटिकऽ । बड़का बाड़ी रहैक, बेस ऊँच जमीनपर ।

सम्पत्तिक बँटबारा-बेरमे दुनू भाइ चौंकलाह । बहुत रास हैण्डनोट रहैक । महाजनसभसँ कर्ज लेने रहथिन जेठ भाइ । कहलथिन-'गोसबरिया जमीन बेचि कर्ज सधा लैह आ जे बचैत छऽ से बाँटि लैत जाह तीन ठाम ।'

गोवर्धन आ नामी गोङिआय लगलाह । दुनू भाइ कनफुसकी कयलनि । अपन-अपन कोठली गेलाह । फेर साहस कऽ संगे पहुँचलाह— 'से कोना हैत भाइ ? एतेक रास कर्ज ! हमरासभ नहि सकब । ओ तऽ अहीं कयलिऐक, अहीं

सधबियौक । अहाँ राजा छी । ओहने खर्चो अछि । हमरासभक खर्चे की अछि ? कथीक कर्ज हैत हमरालोकनिकेँ ?"

श्रीकान्त चौधरी विस्मयसँ अवाक् रहि गेलाह । दुनू भाइकेँ एतेक बजबाक साहस भऽ गेलनि हुनक सोझाँ ? क्रोधे बेसम्हार होइत मोनकेँ सम्हारैत कहलथिन–'बेस, कर्ज-बर्ज हमरे रहत । तोँलोकनि प्रसन्न रहऽ ।'

गाममे क्यो प्रसन्न नहि भेलनि अइ निर्णयसँ–'एना तऽ तबाह भय जयताह बड़का मालिक । एतेक रास गोसबारा कर्ज आ सभ टा ढनमनायल घर-द्वार । नव बनबऽ पड़तनि सभ ।' मुदा ककरो बजबाक साहस नहि भेलैक— ने गाममे, ने घरमे ।

नामी आ गोवर्धने डेराइत बाजल रहथि-'सभ टा तऽ भऽ गेल । मुदा बड़की बहिन, छोटकी बहिन छथि । हुनकर की हेतनि ?"

श्रीकान्त ओहिना अविचल भावसँ कहलथिन–'पूछि लहुन दुनूकेँ, जिम्हर रहबाक मोन होइनि ।'

बड़की दाइ सामने अयलीह । आँखि लाल रहनि आ शरीर आवेशसँ तनल–'ई दुनू राखत हमरा ? ई दुनू बहुक गुलाम । तोरालोकनिकेँ एहन साहस कोना भेलौक ? माय गोवर्धनक जन्म दितहि मरि गेलि रहय । दुनूकेँ पोसलियौक हम । फेर बाबूओ नहि रहलाह । जेठ भाइ बाप जकाँ रखलकौ दुनूकेँ । तकरा संग अन्याय करैत लाज नहि भेलौ दुनूकेँ ? आ, तोँ दुनू हमरा रखबेँ ? थू...!'

दुनू भाइ डरे चुप्प रहलाह— बहिनक तामस बूझल छलनि । छोटकी दाइ सुद्ध आ शान्त छलीह । बजौलकनि तँ कहलथिन-'भरिजन्म दुनू बहिन संग रहलहुँ । जतऽ बहिन रहतीह, ओतहि हमहूँ रहब ।'

श्रीकान्त प्रसन्नतासँ कहलथिन-'बेस, तखन सैह होअय ।'

गोवर्धन आ नामी प्रसन्न भऽ गेलाह । ओ दुनू अइ भारसँ बचऽ चाहैत छलाह । मुदा लोक-लाजे चर्चा करब आवश्यक छलनि । एकबेर फेर दबल स्वरेँ कहलथिन-'अहाँकेँ असगर भार भऽ जायत भाइ ! कही तऽ किछु अन्न-पानि हमरोलोकनि...'

बड़की दाइ फेर गरजलीह-'तोहर अन्न छूबौक हम ! एहन निर्लज्ज प्रस्ताव करबाक साहस कोना भेलौक तोहर ?...'

दुनू भाइ सिटपिटाकऽ विदा भेलाह ।

ओ बात सेहो बड़ पुरान भऽ गेल छैक । दुनू बहिन बड़ बूढ़ि भऽ गेलि छलीह आ मतिभ्रममे पड़लि चोराकऽ माछ-मासु खा लैत छलीह ।

गौरी पकड़लथिन तँ तीन बेर नहबौलथिन, दस हजार फज्जति कयलथिन । मुदा फेर वैह चालि । रविकेँ सेहो ओ खेल नीक लगैक । रिकबीमे माछ-मासु लऽ हुनके देखा-देखा खाय लागल आ दुनू देखिते नेहोरा करऽ लगथिन–'कने हमरो दे बाउ...ककरो कहिअहिक नहि ।'

कोठली दुनू बहिनक एक्के रहनि । पुबरिया घरक कोठली— फूसक । भूकम्पक बाद बनल रहैक । खसलाहा कोठाक नीक-नीक खम्हा लागल रहैक ओइमे आ चारमे रहैक चुनल-चुनल बाँस । दरबज्जा-चौखठि कोठे महक, खूब पैघ, तेहने मजगूत । दू टा कोठली छैक ओइ घरमे । एक टामे दुनू बहिन- छोटकी दाइ, बड़की दाइ रहैत छलीह आ दोसरमे श्रीकान्त चौधरी अपने । भूकम्पक बाद किछु दिन सभटा परिवार एही एक टा घरमे रहनि ।

फेर पछबरिया घर ठाढ़ भेलनि–पक्काक । ओहूमे दू टा कोठली रहैक–एक टामे रहथि मीरा आ दोसरमे मीराक नेनासभक संग मंगला आ गौरी । राम आ लाल दलानेमे रहैत छलाह । दलान कोन, पुबरिया घरक ओसारा ! मीरा छतक कड़ीसँ फाँसी लगा लेलनि तँ किछु दिन ओइ कोठलीमे क्यो नहि रहलैक । फेर रामक विवाह भेलनि । वैह कोठली भेटलनि । ओहो कनियाँ नहि बचलीह–तँ कोठली एकदम अलच्छ भऽ गेलैक । ओइमे वस्तु-जात राखि देल गेलैक ।

बाप आ कनियाँक मुइलाक बहुत बाद राम एक टा आर घर बनौलनि–पक्का ! पूरा पक्का नहि, देबाल पक्का रहैक, ऊपरसँ टीन । उतरबरिया कातमे । ओइमे दू टा कोठली रहैक । एक टामे राम अपने रहैत छलाह आ दोसरमे लाल आ हुनक परिवार । रवि नेन्नामे लालकाकिए लग सुतैत छल, हुनके दूध पीबि पैघ भेल आ कने पैघ होइत देरी ओकरो चौकी पछबरिया घरक कोठलीमे चल गेलैक । मोहन कालेजमे पढ़ऽ लेल दरभंगा चल गेल छल आ विक्रम हुनके डेरामे रहि स्कूलमे पढ़ैत छल, गंगाक विवाह भऽ गेलैक एगारहममे आ ओ सासुर चल गेलि । पछबरिया घरक ओइ कोठलीमे मंगला आ गौरीक संग रवि आ मनोज— लालक बेटा मनोज ! मनोजोसँ छोट तीनू बेटे छलनि–लल्लू, बौआ आ छोटकू । तीनू मायक संग सुतैत छल ।

मनोज आ रवि सभ राति कहैक–'बाबी, खिस्सा कहू ।' आ मंगलाक खिस्सा शुरू भऽ जाइनि । नहि जानि, कतेक खिस्सा अबैत छलनि । जा धरि दुनू

सूति नहि रहय, मंगला खिस्सा कहिते जाथिन । कतेको राति गौरी डँटबो करथिन–'मुँह नै दुखाइत छऽ तोहर मंगला ! धन कही अइ बकबकके ँ ! छौंड़ादुनूके ँ बहसौने जाइत छहक ।'

मंगला हँसिकऽ टारि देथिन । दुनू छौँड़ा खिसिया उठय । ओकरा छोटकी बाबी नहि सोहाइ । दिन भरि खटपट— ई नहि कर, ओ नहि कर । रातियोके ँ चैन नहि— खिस्सा बड़ भेलैक, आब सूत ! डाही बुढ़िया !

बाबीक दुलारू छल दूनू । लालकाकियो रवि लेल जान दैत छलथिन– कतेक बेर गामक लोक टोकि दैनि–'क्यो कहत जे अहाँक अपन मनोजोसँ बेसी । कतेक बेर गामक लोक टोकि दैनि–'क्यो कहत जे अहाँक अपन बेटा अछि मनोज ! प्राण अँटकल रहैत अछि रविपर । जेना वैह अपन पेटक जनमल होअय !'

पेटसँ जन्म नहि देने छलथिन लालकाकी, मुदा स्नेह अपन मायसँ बेसी देने छलथिन । पहिने रविके ँ दूध पिया तखन मनोजके ँ पियबैत छलथिन । भनसामे पहिल थारी सभ दिन रविके ँ दैत छलथिन ।

राम निश्चिन्त छलाह । कनियाँक मुइलाक बाद एक टा भारी चिन्ता माथपर रहनि– के देखतैक अइ बिनमायक नेनाके ँ ? लालक कनियाँ ओ चिन्ता दूर कऽ देने छलथिन ।

रामके ँ अधिक काल सोचिकऽ आश्चर्य होइ छलनि जे कोना कनियाँ अपन मृत्युक बात बूझि गेलि छलैक । जहियासँ रवि पेटमे अयलैक आ शरीर पसरब शुरू भेलैक, अधिक काल पेटपर हाथ फैरैत कहैक–'ई हमर जान लऽ कऽ रहत।'

राम डाँटि देथिन–'केहन अशुभ बात बजैत छी ! पहिल सन्तान थिक अपन । ई रक्षक हैत कि अहाँक प्राण लेत ?'

ओ ओहिना हँसैत कहैक— 'सत्ते कहैत छी हम ! अहाँ तऽ सभ टा देखब । सन्तानोके ँ आ आरो बहुत-किछु । मुदा हम नहि रहब । हम नहि देखि सकब सभ किछु । अहाँ तऽ दोसर लैए आनब ।'

राम एकदम बिगड़ि जाथिन–'अल्ल-बल्ल जुनि बाजू । दोसर आनऽवला पुरुष नहि छी हम ।'

कनियाँ तैयो हँसिते कहैक–'सभ पुरुष अहिना बजैत अछि । मुदा हम अधलाह नहि मानब । लऽ अबस्से आनब । बिनमायक नेन्नाके ँ के देखतैक ?...'

'हरगिज नहि ।' राम जोरसँ चिचिया उठल छलाह ।

आ, सत्ते ओ नहि अनलनि ककरो । लालक कनियाँ माय बनलथिन रविक । ओ पूजा-पाठ आ अध्ययन-चिन्तनमे लागि गेलाह ।

मायके ँ मुदा चिन्ता रहनि । एक बेर बुझौलथिन–'एतेक कम्म वयसमे एना दुनियाँ सँ मुँह नहि मोड़ऽ राम ! वयसे की भेल छऽ एखन ? बाइसक छलऽ तऽ कनियाँ मुइलथुन । रवि तीन बरखक भेल । लालक कनियाँ सम्हारि लेलथिन । मुदा, अपना बारेमे सोचऽ, बड़की टा जिनगी सामने छऽ...। लोकके ँ बिसरैत देरी होइ छै ?"

रामके ँ मायक बातपर हँसी लगलनि । माय सभ दिन अनके बारेमे सोचैत रहलैक आ हुनका अपना बारेमे सोचऽ कहि रहलि छलनि । कहलथिन–'नै माय, आब रहऽ दे एहिना ! रविक माय नहि बिसरै छथि...। फेर रवि अछि, तोँ सभ छेँ, आर की चाही हमरा ?'

ओ ओहिना रहि गेला । बापक किछु स्वभाव आयल छलनि राममे । भोरे उठैत छलाह । एक घण्टा टहलि अबैत छलाह । ओहिना हाथमे छड़ी आ नोसिदानी । बाप जकाँ हुनकासँ क्यो डेराइत नहि छलनि । सभ हँसि-हँसि प्रणाम करै छलनि, दुख-सुख कहैत छलनि । टहलिकऽ घुरैत छलाह तँ स्नान कऽ पाठ करऽ लगैत छलाह- कखनो वाल्मीकि रामायण, कखनो महाभारत, कखनो गीता । गृहस्थीक चिन्तासँ लाल मुक्त कऽ देने छलथिन । खेत-पथार उपजा-बारी सभ टा देखैत छलथिन । गाम मौजे सभ ठाम वैह जाइत छलथिन । रामके ँ कोनो फिकिर नहि रहैत छलनि ।

भोजनक समय बापे जकाँ निश्चित छलनि— दस बजे नहि, बारह बजे । एक्को मिनट एम्हर-ओम्हर नहि । बाप जकाँ भोजनक उपरान्त सुतैत नहि छलाह । अपन कोठलीमे पड़ल-पड़ल पोथी उनटबैत रहैत छलाह— संस्कृत...हिन्दी...अंग्रेजी... बंगला...! सभ भाषाक पुस्तक । धर्मग्रन्थ, कथा-उपन्यास, निबन्ध-चिन्तन, सभ किछु छलनि हुनकर आलमारीमे । बाप यत्नपूर्वक बी.ए. तक पढ़ौने छलथिन । लाल तँ मैट्रिक पास नहि कऽ सकलाह ।

रवि अधिक काल बापक बिछौनपर चढ़ि जाय–'अहाँ एकसर की सब पढ़ैत रहैत छिऐ बाबू ? हमहूँ पढ़ब ।'

राम संगे सुता लैत छलाह बेटाके ँ–'अबस्स पढ़ा देब । मुदा ईसभ पढ़ऽ लेल कने पैघ होबऽ पड़त । अखन ई श्लोक पढ़ू— शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं...।'

रवि दोहराबऽ लगैत छल । स्मरण-शक्ति तीव्र छलैक । दुइए बेर दोहरयलाक बाद कहैक-'आब सुनि लियऽ बाबू !'

रामक मोन गह्वरित भऽ जाइनि । बेटा तेज छनि, नाम करतनि । एकर माय रहितैक तँ ओकरो मोन...

मुदा, रवि बेसी सोचऽ नहि दैनि-'की सोचऽ लगलहुँ ? आरो पढ़ाउ ! अंग्रेजी पढ़ब आब...'

आ बाप घोकबऽ लगलथिन-'बाबा ब्लैकशिप'

रवि बीचेमे टोकि दैनि-'ई अबैए बाबू ! ओही दिन तऽ सिखौने रही । सुनि लियऽ...'

राम फेर शुरू करथि— 'ट्विंकल-ट्विंकल लिटल स्टार...'

रवि फेर टोकि दैनि-'अहाँकेँ तऽ किछुओ मोन नहि रहैत अछि । ईहो तऽ सिखौने रही...सुनि लियऽ...

रामक छाती गर्वसँ फूलऽ लगनि । रविकेँ किछुओ नहि बिसरैत छलैक । एकबेर सुनलक कि कण्ठस्थ ।

गामक पण्डित जी तँ अवाके रहि गेलथिन । गाम भरिकेँ कथा कहैत छलथिन पण्डित जी । एक दिन भरल सभामे सभ गामवलाकेँ ललकारलथिन-'यैह श्लोक पढ़ि रावण शिवजीक पूजा करै छल । बड़ कठिन छैक एकर उच्चारण । एतेक पढ़ल-लिखल बाबू-भैया छी, करू एकर सही उच्चारण तऽ मानि जाइ ।' आ पंडितजी पढ़ऽ लगलथिन— 'जटा-कटा...'

भरि गामक लोक सकदम्म छल । रवि हाइ स्कूलमे गेले रहय तावत । ऊठिकऽ ठाढ़ भेल । कहलकनि-'हमरा दियऽ पोथी ।'

आ, धड़-धड़ तीन बेर स्पष्ट स्वरमे पढ़ि देलकनि आ फेर पोथी पंडितजीकेँ दैत कहलकनि-'आब ओहिना सुनि लियऽ-

'जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिंपनिर्झरीविलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि...'

पंडितजी ऊठि छातीसँ लगा लेलथिन ।

से बादक गप्प छैक । तहिया रवि हाइ स्कूलमे रहय । ओकर प्रतिभा तँ बच्चेसँ स्पष्ट होबऽ लागल रहैक ।

मुदा, रहय बड़ उकट्ठी । भरि गामकेँ आजिज कऽ दैक । सभक बाड़ी-झाड़ीक आम-लताम सुड़रि लैक । लगासँ झाँटि दैक । दोसराइतमे रहैक कविता, उतरबारि टोलक वसन्त ठाकुरक बेटी कविता । दुनूकेँ धार-पोखरि साँप-बीछ कथूक डर नहि रहैक । ने कोनो समयक ठेकान । भोर-दुपहरिया-साँझ— कखनो कोम्हरोसँ प्रकट भऽ जाय दुनू कोनो टोलमे, आ टोलमे आफत मचि जाइ ।

भरि गाममे युगल जोड़ी विख्यात रहैक— रवि आ कविता । कविता आ रवि ।

भालसरीक गाछ तर कविता पहिनहिसँ ठाढ़ि रहैक— आने दिन जकाँ ।

रवि स्कूल दिससँ बस्ता लेने दौड़ल आयल । बस्ता कविताक हाथमे दऽ पैघ-पैघ ढेपा फेकऽ लागल । लाल-लाल भालसरी बड़ ऊँचपर छलैक, निशाना बहकि जाइ । दौड़िकऽ सामनेक टाटसँ झीकि एक टा झटहा बनौलक आ फेकलक जुमाकऽ पाकल भालसरी दिस । पाकल-संग काँचो झड़लैक । लाल-लाल दू टा पाकल भालसरी कविताकेँ दैत रवि कहलकै-'ले, खो ।'

कविता एक टा भालसरी लैत कहलकै-'एक टा तोहूँ खो ।'

रवि गप्पदऽ भालसरी मुँहमे राखि झटहा फेकऽ लागल । कविता रोकलकै-'छोड़ भालसरी आइ । आइ नामी बाबाक बाड़ीमे चल । बड़ लताम पाकल छै ।'

दुनू नामी बाबाक बाड़ीमे नुकाकऽ बैसल । डम्हायल-पाकल लताम लुधकल छलैक । पहिने कविता नीचेमे ठाढ़ि रहलि । रवि दू-चारि टा लताम खसा देलकै । बाँकी अपने पेन्टक पाकिटमे कोचऽ लागल । कविताकेँ नहि रहि भेलैक । ओहो गाछपर चढ़ि गेलि आ लागल दुनू डारिपर बैसि दकड़ऽ ।

कोम्हर बाटे नामी बाबू बाड़ीमे अयलथिन, से दुनूमे क्यो नहि देखलकै । नामी बाबू गाछ लग आबि गरजलाह-'के ? के अछि गाछपर ?'

रवि सकपकायल । कविता डरे ओकर पाँजरमे सटकि गेलैक । पड़यबाक बाट लग बाबा ठाढ़ छलथिन । साहस कऽ बाजल– 'हम छी बाबा रब्बी...

–'आ संगमे के छऽ तोहर ?' नामी बाबू पहिनेसँ बेसी जोरसँ गरजलाह ।

कविता डरे आर सुटकि गेलैक रविक पाँजरमे । रवि कहुना साहस करैत बाजल–'कविता छै बाबा !'

–'ओ ! दुनू युगल जोड़ी छी । उतर, उतर नीचाँ । आइ दुनूक टाङ-हाथ तोड़ि दैत छियौक । हमर बाड़ीमे पैसिकऽ हमर लताम खयबाक साहस कोना भेलौक तोरालोकनिकेँ ?' नामी बाबू हाथ महक लोटा आक्रमणक मुद्रामे तानि लेलथिन ।

रवि पाँजरमे सटलि कविताकेँ संग लेने नीचाँ दिस घुसकैत बाजल–'लतामक गाछ तऽ गोसबरिया होइत छैक बाबा, चाहे ककरो बाड़ीमे रहौक ।'

नामी बाबू हाथ महक लोटा फेकलथिन । तावत कविताकेँ संग लेने नीचाँ कूदि गेल छल रवि । गाछक डारिसँ टन्न दऽ टकराकऽ लोटा बाड़ीक कोड़लाहा माँटिपर खसलैक । नामी बाबूक झपटबासँ पहिनहि दुनू छौंड़ा-छौंड़ी लंक लगौलक ।

मैदान लग पहुँचैत कविता हकमऽ लगलैक । रवियोक साँस खूब तेज भऽ गेल छलैक आ ओ घामे-पसेने तर भऽ गेल छल । रौदक कारणेँ आ रौदमे अपस्याँत दौड़लाक कारणेँ मुँह लाल भऽ गेल रहैक । तैयो ओ प्रसन्न छल आ मैदानक घासपर बैसिकऽ जोर-जोरसँ हँसऽ लागल–'बाबाकेँ लोहछा देलियनि आइ । अखन धरि तामसे बाड़ीक चेपासभकेँ लतियबैत हेताह ।'

कविता तखनो डेरायलि छलैक–'नामी बाबा कहि देथिन बाबूकेँ । जान लऽ लेताह हमर । तोरा तऽ क्यो ने किछु कहतौक तेँ निश्चिन्त हँसै छेँ । बापक दुलरुआ छेँ ।'

रवि तमसा गेल–'वाह रे डेरबुक ! एतेक डर छलौ तऽ किएक भकोसलेँ लताम हब्बर-हब्बर ! नीचोमे रहि नहि भेलौक, झट गाछेपर चढ़ि गेलेँ । पाकल लताम देखि लेर चूबऽ लगलौक ।'

कविता तमसा गेलैक–'तोरा जकाँ जिहुलाह नहि छी हम । सभक बाड़ी-झाड़ीमे साँझ-दुपहरिया हुलुक-बुलुक करैत रहैत छेँ । अपना संग-संग हमरो चोरनी बनबैत छेँ ।'

रवि एकदम तरङि गेल–'तऽ नहि आ हम्मर संग । क्यो खोशामद करऽ जाइत छौ ? स्कूलसँ घुरबाक बेरमे किएक ठाढ़ि रहैत छेँ पहिनहिसँ बाट तकैत ? अपना तऽ ने पढ़ऽ-लिखऽसँ मतलब छौक, ने काज-धाजसँ । खाली नीक-नीक खयबा लेल परान ललचैत रहैत छौ । हम तऽ पढ़ितो छी, खेलाइतो छी, तोरा जकाँ खाली चोरिविद्यामे नहि रहैत छी हम ।'

कविताक मुँह कनौन-सन भऽ गेलैक । मुँह फुलाकऽ बाजलि–'तऽ कऽ ले ने कट्टीस ! किएक रहैत छेँ चोरनीक संग ?'

रवि बिच्चेमे तरङैत बाजल–'हँ, कट्टीस, हजार बेर कट्टीस ।' पाकिटसँ बाहर कऽ सभ टा लताम जुमाकऽ दूर फेकि देलकै आ दौड़ैत गाम दिस चल गेल ।

ओइ मैदानमे दुपहरियाक जरैत रौदमे ठाढ़ि कविता कानऽ लागलि । कनिते ओहो गाम दिस विदा भेलि । मैदानसँ दू टा रास्ता गाम दिस जाइत छलैक । एक टा मैदानक ठीक सोझे उत्तर दिस । कविता ओही बाटपर विदा भेलि । रवि दोसर बाट दने गेल छलैक । मैदानसँ रस्ता पश्चिमो दिस जाइत छलैक आ ओहो बाट सोझे गाम दिस जाइत छलैक- पश्चिम मुहेँ । रवि ओही बाटे गेल छल । ओकर घर पछबारि टोलमे छलैक ।

कविताक घर छलैक उतरबारि टोलमे । मैदानक बाद ठीक बाटक कातमे अपर प्राइमरी स्कूल छलैक । माँटिक भीत आ चारपर खढ़ । स्कूलक बाद छलैक गाछिए गाछी, खाली कलमी आमक गाछी । तकर बाद बँसबिट्टी आ बँसबिट्टीक बाद उतरबारि टोल ।

कविता कनिते घर दिस बिदा भेलि छलि । बँसबिट्टीसँ आगू अबिते अपन घघरी उठा मुँह-कान पोछि लेलक आ बड़ गम्भीर भऽकऽ आङनमे पैसलि । ओकर बाप वसन्त पुबरिया ओसारापर चौकीपर बैसल छलाह । देखिते कूदिकऽ आङनमे आबि गेलाह–'कहाँ गेलि छलेँ ?'

कविता बापक प्रचण्ड रूप देखि सकदम्म भऽ गेलि । मुँहसँ बकार नहि बहरयलैक । ओकरा गुम्म देखि बापक क्रोध बढ़ि गेलैक–'अखन देखू ने लच्छन जेना एहन सद्ध क्यो हेबे ने करय दोसर ? आ दुपहरियामे एक टा नढ़ेर छौंड़ा संगे गाछी-बिरछी बौआयति, गाछ-वृक्ष चढ़ति । आ, हमरा सभसँ गारि-सराप आ उपराग सुनाओत । आइ टाङ तोड़िकऽ घर बैसा दैत छियौक तोरा ।'

वसन्त सत्ते टाङ तोड़बाक व्योँत करऽ लगलथिन । जाहि पीढ़ीपर बैसल छलाह, तकरे उठा डेङबऽ लगलथिन । दुइए पीढ़ी लगलैक, ताहीमे किकिया उठलि कविता । तावत माय दौड़िकऽ बीचमे आबि गेलैक–'बताह भेल छी अहाँ ! दस वर्षक बेटी अछि । हाथ-पयर तोड़ि देबैक तऽ के लऽ जयतैक अपना घर ?'

वसन्तक हाथ ठमकि गेलनि । पीढ़ी हाथसँ खसि पड़लनि । किकिआइत कविताकेँ माय छातीसँ सटौने घर लऽ गेलथिन ।

पीढ़ी समधानिकऽ लागल छलैक । एक टा पीठपर आ दोसर ठेहुनपर । पीठ फूटि गेल छलैक आ शोणित छलछला गेल छलैक । ठेहुनपर बड़का टा टेटर बहार भऽ गेल छलैक । मायक संग कोठलीमे अबिते जमीनपर ओंघरा गेलि कविता ।

वसन्त ओहिना अवसन्न ठाढ़ छलाह आङनमे । कविताक माय ठीक कहैत अछि । बेटी दस वर्षक भेलि । नवम छैके, दमस शुरू होबऽमे कतेक देरी लगलैक ? कन्यादानक जोगार कहुना करहि पड़त । एना बाड़ी-झाड़ी बौआयति तँ नाक कटि जायत कहियो ।

कोठलीमे माँटिपर ओंघरायलि कविताकेँ पीढ़ीक मारिसँ बेसी रविक बातक टीस छलैक–'हमरा चोरनी आ जिहुलाहि कहलक ! जकरे ले' चोरि करू सैह कहय चोरा !'

चोर रवियोक मोनमे छलैक ।

ओइ दिन कविताकेँ डाँटि सभ टा लताम फेकि गामदिस पड़ा गेल छल। बाटेमे लागल छलैक जे अन्याय भऽ गेलैक, घूरि जयबाक चाहिऐक । मुदा, एक टा छौंड़ी लग एना हारि मानिकऽ घुरबामे ओकरा लाज भेलैक । ओ दौड़ल आङन चल गेल । लालकाकी देखिते टोलककै–'ई तोहर स्कूलसँ घुरबाक बेर छऽ ? कहाँ छलऽ एतेक काल ?'

रवि गुम्म ठाढ़ रहल । काकी लग अयलैक–'मुँह किएक एतेक लाल छऽ ? जर तऽ नहि छऽ !'

लालकाकी आरो लग आबि देह छुलकै । आश्वस्त होइत बजलैक–'देह तऽ ठंढा छऽ । खाली रौदमे बौअयलासँ माथ गर्म छऽ । चलऽ, खा पी लैह । बस्ता की भेलौक ?'

ओकरा धक दऽ मोन पड़लैक जे बस्ता तँ नामी बाबाक बाड़ीमे माँटिएपर पड़ल रहि गेलैक ! क्यो उठाकऽ लऽ गेल होयतैक ।

मुदा से नहि भेलैक । साँझ खन वैह बस्ता देखबैत बाबू पुछलथिन– 'कहाँ छोड़ने छलऽ ई बस्ता ?'

रवि निडर जकाँ बाजल–'जतऽ अहाँके भेटल ।'

राम कने तमसाइत कहलथिन–'हमरा नहि भेटल अछि, नामीकाका दऽ गेलाह । किएक तोड़लहुन हुनकर लताम ?'

रवि बापक दुलरुआ छल । कने अगराइत बाजल–'तोड़लियनि तऽ की भेलनि ? लतामे छलनि की सोना-चानी ? आ, फल-फलहारी तऽ सभक गाछीक गोसबरिये होइत छैक । सैह तऽ कहलियनि बाबाकेँ ! झट लोटा चला देलनि । लगैत तऽ कपारो फूटि जाइत ।'

रामकेँ हँसी लागि गेलनि । पीठपर दुलारसँ थापर मारैत कहलथिन–'बड़ पाजी भऽ गेल छेँ तोँ ! बाबाकेँ क्यो एहन बात कहैत छैक ?'

रवि आरो छिड़िआइत बाजल–'कोन खराप बात कहलियनि हम ? लताम गोसबरिया नहि छैक तऽ की खाली हुनके लगाओल छनि ? आ हुनके छनि तऽ की भेलैक ? दस टा खयने छियनि, अप्पन बाड़ीक बीस टा घुरा देबनि । हम्मर कप्पार फुटैत तऽ कोना घुरबितथि ओ ?'

बेटाक बुझनुक सन गप्पपर रामकेँ बड़ हँसी लगलनि । बापकेँ हँसैत देखि रविकेँ कविता मोन पड़लैक । ओ ठीके कहने छलैक–'तोरा तऽ क्यो ने किछु कहतौक, मुदा बाबू जान लऽ लेताह हम्मर ।' नहि जानि, की हाल भेलैक बेचारीक ? ओकर बाप बड़ कसाइ छैक । छड़पिटा देने हेतैक । नामीबाबा अबस्से उपराग देने हेथिन । काल्हि पूछि लेबैक कवितासँ ।

मुदा, पुछबाक अवसर नहि भेटलैक । प्रात भेने स्कूलमे छुट्टी होइते पड़ायल भालसरीक गाछ तर । कविता नहि छलैक । ढेपा-झटहा फेकैत हाथ दुखा गेलैक । काँच-पाकल भालसरीक पथार लागि गेलैक । कविता नहि अयलैक । रौदक धाहीसँ माथ चनकऽ लगलैक । भालसरीक छाया ओइ धाहीसँ बचा नहि सकलैक । तैयो ओ गाछे तर झटहा फेकैत ठाढ़ रहल । आङनसँ खबासिन अयलैक आ ओकरा पकड़ि लालकाकीक लग आङन लऽ गेलैक ।

मुदा कविताकेँ के पकड़ि कऽ लऽ गेलैक ? दिन-सप्ताह आ मासो बीति गेलैक, कविताक पता नहि लगलैक । ओकर आङन जयबाक साहसे नहि भेलैक । झगड़ा कऽकऽ गेल छलैक, कोन ठेकान, अङनामे फेर बेइज्जति कऽ दैक ! खटखटाहि छैक छौँड़ी । तामसमे बिढ़नी जकाँ बीन्हि लैत छैक ।

ओकरा बड़ असुविधा होबऽ लगलैक । भालसरीक गाछपर झटहा फेकैत छल तँ बस्ता लेने कविते ठाढ़ि रहैत छलैक । आमक गाछक यदि टिकुला तोड़ैत

छल तँ कविते बिछैत छलैक आ मन्दिरक सिलौटपर पीसिकऽ बढ़ियाँ चटनी बनबैत छलैक, घरसँ पुड़ियामे नुकाकऽ नोन-मरचाइ अनैत छलैक । जखन डबरामे हेलिकऽ भेँटक फूल बाहर करैत छल, तँ ओकर डण्टीकेँ सोहि-सोहिकऽ माला कविते बनबैत छलैक । वर-कनियाँक खेलमे ओकर कनियो वैह बनैत छलैक, रुस्सा-फुल्ली करैत छलैक, मनौन कयलापर मानियो जाइत छलैक ।

मुदा ओइ दिन जे बिगड़िकऽ गेलैक से गामेसँ जेना निपत्ता भऽ गेलैक कविता !

रविकेँ नहि रहि भेलैक । एक दिन स्कूलसँ अबिते बिनखयने-पीने कविताक आङनमे पैसि गेल । भनसाघरमे माय लग छलैक कविता । ओकरा देखियोकऽ बाहर नहि अयलैक । बाहर अयलैक ओकर माय-'की लेब बौआ ?'

-'किछु नहि काकी ! कविताकेँ बजबऽ आयल छलिऐक खेलाय बास्ते ।'

-'आब नहि जैत बौआ ओ ! अही शुद्धमे ओकर बियाह छैक । अहाँ खेलाउ गऽ । ओकरा छोड़ि दियौक । ओकरा आब खेल-कूदसँ कोन मतलब ? चारि टा लूरि सीखत तऽ यश देत लोक हमरा ।'

रवि अवाक् रहि गेल । कविताकेँ आब खेल-कूदसँ मतलब नहि छैक । बड़का पुरखिन बनि गेलि, बियाह हेतैक । ओकरे बतारी तऽ छैक ! लालकाकी कहैत छलैक जे दुनू एक्के दिन जनमल छल । भोरमे रवि आ साँझमे कविता । बारह घंटा छोट छैक ओकरासँ । आ, तकर बियाह हेतैक !

एही बातपर बाबी सङे अड़ि गेल रवि-'कविताक बियाह नहि हेतैक बाबी !'

-'किएक नहि हेतैक ? सभ टा ठीक भऽ गेलैक । सिद्धान्ते हैब बाँकी छैक । बियाह किएक रुकतैक ?'

-'हम रोकबैक !' रवि दृढ़तापूर्वक बाजल-'ओकर बियाह कोना हैतैक अखन ? हमरे बतारी तऽ अछि ! हमरा सङे के खेलायत तखन ? नै तऽ हमहूँ बियाह करब ?'

बाबी हँसऽ लगलैक-'तोहूँ बियाह करबेँ ? तोँ अखन नेन्ना छेँ, कने आर पैघ भऽ ले, खूब धूमधामसँ बियाह हेतौक ! मुदा कविता छैक छौँड़ी, दस वर्षक भेलैक, ओकर बियाह तऽ आवश्यके छैक ।'

रवि जिद करऽ लगलै-'नै, ओकर बियाह हेतैक तऽ हमहूँ बियाह करब !

हम ओकरेसँ बियाह करब । वर-कनियाँक खेलमे कतेक बेर बियाह भेल अछि ओकरा सङ ।'

'पागल !' बाबी हँसलैक-'ओ खेल छलै । तोहर ओकर बियाह कोना हेतौक ? एक्के गामक गप्प । बहिन जकाँ छौक तोहर ! आ, कहाँ तोँ आ कहाँ ओ ! ओकरासँ बियाह करबेँ तऽ कनिये जब्बर लगतौक । कने पैघ भऽ जो, बियाह बादमे करा देबौ तोहर...खूब सुन्नरि कनियाँसँ ।'

-'तखन ओकरो बियाह नहि हेतैक ! नौ वर्षक छौँड़ाक बियाह नहि हेतैक तऽ नौ वर्षक छौँड़ीक बियाह कोना हेतैक ? ओकर बियाह हमरा सन छोट वरसँ नहि हेतैक तऽ की बूढ़ वरसँ हेतैक ?

बाबी ओहिना हँसैत कहलकै-'होइ छै बौआ, बूढ़ो वरसँ होइत छैक बियाह । हम्मर बियाह भेल छल तऽ कतेक टा रही- बूझल छौ ? मात्र पाँच वर्षक । आ, तोहर बाबा छलखुन द्वितीय वर । पहिल कनियाँ मरि गेल रहनि । पचीसम वयस रहनि । कोबरमे बैसल रहथुन तऽ हमहूँ जाकऽ कोरामे बैसि रहियनि-'चौधरी, हमरो पान-सुपारी दियऽ ।' सभ पकड़िकऽ लऽ आनय । माय छाती पीटऽ लागल । लोकसभ कुचेष्टा करय । मुदा, हम बेर-बेर कोबरेमे हुनके लग जा बैसियनि ।

बाबीकेँ बड़ हँसी लागि गेलैक पुरना बात मोन पड़लापर । रवियोकेँ तहिना हँसी लगलैक । पुछलकै-'अहाँ बाबाकेँ चौधरी कहै छलियनि आ ओ अहाँकेँ की कहैत छलाह बाबी ?'

बाबी ओहिना हँसैत कहलकै- ''कहिओ की किछु कहलनि ? माय-बाप नाम देने छलाह-मंगला । सासु नाम देलनि गुणमन्ती बहुरिया । गामक लोक कहऽ लागल मीराक माय । तोहर जेठकी पीसीक नाम छलनि मीरा । हमरोसँ पहने विदा होयबाक जल्दी छलनि हुनका, तोँ तऽ देखनहुँ ने छहुन । तोहर बापोसँ जेठ छलीह । हँ, तऽ तोहर बाबाक गप्प कहैत छलियौक । हुनकासँ कहियो कि मुँहा-मुँही गप्पो भेल ! धीया-पूता भेल । समय बितैत गेल । सुतली राति घर जाइत छलियनि । मुदा बुढ़ारीमे नहि जानि की भेलनि । हरदम रट मारैत छलाह- 'सुनै छी, कतऽ गेलहुँ ?' हम तऽ कतहु नहि गेलहुँ, अपने छोड़ि गेला सभकेँ ।'' बाबीक हँसैत आकृति परिवर्तित भऽ गेलैक आ दूनू आँखिमे नोर भरि गेलैक ।

रवि अइ परिवर्तनपर अवाक् रहि गेल । बाबी नहि जानि की-सभ कहि गेलैक । ओ तऽ कविताक बियाहक गप्प करऽ चाहैत छल आ बाबी कोनदन गप्प

लऽकऽ बैसि गेलैक आ फेर कानहु लगलैक । बाबीक देह डोलबैत कहलकै रवि–'कनै किएक छी बाबी ? की भेल ?'

–'किछु ने बाउ, कहाँ किछु भेल ? आँखिमे किछु गड़ि गेल अछि, अनेरो नोराइत रहैत अछि । मुदा अहाँक तऽ हँसबा-खेलयबाक दिन अछि । जाउ, खेलाउ गऽ ।'

–'ककरा संग खेलाउ बाबी ? कविताकेँ घरसँ नहि बहराय दैत छैक।'

–'तऽ दोसर संगी ताकि लियऽ । एतेक सङ्तुरिया अछि गाममे ! घरेमे मनोज अछि ।'

–'नै, अनका संग नहि खेलायब हम । कवितेक संग खेलायब । ओकरा बियाह नहि करऽ देबै, किन्नहु नहि । वर-वरियातीकेँ मारिकऽ भगा देबैक ।'

बियाहमे मुदा देरी छलैक ।

रविकेँ कवितापर तामस भेलैक । कने एक टा बात कहि देलकै तकर एतेक तामस ! चुपचाप बियाह करऽ लेल तैयार भऽ गेलैक, पड़ाकऽ किएक ने अबैत छैक ? कतेक दिन भऽ गेल, खूब खेलायब दुनू गोटे । मन्नूकाकाक बाड़ीमे फरसा लुधकल छलैक, सभ टा तोड़िकऽ देबैक खोँइछमे ।

एक दिन देखलकै तँ कविता बड़की टा लगलैक । बड़की टा नूआमे लदफद करैत । ई तँ लदगोबर भऽ गेलैक । ई कोना खेलयतैक ओकरा संग ? कोना गाछपर चढ़तैक ?

तैयो कहलकै ओइ दिन–'चल ने खेलाय लेल धारक कात ! बहुत रास घर बना देबौक— वर-कनियाँ खेलायब ।'

कविता आँखि पसारैत आश्चर्यसँ बजलैक- 'तोरा बूझल नहि छौक ? हमर बियाह ठीक भऽ गेल । तोरा संगे वर-कनियाँ कोना खेलेबौ आब ? पाप लागत।'

कविता देखहिमे पैघ नहि लगैत छलैक, गप्पो पकठायल करैत छलैक । तमसाकऽ रवि कहलकै-'कथीक पाप लगतौक ? कोनो कनियाँ पहिले बेर बनबेँ हमर ? हम कोनो तोहर ओइ बुढ़बा वरसँ खराब छी ? अगराइ कथीपर छेँ ?'

रविकेँ क्यो कहने रहैक जे कविताक होबऽवला वरक वयस बेसी छैक ।

कवितो तमसाकऽ कहलकै-'आ तोँ कथीपर अगराइ छेँ ? खाली मुँह-कान गोर-नार रहने की हेतौ, छेँ तऽ थोपले-थापल । ऊपरसँ अबण्ड आ चोर-चहार ।'

चटदऽ चाट मारि देलकै रवि । मुँहेपर लगलैक । कनलैक नहि कविता । कने काल कन्हुआयलि ठाढ़ि रहलैक । आ, फेर जाइत-जाइत कहलकै–'जाइ छियनि बाबूकेँ कहऽ । बिना उपराग देने नहि रहथुन आइ रामकाकाकेँ ।'

साँझमे सत्ते बमकल छलथिन बाबू–'किएक मारलहक ओकरा ? बियाह होइ लेल छैक ओकर । सासुरक लोक सुनतैक । हमरा कलंक लागत, भरि गामकेँ कलंक लगतैक ।'

रवि किछु बाजऽ चाहलक, मुदा बाबू बड़ क्रुद्ध छलथिन । दुनू गालमे दू चाट लगा देलथिन । एहि मारिसँ हतप्रभ भऽ गेल रवि ! बाबू कहियो मारने नहि छलथिन । आइ कोन एहन बात भऽ गेलैक ? ओइ छौँड़ीक एहन मान भऽ गेलैक ! एक चाट मारि देलिऐक तँ कोन अनर्थ भऽ गेलैक ! कतेक बेर तँ धुमधुमौनें हेबै । ओ दाँते हबकने हैत ।

रवि रूसिकऽ अपन कोठलीमे बन्न भऽ गेल । खयबो नहि कयलक ! लालकाकी दरबज्जा लग ठाढ़ि नेहोरा करैत रहलैक, मुदा ओ किल्ली ठोकने पड़ल रहल ।

ओइ खटखटाहि छौँड़ीक एहन मजाल ? हमरा थोपल-थापल कहलक ? अपने जेना महान सुन्नरि अछि ! सौँसे देह कलिकलिसँ सड़ल रहैत छैक, खाली आँखि-नाक निखरल रहने की हेतैक ? देह केहन लिकलिक आ सड़ल छैक ! ताहीपर एतेक गुमान ! परवाहि ककरा छैक !

परवाहि ओकरा छलैक । ओकर काज गड़बड़ाय लगलैक । ककरो बाड़ीसँ कटहर तोड़िकऽ अनैत छल तँ बऽर पकाकऽ देबऽवला नहि भेटैत छलैक । कविता बड़ बुझनुक छलैक- चुपचाप अपन भनसाघरमे बऽर पका लैत छलैक । अड़रनेबा आ मोँछक झक्खा बड़ बढ़ियाँ बनबैत छलैक । ओ जखन ककरो बाड़ीमे पैसैत छल, खूब नीक जकाँ पहरा करैत छलैक ओ । ककरो देखिते ओकरा सावधान कऽ कोनो झोँझमे सटकि जाइत छलैक । नहि जानि किएक ओइ दिन नामीबाबाक लतामपर अपनो चढ़ि गेलैक । तहिएसँ सभ टा गड़बड़ा गेल छलैक ।

ओकर पढ़ाइयो-लिखाइयो एकदम गड़बड़ा गेल रहैक । स्कूल जाइत छल

आ माटिक देबालसँ माथ टेकि बैसि जाइत छल । सबक याद करबाक इच्छे नहि होइत छलैक । पहिला क्लासक छौँड़ा-छौँड़ी ककहरा पढ़ैत रहैत छलैक-'क का ए ए कि की ए ए कु कू बदाम, के कै को कौ कं कः राम' आ ओ आँखि बन्न कयने बैसल रहैत छल । गुरुजी एक बेर टोकलथिन-'तोहर मोन किम्हर रहैत छऽ रवि ? सबको याद नहि करैत छऽ आइ-काल्हि ! तोरा तऽ एक्के बेरमे सभ टा याद होइत छऽ ! किताबो ने खोलै छऽ आइ-काल्हि भरिसक !'

गुरुजी ओकरा मानैत छलथिन । ओना सभकेँ मानैत छलथिन । तामस कम्मे काल होइत छलनि, ककरो बदमाशीपर जखन तमसाइत छलथिन तँ हिन्दीमे गरजऽ लगैत छलथिन-"आज नहीं मानेंगे । आज पोनपर डिगडिगिया बजायेंगे । हमारे आगे लालू जोगधर नही चलेगा !'

गुरुजीक तामसपर ओकरा सभ दिन हँसी लागि जाइत छलैक । मोन होइत छलैक जे पुछनि जे 'लालू जोगधर के छलैक गुरुजी ?' मुदा डरे नहि पुछैत छलनि। कहीँ ओकरोपर नहि तमसा जाथिन ! एकदिन तामसे प्रचण्ड भऽ गेलथिन गुरुजी। मुनरा बिन-कसूरे मल्हुआकेँ छड़पिटा देलकै । बदमाश छल मुनरा, अनेरो सभकेँ मारैत रहैत छलैक । ओइ दिन गुरुजीक पित्त लहरि गेलनि । खेहारिकऽ दुइए धौल देलथिन मुनराक पीठपर । छुलछुल मूतऽ लागल मुनरा ।

ओना, गुरुजीक सबकक डरे सभ छुलछुल मुतैत छल । बड़ भारी-भारी सबक दैत छलथिन । मिहिर आ नारायण ओकरे क्लासमे छलैक । डरे ओहो दुनू रविक खुशामदमे रहैत छलैक । गुरुजी अपने खाली रविक सबक सुनैत छलथिन। मिहिर आ नारायणक सबक रवि सुनैत छलैक । जहाँ गुरुजी दोसर दिस जाइत छलथिन, दूनू नेहोरा करऽ छलैक-'एक पेज तड़पा दे रब्बी, गुरुजी ओम्हर छथुन।'

आ, रवि पन्ना उनटा दैत छलैक आ गुरुजीकेँ सबक सूनि लेबाक रिपोर्ट दऽ दैत छलनि । मिहिर ओइ दिन टोकलकै-"की भेलौ रब्बी ? तोँ सबक किएक ने याद करै छैँ ? तोहीँ फँसि जयबेँ तऽ हमरा सभकेँ के बचाओत ?'

रवि तँ अपने फँसि गेल छल । कविताक फेरामे फँसि गेल छल ।

छौँड़ी बियाहक नामपर एकदम संग छोड़ि देने छलैक आ एकसर ओकर काजे नहि चलैत छलैक । संगे द्वारे एक बेर कविताकेँ कहने छलैक-'तोहूँ स्कूल आ कविता, पढ़-लिख ! हमरे बतारी तऽ छेँ, हम चौथामे छी आ तोरा 'अ आ इ ई' सेहो नहि अबैत छौक !'

कविता हँसऽ लगलैक-'पढ़ि-लिखिकऽ कोन नोकरी करबैक हम ? लूरि चाही । से भानस करऽ अबै-ए, सिआइ-कढ़ाइ सेहो सीखै छी मायसँ, गीत-नाद अबिते अछि । तोरा अबै छौ ई सभ ?'

रवि चुप्प भऽ गेल छल । लगलैक जेना कविताकेँ ओकरासँ बड़ बेसी चीज अबैत छलैक । ओ की करतै पढ़ि-लिखिकऽ ?

आ, से की खाली वैह नहि पढ़ैत छलैक ! स्कूलमे छौँड़ीसभ दुइए-तीन टा अबैत छलैक । सेहो सभ सप्ताहमे पाँच दिन नागा । गुरुजी अकच्छ-'काल्हि की भेलौक ?' उत्तर भेटनि-'माय नहि आबऽ देलक, भानस-भातमे लागलि छलैक, हम चिलका खेलाबऽ लगलिऐक ।' दोसरकेँ पुछथिन-'आ तोरा की भेलौ ?' -'हमरा काकी नहि आबऽ देलनि । कहलनि, माथमे बड़ ढील छौक, ताकि दैत छियौक । सभ दिन स्कूलमे पढ़िकऽ कोन मेमसाहेब बनबेँ ?'

मुदा कविताक गुमान तँ बिनपढ़ने-लिखने मेमसाहेबसँ बढ़िकऽ छलैक । कने ओइ दिन बात कहि देलिऐक तँ रोष लागि गेलैक । बियाहे करऽ लेल तैयार भऽ गेल । एक चाट मारि देलिऐ तँ उपराग दिया देलक । संग खेलायत किएक ने ? बड़ बियाहबाली भेलि अछि ! बड़की टा नूआ लपेटि लदफद करैत महतमानि बनलि अछि । हमरा संगी-साथीक कमी अछि ? सौँसे गाम पड़ल अछि । जकरे कहबैक, दौड़ले आओत । रेखा अछि, प्रतिमा अछि, मिहिर अछि, नारायण अछि । ओइ कलिकलिही छौँड़ीसँ कट्टीस— हजार बेर कट्टीस ।

हवेली मोहनपुरमे एखनो सभसँ पहिने मङनुए मिसर उठैत छलाह ।

सूति-ऊठि धार दिस विदा होइत छलाह । उतरबारि टोलसँ सोझे धार जाइत छलाह गाम बाटे— बिचला टोल होइत, आ हुनकर उच्च स्वर एखनो भरि गामकेँ सुनाइत छलैक— उतरबारि टोलसँ पछबारि टोल धरि— पूब आ दक्षिणमे कोनो टोल नहि छलैक । मात्र तीन टा टोल आ सय पाँचेक लोक । मङनू मिसरक स्वर सभ धरि पहुँचैत छलनि— प्रात ऊठिकऽ पाँच नाम-'हरि, बालि, कर्ण, युधिष्ठिर, परशुराम । गौतम मुनिकेँ नोत पड़ैए, गौतम मुनिकेँ नोत पड़ैए । सुमिरू पंचकन्या— अहिल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी । गौतम मुनिकेँ नोत पड़ैए..'

ई मङनू मिसरक विशिष्ट मंत्र छलनि । गौतम मुनिकेँ नोत पड़बाक अर्थ

छलनि— नोतहारीक काज होअय तँ मङनू मिसर छथि । आब मंत्रो सूनि लोक अनठा दैत छनि । नोत-पिहानमे आब लोक संकुचित भेल जाइत छल । बेसी काल घरेमे निमहि गेल, बड़ नमरल तँ टोल धरि । सत्यनारायण पूजोमे आब भरि गाम हकार नहि होइत छलैक— दुइए-चारि घरमे निमहि गेल ।

गौरीकेँ सेहो निमहि गेलनि । मङनू मिसरक धार जाइते ओहो ऊठि जाइत छलीह । बिछौनेपर प्राती शुरू भऽ जाइत छलनि-'जागिये कृपानिधान पंछी वन बोले' आ, प्राती गबैत ऊठि जाइत छलीह । क्रिया-कर्मक बाद फूल तोड़ि लैत छलीह । अबेर भेलासँ उकट्ठी छौँड़ीसभ एक्को टा कोँढ़ियो नहि छोड़ैत छलनि । फुलडाली गोसाउनिक घर राखि कान्हपर धोती आ मुँहमे दतमनि लऽ धार दिस विदा होइत छलीह— गंगा-गंगा ! जहाँ नहाइ तहाँ गंगा ! जय कमला माइ...

कमला माइक दरबारमे तकर बाद भीड़ शुरू भऽ जाइत छलनि । पहिने बड़ बेसी लोक रहनि— आब ओतेक नहि, तैयो लोक रहैत छनि । स्त्रीगण, पुरुष आ बच्चो । प्रातःस्नानक लोभे कतेक रास बच्चा भोरे ऊठि जाइत अछि । मुदा कविताक निन्ने नहि टूटैक । जहियासँ बियाह ठीक भऽ टूटि गेलैक, मायक उठबिते ओहो ऊठि जाइत छलि आ संगे धार विदा भऽ जाइत छलि । शुद्ध बीति गेलैक, बियाह नहि भेलैक । कथा क्यो मोड़ि देने छलैक । बाप शोके बिछौन धऽ लेने छलथिन । कविताकेँ हर्ष-विषाद नहि छलैक । खाली संग छुटबाक दुःख छलैक । बियाहक नामपर ओकर घरसँ बाहर निकलनाइ बन्द भऽ गेल रहैक । रविक संग बाड़िए-झाड़िए बौआयब बन्न भऽ गेल रहैक, से बन्दे रहलैक । एक बेर रवि आङन बजबऽ आयल रहैक, एक बेर बाटोमे टोकने रहैक । संग जयबाक सत्ती ओ उन्टे झगड़ा कऽ बैसलैक । फेर सभ समाप्त । रवि घूरिकऽ नहि टोकलकै । देखबो करैत छलैक तँ दोसर दिस चल जाइत छलैक । कविता भरि दिन घरेमे रहैत छलि ।

समय तैयो बीतल जाइत छलैक । भोरे माय उठा दैत छलैक आ ओ संगे प्रातःस्नान कऽ अबैत छलि । कहियो काल धारमे छोटकी बाबी टोकैत छलथिन-'तोरा देखैत नहि छियौक कविता ? रविसँ झगड़ा भेल छौ ?'

कविता हँसिकऽ रहि जाइत छलि । फेर छोटकी बाबी ओकर मायक संग फुसुर-फुसुर गप्प करऽ लगैत छलथिन । ओ बूझि जाइत छलि, ओकरे बियाहक गप्प हेतैक । भरि गामक स्त्रीगण एहिना मायकेँ टोकैत छलैक— बाट-घाट, धारक कात आ अङनोमे आबिकऽ-'की भेल ? कथा किएक टूटल ?' से की जवाब देतैक

ओकर माय ? ककरो कि बूझल छलैक ? सभ टा ठीकठाक भऽ गेलैक । सिद्धान्तक दिनो ठीक रहैक । तकर बाद नहि अयलैक । दिन बीति गेलैक ।

गामक लोककेँ बहुत रास कारण बूझल छलैक । क्यो कहैत छलैक-'गामेक लोक मोड़ि देलकै । कहि अयलैक जे छौंड़ी बड़ अगत्ती छैक...चोरनी आ छुलाहि छैक ।' क्यौ कहैक-'वसन्त गप्प नुकौने छलथिन । अपने बिकौआ छथि...पाँजि प्रथा नहि छनि, से नहि कहने छलथिन । वर पाँजिवला छलैक, पाँजिक रक्षा चाहैत छल । झूठ बजबाक फल भोगथु वसन्त ! कन्या दोषहि भऽ गेलनि, आब के करतनि जल्दी बियाह ? लोकसभ के-कहाँ उड़ा देने छनि ? बेटियो तँ तेहने सुलाक्छनि छनि !'

कविता सभ टा बूझऽ लागलि छलैक लोकक गप्प । बापक लज्जासँ झुकल घाड़ आ मायक चिन्ता । ओ सभ टा बूझऽ लागलि छलैक आ ओकर स्वभावे बदलि गेल छलैक ।

प्रातःस्नानसँ घूरि पूजा-पाठमे मायक संग दैत छलैक । फेर भनसाघर । तीन गोटेक भानस । कविता एकसरे सम्हारऽ लगलैक, मायकेँ फुरसति दऽ देलकै भनसाघरक जंजालसँ । दुनू साँझक भानस । तैयो दिन पहाड़-सन लगैक । दुपहरियामे चरखा लऽ बैसि जाय कविता । मेहीँ-मेहीँ सूत काटय । मायक सूत आ पोला मोटगर होइत छलैक । सियाइ-कढ़ाइमे सेहो कविता जल्दिए यश कमा लेलक । अङने-अङने जा लुरिगरि काकी-भौजीसँ डिजाइन सीखि लेअय आ झट नकल कऽ लेअय ।

रविक आङन नहि जा होइक । ओकरा थोपल-थापल आ अबण्ड कहने छलैक । बदलामे अपनो खूब सुनने छलि आ एक चाट मारि खा आयलि छलि । बाबू उपराग देथिन से ओकरा नहि बूझल छलैक । कनिते अङना आयलि छलि, बाबू अङनेमे बैसल छलथिन ! कोनो कारणसँ मोन पहिनहिसँ बिगड़ल छलनि । कनैत देखि गरजऽ लगलथिन-'आइ की भेलौ फेर ?'

वसन्तक तामस उग्र भऽ गेलनि । ऊठिकऽ आर चारि चाट देलथिन आ बड़बड़ाइत आङनसँ विदा भेलाह-'जाइ छियनि रामबाबूकेँ कहय । अइ छौंड़ा द्वारे हमर बेटीक जिनगी नष्ट भऽ जायत ।'

कविता अवाक् ठाढ़े रहि गेलि । कानबो बन्द भऽ गेलैक । आ, तकर बाद रविसँ भेँट करबाक बाटो बन्द भऽ गेलैक— बियाह नहि भेलैक तैयो । कखनो सोझाँसोझी होइ रविसँ तँ ओकरा अपने लाज होइ । मुदा ताहिसँ पहिने रवि दोसर

बाटे निकलि जाइ, तकबो नहि करैक ओकरा दिस । कविता मूड़ी झुकौने ठाढ़ि रहि जाय । बहुत दूर चल जाइ तँ मूड़ी उठा देखैक । मुदा, रवि तकबो नहि करैक एक्को बेर घूरिकऽ ।

चारि वर्ष बीति गेल छलैक । चारि वर्ष भऽ गेल छलैक रविसँ बजना । मुदा ओइ दिन ओकर दरभंगा जयबाक गप्प सूनि नहि रहि भेलैक । पहुँचि गेल रामकाकाक अङना । बाबी देखिते टोकलथिन– 'तोहूँ आबि गेलेँ ? नहि रहि भेलौक, बालसंगी छौक तोहर । जाइ छौ आइ, आब नहि रहतौक गाममे । राम जिद्द पकड़ने छथि, एतऽ नहि पढ़ऽ देथिन । हमरासभ बिगाड़ि देबैक नेनाकेँ ।'

बाबीक आँखिमे नोर छलनि । लालकाकीक आँखि लाल-लाल छलनि । रवि आ मनोज दुनू जा रहल छलनि, नहि रहतनि गाममे । रवि अपन चीज-वस्तु सरियबैत छल । कविता ओतहि जा ठाढ़ि भऽ गेलि आ कहलकै-'शहर पैघ आ सुन्नर होइ छै— गामसँ बेसी बढ़ियाँ । ओतऽ बेसी मोन लगतौक ।'

रवि अवाक् । कविता तेना सहज ठाढ़ि छलैक जेना कहियो-किछु भेले नहि होइ । ओकर वैह बालसंगी कविता । मुदा ओकर बालसंगी तँ कलिकलिही खटखटाहि छौंड़ी छलैक, पातर लिकलिक आ सड़ल देह । ई कविता तँ ओकर बालसंगी नहि छलैक— शान्त, सौम्य । मुँह केहन सुन्नर जे लोक देखिते रहि जाय ! तेहने पैघ आँखि आ आँखिमे एक टा उदास हँसी । रंग जेना रवियोसँ बेसी साफ— एकदम भुभुक्का गोराइ । माथक केश पैघ आ कारी-कारी । पीठपर मोटगर चोटी बान्हल लटकल । सम्पूर्ण देहमे एक टा आभा आ मुँहपर कान्ति । रवि अवाक् देखैत रहि गेल ।

'एना अकचकायल की देखै छेँ ? चीन्है नहि छेँ हमरा ?' कविता टोकलकै ।

रविक टकटकी छुटलैक । हँसैत बाजल-'तोरा नहि चिन्हबौ ? सौंसे देहमे कैक ठाम दाँत कटने हेबेँ । देखै छलियौ जे ओहन तमसाहि-खटखटाहि छौंड़ी एना शान्त-संयत कोना भऽ गेलैक ?'

कविता हँसलैक-'से तोँ कोना बुझलहिक जे शान्त-संयत भऽ गेल छी ? एखनो दाँते काटि सकैत छियौ ।'

रवि कृत्रिम डेरायल-'बाप रे ! तहिए मासु नोचि लैत छलेँ, आब तऽ हड्डियो नहि बाँचत ।'

कवितो ओहिना हँसैत कहलकै-'तोँ तामसे धुमधुमा दैत छलेँ तऽ हम दाँतेसँ भम्होरि लैत छलियौ । हिसाब बराबरि ।'

रवि हँसैत रहल । भोरसँ ओकर मोन भारी छलैक । गाम छुटबाक दु:ख छलैक । आङनमे सभ कानि रहल छलैक–बाबी, छोटकी बाबी, दुनू पीसी-बीबी आ लालकाकी । लालकाका उदास छलथिन आ बाबू गुमसुम । तैयारी सभ टा वैह करबौने छलथिन, मुदा मोन हुनको उदास छलनि । एकसरमे आँखि पोछैत देखने छलनि रवि । रविक अपनो मोन भोरसँ कानऽ-कानऽ सन भेल छलैक ।

कविता आबि हँसा देलकै । चारि सालक बन्द मुँहाबज्जी खतम भऽ गेलैक । दुनू सहज भऽकऽ हँसल-बाजल । मोन साफ भऽ गेलैक दुनूक । जाइत काल कविता कहलकै-'तोहर पुरना किताबसभ छौक, बच्चावला ।'

रवि आश्चर्यसँ पुछलकै-'की करबेँ तोँ ?' कविता सहज भावसँ कहलकै- 'पढ़ब । आब एतेक टा भऽ धीया-पूता जकाँ स्कूल जैब, से हैत नहि । तोँ कहने रहेँ, स्कूल आ पढ़ऽ, तऽ नहि मानलियौ । आब बैसल-बैसल मोन अकच्छ रहैत अछि । काजो-धंधाक बाद अफरात समय रहैत अछि । किताब रहत तऽ ककरोसँ पूछि-पूछिकऽ पढ़ि लेब ।'

रविकेँ कविताक बात नीक लगलैक । सभ टा किताब निकालि कऽ दैत कहलकै— 'सभ लऽ जो, बहुत रास किताब छैक । सभपर तोहर नाम लिखल छलौक, खाली काटि देने छिऐक ।'

कविता आश्चर्यसँ पुछलकै— 'हमर नाम !'

रवि हँसैत कहलकै-'हँ, तोरे नाम । जखन दुनूमे मेल रहय तऽ किताब सभमे जहाँ-तहाँ तोरो नाम लिखि दियौक । फेर झगड़ा भेल । तामसे नव-पुरान सभ किताब ताकि तोहर नाम काटि देलियौक । हे देखहिक, ईहो तोरे नाम काटल छौक ।'

कविता हँसलैक-'एतेक तामस रहौक हमरापर ?'

रवियो हँसैत कहलकै— 'एहन-ओहन तामस ! मोन करैत छल जे अङनामे पैसिकऽ धुमधुमा दियौक खूब । हमर खेल-कूद, घूमब-फिरब सभ मस्किल भऽ गेल । तोँ महतमानि जकाँ बियाह करऽ बैसि गेलेँ । खेल-कूद बन्द । भेलौ किने बियाह ! खेलोकूद छुटलौक आ बियाहो ने भेलौक ।

बात रवि हँसीमे कहने छलैक, मुदा कविताक मुँह विवर्ण भऽ गेलैक ।

रविकें लगलैक जेना किछु अनुचित बजा गेलैक । ओहो अकबकाकऽ चुप्प भऽ गेल ।

कविता गुमसुम ठाढ़ि छलैक । रवि कहुना बात सम्हारैत बुझनुक जकाँ बाजल— 'देख ने, फेर किदन झगड़बला बात बजा गेल । बियाह ओ नहि भेलौक तऽ दोसर हेतौक । ओइ लेल चिन्ताक कोन काज ? एहन सुन्नरि कनियाँ लेल वरक कोन कमी ?'

कविताक आँखिमे एक टा दुष्ट हँसी आबि गेलैक-'सत्ते !'

आ, ओहिना हँसैत घरसँ बहराइत काल कहलकै कविता— 'हमर-तोहर झगड़ामे नामीबाबाक खूब फायदा भेलनि । सभ टा गोसबरिया लताम एकसरे खयलनि ।'

रवि कविताक गेलाक बादो बड़ी काल धरि हँसैत रहल ।

रवि हँसैत दरभंगा नहि जा सकल मुदा ।

भोरेसँ बाबी नुकाकऽ कानिए रहलि छलैक । गाड़ीक बेर होइत-होइत बेस नीक जकाँ कानऽ लगलैक । हरदम संयत आ शालीन रहऽबाली छोटकियो बाबीक आँखिमे नोर । घिसरी कटैत छोटकी पीसी-बाबी आ छातीसँ सटौने सटौने बड़की पीसी-बाबीक आँखिसँ दहो-बहो नोर । कानि-कानिकऽ लाल भेल लालकाकीक आँखि ।

मुदा, राम अडिग छलाह । फैसला हुनके छलनि । मोहन कालेजक पढ़ाइ खतम कऽ दरभंगेमे ओकालति शुरू कयने छलाह आ हुनका संगे रहैत विक्रमक कालेजक पढ़ाइ सेहो लगिचायल छलैक-बी.ए.क आखिरी साल रहैक । मोहनक डेरा ऐल-फैल रहनि आ मोहनक गार्जियनीपर रामक आस्थो रहनि ।

मिडिलमे जिलामे पहिल नम्बर छलैक रविक । रामक महत्त्वाकांक्षा पैघ छलनि । बेटा आगाँ नाम करत । प्रान्तमे प्रथम आओत । से गामसँ नहि होयतैक । नीक स्कूलमे देबऽ पड़तैक, नीक गार्जियनक ताल्लुक देबऽ पड़तैक । मोहनपर हुनका बड़ विश्वास रहनि । जेहने पढ़बामे तेज, तेहने सुशील, आज्ञाकारी आ चरित्रवान । अपने दरभंगा जाकऽ सभ टा व्यवस्था देखि आयल छलथिन राम । रवि

आ मनोजकें एक्के स्कूलमे नाम लिखा सभ टा इन्तजाम कऽ आयल छलथिन ।

आङनक स्त्रीगणकें अइ व्यवस्थासँ कोनो मतलब नहि छलैक । ओसभ मात्र एतबा जनैत छलैक जे रवि आब गाममे नहि रहतैक । संगे मनोजो जयतैक । आङन खूब भरल-पूरल आ प्रसन्न रहैत छलैक ।

प्रसन्न नहि छलैक खाली मोहनक कनियाँ । तीन वर्षसँ दुरागमन करा सासुरेमे छलैक, मुदा मोहन रहैत छलैक हरदम दरभंगे । पहिने पढ़बा लेल, फेर ओकालति शुरू कयलकै तँ ओही लेल । गाम कम्मे अबैत छलैक । शनियो-रविकें अबैत लाज होइ छलैक । कनियाँ बाटे तकैत रहि जाइ छलैक ।

दरभंगा जाइत काल रवि पुछलकै-'भाइकें कोनो समाद कहबनि भौजी ?'

भौजी कने रुष्टे भावसँ कहलथिन— 'कोन फायदा ? हुनका ओकालतिक पोथीसँ फुर्सति होयतनि तखन ने कोनो समाद सुनताह !'

रवि हुनक तामसपर बिन ध्यान देने कहलकनि-'तऽ चिट्ठीए लिखिकऽ दऽ दियऽ ।'

भौजी बेसी तमसा गेलथिन-'हँसी करै छी अहूँ ! हमरा चिट्ठी लिखऽ अबैत तऽ एहिना अनठबितथि अहाँक भाइ ? हुनका पढ़बा-लिखबाक गुमान छनि ।'

भौजी सुन्नरि छलीह । सोलह-सत्रहक वयस छलनि । रविसँ चारि वर्ष जेठ। रविकें भौजी नीक लगै छलथिन । भौजी अधिक काल उदास रहैत छलथिन- गुमसुम आ दुखी । भौजीक क्रोधपर ओ ध्यान नहि देलकनि । ओकरा मोहन भाइपर तामस भेलैक ।

दरभंगा अयलापर दोसरे दिन मोहन भाइकें कहलकनि-'अहाँ भौजीपर बड़ अन्याय करै छियनि भाइ !'

छोट भाइक पकठोसल गप्पपर मोहनकें हँसी लगलनि-'से कोना रवि ?'

-'ओ सभ शनि-रविकें बाट तकै छथि आ अहाँ गाम जयबे नहि करै छी।' रवि साफ-साफ बाजल ।

-'सभ शनिकें दौड़ करब गाम तँ मामा आ गामक लोक की कहत ?' मोहनक जवाबसँ रवि सन्तुष्ट नहि भेल । ओकरा लोककें कहबाक अर्थ बूझऽमे नहि अयलैक ।

गामसँ विदा होयबाकाल बाबू कहने रहथिन रविकेँ–'सभ शनिकेँ गाम अबस्स अयबऽ । एतुक्को लोककेँ देखबा ले' मोन लागल रहतैक ।'

रवि ओही बातकेँ मोन पाड़ैत बाजल–'हमरा बाबू सभ शनिकेँ आबऽ कहलनि आ अहूँ जायब तऽ किएक किछु कहताह ?'

मोहनकेँ साहस नहि भेलनि । शनिकेँ रवि गाम गेल तँ भौजीकेँ कहलकनि–'अहाँ हमरा घूस दी तऽ अहाँक काज भऽ सकैत अछि ।'

मोहनक कनियाँ विस्मित होइत बजलीह–'घूस ? हम कथी लेल घूस देब ? कोन काज करब हमर ?'

रवि बात ओहिना भरिअबैत कहलकनि–'से करब ने हम, मुदा घूस लागत ।'

भौजी हँसिकऽ कहलथिन–'बेस, देब घूस ! कहू की लेब आ कोन काज करब ?'

रवि बात ओहिना अस्पष्ट रखैत कहलकनि–'ई दुनू बादमे कहब । दोसर बेर गाम आयब तखन ।'

दरभंगासँ दोसर सप्ताह गाम लेल विदा होइत रवि मोहन भाइकेँ कहलकनि–'अहाँक काज हम कऽ दऽ सकैत छी भाइ ! मुदा घूस लागत । एक टा नवका फुलपैण्ट आ कमीज ।'

मोहन हँसिकऽ कहलथिन–'पैन्ट-कमीज तोँ लऽ लिहऽ । मुदा काज कोन करबऽ हमर ?'

रवि हुनको बात स्पष्ट नहि कहलकनि–'से बादमे कहब भाइ ! मुदा घूस भौजियो गछने छथि । हुनकर सत्ती नवका जूता-मौजा सेहो लागि जायत, मोन राखब ।'

गाम अयबा काल मनोजो संग छलैक । ओकरो नीक जकाँ पटिया लेलक । बाबू पुछलथिन–'कोनो तकलीफ तऽ नहि होइ छऽ ?' कहलकनि–'आर तऽ नहि कोनो, खाली पित्तू ठाकुर द्वारे आफत अछि । एहन कतहु भनसिया भेल-ए ! खाली मरचाइ रान्हि लैत छथि । सेहो असिद्धे । नहि जानि कोना मोहनभाइ-विक्रमभाइ एतेक दिन रखलथिन ! दुनूकेँ पेट खराब रहिते छनि अधिक काल, हमरो लोकनिकेँ गडबडी शुरू भऽ गेल अछि ।'

मनोजो समर्थन कयलकै–'हँ काका ! रवि ठीक कहैत अछि ।'

राम बाबू चिन्तित होइत कहलथिन–'ई तऽ बड़ चिन्तावला बात !'

रवि उत्साहित होइत बाजल–'अइमे चिन्ताक कोन बात ? पित्तू ठाकुरकेँ गाम बजा लियनु । नौकरीसँ हँटबियनु नहि ।'

राम बाबू पुछलथिन–'आ, तोरालोकनि लेल एतेक जल्दी भनसिया के भेटत ?'

रविकेँ कहबाक मौका भेटि गेलैक–'भनसियाक काज कोन बाबू ? भौजीकेँ हमरालोकनिक संग पठा दियनु ।'

रामकेँ आब अर्थ लगलनि–'मोहन किछु कहने छलथुन ?'

रवि मनोज दुनू संगे बाजल–'भाइ किएक किछु कहताह ? ओ एतेक वर्ष पितुए ठाकुरक संग निमाहि लेलनि । हमरासभकेँ कष्ट होइत छल, तेँ कहलहुँ । नै विचार अछि तऽ छोड़ि दियौक ।'

राम चिन्तित होइत बजलाह– 'मुदा कनियाँ शहर जयतीह से कोना हैत ? एना कहियो ने भेल छैक, माय नहि मानति ?'

मंगला झट मानि गेलथिन– 'धीया-पूताकेँ तकलीफ होइ छै तँ जाय दहुन कनियाँकेँ । आब ई सभ क्यो देखैत छैक ?'

रवि बाबीक गरदनिसँ झूलि गेल— 'बाबी ! यू आर ग्रेट ।'

गौरी एकदम तरङि उठलथिन— 'एकदम अजगुत बात ! नवकी कनियाँ शहर-बजार जयतीह, वरक संग रहतीह । समय जे ने देखाबय !'

लालकाकीकेँ बेसी असुविधा छलनि । आश्रमक सभ टा काज मोहनेक कनियाँ करऽ लागलि छलनि आब । हुनका आराम रहैत छलनि— 'गामक लोक सेहो हँसत । एना तऽ घरक कायदा-कानून नष्ट होइ छै । तखन जे बड़का बाबू कहथिन !'

घरक कायदा-कानून रहैक रामक विचार । ओ निर्णय कऽ लेने रहथिन । मनोज-रविक संग एक टा आदमी दऽ कनियाँकेँ दरभंगा बिदा कऽ देलथिन ।

गाड़ी जखन गामक स्टेशनसँ खुजलैक तँ रवि भौजीसँ बाजल–'काज भऽ गेल अहाँक । आब लाउ हमर घूस ।'

भौजी प्रसन्नतासँ नितराइत बजलीह–'अइमे हमर कोन काज ? अपना ले' एक टा भनसियेक इन्तजाम तऽ कयलहुँ अछि !'

रवि चेतबैत कहलकनि–'देखू, बैमानी नहि ! नहि तँ भनसियाकेँ हँटबऽमे

हमरा देरी नहि लागत । फेर कहि देबनि– खाली मसल्ला भरने रहैत छथि तरकारीमे...'

भौजी हारि मानैत बजलीह–'बेस, हमही॔ हारि मानलहुँ ! बाजू, की लेब ?'

–'भाइ पैण्ट-कमीज आ जूता-मौजा गछने छथि । अहाँकें॔ एक टा स्वेटर बुनिकऽ देबऽ पड़त ।'

–'बस्स, खाली एक टा स्वेटर ! अवश्य भेटत । मुदा ओ कोना गछि लेलनि पैन्ट-कमीज आ जूता ? हुनका कोन बेगरता ? अपन ओकालतिक किताबसँ फुर्सति हेतनि तखन ने !'

भौजीक अबैत देरी मोहन ओकालतिक किताबकें॔ एकदम फुर्सति दऽ देलथिन । भौजी लेल अपस्याँत । भौजीक खुशीक कोनो अन्त नहि छलनि । हरदम प्रसन्न गुलाब जकाँ गमकैत रहैत छलीह । रविकें॔ गामक उदास आ गुमसुम भौजी मोन पड़ैक । ओकरा तँ गामोक ओ उदास आ गुमसुस भौजी पसिन्द छलैक । प्रसन्नतासँ दमकैत आ हँसीसँ चमकैत भौजी ओकरा आरो नीक लागऽ लगलैक ।

एक दिन रवि टोकलकै–'अहाँकें हमर नजरि लागि जायत भौजी ! अहाँ तऽ दिन-दिन सुन्दरे भेल जाइ छी । नै मनोज ?' मनोजो समर्थन कयलकै ।

भौजी कृत्रिम क्रोधसँ कहलथिन– अहाँ दुनू गोटे तँ खूब पढ़ाइ करै छी ! बैसल-बैसल मौगीक सुन्दरता देखै छी !'

रवि कहलकनि–'अहाँ मौगी थोड़े छी !'

'तऽ की छी हम ?'–भौजी अकचकाइत पुछलथिन ।

–'अहाँ तँ भौजी छी ।'

भौजी खूब हँसलथिन । भौजीक ओइ हँसीसँ ओ छोटछीन डेरा सदिखन हुलसैत रहैत छलैक । चारि टा कोठली रहैक । एक टामे भैया-भौजी रहथिन, दोसरमे विक्रम आ तेसरमे रवि आ मनोज । चारिम कोठली भैयाक बैसकखाना छलनि–रैक आलमारी सभमे ओकालतिक किताबसभ आ टेबुल-कुर्सी । बरण्डामे मोअक्किलसभ सेहो सुतैत छलनि एक-दू टा कहियो काल ।

ओकालति हिसाबे-किताबसँ चलैत छलनि मोहनक । सभ टा बन्दोबस्त आ खर्च मामेक रहनि । एकबेर लाल टोकने रहथिन अपन भाइकें॔–'पढ़ा-लिखा देलियनि, आब अपन कोनो उपाय देखितथि तऽ नीक छलनि ! कोनो भारो नहि

छनि । गंगाक बियाह-दुरागमन कराइए देलियनि, विक्रमो लाइनेपर अछि, साल-दू सालमे पढ़ाइ खतम । खाली अपनो भार यदि उठा लितथि ! ऐना जमीन-जथा आ अन्न-पानि बेचि कतेक दिन सम्हारबनि अहाँ ?'

छोट भाइक चिन्ता अकारण नहि छलनि । हुनकर परिवार पैघ रहनि, चारि टा धीया-पूता रहनि । साले-साल घटैत जथा-जमीनसँ ओ चिन्तित छलाह । राम बुझबैत कहलथिन–'करऽ पड़ै छैक सभ टा इन्तजाम हौ ! ओकालति ओना नहि चलैत छैक, ओइमे पहिने जमापूजी लगबऽ पड़ैत छैक, श्रम करऽ पड़ैत छैक, तैयो नीक कमाइ लेल प्रतीक्षा करऽ पड़ैत छैक । ऐना हड़बड़ाकऽ नहि होइत छैक ।'

रवि आ मनोजकें॔ ओइ डेरापर पठयबाक एक टा उद्देश्य सेहो रहनि । लालकें॔ तखन ओतेक नहि अखरतनि । अन्न-पानि, मर-मसल्ला सभ टा गामसँ जाइते छलनि सभक, बेरपर टाको-पैसा । लालकें॔ नीक नहि लगैत छलनि, मुदा भाइक द्वारे चुप्प रहि जाइत छलाह ।

रवि आठममे फर्स्ट भेल । मनोजो पास कयलक । रामक उत्साह बढ़ि गेलनि । खर्च-बर्च तँ होइते रहैत छैक । एतेक टा जमींदारी चल गेल, तँ दस-बीस बीघाक कोन मोह ? रवि नवमोमे फर्स्ट भेलनि तँ रामकें॔ अपन स्वप्न साकार होयबाक आशा होबऽ लगलनि ।

घर खाली होबऽ लगलनि–एकाएकी ।

पहिने गेलीह छोटकी दाइ । भूकम्पमे लोथ भेलि रहथि । ओकर बादो बाइस-तैस वर्ष जीलीह–घिसरियो काटिकऽ । ओइ दिन सुतली तँ सुतले रहि गेलीह । भोरमे निर्जीव शरीर पड़ल छलनि कोठलीमे ।

बड़की दाइ हिला-डोला थाकि गेलथिन, कोनो संज्ञा नहि । अन्तमे गर्द मचौलनि । लोक अयलनि, नाड़ी देखनिहार अयला आ सभ कहलथिन–'खाली देह छनि, प्राण नहि ।'

गौरी हल्ला मचा देलथिन–'प्राण छनि अखन ! लऽ चलहुन उठा-पुठा तुलसी-चौरा लग आङनमे । प्राण ओही लेल अँटकल छनि ।' सभ उठाकऽ आङनमे धऽ देलकनि–'मुँहमे गंगाजल दहुन ।'

बड़की दाइ ओही दिनसँ बिछौन धऽ लेलनि । ने ककरोसँ बाजब, ने किम्हरो आयब-आयब ! बहिने टा नहि, एकमात्र संगिनी छलथिन छोटकी दाइ । दुइए मास बाद एक दिन ओहो जिद पकड़ि लेलथिन–'हमरा घरसँ निकालऽ । महादेवक मन्दिरक आगाँ धऽ दैह हमरा । हमर प्राण छूटत । सावित्री जकाँ घरेमे नहि मरब हम ।' छोटकी दाइक नाम सावित्री रहनि ।

सभकेँ आश्चर्य भेलैक । नीक जकाँ बाजि-भूकि रहलि छलीह बड़की दाइ । सभ चेष्टा ठीक छलनि, तखन प्राण कोना छुटतनि ? लोकसभ अनठाबऽ चाहैत छलनि । राम अपन छोट भाइकेँ बजाकऽ कहलथिन–'लऽ चलबाक व्यवस्था करहुन, जेना बड़की पीसी कहैत छथुन !'

कहार-सबारीक इन्तजाम भेलैक । बड़की पीसीकेँ उठबाकऽ महादेव मन्दिरक सोझाँ राखल गेलनि । भरि गाम उमड़ि अयलैक । लोक अयलैक आ घुरैत गेलैक । बड़की दाइ ओहिना सभसँ बजैत रहलीह । सात दिन बीति गेलनि । मृत्युक प्रतीक्षा करैत लोक अकच्छ भऽ गेल ।

दिन भरि रौद रहै आ रातिमे बरखा होइ । फर्दमे राखब असंभव छलनि । मन्दिरक सोझाँ राउटी लगाओल गेलनि । पहिने राउटी भरल रहैक–रातियोकऽ मारि लोक । अन्तमे भीड़ कमैत-कमैत लुप्त भऽ गेलैक । रातिकेँ रहि जाथि एकसरि गौरी । ओइ राति हुनको आँखि लागि गेलनि ।

उठलीह तँ बेसी रौद भऽ गेल छलैक । बड़की दाइ ओहिना बिछौनपर पड़लि छलीह । आँखि खूजल छलनि जेना टकटकी लगा किछु देखि रहलि होथि । गौरी लग आबि सोर पाड़लथिन–'बड़की दाइ ! बड़की दाइ !' कोनो उत्तर नहि । देह छुलथिन तँ सर्द-हेमाल । बुझबामे भाङठ नहि रहलनि । हाथसँ पपनी खसा आँखि बन्द कऽ देलथिन आ एकसरे घिसिया राउटीसँ बाहर कऽ कानब शुरू कयलथिन ।

बन्हन तर प्राण छुटबाक डरे बड़की दाइ मन्दिर लग गेलि छलीह, मुदा प्राण हुनको राउटीक भीतरे गेलनि । क्यो बुझलकनि नहि ई बात ! बुझलथिन खाली गौरी ।

मुदा, बड़की दाइक पेटारक गप्प सभ बूझि गेलनि । ओ पेटार ककरो देखऽ नहि दैत छलथिन बड़की दाइ । एकसरिमे खोलैत छलीह, सभसँ नुकाकऽ । मरबो काल कुंजी डाँड़ेमे छलनि ।

चचरीकेँ श्मशान लऽ जयबासँ पूर्व ओ पेटार खोलल गेल । सभ अवाक् ! बहरयलैक किछु नहि । खाली खेलौना, धीया-पूताक खेलौना ! पुरान, टूटल-फूटल, नव– सभ तरहक खेलौना ! दू तीन टा रबरक गेन्द आ सभक नीचाँमे एक टा दुरगमनियाँ साड़ी । ओकर तह सड़ि गेल राखल-राखल । रंगो बेदरंग भेल, मुदा बेस यत्नपूर्वक चौपेतिकऽ राखल । पेटारकेँ सभ टा सामान सहित बड़की दाइक चितामे दऽ देल गेलैक ।

छोटकी दाइ बड़की दाइक बाद मंगलाक नम्बर एतेक जल्दी आबि जयतनि, से ककरो मिसियो भरि डर नहि छलैक । ओ स्वस्थ छलीह । सभ ठाम टहलैत-बुलैत छलीह । एक राति उठलनि हड्डीमे जनमारा दर्द । एहन दर्द जे एक्को क्षण चैन नहि । बाबी बिकल भऽ गेलीह । दर्दसँ रातिए भरिमे चेहरा स्याह भऽ गेलनि आ शरीर शक्तिहीन । कहुना राम कानमे कहलथिन–'सभकेँ बजा लहक । बेर आबि गेल । दर्द नै, काल छऽ ई ।'

राम सभकेँ बजबा लेलथिन । मोहन आ हुनक कनियाँ, रवि आ मनोजो आयल । विक्रमक विवाह-दुरागमन भऽ गेल छलैक । ओकरो कनियाँ छलैक । सासुरसँ गंगा अपन वर आ दुनू बच्चाक संग आबि गेलैक । जमा भऽ गेलैक बाबी लग ओकर सभ टा सखा-पात ।

मुदा, मंगलाकेँ कथूक होश नहि रहनि । दर्दसँ बेहोश भऽ-भऽ जाथि । एक बेर होश भेलनि तँ रविकेँ चिन्हलथिन । चेहरा छूबिकऽ कहलथिन–'बाबी जाइ छौ बाउ...मोन रहतौ ?'

रवि कानऽ लागल बाबीक छातीपर ओंघराकऽ । फेर दर्दसँ बेहोश भऽ गेलीह मंगला । एकदम बहिरा दर्द रहनि जेना ! हाड़-हाड़मे कनकनी । कोनो दवाइ नहि सुनलकनि । एक बेर फेर कनेकाल लेल होश भेलनि । गौरी लगमे झुकलि बैसलि छलथिन । माथपर हाथ देलथिन । चीन्हि गेलथिन मंगला । छोट बहिनक हाथ अपन कमजोर थरथराइत हाथसँ छुबैत कहलथिन–'चललियऽ आब ।'

–'नै' ओइ कमजोर थरथराइत हाथकेँ अपना मुट्ठीमे दबा गौरी चिचिया जकाँ उठलीह–'से कोना हेतऽ मंगला ? तोहीँ तऽ कहने छलीह ओइदिन–'हम छी गौरी...एखन हम छी !' फेर आइ जेबऽ कोना, हमरा एकसरि ककरा लग छोड़िकऽ जयबऽ, बाजऽ, जवाब दैह मंगला !"

कोनो उत्तर नहि । मुट्ठी ढील होइते हाथ एक कात खसिकऽ लटकि गेलनि । गौरीक संग सम्पूर्ण घर हाहाकार कऽ उठल ।

सभ टा राजरानी जकाँ भेलनि । राम जेना बताह भऽ गेल रहथि । कतबो करथि–तैयो सन्तोष नहि होइनि– आर-आर । बढ़बिते चल गेलाह । ककरो टोकबाक साहसे नहि होइक । गरामे उत्तरी लऽ जे चुप्प भेलाह से जेना बकारे बन्द भऽ गेलनि हुनकर । सभ टा व्यवस्थाक निर्देश कागजपर लिखि-लिखि देने जाथिन आ गुमसुम बैसल रहथि ।

श्राद्धक एक्के मासक बाद जखन गौरी मोटरी-चोटरीक संग लग आबि ठाढ़ि भेलथिन तँ बकार फुटलनि जेना–'ई की मौसी ?'

मौसी कहलथिन–'हमरा जाय दैह राम ! हमरा नहि रहि हैत एतऽ आब ।'

राम कने सिक्त कण्ठसँ कहलथिन–'हमरासँ कोनो अपराध भेल मौसी ? दुनू पीसी गेलीह, फेर मायो गेलि । आब अहाँ सेहो छोड़ि देब हमरा ?'

मौसी कहलथिन–'तोरासँ कोनो अपराध भैए नहि सकैत छऽ राम ! मुदा जिनका बलेँ एतेक दिन अइ घरमे रहलहुँ, जखन सैह नहि रहलीह, तऽ कोना रहब एतऽ आब ?'

राम बेसी भावुक होइत कहलथिन–'बहिन नहि रहलीह मौसी, बेटा तऽ अछि ! बेटाक घर रहबामे कोन संकोच ?'

मौसी बुझबैत कहलथिन–'संकोच नहि राम, मात्र मोनक विवशता । बिना तोहर मायकेँ अइ आङनक कल्पनो नहि सम्भव होइत अछि हमरासँ । नहि बर्दाश्त होइत अछि हमरासँ । एतऽ रहब तऽ पागल भऽ जायत मोन । हमरा जाय दैह ।'

राम संयत होइत कहलथिन–'कतऽ जायब मौसी ?'

मौसी कहलथिन–'काशी पहुँचबा दैह हमरा, काली मन्दिरमे । ओतऽ अनेक विधवा रहैत छथि–हमरो गुजर भऽ जायत ।'

राम एक बेर कहलथिन–'ई मुदा अन्याय भऽ रहल अछि मौसी अहाँसँ । जकरा सभकेँ पोसि-पालिकऽ मनुक्ख बनौलिऐक, ओकरेसँ अन्तिम समयमे सेवाक अधिकार छीनि रहलिऐक अछि ।'

–"दुख नहि करऽ राम ! ओ अधिकार तोरे छऽ । भगवानक शरण जा रहलि छी । जहिया अन्तिम रूपसँ अपन शरणमे लेताह, तहिया तोरा छोड़ि के आगि देत मुँहमे ?'

राम झट कहलथिन–'से पक्का रहय मौसी, हमर ई अधिकार क्यो नहि छीनय ।'

मौसी किछु कहलथिन नहि, मुदा आँखिमे नोर भरने बड़ी काल धरि रामकेँ देखैत रहलथिन ।

गामसँ जाइत गौरीकेँ विदा करबा लेल भरि गाम जमा भऽ गेलनि । राजरानी जकाँ विदा कयलथिन राम । महफामे ओहार लागल । चारि टा कहार कान्हपर उठा लेलकनि । संग चललनि स्त्रीगण-धीया-पूता आ पुरुष । धारक कात धरि जेना गामक सभ लोक जुटि गेल होइनि ।

धारक पारो बड़ लोक गेलनि । स्त्रीगण, धीयापूतासभ घूरि गेल । राम ओहिना धारक कातमे ठाढ़ रहला । महफाक ओहार उठा मौसीक पयर छूलनि आ कने खखसिकऽ कहारसभकेँ कहलथिन–'जल्दी लऽ जाहुन, गाड़ीक बेर भेल जाइत छौक ।'

लाल मौसीकेँ बनारस पहुँचा गाम घूरि अयलाह ।

गाम एकदम उदास आ सुन्न लगलैक रविकेँ । सभ शनिकेँ गाम अबैत छल ।

बाबी नहि, छोटकियो बाबी नहि । छोटकी-बड़की पीसी-बाबीक घर सुन्न । दलानमे गुमसुम बैसल बाबू । काज आ गृहस्थीमे लालकाका आ आङन-भनसामे अपस्याँत लालकाकी । हुनके दोसराइतमे छोटकी भौजी ।

छोटकी भौजी माने विक्रमक कनियाँ । रविएक बतारी छलैक भौजी । सत्रहममे रवियो पयर देने छल, मैट्रिकमे आबि गेल छल ।

समय कोना ससरि जाइत छैक !

रवियोकेँ लगैक जेना ओ बेस पैघ भऽ गेल होअय । छोटकी भौजी लग आबिकऽ एना आरो बेसी लागऽ लगैक ! ओ रविसँ लजाइत छलथिन, बड़की भौजी जकाँ सहज भऽकऽ गप्प नहि करैत छलथिन । ठोरपर मुसकी रहैत छलनि, मुदा मुँहमे बकार नहि ।

रवि खिसियाकऽ कहनि–'अहाँ बौक छी भौजी !'

तैयो कोनो उत्तर नहि । माथपर कने आगू धरि खीचल आँचर, ठोरपर दाबल-दाबल मुस्की ! प्रथम यौवनक आभासँ दमकैत आकृति । मुदा बकार नहि ! रवि अकच्छ भऽ जाइत छल ।

एकबेर एकदम लोहछिकऽ कहलकनि– 'विक्रमो भाइसँ गप्प करैत छियनि कि नहि ?'

भौजी ककरोसँ गप्प नहि करैत छलथिन । लालकाकी भेलथिन सासु, गप्पक प्रश्ने नहि । घरमे दू टा श्वसुरे । देओरमे रवि आ मनोज छलनि । शनिकें गाम अबैत छल । बाजि-भूकि अकच्छ भऽ जाइत छल–भौजी ओहिना बौकक बौके । भौजी आस्ते-आस्ते गप्प करैत छलीह तीनू छोटका देओरसँ कखनो काल, माने लल्लू, बौआ आ छोटकूसँ ।

बिगड़िकऽ रवि अङनासँ बहरा जाय । एहन मौनीबाबा लग बकबक कयलासँ फायदे कोन ? सपत खाय जे फेर नहि टोकतनि छोटकी भौजीकें ! मुदा रहल नहि जाइ । घूरिकऽ फेर भौजी लग चल आबय । भौजीक लग बैसब आ हुनकर ठोरपरक दाबल-दाबल मुस्की ओकरा नीक लगैक । नहि जानि, किएक ?

सैह गुम्मा भौजी फागुआमे एक बाल्टी रंग माथपर ढारि पड़यलथिन ! रवियो खेहारलकनि । पड़ाकऽ घरमे नुकयलीह भौजी ! घर पैसि चुक्कीमाली भऽ ठेहुनमे मूड़ी गोँति बैसि गेलथिन भौजी । रवियो जिदिया गेल । सौँसे मुँह आ देहमे रंग आ अबीर रगड़ि देलकनि । मूड़ी उठा-उठा ठेहुन हँटा-हँटा रंग-अबीर रगड़ने गेलनि । भौजी आँखि बन्द कऽ लेलथिन । झिक्का-तिरिआ दौगा-दौगीक कारणें साँस खूब तेज भऽ गेल रहनि । सौँसे शरीर तप्पत । झोँक खतम भेलापर रवि आङनमे पड़ा आयल ।

ओकरा विचित्र अनुभव भेलैक । भौजी लग सभ बेर, अधिक काल बैसैत छल । मुदा एहन अनुभव कहियो नहि भेल रहैक । भौजीक तप्पत आ उखड़ल साँस आ गर्म शरीरक स्पर्शसँ ओकर देहमे जेना झुनझुनी भरि गेल रहैक । बाहर आबि आङनमे ठाढ़ भेलापर ओ झुनझुनी खतम नहि भेलैक । बड़ीकाल धरि देह एक टा अपरिचित उत्तेजनासँ झुनझुनाइत रहलैक ।

तहियासँ भौजीसँ डर होबऽ लगलैक ओकरा । गाम आबय तँ गोड़ लागि एकाध बेर टोक-चाल कऽ केम्हरो ससरि जाय ।

गाम एकदम उदास आ सुन्न लगैक रविकें ।

मायक मुइला आ मौसीक गाम छोड़ि गेलाक बाद राम आरो बेसी एकसर भऽ गेल छलाह । एकमात्र संगी छलनि पोथी । दिन-राति ओहीमे घोसिआयल रहैत छलाह । देखैत छलथिन जे रवि पैघ भेल जाइत अछि । ओकरा अपन संगी-साथीमे खेलायब नीक लगैत होयतैक । बेसीकाल अपना लग नहि घेरैत छलथिन रविकें ।

ओइ रविकें गामसँ जाइत काल पयर छूबि रवि कहलकनि–'अगिला शनिसँ गाम नहि आयब बाबू ! टेस्ट भऽ गेल अछि, बोर्डक परीक्षा हैत ! अनेरो दू दिन सभ हफ्तामे पढ़ाइक हर्ज भऽ जाइत अछि ।'

'अनेरो हर्ज' सूनिकऽ रामकें कनेक आघात लगलनि । तैयो हँसिकऽ कहलथिन –'दू दिन बूढ़ बाप लग रहैत छें तँ पढ़ाइ अनेरो हर्ज भऽ जाइत छौक ! बेस, नहि अबिहें ।'

स्वरक पीड़ाकें रवि चिन्हलकनि । कहलकनि–'परीक्षा नजदीक आबि गेल छैक तें कहलहुँ ! अनेरो किएक हर्ज हैत ? सभसँ भेँट होइत अछि, गाम घुमैत छी । मुदा खबरदार ! अपनाकें बूढ़ नहि कहब फेर कहिओ बाबू ! चालीसे वर्षमे क्यो बूढ़ होइत अछि ! आ फेर अहाँ सन जवान ! सभ टा केश कारी, सभ टा दाँत चकचक आ मजगूत ! कैक टा जवान छथि अहाँ सन गाममे !'

बेटा बापकें पोल्हा रहल छलनि ! रामकें हँसी लगलनि । कहलथिन–'नहि अबिहें । परीक्षा लगिचिआयल छौक । परीक्षेपर ध्यान दे !'

रवि तैयो शनिकें गाम अबिते रहल । बाबुओ दोबारा चर्चा नहि कयलथिन ओकर । रविकें गाम उदास आ सुन्न लगैक ।

छोटकी भौजी लग बेसी नहि बैसैत छल । गोड़ लागि कोम्हरो ससरि जाइत छल । रविदिन जाइत काल कोनो बेर हँसी कऽ दैत छलनि–'विक्रम भाइकें कोनो समाद कहबनि भौजी !'

भौजी ओहिना गुम्म ! ठोरपर वैह दाबल-दाबल मुस्की ! ओइ मुस्कीक लोभमे रवि मुदा आब बेशीकाल हुनका लग बैसैत नहि छलनि ! पड़ायले-पड़ायले रहैत छल ।

ओइ शनिकें जहिना गोड़ लागि एक कात ससरऽ लागल, छोटकी भौजी टोकि देलथिन–'एना पड़ायल कतऽ जाइ छी ? हमरासँ डर होइए ?'

रवि अकचका गेल । भौजिए बाजलि छलथिन, ताहिमे कोनो सन्देह नहि छलैक । ओ डरे पड़ायल फिरैत छल, ताहूमे कोनो सन्देह नहि । मुदा गप्पकेँ हँसीमे उड़बैत थपड़ी पाड़ैत बाजल–'वाह ! अहाँ बजितो छिऐक !'

छोटकी भौजी लजा गेलथिन । मुदा तकर बाद मुहाबज्जी शुरू भऽ गेलनि। सब बातपर मौनीबाबा जकाँ गुम्मे नहि रहैत छलथिन ।

बाजऽ-भूकऽ लगलथिन तँ रविक डर कम होबऽ लगलैक । गुम्मा, ठोरपर दाबल-दाबल हँसीबाली भौजीसँ ओकरा बेसी डर होइत छलैक । ओ तप्पत आ उखड़ल साँस आ शरीरक गर्म स्पर्श मोन पड़ैत छलैक । ओ डरे पड़ा जाइत छल। बाजऽभूकऽबाली भौजीक संग ओकरा कोनो डर नहि होइत छलैक । गप्पमे सभ टा बिसरि जाइत छलैक ।

विक्रमकेँ गाम बिसरि गेल छलनि ! बी.ए.मे बढ़ियाँ रिजल्ट नहि भेलनि। एम.ए. करऽ लागल छलाह । भाइक ओकालतिमे कोनो बरक्कति नहि छलनि ! सभ टा भार मामेक माथ । गाम अबैत लाज होइत छलनि । रिजल्ट गड़बड़ आ बहु लेल गामक दौड़ा-दौड़ी ! ओ गामकेँ बिसरले रहैत छलाह !

छोटकी भौजीकेँ ओइ दिन नहि जानि की फुरलनि । एक टा लिफाफ हाथमे दैत लजाइत कहलथि–'ई 'हुनका' दऽ देबनि ।'

चिट्ठी लऽ दरभंगा जाइत काल रविकेँ उत्सुकता भेलैक । बड़ रोकलक अप्पन मोनकेँ । मुदा नहि रहि भेलैक । विक्रम भाइकेँ देबासँ पूर्व ओइ चिट्ठीकेँ पढ़ि लेलकै–टेढ़-मेढ़ अक्षरमे किछुए पाँती ! रवि अपन कोठलीमे मनोजोसँ नुकाकऽ साँस रोकि ओइ चिट्ठीकेँ पढ़लक–

प्राणनाथकेँ दासीक प्रणाम !

अहाँ सुधि बिसरा देलहुँ तऽ हमही निर्लज्जि भऽ लिखि रहलि छी।

अहाँ कहिया आयब ?

चरणक दासी- सुनयना

लिफाफकेँ बन्द कऽ रवि विक्रम भाइकेँ दऽ देलकनि । चिट्ठी देखि विक्रम चौंकलाह । फेर लिफाफकेँ तेना पाकिटमे राखि लेलनि जेना कोनो खास बात नहि होइ ।

अगिला शनिकेँ गाम जाइत काल विक्रमो एक टा लिफाफ देलथिन । नहि

जानि किएक, रविकेँ ओकर प्रतीक्षा छलैक । झट ओ लिफाफ अपन जेबीमे नुका लेलक । आ, गाम आबऽसँ पहिने, स्टेशनक वेटिंग रूममे, मनोजोसँ नुकाकऽ ओइ चिट्ठीकेँ पढ़लक–

हमर अप्पन सुनयना,

अहाँ विश्वास नहि करब जे अयबा लेल मोन कतेक छटपटाइत अछि । सभ शनिकेँ जखन रवि-मनोज गाम विदा होइत अछि, मोन करैत अछि जे हमहूँ संग लागि जाइ ।

मुदा लोकलाज पयरमे डोरी बान्हि दैत अछि । मामा की सोचताह ? पढ़ाइमे भुसकौल, अइ सभमे तेज ! तँ मोनकेँ मारिकऽ एतहि रहि जाइ छी । किछुए दिनक तऽ गप्प छैक ! सौँसे जिनगी तऽ पड़ले अछि ! अहाँ तऽ हमरे छी, अहाँकेँ हमरासँ के छीनत ? यैह सोचिकऽ रहि जाइत छी ।

अहूँ अपन मोनकेँ बुझाउ ।

अहाँक— विक्रम

चिट्ठीकेँ फेर साटिकऽ गाममे छोटकी भौजीकेँ दऽ देलकनि । गामसँ अबैत काल भेटलैक एक टा दोसर लिफाफ । नुकाकऽ ओकरो पढ़लक रवि–

वाह रे स्वामीजी ! बढ़ियाँ उपदेश पठौने छी । अपन मोनकेँ बुझाउ ! मुदा अहाँकेँ के बुझाओत ? हम अहीँक छी आ कतहु पड़ायलि नहि जा रहलि छी । मुदा ई समय पड़ायल जा रहल अछि । ई ककरो संग नहि दैत छैक, घूरिकऽ अयबो नहि करैत छैक । हमरो अहाँक नहि घूरत ।

किछु बुझलिऐक स्वामीजी ?

दासी— सुनयना

पढ़िकऽ विचित्र गुदगुदी लगलैक रविकेँ । छोटकी भौजीक ठोरपर दाबल-दाबल हँसी मोन पड़लैक । गुम्मा छोटकी भौजी ! सत्ते, भितरघुइँया छैक ! विक्रम भाइकेँ देलकनि चिट्ठीमे पटकनियाँ ! जवाब फुरतनि ?

जवाब ठीके नहि फुरल रहनि, पढ़ल-लिखल विक्रम भाइकेँ लोअर पास कनियाँक सबालक ! हारि मानैत लिखने छलथिन–

अहाँ ठीके लिखलहुँ सुनयना ! बितलाहा समय नहि घुरैत छैक । रहि

जाइत छैक मात्र अफसोच । हमरो भऽ रहल अछि । लोकलाजे अनेरो एतेक समय गमौलहुँ ।

अगिला शनिक प्रतीक्षा करब । रविक संग हमहूँ आयब–

–विक्रम

रवि लिफाफ दऽ देने छलैक । भरि दिन खुशीसँ नचैत छलैक छोटकी भौजी ! रवि दिन जाइत काल कहलकै–'अगिला बेर एकसरे नहि आयब । 'हुनको' लेने अयबनि ।'

सत्ते आयल विक्रम । मामा डँटबो कयलथिन–'तोँ दुनू भाइ तऽ गामकेँ एकदम बिसरले जाइ छऽ ! मोहनकेँ ओकालतिसँ फुरसति नहि, आ तोरा पढ़ाइसँ। शनि-रविकेँ आयल करऽ ।'

'जो रोगी को भावे, सो बैदा फरमावे ।' विक्रमकेँ अयबा-जयबाक बाट खूजि गेलनि । सभ शनिकेँ आबऽ लगलाह ।

ओइ शनिकेँ नहि अयलाह तँ रवि दिन गामसँ घुरैत काल रवि छोटकी भौजीकेँ टोकलकनि–'भाइकेँ चिट्ठी नहि देबनि भौजी !'

छोटकी भौजी हँसलीह– एक टा तृप्त हँसी ! आब हुनकर ठोरपर दाबल-दाबल हँसी नहि रहैत छलनि । खूब मुखर भऽ हँसैत छलीह– एक टा तृप्त आ मादक हँसी ! रविक देह सिहरि गेलैक ।

हँसी रोकिकऽ कहलथिन–'आब अपने अबिते छथि तऽ चिट्ठीक कोन काज ?' फेर जेना किछु ध्यान गेलनि । दुष्टतापूर्वक हँसैत पुछलथिन–'चिट्ठीक बड़ पुछारी रहैत अछि ? चोराकऽ हमरासभक चिट्ठी पढ़ैत तऽ नहि छलहुँ !'

रवि झट कहलकनि–'आब काज निकलि गेल तऽ एहिना सन्देह करब किने ! पहिने तऽ चिट्ठी लऽ जाय लेल नेहोरा करैत रहैत छलहुँ !'

भौजी परतारैत कहलथिन–'तामस नहि करू ! फेर काज हैत तऽ के लऽ जायत चिट्ठी ? एक टा अहीँ तऽ दुलरुआ देओर छी ।'

छोटकी भौजीकेँ चिट्ठी पठयबाक काज नहि पड़लनि । विक्रम बराबरि अबैत रहल गाम । छोटकी भौजी सुनयना तृप्त आ मादक हँसी छिड़ियबैत रहलीह। ओइ हँसीकेँ देखि रविक देह सिहरि जाइ ।

आ, ओइ दिन तँ देहक सभ टा नस तनतना उठलैक ! रातिकेँ निन्न टूटि गेल रहैक । लग्घी करऽ बाहर आयल रहय । वर्षा भऽ रहल छलैक । ओसारेक कातमे बैसि गेल । उठल तँ छोटकी भौजीक कोठली दिस ध्यान गेलैक । कोठलीमे कने-कने इजोत खिड़कीसँ देखाइत छलैक । मुदा कोठलीक दरबज्जा खूजल देखि रवि चौँकल । नीक जकाँ देखलापर दू टा छाया पानिमे ठाढ़ बुझयलैक–ओसारोसँ नीचाँ, आङनमे ठाढ़ । घर भरि निद्रामे निमग्न छलैक आ विक्रम आ भौजी आङनमे पानिमे भीजि रहलि छलीह । वर्षाक फुहार देहपर लैत भौजी सिहरिकऽ विक्रमक देहसँ चिपकि जाइत छलीह ! फेर देह छोड़ि मुँह उठा वर्षाक फुहार मुँहपर लैत छलीह आ फेर सिहरिकऽ द्विगुणित वेगसँ चिपकि जाइत छलीह !

रवियोक पयर ओही ठाम जमीनमे चिपकि गेलैक आ छोटकी भौजी आ विक्रम बड़ी काल ओहिना वर्षामे भिजैत रहलथिन– आलिंगित-प्रतिआलिंगित, चुम्बित-प्रतिचुम्बित !

मनोज दोसरे काण्ड कयलक दरभंगामे । बोर्डक परीक्षा छोड़ि मातृक पड़ा गेल । रवि परीक्षा देलक आ गाम आबि गेल ! संगे मोहन आ हुनकर कनियाँ सेहो अयलथिन ।

मोहन अपराधी जकाँ लालमामा लग ठाढ़ भेलाह–'हमरा क्षमा करब छोटका मामा ! हम अपन उत्तरदायित्व नहि निमाहि सकलहुँ । मनोजक अइ कृत्य लेल हम अपराधी छी !'

लाल दुखी स्वरमे कहलथिन–'तोहर कोनो दोष नहि छऽ मोहन ! सभ टा कर्मक दोष ! हमहूँ मैट्रिक पास नहि कऽ सकलहुँ, भाइ बी.ए. धरि पढ़लनि । आशा छल जे बेटा बापसँ आगू बढ़त । मनोज एना करताह, परीक्षा छोड़ि पड़ा जयताह, से ककरा सन्देह छलैक ? तेरा सन गार्जियनक संग छलाह । तोँ अपने पढ़लह, विक्रमकेँ पढ़ौलहक आ रवि तँ इलाकेमे नाम करत । आ, हमर सुपुत्र परीक्षाक डरे पड़ा गेलाह ।'

–'मोनकेँ एना दुखी नहि करू छोटका मामा ! एहि बेर पड़ा गेलाह तेँ की ? परीक्षा देबहि पड़तनि ! सप्लीमेन्टरी हेतैक । अइ बेर हम सावधान रहब ।

समय निकालि अपने पढ़यबनि, विक्रम पढ़ौथिन । ई गल्ती दोबारा नहि हैत हमरासँ !' मोहन आश्वासन देलथिन ।

मातृकोमे काण्ड कयलक मनोज । मामा-मामीक टाका-पैसा, गहना-गुड़िया लऽ ओतहुसँ पड़ायल । ओतऽसँ बापकेँ एक टा पोस्टकार्ड लिखि देलकनि–'बम्बै जा रहल छी ॥ एक्टर बनब ।'

लालकाकी छाती पीटिकऽ कानऽ लगलीह । हुनका अपयशक चिन्ता नहि छलनि । भाइ-भौजीक टाका-पैसा गहना-गुड़िया घुरा देथिन । जेठ बेटा छलनि, बम्बैमे किम्हर हेरा जयतनि, घर घुरबो करतनि कि नहि ! ओ खटवास लऽ लेलनि–'ककरो पठबियौक । मनोजकेँ ताकि अनतैक ।'

सभ बुझाकऽ हारि गेलनि, लालकाकी अपन जिदपर अड़लि रहलीह । अन्तमे टाका-पैसा लऽ विक्रम विदा भेलाह बम्बै । ताकिकऽ घुरा अनथिन । गामक दू गोटे रहैत छलाह बम्बै– महेन्द्र आ गणपति । दुनू सहोदर भाइ । वैहलोकनि तकबाक कोनो व्यवस्था करथिन । चिट्ठी पहिने लिखि देल गेलनि ।

विक्रम मनोजकेँ ताकऽ गेलाह । रवि गामे रहि गेल । रिजल्टक प्रतीक्षा करऽ लागल । प्रथम श्रेणी होयबे करतैक, केहन स्थान भेटैत छैक जिला वा बोर्डमे, तकरे प्रतीक्षा छलैक । अपना तँ नीके आशा छलैक ।

रामोकेँ नीके आशा छलनि । लालकेँ कहलथिन–'एक टा सत्यनारायणक पूजाक व्यवस्था करह नीक जकाँ । मनोज अबस्से घुरि आओत ! भगवान सद्बुद्धि देथिन ।'

पूजा बड़ धूमधामसँ भेलैक । रविए पूजापर बैसल । बहुत दिनपर पूजाक एहन वृहत् आयोजन गाममे भेल रहैक । पीअर धोती पहिरने पुजेगरी रवि दिस सभक टकटकी लागि गेल रहैक ।

कवितो आयलि रहैक पूजामे । पूजाक बाद प्रसाद लऽ जाइत रहैक तँ रवि टोकलकै–'चुपचाप पड़ायलि जाइत छेँ ! आइ-काल्हि देखितो ने छियौक ! फेर विवाह द्वारे घरसँ निकलब बन्द छौक की ?'

रविक बातपर कविता हँसलैक । ओकर विवाह फेर ठीक भऽ गेल छलैक, सिद्धान्तो भऽ गेल छलैक । विवाह छलैक– तीन मास बाद । पछिला बेर विवाह ठीक भेल रहैक आठ वर्ष पूर्व तँ कविताक घरसँ बाहर निकलब, खेलायब-कूदब बन्द भऽ गेल रहैक । ओही लेल दूनू झगड़ो कयने छल आ फेर रविक दरभंगा जयबाकाल ओ झगड़ो खतम भऽ गेल रहैक चारि वर्षक बाद । रवि तहिया तेरह वर्षक छल ।

बीचमे गाम अबैत छल तँ कवितासँ कहियो-काल भेँट होइत छलैक । मुहाबज्जी जे बन्द छलैक, से शुरू भऽ गेल रहैक गाम छोड़बासँ पहिने । भेँट भेलापर किछु गप्प भऽ जाइक । नहि किछु तँ पढ़ाइएक गप्प !

रवि पुछैक–'तोहर पढ़ाइ केहन चलै छौ ?'

कविता हँसिकऽ **कहैक–'ओहिना** टामन-गुड़िया । कऽ टऽ कऽ अक्षर पढ़ि लैत छी आब तोरे **किताबसभक बलेँ** ।'

रवि कहैक–'झूठ बात ! हमर किताबसभक बलेँ नहि, अपन इच्छाशक्तिक बलेँ । ओहि बलेँ एकदिन **तोँ** धड़-धड़ अंग्रेजियो पढ़ऽ लगबेँ ।'

कविता हँसऽ लगैक–'अंग्रेजी पढ़िकऽ कोन बिलैँत जयबाक अछि हमरा ? कहुना दू-पाँती लिखऽ आबि जाय, सैह बहुत ।'

रविकेँ बूझल छलैक जे कविता दू पाँती लिखबासँ बहुत बेसी सीखि लेने छलैक । पुरान जिद्दी छलैक । जाहि चीजक पाछाँ पड़ि जाइत छलैक, ओकरा कऽकऽ छोड़ैत छलैक ।

चारि वर्ष बीति गेलैक । कविता सत्रह वर्षक भऽ गेलि । रविसँ बारहे घंटा छोट छलैक । रवियो मैट्रिकक परीक्षा दऽ गाम आयल । गाम आबि सुनलकै– कविताक विवाह ठीक भऽ गेलैक । सिद्धान्त भऽ गेलैक । तीन मास बाद विवाह छैक ।

सूनिकऽ रविकेँ बड़ प्रसन्नता भेलैक ! आठ वर्ष पहिने जकर विवाहपर ओ खिसियाकऽ वर-वरियातीकेँ मारिकऽ भगयबा लेल उद्यत छल, ओकर विवाहक गप्प सूनि चेतन होइत रविकेँ बड़ प्रसन्नता भेलैक । प्रसन्नता एहू लेल बेसी जे वर खूब पढ़ल-लिखल आ सुखी-सम्पन्न छलैक ! बी.ए. पास आ सुन्दर वर ! गामक लोक देखने छलैक । हरि बाबूक सार । बहिनक संग हवेली मोहनपुर आयल छलैक । नहि जानि, कतऽ कविताकेँ देखलकै आ जिद धऽ लेलकै । सभ टा प्रयास वरे पक्ष दिससँ भेलैक । वसन्त ठाकुरकेँ किछुओ करऽ नहि पड़लनि । जाहि बेटी लेल गामेगाम बौआयल छलाह, दोषाहि कहि जकरा सभ पछिला आठ वर्षसँ अस्वीकार कऽ रहल छलैक, तकरा राजकुमार सन वर समाद पठा स्वीकार कयलकै । भाग्यक बात !

ओही गप्पपर रवि पूजा-दिन हँसी कयलकै । ओकर ओइ हँसीपर कविता हँसलकै– 'की विचार छौक ? फेर मारामारी करबेँ की ?'

पुरना गप्प मोन पाड़ि रवियो हँसल । लोकसभकेँ ओम्हरे अबैत देखि कविता एक दिस ससरि गेलैक ।

समयो ससरि गेलैक । एक मास बीति गेलैक । मनोज बम्बैमे पकड़ल गेल । विक्रम अपना संग लऽकऽ घुरलैक । उपासक नौबति छलैक । स्टूडियोसभक गेटपर दरबानसभसँ धक्का खा-खा हारि गेल छल । भूखल-पिआसल एक दिन महेन्द्रक डेरापर गेल आ ओतहि विक्रम ओकरा धऽ लेलकै ।

बम्बैक भूत मनोजक माथपर चढ़ले छलैक । अजीब हुलिया बनौने छलैक ! खूब कम मोहरीवला पेन्ट आ एकदम गाढ़ रंगक लहरदार कमीज ! माथक केश झबरल, आँखि-कपार सभ झाँपल । गलामे हरदम एक टा स्कार्फ बान्हल !

लालकाकी देखिते कानऽ लगलथिन । लालकाका बिगड़िकऽ मुँहो नहि बजलथिन । मनोज लेखे धनसन ! ओही हुलियामे गाम भरि बौआय, जेना किछु भेले नहि होइ ! चोराकऽ सिगरेट सेहो पीबय । खूब दामी-दामी सिगरेट बम्बैएसँ संग अनने छल ।

रविक कोठलीमे ओकर बिछौनपर पड़िकऽ चैनसँ सिकरेट धूकऽ लगैक । धूआँक गोल-गोल औँठी बना मुँहसँ छोड़ैक आ रविकेँ कहैक— 'देखहिक, एहिना हीरोसभ सिगरेट पीबै छैक ।'

रवि डरक लेल दरबज्जा बन्द कऽ लेअय, क्यो देखि नहि लैक ।

ओइ दिन दुपहरियामे बड़ गर्मी रहैक ! बाहर आगि बरसि रहल छलैक आ कोठलियोमे चैन नहि रहैक । रवि अपन कोठलीमे कछमछ करैत छल । ताही काल नहि जानि कोम्हरसँ मनोज अयलैक आ ओकर बिछौनपर चितंग पड़ि रहलैक ! कहलकै— 'बम्बैमे गर्मीक कोनो समस्ये नहि छैक रवि ! समुद्र छैक समुद्र ! सभ साँझ-प्रात समुद्रक कातमे पड़ल रहैत अछि ! आ, एक टा बात कहियौ रवि, समुद्रमे छौँड़ीसभ नङटे नहाइत छैक !'

—'नङटे ?' रवि अविश्वाससँ कहलकै ।

—'हँ रे, नङटे । ओहो कोनो कपड़ा भेलैक ! दू आङुर चौड़ा बिस्ठी डाँड़मे आ ओतबे चौड़ा एक टा ऊपरो बान्हल ! ओइसँ कतहु देह झपाइ ? की कहिऔ रवि ! बड़ मजा अबैत छल जुहूपर ! सटले-सटल मौगी-पुरुषक जोड़ा औंघरायल— एकदम नंग-धरंग । ककरो कोनो लाज-धाख नहि ! तोँ बगलोसँ चल जयबहिक तैयो कोनो चिन्ता नहि ! एक-दोसरसँ चिपटल पड़ल रहतौक !'

मनोज खिखियाकऽ हँसऽ लगलैक जेना स्मरण मात्रेसँ आनन्द आबि गेल होइ । रवियोकेँ सुनबामे मोन लागि रहल छलैक, मुदा ऊपरसँ तामस देखबैत कहलकै–'यैहसभ देखऽ इम्तहान छोड़ि बम्बै पड़ायल छलेँ ? झुट्ठा नहितन !'

मनोज ओकर तामसकेँ अनठबैत बजलै— 'परीक्षा तऽ फेरो भऽ जयतैक । मुदा जे मजा बम्बैमे देखलिऐक से फेर जिनगीमे देखबऽ, तकर आस नहि । तोरा विश्वास हेतौक ? बाटो-घाटमे लोक उघारे चलैत छैक । बूझ जे नङटे । झाँपलसँ बेसी उघारे रहैत छैक देह । जेम्हरे जयबेँ, तेम्हरे ओकरे प्रदर्शनी । सिनेमामे ओहि प्रदर्शनीकेँ कहैत छैक-'बाक्स आफिस' !

रवि फेर कृत्रिम क्रोध देखबैत डँटलकै— 'आ ओही बाक्स आफिसक लोभमे तोँ बम्बै पड़ायल छलेँ ! आइए कहैत छियनि लालकाकाकेँ । तोहर बियाह हैब जरूरी छौक ।'

—'ना बाबा ! अइ जंजालमे के पड़त अखन ? हम तँ मौजी जीव छी । जखन जेम्हर इच्छा हैत, जायब । खुट्टासँ बन्हाकऽ के रहत ?'

मनोज मुस्किआइत चल गेलैक । रवि मनोजक वर्णित बम्बैकेँ कल्पनामे देखऽ लागल । किछु काल बाद जोरसँ मेघ गरजलैक आ तड़तड़ा कऽ वर्षा होबऽ लगलैक ।

ओही वर्षामे भिजैत क्यो दौड़ले ओकर कोठलीमे आबि गेलैक । कविता छलैक । दौड़ितो-दौड़ितो नीक जकाँ भीजि गेल छलैक । भीजल कपड़ा देहसँ सटि-सटि गेल छलैक— जहाँ-तहाँ । रविकेँ ओम्हर देखल नहि गेलैक । बाहर देखऽ लागल ।

कविता भीजल नुआ गारैत कहलकै— 'नीक जकाँ भीजि गेलहुँ । एकाएक आबि गेलैक वर्षा ।'

रवि कविताक बात नहि सुनलकै । ओकर ध्यान समुद्रमे नहाइत छौँड़ीसभपर छलैक । ओकरा वर्षामे भिजैत छोटकी भौजी आ विक्रम मोन पड़लैक । भीजल आ आलिंगित ! चुम्बित-प्रतिचुम्बित ! बिनभिजनो ओकर देहमे एक टा सिहरन व्याप्त छलैक ।

बिना कविता दिस देखनहि पुछलकै— 'एना देखतौ क्यो हमर कोठलीमे तऽ की कहतौक ?'

कविता निर्भय हँसलैक-'की कहत ? कोनो पहिल बेर आयलि छी तोहर कोठलीमे ?'

रवि आब तकलकै कविता दिस । भीजल देहसँ जहाँ-तहाँ सटल वस्त्र लग ओकरो दृष्टि सटऽ लगलैक । लुब्ध दृष्टिएँ तकैत किछु बदलल स्वरमे बाजल— 'ओ बात आर छलै कविता ! तहिया हम-तोँ नेना रही । आब पैघ भऽ गेल छी हमरालोकनि । तोहर बियाह छौक दुइए मास बाद । लोक देखतौक तऽ की-कहाँ सोचतौक ?'

—'तऽ सोचऽ दहिक' कविता ओहिना निर्भय बजलैक । रविक आँखिक लुब्ध चेष्टा आ बदलल स्वरपर ओकर ध्यान नहि गेल छलैक । ओ अपन भीजल नुआ आ आङीकेँ पोछऽ-गारऽमे लागलि छलि ।

रविक मोन नियंत्रणसँ बाहर भऽ गेलैक । एक टा अनुचित अभद्र प्रश्न कऽ उठलैक—'बियाहक बाद की होइ छै कविता !'

अइ बेर कविता लजा गेलैक । प्रश्नक अनौचित्य वा अभद्रतापर ओकर तैयो ध्यान नहि गेलैक । ओ भीजल देह लेने अपन बालसंगीक कोठलीमे निर्भय ठाढ़ि छलि आ प्रत्येक प्रश्नक सहज ढंगसँ जवाब दऽ रहलि छलैक । ओइ प्रश्नपर कहलकै– 'हम की जानऽ गेलिऐक ? तोहीँ लाल-बुझक्कर छेँ, तोरे सभ टा बुझल छौक !'

विचित्र उन्मादक उत्तेजनामे आगू बढ़ि रवि कविताकेँ अपन बाँहिमे समटैत बड़बड़ा उठल–'तऽ आ, आइ हमहीँ सभ टा बुझा दैत छियौक ।'

बाहर वर्षा बन्द भऽ गेल छलैक । रवि मुँह घुमाकऽ कोठलीक एक टा कोनमे ठाढ़-छल । कविता चौकीपर मूड़ी गोँतने बैसलि हिचुकि-हिचुकि कानि रहलि छलैक ।

फेर कानब बन्द भऽ गेलैक । मूड़ी उठा रवि दिस तकलकै । रविक पीठ छलैक ओकरा दिस । कविता चौकीसँ ऊठिकऽ ठाढ़ि भऽ गेलि । रवि घूमिकऽ तकलकै । कविताक आँखिमे आगिक लपटि छलैक । ओकरा दिस ओही लहकैत दृष्टिएँ तकैत कविता तीव्र स्वरमे बजलै– 'हम कहि देबैक, सभकेँ कहबैक... रामकाकाकेँ कहबनि, सौँसे गामकेँ कहबैक...'

आ, दौड़ैत कोठलीसँ बाहर चल गेलैक । रविकेँ डर भेलैक । कविताक जिद्द आ तामस ओकरा बूझल छलैक । ओ सत्ते सभकेँ कहि देतैक । एक बेर तमसायलि रहैक तँ बाबूसँ मारि खुआ देने रहैक । जिनगीमे बापक पहिल दण्ड ।

डेरायल रवि दौड़िकऽ बाहर आयल । कविताक कोनो पता नहि छलैक ।

अबस्से बाबूक घरमे गेलि होयतैक । जे क्षण ने बाबू घरसँ बहरयथिन आ ओ लाजे मरि जायत ! सुनिते बाबूक सभ टा स्पप्न मरि गेल होयतनि । कतेक आशा छनि हुनका हमरासँ ! आ, हमर एहन कृत्य ? कोना देखा सकब बाबूकेँ अपन कलंकित मुँह ?

रवि दौड़िकऽ आङनसँ बाहर आबि गेल आ दौड़िते गामसँ बाहर दिस पड़ायल । धार पार कऽ पड़ायले चल गेल । बीच-बीचमे घुरि-घुरिकऽ पाछाँ ताकय जे क्यो खेहारने तऽ ने अबैत छैक ! कतहु क्यो ने अभरलैक । ओकरा दौड़ल चल जाइत देखि लोक कने आश्चर्यसँ तकलकै– कथीक हड़बड़ी छैक रविकेँ ! एना दौड़ल किए जा रहल छैक ?

स्टेशन लग पहुँचल । गाड़ीक कोनो बेर नहि छलैक । ओ लाइने-लाइने दौड़ऽ लागल । पयर खाली छलैक । देहपर एक टा गंजी मात्र । धोती दौड़िते काल नीक जकाँ डाँड़मे खोंसि लेने छल । लाइनक कातक पाथर-कंकड़ पयरमे कतेको बेर गड़लैक । ठेस लगलैक आ औँठा थकुचा भऽ गेलैक । पयर शोणित-शोणिताम ! तैयो रवि पड़ाइते रहल, घुरि-घुरिकऽ पाछाँ ताकय आ पड़ायल जाय ।

दरभंगा पहुँचल । ओतऽ रहब सुरक्षित नहि छलैक । चारूकात चिन्हार लोक । चारि वर्ष ओतहि पढ़ने छल । विद्यार्थी, दोकानदार आ शहरक लोक ओकरा चीन्हैत छलैक । गामोसँ लोक अबिते रहैत छैक— सभ ट्रेनसँ । रविक मोन निश्चिन्त नहि भेलैक ।

भूख-पियासक ज्ञान सेहो हेरा गेल रहैक । एक टा भय ओकर सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ आक्रान्त कऽ देने रहैक । मात्र एक टा भय— 'बाबू सुनता तऽ की सोचता ! कोना देखा हैत हुनका अपन कलंकित मुँह !' ओहि डरेँ ओ सभसँ नुकाय चाहैत छल, पड़ाकऽ सभसँ दूर जाय चाहैत छल ।

राति भेलैक तँ भूखल-पियासल एक टा गाड़ीमे बैसि गेल । जा धरि गाड़ी खूजि नहि गेलैक, धोतीक साँची खोलि अपन सौँसे मुँहकेँ झपने रहल । गाड़ी खुजलैक आ बरौनी पहुँचा देलकै ।

ओतऽ फेर दोसर गाड़ी । रवि पड़ायले चल गेल ।

रवि ऊठिकऽ बैसि गेल ।

गामक स्टेशन नजदीक आबि रहल छलैक । नीक जकाँ प्रात भऽ गेल छलैक आ गाड़ी आधा घंटा दरभंगामे रुकि आगू बढ़ल छलैक । रवि मुँह-हाथ धो, चाह पीबि आयल छल नीचाँ उतरि, आ फेर बिछौन समेटिकऽ बान्हि लेने छल ।

कोँढ़ जोर-जोरसँ धड़कि रहल छलैक । चौदह वर्षक बादो ओ भय ओतबे तीव्र आ उत्पीड़क छलैक । एतेक समय बितलोपर कनियोँ कम्म नहि भेल छलैक। भरि गाम थूकत हमरापर आ बाबूकेँ घाड़ नहि उठा होयतनि ।

गाड़ी दरभंगासँ खूजि गेल रहैक । रवि अपन धड़कैत कोँढ़केँ शान्त करबाक व्यर्थ चेष्टामे लागल रहल । स्टेशन आबि गेलैक । उतरबासँ पहिने एक बेर डिब्बाक खिड़कीसँ मूड़ी निकालि ओ चारूकात तकलक । किछुओ अपरिचित नहि भेल छलैक । जेना समय ठमकल होइ ! ओहिना स्टेशनक लाल मकान आ लम्बा प्लेटफार्म । कतहु कोनो परिवर्तन नहि भेल छलैक एतेक पैघ अन्तरालमे । रविकेँ बड़ आश्चर्य भेलैक ।

सामान उतारि प्लेटफार्मपर आबि गेल । फेर चारू कात तकलक । लोक बेसी अपरिचित, मुदा बीच-बीच परिचित चेहरासभ सेहो लग दने आगू बढ़ि गेलैक। ककरो आकृतिपर चीन्हि लेबाक कोनो भाव नहि उगलैक । दू टा कुली ओकर सामान लग ठाढ़ भेलैक । ओकरो चेहरा रवि चिन्हलकै, मुदा नाम नहि मोन पड़लैक। कुली दुनू ओकरा एकदम्मे नहि चिन्हलकै । एक बेर रविकेँ टोकलकै दुनू— 'कतऽ जयबै बाबू ?'

रवि अपने गुनधुनमे छल । कोनो उत्तर नहि देलकै । दोसर यात्रीक तलाशमे ओ दुनू कुली प्लेटफार्मक दोसर कात चल गेलैक । रवि एक बेर फेर नीक जकाँ स्टेशनक साइनबोर्ड पढ़लक— गफूरगंज ! बोर्ड नव लिखल गेल छलैक, पीरा बोर्डपर कारी अक्षर एकदम स्पष्ट छलैक । मुदा स्टेशनक भवनक लाल रंग किछु बदरंग-सन भऽ गेल छलैक जेना बरखोसँ पोचारा नहि भेल होइ !

एकाएक ओकरा अपन चेहरा देखबाक तीव्र आकांक्षा भेलैक । ओकरो चेहरा तँ अइ अन्तरालमे एहिना बदरंग भऽ गेल होयतैक, नहि तँ एतेक रास चिन्हार लोक ओकरा बिना चिन्हने कोना चल जाइत होयतैक ? ट्रेन खूजि गेल छलैक आ यात्रीसभ लपकल अपन गन्तव्य दिस चल गेल छल । किछुए यात्री प्लेटफार्मपर रहि गेल छलैक । सामान ओहिना प्लेटफार्मपर छोड़ि रवि वेटिंगरूममे गेल ।

वेटिंगरूमक हालति एकदम खराब छलैक । बीचमे राखल टेबुल एकदम चितकाबर भऽ गेल छलैक आ बड़का आरामकुर्सीक बेँत टूटिकऽ लटकि गेल रहैक– बीचमे बड़की टा धोधरि जकाँ । एक टा बेंच कातमे पड़ल छलैक । रवि बाथरूममे गेल आ अयनाक सोझाँ ठाढ़ भऽ गेल ।

अयना बीचसँ फूटल छलैक आ क्यो फोड़लाक बाद आधा टुकड़ी सेहो हँटा देने छलैक । बाँचल आधा टुकड़ी शीशामे अपन आकृति देखब एकदम मोस्किल छलैक । कहुना मूड़ी सटा अपन चेहरा देखलक रवि–चौदह वर्षसँ बेसी पैघ वनवाससँ परिवर्तित अपन चेहरा । अइ पैघ प्रवासमे सत्रह वर्षक नौजवानक आकृति कतहु हेरा गेल छलैक । ओइ नौजवानक आकृतिकेँ अयनाक प्रतिबिम्बित छविमे तकबाक रवि असफल चेष्टा कयलक । बीतल चौदह वर्षक प्रत्येक क्षण ओकर आकृतिपर अपन निशान छोड़ि गेल छलैक । गोर आकृति जरिकऽ ताम्रवर्ण भऽ गेल छलैक ओ आँखिमे एक टा कठोर उदासी पसरि गेल रहैक । केशमे असमय जहाँ-तहाँ उज्जर तार झलकऽ लागल रहैक आ छौ फीटक बलिष्ठ शरीर किछु-किछु आगू दिस झुकल सन लगैत छलैक । अयनामे अंकित अपन अस्पष्टो छवि रविकेँ तमसायल आ रुष्ट लगलैक, जेना घुरि अयबाक ओकर निर्णयपर एखनो रुष्ट होइ । बितलाहा चौदह वर्षमे अनेको बेर गाम घूरि जयबाक विचार भेल रहैक । मुदा, प्रत्येक बेर उपहास करैत, भर्त्सना करैत गाम भरिक लोकक आकृति ओकर आँखिक आगाँ नचैत छलैक आ नचैत छलैक ओइ उपहास करैत, भर्त्सना करैत आकृतिसभक बीच सहमल, अपमानित आ हताश बाबूजीक आकृति । ओकर निश्चय बदलि जाइत छलैक । कोना ठाढ़ होयत ओ सभक सोझाँ ? की जवाब देतैक जे किएक गाम छोड़िकऽ भागल छल ? जवाब देबाक प्रयोजने नहि पड़तैक । कविता सभकेँ कहने होयतैक आ सौँसे गाम ओकर नामपर थूकि देने होयतैक ।

एक बेर फेर ओकरा कवितापर क्रोध भेलैक । ई क्रोध गाम छोड़बाक दिनसँ एक्को बेर, एक्को क्षणक लेल कम्म नहि भेल छलैक । ओकर सम्पूर्ण जिनगीकेँ तबाह कऽ देलकै । एक क्षणक कमजोरीमे, एक टा एकान्तक उत्तेजनामे जीवनक सभ टा स्वप्न, सभ टा महत्त्वाकांक्षा जरिकऽ छाउर भऽ गेलैक । आइयो ओइ एकांतकेँ स्मरण कऽ सिहरि गेल रवि । गुमसल दुपहरिया आ फेर आकस्मिक वर्षा । वर्षामे भीजल कविता । ओकर कानब । फेर कानबकेँ बन्द कऽ उठैत एक टा लहकैत दृष्टि आ एक टा धमकी ।

नहि । रवि नहि मोन पाड़त ओइ धमकीकेँ आइ । आइ ओकरा बिसरि ओ गामक स्टेशनपर आबि गेल छल ।

रवि वेटिंगरूमसँ बहार भऽ फेर प्लेटफार्मपर आयल । ओकर निश्चय फेर डगमगा उठलैक । इच्छा भेलैक जे स्टेशन मास्टरक कोठली दिस जा बाहर टाङल बोर्डमे अंकित समय-सारणीमे घूरिकऽ जायवला ट्रेनक समय देखय । ओ गाम किन्नहु नहि जा सकत । बाबूजी दिस आँखि उठा ताकि नहि सकत । गामक लोकक उपहास आ भर्त्सना नहि सहि सकत ।

ओ समय-सारणी देखलक । ट्रेन एक्के घंटाक बाद छलैक । घूरिकऽ जा सकैत छल । मुदा, लगले गेनाइक निर्णय आरो गलत होयतैक । मात्र बाबूजीकेँ देखि सकबाक लालसामे सभ टा खतरा उठा एतऽ धरि आयल छल । माय जन्मे दऽकऽ मरि गेलैक । लालकाकी पोसलथिन । बाबू सभ दिन एकसरे छलथिन । जीवनक एकमात्र आशा रहनि रवि । ओकर चल अयलापर, गामसँ निन्दनीय ढंगसँ निपत्ता भऽ गेलापर, हुनकर की हाल भेल होयतनि ! नहि जानि, कोना होयताह ?

रवि शीघ्रतासँ अपन सामान दिस लपकल । एक टा कुली ओकर सामानक रखबारी करैत ठाढ़ छलैक । दोसर किम्हरो चल गेल छलैक । रवि सामान लग पहुँचल तँ कुली कहलकै–'एना सामान छोड़िकऽ किम्हरो चल जाइत छी, निपत्ता कऽ देत सभ टा सामान । आब ओ इलाका नहि छैक । ट्रेनमे बैसल यात्रीक वस्तुजात झीकि लैत छैक एतुक्का लोक । अहाँ नव बुझाइत छी, तेँ पहिनहि चेता दैत छी ।'

रविकेँ हँसी लगलैक । ओकरे जमीनमे बसल बिलटा ओकरा गाममे नव लोक कहि रहल छलैक । हँसीकेँ नुकबैत कहलकै–'चल, उठा सामान ।'

कुली माथपरक मुरेठा ठीक करैत बजलैक–'कतऽ जयबैक मालिक ?'

सत्ते, बिलटा एकदम नहि चिन्हने छलैक ओकरा । पुरना अभ्याससँ कहलकै रवि–'पछबारि पार । हवेली चल ।'

कुली कने अकचका उठलैक । लगलैक जेना चीन्हि गेल होइ । मुदा नहि, नहि चिन्हलकै ओकरा । कहलकै–'मजूरी मुदा तीन रुपैया लेब मालिक !'

रविकेँ फेर हँसी लगलैक । ओकरा परदेशी बूझि ठकि रहल छैक बिलटा । छौ आनाक बदला तीन टाका ! गामपर पहुँचि चिन्हतैक तँ अपने खूब लजा उठतैक । फेर अपने लगलैक जे एहिमे ठकबाक कोनो गुंजाइश नहि छलैक । चौदह

वर्षमे छौ आनाक तीन रुपैया । एतबा तँ वाजिबे छलैक । दाम तँ तहिना भागि रहल छैक । कहलकै–'चल । देबौ तीन रुपैया ।'

कुली खुशी भऽ गेलैक । बेडिंगपर सूटकेस रखलकै आ कहलकै–'कने हाथ लगा दियऽ मालिक !'

रवि सामान उठा देलकै । कुली दुलकी चालिए गाम दिस विदा भेलैक । रवियो पाछाँ-पाछाँ विदा भेल– डेग सहमल रहैक ।

रौद नीक जकाँ पसरि गेल रहैक । लगभग आठ बाजल होयतैक । सहमल डेग आगू बढ़ैत-बढ़ैत फेर लोथ होबऽ लगलैक । मोन आशंकासँ त्रस्त छलैक । लगैत छलैक जेना एखने क्यो चीन्हिकऽ चिचिया उठतैक– यैह अछि रवि ! चौदह वर्षपर घूरल अछि । मुदा, एकर पाप तँ चौदह जन्मोमे नहि धोआ सकतैक ।

ओ बहुत पाछाँ पड़ि गेल । कुली बहुत दूर चल गेलैक । धारमे नाव रहैक । नावपर धार पारकऽ पछबारि पार आयल तँ मैदान लग मोटरी जमीनपर राखि कुली ठाढ़ छलैक । ओकरा लग अयलापर कहलकै–'एना कोबरा डेगे चलबै मालिक तँ हमर बड़ हर्ज भऽ जायत । किनका ओइ ठाम जयबै ?'

रवि फेर सामान ओकर माथपर उठबैत कहलकै–'राम बाबू ओइ ठाम चल !'

लगलैक जेना बिलटा आब चीन्हि जयतैक । चौँकलैक अबस्स, मुदा किछु बजलैक नहि । सामान लेने आगू बढ़ि गेलैक ।

नामीबाबाकेँ धार दिस जाइत देखलकनि रवि । एखनो जिविते छथि बूढ़ा– रविकेँ आश्चर्य भेलैक । ओ सामान आ कुली आ तकर पाछाँ जाइत रविकेँ देखैत रहलथिन । चिन्हलथिन ककरो नहि । बहुत रास छोट-छोट धीया-पूता रविक अपरिचित आकृति, डील-डौल आ साहेबी पहिराबासँ आकर्षित भऽ पाछाँ-पाछाँ चलऽ लगलैक । रवि अपन घरक समीप पहुँचल । पुबरिया घरक ओसारा सुन्न छलैक । बाबू ओतऽ नहि छलथिन । रविक कलेजा धक्क दऽ उठलैक । फेर मोनकेँ बुझौलक– आङन गेल होयताह वा उतरबरिया घरक ओसारापर होयताह । कुली सामान लेने अङने चल गेलैक । आङनसँ लालकाकाक परिचित स्वर ओ सुनलकनि–'के, के आयल अछि ?'

ओकर कोँढ़ फेर धड़कऽ लगलैक । जकरा डरे, जाहि बातक डरे ओ चौदह वर्ष गाम छोड़ि पड़ायल रहल, से आइ सामने आबिएकऽ रहलैक । कोना तकतनि लालकाकाक मुँह ? किम्हर नुकाओत अपन लज्जा ?

मुदा, नुकयबाक अवसर नहि छलैक । लालकाका आङनसँ बाहर आबि गेल छलथिन । रवि आगू बढ़ि पयर छुलकनि । लालकाका अकचकाकऽ रविक मुँह देखि चिन्हबाक चेष्टा करैत रहलाह आ फेर आह्लादित होइत एक्के बेर चिकरि उठलाह–'रवि छऽ हौ ! सत्ते, रवि छऽ !'

'हँ लालकाका, हमहीँ छी !' रवि लज्जासँ मूड़ी गाड़ने बाजल । लालकाका ओकर लज्जापर ध्यान नहि देलथिन । ओकर कन्हा पकड़ि अपना दिस झीकि लेलथिन आ छातीसँ लगा कानऽ लगलथिन । रवियो कानऽ लागल । बहुत दिनक बान्हल बाढ़ि बान्ह तोड़िकऽ निकलि पड़लैक । रवि हिचुकि-हिचुकिकऽ कनैत रहल– लालकाकाक छातीसँ सटल ।

लालकाका बड़ीकाल धरि संग-संग कनैत रहलथिन–'तोँ अयबे कयलऽ रवि, मुदा अबेरसँ ! भाइ चौदह वर्ष धरि प्रतीक्षा कयलथुन । चौदह वर्ष बीति गेलापर हुनकर आस टूटि गेलनि । फेर ऊठिकऽ बैसि नहि सकलाह । दुइए मास पहिने तँ छोड़ि गेलाह हमरालोकनिकेँ ...!'

लालकाकाक बात ओकर कलेजाकेँ चीरैत गेलैक । एकरे आशंका छलैक । भरिसक फेर नहि देखि सकबनि मुँह । ओ आशंका सत्य भऽ गेलैक । बाबू ओकर मुँह नहि देखलथिन । ओकर पापकेँ क्षमा नहि कयलथिन । घृणापूर्वक ओकरासँ मुँह मोड़ि चल गेलथिन । फेर ककरा लेल घुरल अछि रवि ? के छैक गाममे ?

लालकाका तखनो कनिते छलथिन । रविक आँखिक नोर सुखा गेल रहैक । लालकाकाक बाँहिसँ छूटि ओ ओतहि दलाने लग माँटिपर बैसि गेल छल । ओकर सभ टा संज्ञा हेरा गेल रहैक । लालकाका फेर की कहलथिन, ककरा कहलथिन, किछुओ नहि सुनलकै रवि । ओहिना माँटिपर बैसल रहल । गामक लोक दरबज्जापर जुटऽ लागल रहैक । परिचित-अपरिचितक भीड़ ।

लालकाका अपनाकेँ सम्हारलनि । आङनक मुँहथरि लग ठाढ़ि लालकाकीकेँ कहलथिन–'चिन्हियौ तऽ के आयल अछि ?'

भरि गामक लोक दरबज्जापर जमा भऽ गेल छलैक । अङनोमे स्त्रीगणसभक मेला लागि गेलैक । रवि ओहिना आङनक मुँहथरि लग लालकाका आ लालकाकीक बीच ठाढ़ छल ।

ठाढ़ छल आ विस्फारित दृष्टिसँ उमड़ल भीड़क प्रत्येक आकृतिकेँ देखि

रहल छल । कोनो आकृतिपर उपहास वा भर्त्सनाक भाव नहि छलैक । कोनो कोनसँ अपमानजनक शब्द नहि उठलैक । रवि आशंकापूर्वक प्रतीक्षे करैत रहि गेल ।

बेसी आकृतिपर आश्चर्यक भाव छलैक– चौदह वर्षक बाद घुरि अयबाक बातपर आश्चर्यक भाव । जेना विश्वासे नहि भऽ रहल होइ जे आँखि जे देखि रहल छैक, से सत्ये छैक, स्वप्न नहि ! ओइ भावकेँ चीन्हैत छलैक रवि । धीयापूता आ नव वयसक तरुण-तरुणीक आकृतिपर पसरल कुतूहलपूर्ण भावकेँ सेहो ओ नीक जकाँ चिन्हलकै । मुदा, जकर आशंका छलैक, से कतहु नहि अभरलैक ।

रवि बड़ी कालधरि आशंकापूर्वक प्रतीक्षा कयलक । मुदा, प्रतीक्षे करैत रहि गेल ।

लालकाका पीठपर हाथ दैत कहलथिन–'मोनकेँ छोट नहि करऽ रवि ! भाइ नहि रहलाह । मुदा हम छी । तोहर लालकाकी छथुन । माये जकाँ दूध पिया पोसने छथुन तोरा ! तोँ कोनो चिन्ता नहि करऽ । चलऽ, आङन चलऽ पहिने ।'

रवि आङनमे आबि गेल । अङनोमे थहाथही भीड़ छलैक । खाली स्त्रीगणेक भीड़ । रविकेँ लगलैक जेना एही भीड़मे कतहु कविता छैक आ जे घड़ी ने चिचिया उठतैक–'यैह अछि ओ पापी राक्षस ! एकरापर थूकि दियौक सभ क्यो...'

मुदा कविता कतहु ने छलैक । रविकेँ अपने विचारपर विस्मय भेलैक । कविता कोना रहतैक अइ आङनमे ? ओ तँ विवाह-दुरागमन कऽ चैनसँ अपन सासुर बसलि होयतैक । आ, खाली ओकर सम्पूर्ण जीवन नष्ट भऽ गेलैक । स्त्रीगणक झुण्डमे ओकरा एम्हर-ओम्हर तकैत देखि एक टा स्त्री आगू अयलैक–'ककरा तकैत छिऐक ? हम एतऽ छी !'

रवि अवाक् भऽ देखलकै– सामने ठाढ़ि छोटकी भौजी । सुनयना भौजी ! अनमन ओहने ! समय जेना ठहरि गेल छलनि हुनका लेल । कतहु कोनो परिवर्तन नहि । वैह तृप्त मादक हँसी आ हँसीक हिलकोरसँ दलकैत मांसल देह ।

रवि गोड़ लगैत कहलकनि–'सत्ते, अहीकेँ तकैत रही भौजी ! मुदा अहाँ तऽ अवाक् कऽ देलहुँ ! अनमन ओहिना छी आइयो । आ देखू, हमर तऽ केशो पाकि गेल ।'

अपन प्रशंसा भौजीकेँ नीक लगलनि । रवि लग बैसि गेलीह । बड़ी काल बैसलि रहलीह ।

फेर सभ चल गेलैक– दरबज्जापर जमा भीड़ आ आङनमे जुटल स्त्रीगण। रवि अपन कोठलीमे एकसर रहि गेल । बाबूवला कोठली । रवि जानि-बूझिकऽ ओही कोठलीमे सामान रखबौलक ।

भौजी बहुत रास सबाल कयने छलथिन । आरो लोकसभ पुछने रहैक । 'किएक भागल रही ? कतऽ गेल रही पड़ाकऽ ? कोना रहलहुँ एतेक दिन ?' ओ ककरो असल बात कहि नहि सकलैक । प्रश्नकेँ टारैत गेलैक । मुदा ओकरा बहुत आश्चर्य भेलैक जे लोक असली बात नहि जनैत छलैक । ओ आश्चर्यमिश्रित ज्ञान बेर-बेर ओकर कलेजाकेँ रेतीसँ चीरऽ लगलैक–'तखन तऽ अनेरो ई जीवन बेरबाद भेल ! जीवनक चौदह टा अनमोल वर्ष ! बाबूजीक जान सेहो बेकारे गेलनि । अन्तिम समयमे भेँटो नहि भऽ सकल ।'

बाबूजीक कोठलीमे पड़ल-पड़ल ओ एही गुनधुनमे लागल छल । एकाएक ओकर ध्यान गेलैक जे ओ बाबूजीक कोठलीमे छल, मुदा ओइ कोठलीमे बाबूजीक कोनो निशानी नहि बाँचल छलनि । ने ओ तख्तपोश, ने ओ बिछौना, ने हुनकर नोसिदानी छलनि ताकपर, ने खुट्टीपर लटकल छड़ी ! टेबुलपर हुनकर गीता-रामायण-महाभारतक बदला जासूसी उपन्याससभ पड़ल छलैक ।

ओकर ध्यान ऊपर देबाल दिस गेलैक । देबालपरसँ बाबूजी-मायक फोटो सेहो निपत्ता छलैक । ओइ ठाम सस्त रुचिक कलेन्डरसभ टाङल छलैक जाहिमे छौँड़ीसभ उतान भेल छलैक । तीन टा फोटो छलैक– एक टा बाबूजीक एकसर छलनि, एक टा मायक एकसर छलैक । गाममे फोटोग्राफर आयल रहैक तँ सभ जबर्दस्ती खिचबा देने रहैक । नवकनियाँ जकाँ लजायलि ठाढ़ि छलैक फोटोमे माय ! रविकेँ बड़ नीक लगैक । बाबूजीक फोटो रहनि एकदम साहेबी ठाठमे । कालेजमे पढ़ैत काल खिचौने रहथि । पैन्ट-कोट-टाइ पहिरने । तेसर फोटोमे बापक संगे रवि छल– बापक कुर्सीक बाँहिपर बैसल । तीनू फोटो निपत्ता छलैक । रवि जोरसँ चिचिया उठल— 'लालकाका !'

लालकाका दौड़ल अयलथिन–'की लेबऽ रवि ?'

लालकाकाक एना दौड़ल अयबासँ रविकेँ अपन चिचिअयबापर लाज भेलैक । कहलकनि— 'किछु नहि काका ! एहि देबालपर माय-बाबूजीक फोटो रहनि, से नहि देखैत छी ?'

लालकाका लजा गेलथिन, जेना कोनो चोरी पकड़ा गेल होइनि । कहलथिन—

'अइ कोठलीक देबाल सर्द छैक । सभ टा फोटो खराब भेल जाइत छलैक तेँ उतारिकऽ बक्सामे राखि देने छिऐक । आइए टाङि देबैक फेर ।'

लालकाकाक लजयबामे रविकेँ कोनो अपराधबोधक झलक भेटलैक । लालकाकाक लजायब मोनमे एक टा शंकाकेँ जन्म देलकै । तकरा दबाकऽ फेर अपने गुनधुनमे लागि गेल रवि ।

किएक ने कहलकै कविता ओ बात सभकेँ ? झूठ-मूठ धमकी किएक देलकै ? ओकर सम्पूर्ण जीवनकेँ नष्ट कऽ चुप्प रहि गेलैक जेना किछु भेले नहि होइ ! ओ निरर्थक एक टा अपराध-बोध अपन छातीपर लदने एतेक दिन धरि वनवास लेने छल । आत्मनिर्वासित जीवनक एक-एक टा दिन ओकरा मोन पड़लैक आ मोन पड़लैक बाबूक स्वप्न ।

सामने रहितैक तँ पुछितैक कवितासँ–'घुरा दे हमर जिनगीक चौदह वर्ष ! एक टा क्षणिक आवेगक मूल्यमे जिनगीक सभ टा अनमोल वर्ष छीनि लेलेँ तोँ ! तैयो हमहीँ दोषी । हमहीँ छातीपर एक टा अपराधबोध लेने जिबै छी आ तोँ गृहस्थीक सुख चैनसँ भोगैत छेँ ।

एना किएक कयलेँ ? एना किएक कयलेँ कविता ?

दोसर दिन बहुत रास लोक अयलैक रविसँ भेँट करबा लेल ।

भोरुके गाड़ीसँ मोहन भाइ आ हुनकर कनियाँ । गोड़ लगलकनि तँ छातीसँ लगा कानऽ लगलथिन मोहन भाइ ! भौजियोक आँखिसँ दहो-बहो नोर । नोर पोछैत मोहन कहलथिन–'एहन कठोर कोना भऽ गेलेँ रवि ! बड़का मामा अन्त-अन्त धरि तोहर घुरबाक आस नहि छोड़ने छलथुन । हुनका विश्वास छलनि जे तोँ अबस्से घुरबेँ । एहन कोन बात भेलै रवि जे एना सभकेँ त्यागि विदा भऽ गेलेँ ?'

रविकेँ कोनो जवाब नहि दऽ भेलैक । अपराधी जकाँ मूड़ी झुकौने बैसल रहल । भौजी बात बदलैत कहलथिन–'अहूँ कोन चर्चा शुरू कऽ देलियनि अबिते !' फेर अपन धीयापूता सभकेँ लग बजौलथिन आ कहलथिन–'गोड़ लगहुन काकाकेँ !'

चारू बेटिए छलनि । सभसँ जेठकी तेरह-चौदह वर्षक रमा, तकरासँ छोट

उमा दस वर्षक, सात वर्षक रेखा आ तीन वर्षक गुड़िया । सभकें संग अनने छलथिन । चारू टकटकी लगा रविकें देखैत छलैक । जखन रविक दृष्टि ओम्हर जाइ तँ लजाकऽ दोसर दिस ताकऽ लगैक ।

विक्रमो संग आयल छलैक । ओना ओ गामेक स्कूलमे मास्टर छल–एम. ए. मे सेहो रिजल्ट बढ़िया नहि भेलैक । मामे गामक हाइ स्कूलमे धरा देलथिन । काल्हि ओ गाम नहि छल— भाइक डेरापर गेल छल । सुनयना भौजी काल्हिए डेरापर समाद पठबा देने छलथिन । सभ दौड़ले आयल छलैक ।

मुदा रविकें ककरोसँ किछु बजबाक-पुछबाक साहसे नहि भऽ रहल छलैक । जखनसँ आयल छल— आत्मीय जिज्ञासासभक बीच अपराधबोधसँ बौक बनल बैसल रहैत छल । अपराधक जाहि छायाक डरें चौदह वर्ष धरि गाम नहि घुरल छल, ओ छाया एखनो ओकर सम्पूर्ण व्यक्तित्वकें घेरने छलैक । सहज ढंगसँ ककरोसँ किछु बाजब, ककरो किछु सुनब सम्भव नहि भऽ रहल छलैक । अपनो दृष्टिमे एक टा अजूबे बनिकऽ रहि गेल छल रवि ।

मोहन जाइत काल कहलथिन–'आइ हमरे आङनमे भोजन हेतौक तोहर । छोटकी मामीकें कहि देने छियनि ।'

रवि अकचकाइत बाजल–'अहाँक आङन ? अहाँक कोनो दोसर आङन अछि मोहन भाइ !'

मोहनकें हँसी लागि गेलनि–'चौदह वर्षपर सभ टा चीज एहिना आश्चर्यजनक लगतौक । कने गाममे बहरा कऽ तऽ देखहिक ! मुदा बड़का मामाकें सभक अन्दाज पहिने लागि गेल रहनि । जिद धऽ लेलथिन— पुरना घराड़ी मोहन-विक्रमक नाम लिखि दहक । छोटका मामा कतबो नाकर-नूकर कयलथिन, नहिएँ मानलथिन बड़का मामा । हमर दुनू भाइक नाम ओ घराड़ी रजिस्ट्री कऽ अपन खर्चसँ घर बन्हबा देलनि । एकबेर हमहूँ हाथ जोड़िकऽ कहलियनि— 'रहऽ दियौक मामा ! हमरालोकनिकें घर-घराड़ीक कोन काज ?' मामा हमर बातपर हँसैत कहलनि— 'काज छैक मोहन ! तोरालोकनि बिना घर-घराड़ीक कोना रहबऽ ? अपने कमा किछु करबऽ, तकर आशा आब हमरा कमल जाइत अछि । तोहर ओकालतिक वैह हाल । विक्रम तऽ पढ़ हु-लिखऽमे तेहने अछि । ओकरा बुते की हेतैक ? गामक हाइ स्कूलमे मास्टरी धरा देलिऐक, कहुना गुजर करत । मुदा घर-घराड़ी तऽ ओकरो चाहिऐक आ सभ टा हमरे सोझाँ भऽ जाय, से नीक ।' रजिस्ट्रीक बाद अपने ठाढ़ भऽकऽ सभटा घर बनबौलथिन, गृह-प्रवेशक वृहत् आयोजन कयलथिन ।

बाबूक बेर-बेर चर्चा अयलासँ रविक मोनक अपराधी आर संकोचसँ सिकुड़ि गेलैक । कण्ठसँ एको टा बोल नहि बहरयलैक ।

जाइत काल विक्रम कहलकै–'तों तऽ एना गुम्मा नहि छलें रवि ? जे भेलैक तकरा बिसर । सभसँ बाज, सभसँ भेँट करहिक ।'

तैयो ककरोसँ किछु बाजि नहि भेलैक रविकें । दिनमे मोहन भाइक आङनसँ भोजन कऽ आयल । सत्ते, नीक घर-घराड़ीक इन्तजाम कऽ देने छलथिन दुनू गोटे लेल माम । फैल-फाल जगह, चारूकात घर– सभ टा ईंटाक, आ चारपर खपड़ा । आगाँमे फुलबाड़ी, पाछाँमे बाड़ी-झाड़ी । आब कलो गड़बा लेने छलाह मोहन भाइ । अपने तँ दरभंगे रहैत छलाह । छोट भाइ गाम रहैत छलथिन । स्कूल कने गामसँ बाहर छलैक–'पछबारिए कात । गामक पछबरिया सिमानसँ किछु पहिने, बाटक कातेमे । मुदा एकदम एकोढ़ नहि छलैक । सटले दक्षिण छलैक मलाहसभक टोल– गोड़ पचीसेक घर । किछुए दूरपर उतरबारी कात दोसर टोल छलैक–धानुखसभक । ओहूमे बीस-पचीस घर ।

छोटकी भौजी सुनयना बड़ हँसी कयलथिन, मुदा रवि सहज नहि भऽ सकल । भौजी ओहिना छलथिन– कोनो परिवर्तन नहि भेल छलनि । काल्हि भोरे अपन अङनामे देखने छलनि रवि । ओकरा आश्चर्य भेलैक जे भोरे ओतऽ कोना पहुँचि गेलि रहथिन भौजी ? विदा होयबासँ पूर्व पुछियो देलकनि रवि । भौजी खिलखिलाइत कहलथिन–'सैह बुझियौक ! जादू अबैत अछि हमरा । हमरा बूझल छल जे हमर दुलरुआ देओर आबि रहल छथि, तें स्वागतमे पहिने पहुँचि गेलि रही ।'

दोबारा पुछबाक साहस नहि भेलैक । रवि भोजन कऽ घूरि आयल ।

घुरलापर मनोजसँ भेँट भेलैक । गाम अयलाक छत्तीस घंटाक बाद । रवि कने मानसँ कहलकै– 'आब फुरसति भेल छौक तोरा ? भरि गामक लोक भेँट कऽ गेल तखन ?'

मनोज झट बाजि उठलैक–'नै ब्रदर, फुरसतिक गप्प कहाँ ? गाममे रहबे ने करी । मौजेपर रही । ओतहि एक टा ज़न कहलक । दौड़ले आबि रहल छी ।'

मनोज बड़ सहज ढंगसँ कहि रहल छलैक । तैयो नहि जानि किएक ओकरा सन्देह भेलैक जे ओ फूसि बाजि रहल छैक । ओ ध्यानसँ ओकर चेहरा देखलकै । बितलाहा चौदह वर्षमे गम्भीरता वा परिपक्वताक कोनो चेन्ह मनोजक आकृतिपर नहि उगल छलैक । ओकर आकृति आ बगय-बाना ओहिना छलैक– बेस झबरल केश, ओहिना खूब गाढ़ रंगक कुर्ता । पैण्टक तंग मोहरी खूब चौड़ा भऽ

फहरा रहल छलैक । मुँहमे पान आ ठोरपर दुष्ट हँसी । आँखि कने बेसी धँसल आ ओइ कोटरमे स्याह धब्बा । हाथमे तखनो सिगरेट छलैक । कसिकऽ दम लगबैत कहलकै–'तोँ तऽ गुरुघंटाल बहरयलेँ ब्रदर ! हम पड़ायल रही तऽ मासे दिनमे घूरि अयलहुँ, तोँ तऽ वर्षक वर्ष लगा देलहिक । कोन-कोन घाटक पानि पीबिकऽ आयल छैँ ?'

बात यद्यपि मजाकमे कहि रहल छलैक मनोज, रविकेँ नीक नहि लागि रहल छलैक । बात बदलैत पुछलकै–'छोड़ हम्मर गप्प । अप्पन सुना । कोना चलि रहल छौक ?'

सिगरेटक दम लऽ धुँआ छोड़लाक बाद ओ फेर कहलकै–'एकदम फस्ट क्लास ! वही रफ्तार बेढंगी, जो पहले थी, सो अब भी है ।' बाबू बान्ह-छान्हक खूब इन्तजाम कयने छथि । एक टा लदगोबरि कनियाँ, लेर-पोटा बहबैत चारि टा कच्चा-बच्चा, मुदा हम ओहिना छियौक ब्रदर ! मौजी जीव । सत्त बात कहियौक, काल्हियो ओइ मौजेपर नव चीजक सुतारमे गेल छलियौक । बुझलहिक किछु !'

मनोज खिखियाकऽ हँसऽ लगलैक अपने प्रश्नपर, तावत लालकाका आबि गेलथिन । बापकेँ अबैत देखि मनोज बजलैक–'रंगमे भंग आबि रहल छथुन । हम चललियौ ब्रदर !'

मनोजक गेलाक बाद लालकाका दुखी स्वरमे कहलथिन–'देखलह रवि हमर सुपुत्रक लक्षण ! दस वर्षक बेटा छैक, ओकरोसँ छोट तीन टा नेन्ना । मुदा एकर करनी देखहिक ।'

रवि कोनो जवाब नहि दऽ सकलनि । लालकाका अपने कहऽ लगलथिन–'छोटजन छथि, तनिका बहुक गुलामी छोड़ि आर किछु सुझिते नहि छनि । कनियाँकेँ गाममे नीक नहि लगैत छनि, पटने रहतीह । पटनामे नीक कमाइ छथि ओकालतिमे, मुदा माय-बापकेँ के देखैत अछि ?'

रविकेँ खुशी भेलैक– लल्लू ओकील भऽ गेलैक । स्कूलेमे छलैक, जहिया ओ गाम छोड़ने छल । ओकरा बौआ आ छोटकूक बारेमे जिज्ञासा भेलैक । पुछलकनि–'बौआ आ छोटकू कतऽ अछि लालकाका !'

–'हुनकोसभकेँ गाम नहि नीक लगैत छनि बाउ ! एक टा एम.ए. मे छथि आ दोसर आइ.ए. मे । कहलियनि जे मोहनेक डेरापर रहैत जा, रवि आ मनोज ओही डेरापर छल । मुदा बूढ़क गप्प के सुनैत अछि ? दुनू होस्टलमे रहैत छथि । सभकेँ माय सहकौने छथिन ।'

रविकेँ आरो हर्ष भेलैक– लल्लू ओकील, बौआ एम.ए.मे आ छोटकू आइ.ए.मे । मनोज नहि पढ़ि सकलनि, तकर दुख नहि होयतनि लालकाकाकेँ । तीनू छोटका नीक जकाँ पढ़ि-लिखि गेलनि । कहलकनि–'ई तऽ बड़ नीक बात लालकाका ! सभ नीक जकाँ पढ़ि-लिखि गेल । आर की चाही ?'

लालकाका कने अप्रसन्ने भावसँ कहलथिन–'नीक जकाँ की पढ़त हौ, घिसरी कटै अछि । सभ परीक्षामे दू-दू बेर धक्का दऽ पार करैत अछि । तोरा सन चान्सगर कहाँ क्यो भेल ? जहिया तोहर रिजल्ट भेल रहऽ, फर्स्ट डिवीजनमे नाम देखिते भाइ कानऽ लागल रहथि । जहियासँ बुझलथुन जे जिलामे फर्स्ट भेल छह–बोर्डमे तेसर स्थान, तहिया तँ आँखिक नोर सुखयबे नहि करनि । अखबारक ओहि टुकड़ीकेँ सदिखन अपन सिरमामे रखैत छलाह, कनियो तह नहि लागऽ दैत छलथिन । जखन चितामे आन चीजक संग ओहो कागजक टुकड़ी धऽ देलियनि, तहियो ओ कागज ओहिना तहदर्ज रहैक ।'

बाजिकऽ लालकाका अपने चुप भऽ गेलाह । लगलनि जेना किछु अनुचित बजा गेलनि । मुदा रविक ध्यान ओम्हर नहि छलैक । बापक प्रसंग अबैत देरी फेर ओकर मोनपर एक टा भारी पाथर खसि पड़ल छलैक आ ओ मूड़ी झुकौने ठाढ़ छल । चौदह वर्ष बाद प्राप्त भेल अपन परीक्षाफलो ओकरा कनियो हर्षित नहि कयने छलैक ।

लालकाका टोकलथिन–'जा, बाहर दरबज्जापर जा । आइयो बड़ लोकसभ आयल छऽ । सभसँ बाजऽ-भूकऽ, जे भेलैक, तकरा बिसरि जा ।'

लालकाका चल गेलथिन । ओकरा बाहर दरबज्जापर जयबाक कोनो इच्छा नहि छलैक । लोथ भेल पयरकेँ घिसटैत बाहर विदा भेल ।

दरबज्जापर ठीके भीड़ लागल छलैक । सभक बीचमे बैसल नामीबाबा । दौड़िकऽ गोड़ लगलकनि— 'अहाँ किएक अयलहुँ बाबा ? हम तँ गोड़ लागऽ अयबे करितहुँ ।'

नामीबाबा हँसैत कहलथिन–'एतेक बेकार नहि भेल छी एखन हौ ! खाली कने ठाढ़ होयबाकाल ठेहुन कचकैत अछि । छड़ी लेलोपर सोझ होयबामे कने समय लगैत अछि, बस्स ! तकर बाद कोनो झंझट नहि । जखन जिम्हर कहऽ, जा सकैत छी । तोहर नाम सुनिलियऽ तँ रहि नहि भेल ।'

रविकेँ कविता मोन पड़लैक–'हमर-तोहर झगड़ामे नामीबाबाकेँ खूब फायदा भेलनि । सभ टा गोसबरिया लताम एकसरे खयलनि ।'

रविकें हँसी लागऽ लगलैक । एक क्षण लेल कविता बड़ आत्मीय ढंगसँ मोन पड़लैक । ओकर ऊपरक समस्त क्रोध बिला गेलैक । ठोरपरक हँसी नामीबाबा देखि ने लेथिन, तें ओ दोसर दिस गोड़ लागऽ लेल घूमि गेल । पहिने फकीरकाका। गोर लगैत रवि पुछलकनि–'नारायण कोना अछि फकीरकाका ?'

फकीरकाका सगर्व कहलथिन–'ओ तऽ बड़का इञ्जीनियर भऽ गेल अछि, सिन्द्रीमे पोस्टिंग छैक ।'

रविकें गुरुजीक स्कूल मोन पड़लैक । सभ सबकमे ओ मिहिर आ नारायणकें तड़पा दैत छलैक । आइ ओ अपने ठाढ़ रहि गेल, नारायण कतेक आगू छरपि गेलैक ! रवि दोसर दिस मुड़ल, पण्डितो काका छलथिन दरबज्जापर । मिहिरक बाप । गोड़ लगैत पुछलकनि–'आ, मिहिर कतऽ अछि पंडितकाका ?' पंडितकाका सेहो सगर्व कहलथिन–'ओ तऽ बड़का हाकिम बनि गेल छौक–डिप्टी कलक्टर । सहर्षामे पोस्टिंग छैक ।'

खाली रविए रहि गेल । सभ आगाँ बढ़ि गेलैक । सभक सबक सुनऽवला, ओकरासभकें छरपाकऽ गुरुजीक दण्डसँ बचबऽवला रवि अपने दण्डित भेल, अपन पिताक स्वप्न चूर कऽ हुनकर प्राण लेलक । एके क्षण पहिने जे कविता आत्मीय ढंगसँ मोन पड़ल छलैक, फेर एक टा अप्रिय, घृणित आ उत्पीड़क सन्दर्भमे मोन पड़लैक आ ओकरापर रविक तामस आर बढ़ि गेलैक ।

दरबज्जापर आरो लोक छलैक— नामीबाबाक दुनू बालक– मास्टर काका आ पेशकार काका । बड़का भाइ गामक हाइस्कूलमे हेडमास्टर छलथिन आ छोटका भाइ दरभंगामे ओकालति करैत छलथिन । आइ रवि छलनि–सबहक छुट्टी । रविक घुरबाक समाचार सूनिकऽ सभ जुटि गेल रहथि । रवि हुनकोसभकें गोड़ लगलकनि।

ई क्रम चलैत रहलैक । उतरबारि टोलसँ बुधियार काका आ फनैत भाइ अयलथिन । पछबारि टोलक भजारकाका आ बालाभाइ । मुन्हारि साँझ धरि लोक अबैत रहलैक ।

फेर दरबज्जा खाली भऽ गेलैक । सभ चल गेलैक । रवियो ऊठिकऽ आङन दिस जाय लागल । तखने ओकर ध्यान बेंचपर कातमे बैसल छौँड़ापर गेलैक । तेरह-चौदहक वयस । खूब गोर दपदप चेहरा । नाक कने पीचल, मुदा आँखिमे एक टा विचित्र आकर्षण । कारी-कारी पैघ केश । देहपर खाली एक टा मैल सन धोती रहैक, बाँकी देह उघार । स्वस्थ मांसल शरीर । मुदा श्रम आ

अभावसँ रुच्छ, मलिछौन भेल । ओ एकटक रविकें देखि रहल छलैक । रवि स्नेहपूर्वक कहलकै–'तों नहि गेलें अप्पन घर ?' जवाब देबाक बदला छौँड़ा एक टा उनटा प्रश्न कऽ देलकै–'अहाँ नहि चिन्हलहुँ हमरा ? माँ हारि गेलि ।' रविकें ई बुझौअलि मनोरंजक लगलैक । पुछलकै–'के छौक तोहर माय ?'

छौँड़ा निधोख बजलैक–'कविता । माँ कहै छलि, अहाँ ओकर संगी छिऐक, हमरा देखिते चीन्हि जायब । हम कहलिऐक— हगिज नहि ! अहाँ कोना चीन्हब हमरा ? अहाँ तऽ देखनहि नहि छी । हमरा चीन्हब कोना ? दुनू गोटेमे बाजी लागि गेल । हम तऽ पहिनहि कहने रहिऐक ओकरा, तों बाजी हारि जयबें ।'

रविकें ओ छौँड़ा आ ओकर गप्प नीक लगलैक । कविताक बेटा ! ओकरा कवितापर क्रोध छलैक । तैयो ओकर बेटाकें देखि ओकरा लगलैक जेना ओकर अपराधबोध कने कमि गेल होइ । वस्तुत: ओकर अन्तर्मन जनैत छलैक जे कविता निर्दोष छलैक । दोष सभ टा ओकरे छलैक । अपने पापक छायासँ पड़ायल छल ओ, कविताक धमकीक डरें नहि । मुदा एतेक वर्षसँ अपन मोनकें परतारऽ लेल ओ अपनाकें बुझबैत छल जे सभ टा दोष कवितेक छलैक, वैह ओकर जीवनकें नष्ट कऽ देलकै । आइ कविताक बेटाकें देखि ओकरा लगलैक जे ओ पापक छाया आब ओकर पिण्ड छोड़ि देतैक । आब ओ गाममे अपराधबोधसँ मुक्त भऽ सहज ढंगसँ जीवि सकत । कविताकें कोनो क्षति नहि भेलैक । ओ अपन घर बसाकऽ सुखपूर्वक छैक, ओकर कलंकक कथा क्यो नहि बुझलकै । ओ रविकें क्षमा कऽ देलकै ।

रविकें गुनधुनमे देखि ओ छौँड़ा टोकलकै–'की सोचऽ लगलहुँ रविमामा ?'

रवि सम्हरि गेल । हँसैत कहलकै–'तोहर माय ठीके हमर संगी अछि । बच्चामे सदिखन हमरासँ लड़ैत रहैत छलि, हबकि लैत छलि, सैह मोन पड़ि गेल । तोहर नाम की छौ बौआ ?'

छौँड़ा कने उदास होइत कहलकै–'माय केहनेदन नाम राखि देलक–लव । भरि गामक लोक खौँझबैत रहैत अछि आ कहैत अछि–लौब, लब्ब-लब्ब !'

रवि ओकरा उत्साहित करैत कहलकै–'केहन बढ़ियाँ तऽ नाम छौक । दू अक्षरक सुन्दर नाम । लोककें कहने की हेतैक ? आ, तों पढ़ै कोन क्लासमे छें ?'

छौँड़ा बेस बुझनुक जकाँ हँसलकै–'हे लियऽ ! हम पढ़ऽ जयबैक तऽ कमेतै-खटेतै के ? गाय-महींसकें के देखतै ? मायकें कुटाओन-पिसाओन भेटिते

कतेक छै जे ओइमे दू प्राणीक गुजर हेतैक ! महींसे-गाय लऽकऽ तऽ गुजर होइत अछि । ओकरे सेवामे लागल रहैत छी । नाना जीबैत छलाह तऽ स्कूल जाइत रही। तीसरा तक पढ़लहुँ । फेर नाना विदा भेलाह-ओही साल नानियो । सभ टा जमीन-जथा नानाक देयादसभ हथिया लेलथिन । मायकेँ एक्को धूर नहि देलथिन। कहलथिन मुन्नू मामा जे कका हमरा कर्ता कऽ गेल छथि, सभ टा हमरे हैत । माय दिससँ क्यो ठाढ़ नहि भेलैक । मुदा चिन्ता की ? हम छिऐक । दू गोटेक गुजर लेल तऽ हमहूँ कमा सकैत छी ।'

रवि ओइ छौँड़ाक गप्प आ ओकर आत्मविश्वासपर मुग्ध रहि गेल । मोनमे अनेक प्रश्न ठाढ़ भेलैक । कविता विधवा भऽ गेलैक ? यदि नहि तँ सासुर किएक नहि जाइत छैक ? ओकर कथा तँ बड़ सम्पन्न आ पढ़ल-लिखल वरसँ ठीक भेल रहैक ! हरिकाकाक सारसँ । फेर अइ गाममे किएक पड़लि छैक कविता ?

ओ लवसँ पुछलकै-'अपन बापक लग किएक नहि चल जाइत छी अहाँ मायक संग ? ओतहि पढ़ब-लिखब ।'

छौँड़ा उदास भऽ गेलैक-'से हमरा नहि बूझल अछि । अहीँ किएक ने पूछि लैत छिऐक मायसँ ? ओ तऽ अहाँक संगी अछि ।'

रविकेँ छौँड़ाक एना उदास भेलासँ अपन प्रश्न लेल क्षोभ भेलैक । कहलकै-'तोँ निश्चिन्त रहऽ, हम काल्हिए पुछबैक ओकरासँ । हमरा जवाब देबऽ पड़तैक ओकरा ।'

लव खुशीसँ दमकैत आकृति लेने दौड़ल चल गेल ।

ओइ आकृतिपर हँसी पसरलैक-'नहि चिन्हलहुँ ने !'

रवि अवाक् रहि गेल । ओ कविता छलैक । वैह कविता जकरा देखि एक दिन ओकरा लागल रहैक जे ओकर बालसंगी, लिकलिकही, कलिकलिही छौँड़ी ओहन लावण्यमयी कोना भऽ गेलैक ? वैह कविता जकरा एक टा ग्रीष्मक जरैत दुपहरियाक बाद आयल वर्षाक अप्रत्याशित अछारमे भीजल देखि ओकर संयम, ओकर विवेक ओकरा धोखा देने छलैक । वैह कविता जे आँखिमे नोर लेने दौड़लि ओकर कोठलीसँ चल गेलि रहैक-'हम कहबैक, सौँसे गामकेँ कहबैक ।'

वैह कविता रविकेँ टोकने छलैक-'नहि चिन्हलहुँ ने !'

सत्ते, नहि चिन्हने छलैक रवि । फाटल, चिप्पी लागल नूआसँ झाँपल ओ पातर शरीर एकदम पीयर आ निष्प्रभ छलैक जेना देहक सभ टा शोणित सिसोहि लेल गेल होइ । रविक बतारी छलैक कविता, रवि अपनो असमय प्रौढ़ सन भऽ गेल छल, माथक केश उजरा गेल छलैक, मुदा कविता तँ जेना ओकरोसँ कतेक पैघ लागि रहलि छलैक ! मुदा हँसिकऽ टोकैत देरी सम्पूर्ण चेहराक रंगत बदलि गेल छलैक । जेना ओइ पीयर आकृतिपर क्षण भरि लेल रक्तिम आभा पसरि गेल होइ !

कहियो रवि कहने छलैक-'एहन सुन्दर कनियाँ लेल वरक कोन कमी ?' आकृतिपर कवितापर एक टा दुष्ट हँसी पसरल रहैक-'सत्ते ।'

सैह हँसी कविताक ठोरपर एखन पसरल छलैक । ओइ हँसीमे कोनो दुख वा दीनता नहि छलैक । बालसंगीक वैह परिचित हँसी आ स्वर-'नहि चिन्हलहुँ ने !'

लव जबर्दस्ती झीकि अनने छलैक । ओ दरबज्जापर बैसल छल । छौँड़ा दौड़ल आबि गेलैक-'चलू हमरा आङन । मायकेँ पुछियौक जे किएक नहि लऽ जाइत अछि हमरा बापक घर ?'

रविकेँ संग आबऽ पड़लैक । ओइ निष्कलुष किशोरक आग्रह ओकरा टारि नहि भेलैक । मुदा आङन नहि जाय पड़लैक । दरबज्जे लग ठाढ़ि छलैक कविता । दरबज्जा कोन छलैक-घरक आगूमे पसरल सब्जीपर ठाढ़ि छलैक । सभ टा घर ढनमनायल छलैक । दरबज्जा कतहु नहि । कहुना एक टा झाझनक टाटपर फूसक चार अँटकल छलैक । चारपर किछु लत्ती- समजनि-कदीमाक । दरबज्जापरक सब्जीक कातेमे खुट्टासँ बान्हल एक टा महीस आ गाय, आ दुनू लेल बनाओल फराक-फराक नाद । ओहिमे सानी दऽकऽ ठाढ़ि छलैक कविता ।

लग अयलोपर रवि नहि चिन्हलकै । कविता हँसिकऽ टोकलकै-'नहि चिन्हलहुँ ने ?'

रवि चीन्हि गेलैक आ चीन्हिकऽ अवाक् रहि गेल !

ओकर अनचिन्हार दृष्टिसँ आहत नहि भेलि रहैक कविता, मुदा ओकर ओइ अवाक् दृष्टिसँ जेना एकदम रेता गेलैक-'बड़ बदलि गेल छी ने हम !'

रविकेँ होश भेलैक । कहलकै-'तोँ किएक बदलबेँ ओतेक, जतेक हम बदलल छी ! देखि ले, सभ टा केशो पाकि गेल । तोहर तऽ ओहिना कारी छौक सभ टा । खाली कने बेसी दुबरा गेलि छैँ तोँ, आ हम कठमस्त भऽ गेल छी ।'

कविताकेँ फेर हँसी लागि गेलैक–'खूब बात बदलैत छेँ तोँ ! हमरा बूझल अछि जे हम कतेक बदलल छी। मुदा तोहूँ सत्ते कम नहि बदलल छेँ ! लगैत अछि जेना बहुत रास समय बीति गेल होइ। चौदह वर्ष बड़की टा होइ छै ने !'

रवियो सिहरि गेल चौदह वर्ष बिति जयबाक स्मरणसँ। कविता फेर टोकलकै– 'हमरे डरे पड़ायल छलेँ ने ! एतेक डर भेल छलौ हमर धमकीक !'

बात गम्भीर भेल जा रहल छलैक। ओकरा हँसीमे उड़यबाक चेष्टा करैत रवि कहलकै–'एहन-ओहन डर ! पहिनो एक बेर बाबूसँ पिटबा देने रहेँ तोँ। तोहर धमकीसँ सभ दिन डेराइत रही हम।'

लव बीचेमे टोकलकै–'ई तऽ किदन सभ गप्प करऽ लगलहुँ अहाँ। हमरवला बात कहियौक ने मायकेँ ?'

रविकेँ मोन पड़लैक जे लव ओकरा बजाकऽ अनने छलैक। कविताकेँ कहलकै– 'ठीके तऽ कहैत छौक लव। लऽ किएक ने जाइत छहिक एकरा बापक घर ?'

कविता हँसलैक–एक टा उदास हँसी–'हम तऽ जाय लेल तैयारे बैसलि छी सदिखन, बाट तकैत। लैए ने जाइत छथि।'

रवि क्रोधपूर्वक बाजल–'लऽ कोना ने जयथुन ? एहन कोन जबर्दस्ती ! हम अपने जाकऽ कहबनि– पढ़ल-लिखल भऽकऽ ई केहन विचार ?'

कविताक हँसी आर उदास आ रहस्यमय भऽ उठलैक–'तोँ कहबहुन लऽ जाय लेल ? बेस, चेष्टा कऽ ले। हम तऽ तैयारे बैसलि छी।'

रवि आर कोनो आश्वासन नहि दऽ सकलैक। बाहरमे ठाढ़े-ठाढ़ गप्प कयने छल। घर चलबाक आग्रह कवितो नहि कयने छलैक। अगल-बगलक घरसँ किछु स्त्रीगण हुलकी मारि-मारि दुनूकेँ देखि गेलि छलैक। रविकेँ आर ठाढ़ रहब उचित नहि लगलैक। घूरिकऽ विदा होइत कहलकै–'आब जाइ छी हम। तोँ चिन्ता नहि करिहेँ लव ! हम लऽ जयबौक तोरा बाप लग।'

रवि शीघ्रतापूर्वक डेग बढ़ौलक। किछु दूर आबि पाछाँ तकलक। कविता ओहिना ठाढ़ि छलैक– ओकरे तकैत- अपलक। ओ फेर मुँह घुमा आगू बढ़ल। मोन काफी हल्लुक आ मुक्त लागि रहल छलैक। कविता ओकरा क्षमा कऽ देलकै, कोनो उपराग-अलहन नहि देलकै। कष्ट आ अभावमे छैक, तैयो कोनो कटुता नहि

छैक ओकरामे। ओ अनेरो चौदह वर्ष बौआकऽ नष्ट कयलक, एक टा अपराधबोधक पाछाँ। कविता सहज भावसँ क्षमा कऽ देने छैक ओकरा। ओ एक टा नव जिनगी शुरू कऽ सकत–सभटा बिसरिकऽ।

गामक धरतीपर ओकर डेग नव आत्मविश्वासक संग पड़ि रहल छलैक।

रवि चल गेलैक। कविता ओहिना ठाढ़ि रहलि। ओकर दृष्टि जाइत रविक अनुसरण करैत रहलैक। फेर रवि दृष्टिपथसँ अदृश्य भऽ गेलैक।

एक दिन ओ गामेसँ अदृश्य भऽ गेल रहैक। भरि गाममे चर्चा रहैक। रामकाका तकैक-तकैत अपस्याँत आ विक्षिप्त सन भऽ गेल छलथिन। ककरो कोनो अर्थ नहि लागि रहल छलैक। गामसँ बाहर दौड़ल जाइत लोक देखने छलैक। ककरो कोनो बातक सन्देह नहि भेल छलैक। ककरो किछु बुझले नहि छलैक। कविता सभ टा जनैत छलैक। खाली कविते टा जनैत छलैक।

मुदा ओहो कहाँ जनैत छलैक जे एहन काण्ड भऽ जयतैक ? वर्षासँ बचबाक लेल रविक कोठलीमे चल गेलि रहैक। मोनमे कनियोँ कोनो आशंका नहि छलैक। ओकर बालसंगी रवि। रामकाका आ सम्पूर्ण गामक आशा जकरापर अँटकल छलैक, से ओना करतैक ? ककरा सन्देह होइतैक ? मुदा, भावी वैह छलैक।

ओ कोनो विरोध किएक नहि कयलकै, से सोचि आइयो आश्चर्य होइत छैक। बादमे कानलि छलि आ कनिते धमकौने छलैक–'हम कहि देबैक, रामकाकाकेँ कहबनि, सौँसे गामकेँ कहबैक।'

आ, रवि भागि पड़यलैक। एना गाम छोड़ि सभ दिन लेल निपत्ता भऽ जयतैक, से ओकर भागि जयबाक खबरि सुनियोकऽ नहि लागल छलैक। घूरि औतैक दू-चारि दिन बाद, डर कमि गेलापर— कविता सोचने छलि।

दिन बितलैक, सप्ताह बितलैक, आ मासो बीति गेलैक। रविक कोनो पता नहि छलैक। लोकोकेँ कोनो पता नहि छलैक, एना किएक भेलैक ? खाली कविता जनैत छलैक।

जनैत छलैक आ धमकौने छलैक जे ओ सभकेँ कहतैक, रामकाकाकेँ कहतनि, सौँसे गामकेँ कहतैक।

मुदा, ओ ककरो किछु नहि कहलकै । कनैत रविक कोठलीसँ पड़ायलि आ अपन कोठलीमे आबिकऽ पड़ि रहलि । बड़ी कालधरि सम्पूर्ण देह थरथराइत रहलैक आ एक टा प्रश्न बेर-बेर मोनकेँ मथैत रहलैक–कोना भेलैक ? किएक भेलैक ?

अइ प्रश्नक उत्तर तकैत-तकैत दिन बीति गेलैक आ ओकर दरबज्जापर बरियाती आबि गेलैक । कनियाँ बनलि कविता, तैयो ओही प्रश्नक उत्तर ताकऽमे लागलि छलि आ सम्पूर्ण गामक स्त्रीगण-पुरुष ओकर भाग्यपर ईर्ष्या कऽ रहल छलैक । ओहन पढ़ल-लिखल, सुन्नर आ सुखी-सम्पन्न वर । वेदी तर बैसल, सभ टा बीध सम्पन्न करैत काल कविता ने वरक प्रसन्न आकृति देखि रहलि छलि, ने गाम भरिक प्रशंसा सुनि रहलि छलि, ओ तँ दोसरे गुनधुनमे लागलि छलि । ओकरे समाधान लेल विवाहसँ एकदिन पूर्व ओ रविक आङन पहुँचि गेलि छलि । रामकाका अपन कोठलीमे छलथिन । लग जा गोड़ लगलकनि । चीन्हिकऽ प्रसन्न भऽ उठलथिन रामकाका— 'कविता छेँ, नीकेँ रहऽ बेटी ! आशीर्वाद दैत छियौक अखण्ड सौभाग्यक । काल्हिए विवाह छौक ने ! हम तऽ आबि नहि सकबौक, कतहु जा-आबि नहि होइत अछि । माफ करिहेँ बेटी ! रवि रहितौक तऽ सभ टा भार लऽ लितौक तोहर बापक । तोहर बालसंगी छौक, तोहर विवाहक लेल, खासकऽ अइ घर-वर लेल बड़ प्रसन्नता छलैक ओकरा ।'

कविताकेँ नहि कहि भेलैक । जे ओ कहऽ चाहैत छलैक, नहि कहि भेलैक ! रामकाका रविक वियोगमे एतबे दिनमे वृद्ध आ कृश भऽ गेल छलथिन । एकदम टूटल आ हताश । ओ बात कहिकऽ हुनका आर तोड़ि देबाक साहस नहि भेलैक ओकरा ।

मुदा ओ साहस कयलक । कहलकै, सभ टा कहलकै । सीथमे सिन्दुर छलैक आ देहपर नवकनियाँक वस्त्र । हाथमे मेहदी आ पयरमे महावर । चतुर्थीक राति आ नव-पुरान संगी-बहिनपाक हँसी-मजाक । सभ मिलि ठेलि देने छलैक ओकरा कोबरघरमे । ओ दरबज्जे लग ठाढ़ि रहि गेलि छलि, एक्को डेग आगू नहि ससरलि छलि । वर उठलथिन आ ऊठिकऽ दरबज्जाक किल्ली ठोकि देलथिन । कविताक सम्पूर्ण देह सिहरि उठलैक । ओ लग अयलथिन आ लगभग कान लग मुँह सटा कहलथिन–'एतहि ठाढ़ि रहब ? बिछौनपर नहि आयब ?'

कविता किछु नहि बाजलि । ओ हँसऽ लगलथिन, पहिने आस्ते, फेर जोरसँ । हँसैत-हँसैत फेर अपने रुकियो गेलथिन आ कहलथिन–'बाहर कान

पथनिहारिसभ सोचतीह जे केहन बताह वर छैक, खाली अपने हँसने जाइत छैक । मुदा सत्ते, बड़ हँसी लागि रहल अछि हमरा । ठीक जहिना आइ दरबज्जे लग ठाढ़ि छी, ओहू दिन ठाढ़ि भऽ गेल रही अहाँ । हम बहिनक लग बैसल रही । अहाँ किम्हरोसँ धड़फड़ायलि आयलि रही आ भीतर हमरा बैसल देखि दरबज्जेपर ठाढ़ि भऽ गेलि रही । आइ जकाँ घोघ नहि छल मुँहपर । ओ उघार मुँह हम देखने रही । अहाँ झट पड़ा गेल रही । बहिन रोकिते रहि गेलीह । हम पुछलियनि–'ई के छलीह ?' ओ कहलनि–'कविता' । आ बस्स, भऽ गेल निर्णय । केहन जिद्दी छी हम, से देखि लियऽ । ककरो नहि सुनलिऐक । मुदा आइ बड़ हँसी लागि रहल अछि । जाहि मुँहकेँ देखि एक क्षणमे निर्णय लऽ लेने रही हम, ताहिपर एतेक टा घोघ ! ओ मुँह हजारोक बीच हम चीन्हि सकै छी, तकरा अइ घोघसँ नुकबऽ चाहैत छी अहाँ ! ई बेकार चेष्टा छोड़ू कविता ! एक्के बेर देखने छी हम, मुदा जन्म-जन्मान्तर धरि नहि बिसरत अहाँक ओ छवि ! मुदा अहाँ तऽ लगले बिसरि गेल हैब । मोनो ने हैत जे हम केहन छी । कने आँखि उठाकऽ देखू जे हम केहन छी ! बाजू तऽ की नाम अछि हम्मर ?'

कविता तैयो ओतहि ठाढ़ि रहलैक, किछु नहि बजलैक । ओ एक बेर फेर जोरसँ हँसलथिन– निश्छल, तृप्त हँसी ! कविता फेर सिहरि गेलि ।

ओ कहलथिन–'नहि लेब हमर नाम ? कि बुझले नहि अछि ? हमर नाम थिक–कवीन्द्र ! अहाँ कविता आ हम कवीन्द्र । केहन फिट जोड़ी बैसल ! गामक सभ बुढ़िया-नवकी कहैत छलि बेदिए तरसँ–'राम सीताक जोड़ी छैक ।' देखू अहाँक गामक लोकक बैमानी ! हम कोनो कारी छी जे राम-सीताक जोड़ी कहलक ! विश्वास नहि होअय तऽ अपने घोघ उठाकऽ देखि लियऽ !'

फेर एक टा उन्मुक्त ठहाका आ फेर कविताक सौँसे देहमे सिहरन । मुदा कविता सम्हरि गेलि । ओइ मोहक हँसीक जालमे नहि फँसलि । थरथराइत पयरकेँ स्थिर कयलक आ मुँहपरसँ घोघ उठा लेलक । मुग्ध, अपलक तकैत वरक दृष्टिसँ बँचैत कहलकै–'हमरा बहुत-किछु कहबाक अछि अहाँसँ ।'

कविता चौँकलि । पाछाँसँ लव टोकि रहल छलैक–'तोहर ध्यान किम्हर छौक माय ? तखनसँ टोकि रहल छियौक ! अही ठाम ठाढ़ि रहबेँ ? आङन नहि चलबेँ ?'

कविता लवक संग अङना आयलि । लव उत्साहित छलैक । पुछलकै–'रविमामा सत्ते हमरा बाबू लग लऽ जयताह ?'

प्रश्न अप्रत्याशित छलैक । कविता कनेक चौँकलि । फेर सम्हरैत कहलकै–'हँ, किएक नहि लऽ जयथुन ?'

लव आर उत्साहित होइत बाजल–'तऽ फेर आइयो किएक नहि कहलहुन लऽ जाय लेल ? ओ तोहर बात अबस्स मानि लितथुन, हमरा पहुँचा दितथि ।'

लवकेँ स्नेहसँ लग खीचि देहसँ सटबैत कविता कहलकै–'आइ बेर नहि भेल छलैक बेटा ! ओ एतेक वर्षपर गाम आयल छथि, लगले कोना तोरा लऽ जाय लेल कहितियनि ? बेर आबऽ दहिक, अबस्स पहुँचा देथुन तोरा ।'

लव खूब प्रसन्न नहि भेल, मुदा मायक दुलार आ आश्वासन पाबि फेर बात आगू नहि बढ़ौलक । माल-जालक सेवामे लागि गेल ।

कविता अङनेमे ठाढ़ि रहि गेलि । आइ रवि ओकरा नहि चीन्हि सकलैक। ओ कहने रहथिन जे ई आकृति जे एक बेर देखि लेत, जन्म-जन्मान्तर तक नहि बिसरि सकत । ओ यदि ओकर ई आकृति आइ देखितथिन ! केहन लगितनि ? जरिकऽ खोरनाठ भेल आकृति आ गलिकऽ कंकाल बनल शरीर ! रवि नहि चीन्हि सकलैक ओकरा, तकर दुख छलैक । बहुत दुख सहि गेलि अछि, नहि जानि, कहियासँ । एक युग बीति गेलैक ।

आर कतेक दिन ? कविताक मोनमे प्रश्न उठलैक जकर कोनो जवाब नहि पाबि ओ हाथ उठा ईश्वरसँ प्रार्थना कयलकनि–'यंत्रणाक ई अवधि आर कतेक शेष अछि भगवान !'

सत्ते, बहुत रास समय बीति गेल छलैक ।

आब हवेली मोहनपुरमे सभसँ पहिने मङनू मिसर नहि उठैत छथि । ओ तँ कहिया ने अपने दुनियाँसँ विदा भऽ गेल छलाह । आब गामकेँ भोरे-भोर उठबैत 'गौतम मुनिकेँ नोत पड़ैए' मंत्र क्यो नहि पढ़ैत छैक । भरि गामकेँ उठबऽवला मङनू मिसर एक दिन अपने सुतले रहि गेलाह । रौद दलानमे चौकीपर देल बिछौन धरि पहुँचि गेलनि, तैयो मङनू मिसर सुतले रहलाह । घरक लोककेँ चिन्ता भेलैक । जेठ बेटा देह धऽ उठौलकनि । मुदा ककरा ? बिछौनपर तँ मङनू मिसरक सर्द मृत शरीर पड़ल छलनि ! मङनू मिसर नहि छलाह । गामक भोरुकबा-मंत्र शान्त भऽ गेल छल।

आ ओइ मंत्रक पाछाँ-पाछाँ कमला माइक दरबारमे उपस्थित होबऽवाली छोटकी बाबी सेहो नहि रहलीह । काशीवास लेल चल गेलि रहथि– हवेली मोहनपुर छोड़िकऽ । रामक कोनो अनुनय-विनय नहि सुनने रहथिन । मुदा, एक दिन बिना कोनो सूचनाक अपने उपस्थित भऽ गेलथिन–'नहि रहि भेल राम ! रवि दऽ सुनलिऐक तऽ नहि रहि भेल । एकसर कोना रहबऽ तोँ ? अही छौँड़ाक मुँह देखि दोसर कनियाँ नहि अनलह तोँ । तकरा कोनो दया-माया नहि ! कोना छोड़िकऽ जा भेलैक ओकरा...?'

राम बिच्चेमे टोकि देलथिन–'भेल हेतैक कोनो कारण मौसी ! रवि ओना भागिकऽ पड़ायवला बेटा नहि अछि । अबस्से धूरि ऐत एक दिन । मुदा ओकरे दऽ सुनिकऽ अहाँ घूरि आयलि छी मौसी, से बड़ हर्षक बात ।'

ओ हर्षक बात बेसी दिन नहि रहलनि रामक लेल । मौसी अबिते बिछौन धऽ लेलथिन । फेर ऊठि नहि भेलनि । डाक्टर-वैद्य सभ हारि गेलनि । अन्तिम दिन मौसी कहलथिन–'वचन देने छलियऽ तोरा जे मुँहमे आगि देबाक अधिकार तोरे रहतऽ । सैह वचन आपस लऽ अनलक हमरा । हमर वचनक चिन्ता भगवानकेँ छलनि ।'

रामकेँ मुदा ककरो कोनो चिन्ता नहि छलनि । मौसियोक सभ टा काज राजरानिएँ जकाँ भेलनि । लाल कतबो बुझयबाक चेष्टा कयलथिन, राम नहि मानलथिन– मौसीक मर्यादाक प्रश्न छलनि ।

ओना, गाममे मर्यादाक प्रश्नपर आब बेसी लोक आगू नहि बढ़ैत अछि ! बढ़ैत छलाह आगाँ श्रीकान्त चौधरी । भरि गामक मर्यादाक दायित्व हुनकेपर छलनि । दू टा जेठ बहिन ! विधवा जेठ बहिन गामे रहलथिन आ सम्पूर्ण मर्यादापूर्वक रहलथिन । मौसीकेँ कहियो लोक नहि बुझलकनि जे अइ गामक नहि छलीह । मीराक विवाह उच्च कुलमे करौलथिन आ ओकर स्वामीक मृत्युक उपरान्त ओकरा सम्पूर्ण मर्यादाक संग रखलथिन ।

ई तँ घरक गप्प रहनि । घरक बाहरो ककरो साहस नहि रहैक जे बिना हुनकर अनुमति लेने कोनो काज करत । एक बेर उतरबारि टोलक कारीझा अपनासँ छोट पाँजिक जमाय उठा अनलनि । श्रीकान्त चौधरी कोनो दशा बाँकी नहि रखलथिन । अपन माय छलथिन योग्यक सन्तान, स्त्री सेहो ओही श्रेणीक, राम आ लालक विवाह महादेवझा आ पद्मझा पाँजिमे कयलथिन । नामी आ गोवर्धन दुनू जेठ बालकक विवाह सेहो अपने महादेवझा पाँजिमे करौलथिन । अपनासँ छोट पाँजिक एक्को टा जमायो नहि लाबऽ देलथिन ।

फेर गोवर्धन बुधियार भऽ गेलथिन । एक दिन बाँट-बखराक गप्प कयलथिन आ फराक भऽ गेलथिन । संगहि फराक भेलथिन नामी । दुनू अपन छोट बेटाक विवाहमे टाका गनौलनि । आशीर्वाद देबऽ लेल कहबाक अपने दुनू भाइकेँ साहस नहि भेलनि । समाद देने छलथिन । राम कहबो कयलथिन– 'अपन-अपन विचार छैक बाबू ! चलू, दूर्वाक्षत दऽ देबनि ।' मुदा श्रीकान्त चौधरी अडिग छलथिन–'विचार बदलबा लेल बड़ अबेर भऽ गेल आब । तोरालोकनि जा, मना नहि करैत छियऽ ।'

ओ नहि गेलथिन । कतहु नहि जाइत छलाह जीवनक किछु अन्तिम वर्षमे । सभटा बदलऽ लागल छलैक । श्रीकान्त चौधरी नहि बदललाह । दरबज्जेपर दुर्गापूजा होइत छलनि । पैघ मेला लगैत छलैक । नाच-गान आ नाटक होइत छलैक । सभ टा व्यवस्था श्रीकान्ते चौधरीक रहैत छलनि । शामियानामे सभसँ आगू स्टेज लग मसलंगसभ रहैत छलैक जाहिपर सभ कुटुम्ब आ अपन परिवारक लोक बैसैत छलनि । एक बेर सभ टा व्यवस्था करौलाक बाद नाटकक बेरमे अयला तँ देखलथिन एक टा मसलंगपर आधा नामी ओठङल छलाह आ आधापर लंका मोहनपुरक राम औतार । चोट्टे घूरि गेलथिन । दोबारा फेर कहियो शामियानामे पयर नहि देलथिन । सभ टा इन्तजाम करबा– ठीक नाच-नाटक शुरू होयबाक बेरमे अपन कोठली जा सूति रहैत छलथिन ।

समय बदलि गेल छलैक, मुदा श्रीकान्त चौधरी नहि बदलल छलाह । मर्यादाक लेल सभ किछु बेचि-बिकिन लेबाक साहस हुनके टामे छलनि । जातिक रक्षा, कुटुम्बक सम्मान । ओ जमाना आब लदि गेलैक । तहिया गामक सभ कुटुम्ब हुनके कुटुम्ब रहनि । सभकेँ एके मर्यादा भेटैत छलैक सम्पूर्ण गाममे ।

आब गामक लोक बेसी होशियार भऽ गेल अछि । पाहुन-परक बाँटि लेने अछि, अपन-अपन । अपने कोठलीमे, अपने पाहुन टाक चिन्ता रहैत छैक । गाम भरिसँ कोन मतलब ? कमलामे पानि कम्म छैक, कोनो स्त्रीगण वा बेटी-पुतहु जाँघ उघाड़ि हेलिओकऽ आबि गेलीह तँ कोन अनर्थ भेलैक ? प्रलय मचा दैत छलथिन श्रीकान्त चौधरी । पानि छैक वा नहि— नाव चलैत रहय । नाव चलबा जोग नहि छैक तँ घूमिकऽ पुल बाटे आबऽ । मुदा बेटी-पुतहु पैदल कोना अओति ? सवारी महफा कथी लेल छैक ? खाली अपने लेल नहि, गामभरिक बेटी-पुतहुक लेल ।

आब गामभरिक बेटी-पुतहुसँ गामक लोककेँ कोनो मतलब नहि । अहाँक बेटी पयरे आयलि तँ आयलि, हम अप्पन सवारी मङनी किएक देब ? बनबा किएक नहि लैत छी एतेक इज्जतिक ध्यान अछि तँ !

एक बेर खतबेटोलीक कलुआ खतबे सामनेसँ खड़ाम पहिरि चल गेल रहनि तँ खुट्टासँ बान्हि पिटबौने रहथिन श्रीकान्त चौधरी । मुदा ओही कलुआक बेटीक विवाह रहैक तँ अपन बखारीसँ अन्न देलथिन, टाका देलथिन आ वर-कनियाँ लेल कपड़ा-लत्ता देलथिन । जूता-मौजा पहिरि कलुआक जमाय गोड़ लागऽ अयलनि । अपने हाथसँ गोड़लगाइ देलथिन श्रीकान्त चौधरी ।

कलुए टा नहि, जकरा ककरो प्रयोजन होइ, हाथ जोड़ि ठाढ़ भऽ जाय, कहियो निराश नहि होबऽ पड़ैक । अपना कर्ज लेबऽ पड़नि, जमीन बिक्री भऽ जाइनि, मुदा कहियो क्यो निराश नहि घूरल । गामक मर्यादाक प्रश्न सभसँ ऊपर रहैत छलनि श्रीकान्त चौधरीक लेल ।

आब वैह प्रश्न सभसँ तर पड़ि गेल छैक । सभकेँ अपन-अपन चिन्ता । गामक मर्यादा लऽकऽ के चाटत ? तेँ गामक हालत दिनानुदिन बदतर होइत गेलैक । आजादीक पच्चीस वर्षक बादो हवेली मोहनपुरमे बिजली नहि लागल छलैक । जाहि हवेली मोहनपुरमे साँझ होइते बंगलासभसँ पैघ-पैघ पेट्रोमैक्स जरि उठैत छलैक, गरीबो लोक अपन दरबज्जापर लालटेन लेसि टाङि लैत छल, से हवेली मोहनपुर आब साँझेसँ अन्हारक टिल्हा बनि जाइत अछि । ककरो दलानपर इजोत नहि । घरे-घर बैसारी । आ, भोरे आब क्यो सौँसे गामकेँ जगबैत कमला माइक दरबार दिस नहि जाइत अछि । भोर होइते शुरू भऽ जाइछ घोंघाउज, गोलंजर आ कथा-कथान्तर । सम्पूर्ण दिन एहीमे बीति जाइत अछि । गाम ओहिना दुर्गतिमे पड़ल रहैत अछि । सौँसे गन्दगी पसरल । पानि-गन्दगीक बहबाक कोनो बन्दोबस्त नहि । टाट खसका-खसका आ माँटि भरि सभ सार्वजनिक नालाकेँ लोक अपन बाड़ीमे मिला लेने अछि । आब सभ टा पानि बाटेपर बहैत छैक–थाल, कादो, गन्हाइत विष्ठा । ऊभड़-खाभड़ कने-कने चौड़ा बाटसभ आ कुम्भी-लतीसँ छाड़ल पोखरि-डबरा । सभमे मच्छड़ भनभनाइत । एक टा कल गड़ल रहैक पछिला बोटमे । दुनूपर भीड़ रहैत छैक । पाइवला लोकसभ अङनेमे कल गड़ा लेने अछि । पोखरि-डबराक ककरो चिन्ता नहि छैक । दुनू सार्वजनिक कलपर तैयो भीड़ रहैत छैक । अदहनसँ लऽकऽ पीबा धरि कलेक जल चाही । एक्को टा इनार-पोखरिक पानि कोनो काजक नहि रहलैक ।

गामक सभ टा काज तैयो चलिते छैक । गोलैसीसँ लऽकऽ भतबरी धरि । गोलैसीक एक टा अड्डा गामक हाइ स्कूल । बेसी मास्टर गामेक, किछुए मास्टर अनगौआँ । गामक राजनीतिसँ स्कूल प्रभावित । स्कूलक हेडमास्टर छलथिन नामी

बाबूक जेठ बालक । गामोमे बेस चलती हुनकर । मुदा, लंका मोहनपुरक संग संधि कऽ सरपंचीक गद्दी सभ बेर हथिया लैत छलथिन अलगू चौधरीक बेटा हरिश्चन्द्र चौधरी । पितिऔते छलथिन अलगू चौधरी नामी बाबूक । मुदा काटा-काटी पुरान छलनि । राजनीतिमे अखड़ियल छलाह हरिश्चन्द्र चौधरी । तीनू बेर मुखियाक गद्दी लंका मोहनपुरकेँ दऽ सरपंची अपने हथिया लैत छलाह ।

जाहि साल पहिल बेर सरपंच भेला, ओही साल न्यायक नव मापदण्ड स्थापित कयलनि हरिश्चन्द्र चौधरी । यद्दू गुरुजीक छागर भोलीझा चोराकऽ मारि देलथिन । भरि गाम हल्ला मचि गेलैक । न्याय लेल सरपंच लग दौड़लाह यद्दू गुरुजी । तावत मासु पहुँचि गेलनि हरिश्चन्द्र बाबूक अङना । हरिश्चन्द्र बाबू झट फैसला कयलनि–भोलीझा निर्दोष प्रमाणित, मानहानिक लेल यद्दू गुरुजीकेँ बीस टाका जुरमाना ।

अपन पहिले पंचैतीसँ हरिश्चन्द्र बाबू न्यायक अइ स्तरक निर्वाह कयलनि। गामक समस्याक समाधानोमे ओ ककरोसँ पाछाँ नहि रहैत छलाह । एकबेर शुद्धमे बदरी झा अपन पाँच बरखक बेटीक लेल पचास वर्षक वर लऽ अनलनि । हरिश्चन्द्र चौधरी गामक नौजवानसभकेँ भड़कौलनि–'तोरालोकनिक अछैत एहन अन्हेर ! भगा दे वर-बरियातीकेँ ।' एक तँ राकस, दोसर नोतल । धारक पारेसँ बरियातीकेँ भगा देलक छौँड़ासभ । बदरी झा तीन हजार गना लेने छलथिन । चिन्तामे पड़लाह । पाँच सय रातिएमे हरिश्चन्द्र चौधरीकेँ पहुँचि गेलनि । प्रात भेने वैह वर-बरियाती फेर आयल । स्वागतमे सभसँ आगू सरपंच हरिश्चन्द्र चौधरी ।

मुदा गाममे असल डर होइत छलैक लोककेँ नामी बाबूक बालक महेशसँ। नहि जानि ककरासँ ककरा बझा देथिन । दिन-राति एही सुतारमे रहैत छलाह । हाइ स्कूलमे हेडमास्टर होयबाक कारणेँ बेसी लोक मास्टरे साहेब कहैत छलनि । आ मास्टर साहेबक अधिक बैसार छनि लोकक अङनामे, खासकऽ ओइ आङनमे, जकर पुरुष कमयबा-खटयबा लेल परदेश रहैत छैक । ओइ स्त्रीगणसभक चुल्हे लग मास्टर साहेबक बैसार रहैत छनि– अबेर-कुबेर कोनो नहि । अप्पन-अप्पन आङनमे प्रवेश रोकबा लेल बेसी काल परदेशी कमौआसभ अपन सलामी पहुँचा दैत छनि–पैँचक नामपर सय-दू सय टाका आ नीक-नीक चीज । मुदा सलामी दऽ जहिना परदेशी गामसँ विदा होइत छथि, मास्टर साहेब फेर आङनमे ।

नहि परि लगलनि खाली कमलाक कनियाँ । ओ अपने खेलायलि मौगी छलि । मास्टर साहेबक पैतरा बूझि गेलनि । वर ओकर परदेसिया छलैक, कानपुरमे कमाइत छलैक । साल-छौ मासपर अबैत छलैक । ओकर स्त्री गाममे रहैत छलैक आ साले-साल जमीन कीनैत छल, भरना लैत छल । मास्टर साहेब ओम्हरो जोर मारलथिन । शुरू-शुरूमे बैसार जमलनि, किछु टाको पैँच देलकनि । फेर दुनूमे बझि गेलनि । मास्टर साहेब उपद्रवी छौँड़ासभसँ ओकर अङनामे रोड़ा बरसबा देलथिन आ ओ गामक बीचमे ठाढ़ि भऽ मास्टर साहेबकेँ खुल्लम-खुल्ला गारि देलकनि–'इह, सऽख ने देखू ! टाको चाहियनि आ इज्जतियो ! खऽख लगले रहतनि हमर संग सुतबाक...'

मास्टर साहेबक ई पुरान सऽख छलनि । कतबो वयस बितलनि, ई सऽख कम्म नहि भेलनि, बढ़ले गेलनि । जहाँ कोनो परदेसी गामसँ बाहर कि मास्टर साहेब ओकर कोठलीक भीतर ।

राम जिबैत छलाह तँ लोक बेसी काल कहैत छलैक–'दुनू पितियौते तँ छथि–महेश आ राम । एक टाकेँ स्त्री छनि, नाति-पोता छनि, तैयो चालि देखू ! दोसरकेँ स्त्री बाइसमे वर्षमे मुइलथिन, मुदा कहियो क्यो-किछु सुनलकनि ?'

मुदा ई बात सोझाँमे कहबाक साहस नहि छलैक ककरो । सभकेँ मास्टर साहेबक डर होइत छलैक । घरेमे किछु लगा देथिन । लगबऽ-भिड़बऽमे माहिर छलाह मास्टर साहेब ।

रामकेँ दुख होइत छलनि । गामक हालति देखि बड़ दुख होइत छलनि । रविक पड़ा गेलाक बाद एकदम टूटि गेल छलाह ओ । कोनो वस्तुमे कोनो रुचि नहि रहि गेल छलनि । अपन कोठलीमे पड़ल पोथीसभ पढ़ैत रहैत छलाह, वैह एकमात्र संगी छलनि सभ दिनक । मुदा लोकसभ बेर पड़लापर अबैत छलनि, सुख-दुख कहैत छलनि । सूनिकऽ छटपटा उठैत छलाह । हुनके पुरखाक बसाओल गाम छनि–ओकर मान-सम्मानमे उत्तरोत्तर वृद्धिक लेल हुनकर पिता सर्वस्व लगा दैत छलथिन । रामो अपना भरि पाछाँ नहि रहैत छलाह । मुदा, रविक एकाएक अदृश्य भऽ गेनाइ हुनका सामर्थ्यहीन कऽ देने छलनि । हुनकर वशक बात नहि रहि गेल छलनि । वस्तुत: ककरो वशक बात नहि रहि गेल छलैक आब ।

सभ-किछु बदलि गेल छलैक । मूल्य आ सिद्धान्त– सभ-किछु परिवर्तित भऽ गेल छलैक । मोहनपुरक हवेली ध्वस्त भऽ गेल छलैक आ खण्डहरमे जे किछु ठाढ़ भेल छलैक ओ लज्जास्पद छलैक । ने सामन्ती शान, शिष्टाचार, गरिमा आ शालीनता, ने जनवादी चेतनाक स्फुरण । एक टा स्वार्थ-लोलुप सभ्यता जन्म लऽ लेने छलैक गाममे देखिते-देखिते । वैह अमरबेल जकाँ पसरि रहल छलैक ।

आ, बहुत रास समय ससरि गेल रहैक ।

रविक गाम अयना दू मास बीति गेलैक ।

ओइ दिन कवितासँ भेँट भेलाक बाद ओकर गाममे रहब सहज भऽ गेल छलैक । सभ टा तनाव, सभ टा अपराधबोधसँ मुक्त भऽ गेल छल ओ ।

ताकि-ताकिकऽ बाबूक सामानसभ निकलबौने छल । तीनू फोटो जरनघरामे फेकल छलैक । रविकेँ विचित्र आ दुखदायक लगलैक ई व्यवहार मुदा ओ चुप्प रहल । ओइ कोठलीसँ सभ टा सस्त रुचिक कलेण्डर हँटबा फेरसँ माँ आ बाबूक फोटो टङलक । बाबूक नोसिदानीकेँ सरियाकऽ तक्खापर रखलक आ छड़ीकेँ एक टा खुट्टीसँ लटका देलकै । सभटा पोथीकेँ आलमारीसँ बाहर कऽ सुखौलक आ फेर ओइ आलमारीकेँ अप्पन कोठलीमे आनि पुरने स्थानपर राखि सभ टा किताब ओइमे सरियाकऽ रखलक । एक टा आलमारीमे गोजले भेलैक, तैयो बहुतरास किताब बाहर टेबुलेपर राखऽ पड़लैक । एक टा आर आलमारी लेल तख्ता चिरबौलक अरकसियासँ आ बरही लगा देलकै ।

भोरे ऊठि नित्यकर्मसँ निवृत्त भऽ पाठ करऽ बैसि जाइत छल–बाबूक पोथीसभ छलनि । गीताक पाठ ओकरा पसिन्द छलैक । पाठक बाद मायक फोटोकेँ नित्य नव माला पहिरबैत छल । तकर बाद जलखै आ तकर बाद किछु काल फुलबारीमे काज । बाबूकेँ फूल बड़ पसिन्न रहनि । सभ तरहक फूल पसिन्द छलनि । अपने हाथे लगबैत छलथिन, पानि पटबैत छलथिन । रवियो ओही क्रियाकेँ दोहरबैत छल आ लगैत छलैक जेना बाबूक स्नेहक छाहरि तर बैसल हो ।

भोजनक बाद स्नेहक ओ छाहरि भौजीक सम्पर्कमे भेटैत छलैक । भोजनक बाद ओ विक्रम भाइक डेरापर चल जाइत छल । भाइ स्कूल गेल रहैत छलथिन आ भौजी एकसरि रहैत छलथिन । दुनूकेँ कोनो काज नहि भरि दुपहरिया । बहुतरास गप्प करैत छल दुनू गोटे । भौजी गामक गप्प कहैत छलथिन, बाबूक गप्प कहैत छलथिन । रविकेँ नीक लगैत छलैक । रवियो बहुतरास गप्प कहैत छलनि । चौदह वर्षक अपन प्रवासक कथा खाली नुका जाइत छल । भौजी बड़ जिद करैत छलथिन, मुदा रवि कहुना टारि जाइत छल ।

एक दिन भौजी दोसरे जिद धऽ लेलथिन–'आब अहाँ विवाह कऽ लियऽ ।'

रवि बात हँसीमे उड़बैत कहलकनि–'के करत हमरासँ बियाह आब ? सभ टा केश उज्जर भऽ गेल कनपट्टीपर । हम तऽ तैयारे छी । होथि कोनो बहिन तँ अहाँ करा दियऽ हमरो विवाह । जिनगी भरि उपकार मानब ।'

भौजी मुदा गम्भीर छलथिन–'एना हँसीमे उड़ौने नहि मानब हम । रहितथि कोनो बहिन हमर कुमारि तऽ अबस्से करा दितहुँ विवाह । मुदा कनियाँक कमी छैक ? सेहो अहाँ सन वर लेल ? खाली अहाँ तैयार भऽ जाउ ।'

आब रवियोकेँ गम्भीर होबऽ पड़लैक– 'मोने तैयार नहि होइत अछि भौजी ! के अइ झंझटमे पड़य ? स्वतंत्र छी, फेर जहिया मोन हैत, गामसँ विदा भऽ जायब । आब तऽ बाबुओ नहि रहलाह । के रोकत हमरा ?'

सुनयना भौजी कने दुखी होइत कहलथिन–'सत्ते कहै छी ! आर के रोकत अहाँकेँ ? आर के अछि अहाँक गाममे ? हमरा तऽ सत्ते कौखन आश्चर्य होइत अछि जे लालमामा-मामी किएक ने चर्चा करैत छथि अहाँक पलिबार बसयबाक ? हमरालोकनिक गिनतिए कोन अछि ?'

रवि अपनत्वसँ कहलकनि–'हमर बातक एना अर्थ नहि लगाउ भौजी ! अहीँ लोकनि तऽ छी सभ-किछु हमर आब । बाबू नहि रहला, आर अछिए के ? गाम छोड़बाक बात तऽ ओहिना कहने रही । हम तऽ एतऽ रहऽ आयल छी । मुदा विवाहक गप्प छोड़ू । बड़ निष्प्रयोजन बुझाइत अछि हमरा ।'

भौजी फेर हँसी कयलथिन–'आ, जखन खगता हैत ? मौगीक देहक इच्छा हैत, तखन ?'

रवियो ओहिना हँसीमे कहलकनि–'मौगी-देहक कोन खगता छैक ? इच्छे भेला उत्तर भेटि जाइत छैक । खाली टेँटमे दाम चाही । सभ तरहक देह– हम तऽ चौदह वर्षमे नीक जकाँ देखने छिऐक ।'

सुनयना भौजीक मुँह लाल भऽ गेलनि । आँखिक पपनी नीचाँ जे खसलनि से उठबे नहि करनि जेना ! रविसँ लाज भऽ रहल होइनि । रविकेँ लगलैक जेना भौजी डेरा गेलि होथिन । दुपहरिया आ डेराक एकान्त । देह-सम्बन्धी ओकर मान्यता भौजीकेँ भयभीत कऽ देने छनि भरिसक । उठैत कहलकनि–'चलै छी भौजी !'

भौजी तैयो किछु नहि बजलथिन । रविकेँ आन्तरिक पीड़ा भेलैक । भौजी ओकरा ओतेक नीच बूझि लेलथिन ? दुपहरियामे ओकर अयबाक नेतपर प्रायः सन्देह कऽ बैसलथिन ।

ओ दुपहरियामे ओम्हर गेनाइ छोड़ि देलक । तेजू ओकर बालसंगी छलैक। ओइ दुपहरियामे ओकरे ओइ ठाम गेल । मिहिर आ नारायणक संग ओहो ओकरे क्लासमे पढ़ैत छलैक । मुदा लोअरो पास नहि कऽ सकलैक । सात भैयारी छल, मुदा बेसी निरक्षरे । तेजुए स्कूलमे नाम लिखा लोअर धरि पहुँचल छल । मुदा, तकर बाद पोथीसँ बेसी गुल्ली-डंडा आ गोली खेलायपर परकि गेल । क्लास जयबे नहि करय । स्कूलसँ जखन रवि, मिहिर आ नारायण घुरय, गाछीक कातमे चिकनी माँटिवला बाटपर घुरछी खोदने बड़का-छोटका गोली लेने ठाढ़ रहैत छलैक । देखिते छेकि लैत छलै-'आबि जो, खेला ले एट्टन-दोट्टन, तखन अङना जैहेँ ।'

बेसीकाल अबेर भऽ जाइत छलैक । तेजू हारैत छलैक आ हारलाक बाद फेर दोसर दाव खेलयबा लेल बाध्य करैत छलैक । जखन सभक आङनसँ तकैत लोक पहुँचैत छलैक तँ सभ अप्पन-अप्पन आङन पड़ाइत छल । मुदा तेजू लेखे धनसन। ओ दोसर छौँड़ासभकेँ पकड़ि गुल्ली-डंटा आ गेलबाती खेलाय लगैत छल ।

एकदिन बुधियार काका लग तेजू अपन तेजी देखबैत बाजल-'देखू बुधियार काका, हम सभ भाइ नाथेनाथ छी-सोमनाथ, इन्द्रनाथ, रतिनाथ, सतीनाथ, कलानाथ, महेन्द्रनाथ ओ तेजनाथ ।'

बुधियार काका झट कहलथिन-'सभ मूर्खनाथ !'

तेजू लोहछिकऽ पड़ायल आ दरबज्जापर बैसल लोकसभ बुधियार काकाक गप्पपर हँसैत रहल । बुधियार काका उतरबारि टोलमे बड़का कहबैका छलाह । ककरो नहि छोड़ैत छलथिन-अपनो बेटासभकेँ नहि । एक बेर बेटा कनियाँ आ सासुकेँ हरिद्वार लऽ गेलथिन, माय-बापकेँ पुछबो नहि कयलथिन । सङतुरिया भजार कहलथिन-'की भेल भजार ? अहाँ हरिद्वार नहि गेलहुँ !'

बुधियार काका झट कहलथिन-'कोना जैतहुँ हमरालोकनि ? बाउ (बेटा)केँ देवता (स्त्री) आ कुलदेवता (सासु) दुनू संगे छथिन, तखन माय-बापक कोन काज ?'

भजार काकाक मुँह बन्द भऽ गेलनि । ओना, भजारो काका बजन्ता छलाह । मुदा बुधियार काका हुनकर बोली बन्द कऽ दैत छलथिन । बुधियार काका छलाह मिडिल फेल आ भजार काका मैट्रिक पास । मुदा, तेजी बेसी बुधियारे काकाक रहनि । दुनूक गप्प अधिक काल अंग्रेजीमे होइनि । पयखाना लेल धारक कात गेल रहथि भजार काका । एक टा पाकल आम भेटलनि-पहिल गोपी । गोपी लेने सोझे बुधियार काका लग पहुँचलाह-'भजार, आइ हैव फाउण्ड ए गोपी टुडे ।

इफ यू सर्टीफाइ इट टुबी ए प्यूर वन, इट बिल बी सबमिटेड टु गौड' (भजार, आइ हम एक टा गोपी पौलहुँ अछि । यदि अहाँ एकरा एक टा शुद्ध गोपीक प्रमाणपत्र दी तँ एकरा भगवानकेँ चढ़ा देबनि ।)

बुधियार काका गम्भीरतापूर्वक ओइ गोपीक निरीक्षण कयलनि-'नो भजार, लुक एट दिस स्पौट । इट इज ए कोइलपद्दू, इट केन नोट बी सबमिटेड टु गौड (नै भजार, ई दाग देखू । ई कोइलपद्दू थिक, एकरा भगवानकेँ नहि चढ़ाओल जा सकैत अछि ।)

भजार काकाक मुँह लटकि गेलनि । ओना, बाँकी सभ लग भजार काका खूब झाड़ैत छलाह । छौँड़ासभ हुनकर डरे पड़ाइत रहैत छल । अंग्रेजीक नेसफील्डक ग्रामर रटने छलाह भजार काका । रवि दसमामे फर्स्ट कयने छल । गाम आयल तँ बाबू सभकेँ गोड़ लागऽ पठौलथिन । भजार काकाकेँ गोड़ लगलकनि तँ कहलथिन-'ओ, फर्स्ट भेल छऽ ! अच्छा कहऽ तऽ- व्याट इज द थर्ड रूल ऑफ सिनटैक्स ?'

रवि लंक लगाकऽ पड़ायल । सभ छौँड़ा पड़ायले रहैत छल । भजार काकाकेँ क्यो नहि अभरैत छलनि तँ आङन जा निरक्षर काकीकेँ अंग्रेजीमे कहैत छलथिन-'नूनू माय, अहाँ जे चाहैत छी जे अहाँक तीनू बेटा— नूनू, बच्चा आ बौअन, सभ खुशी रहथि, से यू आर ए फूल । वन हू ट्राइज टु प्लीज एवरीबडी, प्लीजेज नन' (अहाँ मूर्ख छी, जे सभकेँ प्रसन्न करबाक चेष्टा करैत अछि, ककरो प्रसन्न नहि करैत अछि ।)

काकी अवाक् ! कहियो काल खौँझाकऽ कहैत छलथिन-'धुर जाउ, हम नहि बुझै छी अहाँक ई अरबी-फारसी ।'

मुदा, बिना अरबी-फारसी पढ़ने तेजू तेहन काज कयलक जे बुधियार काकाक बुधियारी धयले रहि गेलनि । सातो भाइ फराक भऽ गेल छल तेजू । सभक विवाह-दान आ धीया-पूता । हिस्सामे एक-एक टा कोठली आ दू-तीन बीघा जमीन। मोस्किलसँ गुजर होइत छलैक । मुदा, एकदिन भरिगाम चकित, जखन दरबज्जापर एक टा पैघ सन कोठली बना तेजू बड़का दोकान खोलि देलक- अन्न-पानिसँ लऽकऽ असाहनि-पसाहनि धरिक सामान । गामक लोक ओहि दिनसँ घातमे रहय आ अन्तमे सुँघिए लेलकनि । तेजूक बैसार कमलाक आङनमे होबऽ लागल रहैक, बेसी-बेसी राति धरि । कमलाक स्त्री जे मास्टर साहेब सन धाकड़ लोककेँ औँठा देखा देने रहनि, तेजूक चालिमे आबि गेलैक । मास्टर साहेबकेँ चौराहापर गारि दैत कहने रहनि-'पैसो दियनु आ संग सुतबो करियनु ! सऽख ने देखू !'

भरिगामक लोक कहऽ लगलैक जे तेजूक दुनू सऽख कमलेक स्त्री पूर करैत छथिन । आर तँ आर, आङनमे तेजूक अपने कनियाँ फसाद करऽ लगलैक, राति-बिराति गर्द मचि जाइ । तेजू भरिगाम एलान कयलक-'हिस्टीरिया होइ छनि ।' आ, झट नैहर पहुँचा अयलनि ।

गाममे आब तेजूकेँ सभ तेजू बाबू कहैत छैक-अपनासँ छोटो आ पैघो । भोर होइते ओकर दोकानक आगाँमे बेंच-चौकी रखा जाइत छलैक आ फेर ओतऽ लोकसभ जुटऽ लगैत छल— सरपंच हरिश्चन्द्र चौधरी आ हेडमास्टर महेश बाबू, बंगट मिसर आ अशर्फी झा आ आरो कतेक लगुआ-भिडुआ सभ ।

बीच-बीचमे हाक पड़ै छैक-'की तेजू बाबू ! फेर एक बेर चाह नहि हेतैक ?'

'आह, किएक नहि ?' तेजू गदगद होइत तुरत दोसर खेपक व्यवस्था करैत छलाह । चाहक बाद सुपारीक कतरन आ तकर संग गप्पपर गप्प ।

असली गप्प होइत छलैक मास्टर साहेबक दरबज्जापर— साँझ बितलापर सभ ओतहि जुटैत छल । बूढ़ा नामी बाबू अपन चौकीपर बैसल-बैसल बीच-बीचमे टीप दैत छलथिन । महेश बाबू भरिगामक लेखा-जोखा लैत रणनीति तैयार करैत छलाह । अन्तमे, सभक गेलाक बाद मात्र दू टा विश्वासी रहि जाइत छलथिन— गुणाकर आ गणेश । दुनू दूत आ जासूस छलथिन हुनकर ।

मुदा, कमलाक कनियाँ कोनो दूत वा जासूसकेँ अपन अङना टपऽ नहि दैत छलैक । साँझसँ ओकर अङनामे अड्डा जमैत छलैक तेजूक । रातिकेँ कखन घुरैत छल, क्यो नहि देखैत छलैक ।

गुणाकर भरिगाम बढ़ा-चढ़ाकऽ बात पसारैत छलैक आ अन्तमे सभकेँ कहैत छलैक-'ईहो मास्टरे साहेबक दाव छनि । तेजू कोनो अपना मोने कमलाक अङना जाइए ! देखबै जे तमाशा मचतैक ! मौगिया बड़ ताव देखबैत छलनि !'

रवियोकेँ ओइ दिन गुणाकरे कहने छलैक ई खिस्सा । कमलाक स्त्रीकेँ देखने नहि छलैक । ओकर गाम छोड़लाक बाद अइ गाममे आयलि छलैक । कमला ओकरे सङतुरिया छलैक । ओइ दिन अनायास ओकर डेग तेजूक घर दिस विदा भऽ गेलैक ।

तेजू बड़ अपनत्वसँ स्वागत कयलकै-'भाग्य जे आइ अहाँकेँ ई नेनपनक दोस्त मोन पड़ल । एतेक दिनसँ गाममे छी !'

तेजूक उपराग वाजिब छलैक । ओकर घुरलाक दोसरे दिन आबिकऽ भेँट कऽ गेल रहैक । मुदा, रवि आइ धरि आबि नहि सकल रहैक ओकर टोल । ओइ दिन आयलो रहय उतरबारि टोल तँ कविताक घर लगसँ घूरि गेल छल । माफी मङैत कहलकै-'गल्ती भेल भाइ ! पहिनहि आबऽ चाहैत छल !'

ओ दुपहरियामे नियमित ओम्हरे जाय लागल । वास्तवमे ओकरा लग एतेक समय छलैक जे कटने नहि कटैत छलैक । भोरुका समय कहुना नित्यकर्म आ पूजापाठमे बीति जाइत छलैक । लालकाका भोरेसँ घरसँ निपत्ता रहैत छलथिन । भोरमे देखादेखी होइत छलै, विशेष कोनो गप्प नहि । रातुक भोजन-बेर फेर देखादेखी, बस्स । मनोजक संग सेहो नहि । दिनक दिन निपत्ता रहैत छलैक । आङनमे लालकाकीसँ एकाध बेर पूछापूछी कयलक । फेर वैह अफरात असह्य समय । मनोजक कनियाँ भाउजि छलथिन, मुदा महाग लजकोटरि । बेर-बेर सौरीघर गेलासँ देहो खूब पलरि गेल छलनि आ ओकरे सम्हारऽमे अपस्याँत रहैत छलीह । रवि हँसी कयलकनि-'फेर प्रोग्राम छै भौजी ?'

भौजी तेना लजा उठलथिन जेना स्वीकृति दऽ रहलि होथिन । भौजीक रंग गोर छलनि, मुदा आकृति कने उसट्ठ । हँसलापर ओ बेस सुन्दरि लागऽ लगैत छलीह । खासकऽ जखन ओ लजाकऽ हँसैत छलीह । रवि कहलकनि-'अहाँ एहिना लजाकऽ हँसैत रहू भौजी, बड़ सुन्दर लगैत छी ।'

भौजी फूलिकऽ कुप्पा भऽ गेलथिन । हुनकर नाक पीचल रहनि आ ठोर मोट । आँखि आ कपार बेस छोट । दाँत मुँहसँ बाहर नहि, मुदा कने पैघ-पैघ । देहमे ठाम-ठाम मासु लटकि गेल छलनि । मुदा, हँसलापर ठीके हुनकर सम्पूर्ण आकृति बदलि जाइत छलनि आ बड़ आकर्षक लागऽ लगैत छलथिन ।

ई आकर्षण आ हँसी देखबाक फुर्सति मनोजकेँ नहि छलैक, से एही तीन मासमे रवि नीक जकाँ बूझि गेल रहैक । ओकर बगलेवला कोठलीमे मनोज रहैत छलैक । बेसी राति बितलापर कहियो-काल ओकर विकृत स्वर सुनाइत छलैक-'सुनै नै छी ! आउ एम्हर ।'

ओम्हरसँ भौजीक खैँझायल उत्तर सभदिन एक्के रहैत छलनि-'आब किएक बजबै छी हमरा ? जाउ ने ओही रंडीसभ लग जकर चक्करमे बौआइत रहैत छी ।'

मनोज जोरसँ हँसैत छलैक-'ओसभ रहैत तऽ अहाँकेँ के बजबैत ? अहाँ तऽ छी अभावे शालिचूर्णं वा ।'

ओ असर्ध हँसी रविकेँ विचलित कऽ दैत छलैक । मुदा, ओकरा आश्चर्य होइत छलैक जे ओइ असर्ध हँसीपर भौजीक कोनो प्रतिक्रिया नहि होइत छलनि । फेर कोनो शब्द नहि, जेना विरोध खतम भऽ गेल होइनि ।

आ, ओहूसँ बेसी आश्चर्य ओकरा भौजीक आकृतिपर पसरल तृप्ति आ सन्तोषकेँ देखि होइत छलैक । रातुक उलहन मात्र मान-मनौअलिक एक टा दोहरायल प्रक्रिया भरि होइत छलैक । भौजी सभ तरहेँ सन्तुष्ट रहैत छलीह । अपन पसरल देहकेँ सम्हारैत अपस्याँत रहितो कतहु कोनो दु:ख वा ग्लानि नहि छलनि ।

आ, तेहन भौजी लग समय कटबाक कोनो ब्योँत नहि छलैक । ओहिना आङनमे भौजीसभ लग बैसि समय बितौलासँ कोना काज चलतैक ? ओकरा किछु करबाक चाहिऐक, अपना लेल...गामक लेल ।

लगैत छलैक जेना सभ टा सूत्रे छूटि गेल होइ । सभ ठामसँ ऊपरे-ऊपरे दहाइत चल अबैत छल, जेना गामक माँटि-पानि आ गामक लोक आ ओकर बीच चौदह वर्षक अन्तराल एतेक पैघ दरारि बना देने होइ जाहिमे कोनो पाट संभव नहि छलैक । सभक बीच बैसियोकऽ अपनाकेँ अजनबी आ कटल-कटल अनुभव करैत छल । ओइ दिन कविताक दरबज्जासँ घुरलाक बाद लागल छलैक जेना सभ टा अपराधबोध तिरोहित भऽ गेल होइ आ मुक्त आ सहज जीवन जीबि सकब संभव भऽ गेल होइ ।

बीचमे लगितो छैक जेना खूब सहज भऽ जीबि रहल अछि । फेर अपने बुझाइत छैक जे ई भ्रम थिकैक । गामक लोककेँ ओकरा बारेमे किछु नहि बूझल छैक, कोनो पूर्वाग्रह वा दुरभिसंधि नहि छैक, मुदा ओकरा लेल कोनो स्वीकृतियो नहि छैक लोकक मोनमे । ओकर उपस्थिति-अनुपस्थिति बड़ गौण भऽ गेल छैक लोकक लेल । ओकर घुरलाक किछु दिनक बाद जे जिज्ञासा छलैक सभक मोनमे, से क्रमश: शान्त भऽ गेल छैक ।

आ, एना गौण आ निरर्थक सन जीवन उघनाइ भारी लागि रहल छलैक रविकेँ–चौदह वर्षक आत्मनिर्वासनोसँ भारी । ओकरा नव ढंगसँ गामक जीवनसँ जोड़िकऽ जीवाक चेष्टा करऽ पड़तैक ।

चेष्टा ओ शुरू कयलक ।

एक दिन प्रात भेने आङनमे लालकाकाकेँ कहलकनि–'आइ कोन खेतसभमे जन जायत ? हमहूँ संग जायब ।'

लालकाकी लगेमे एक टा लोटा हाथमे लेने ठाढ़ि छलथिन । लोटा हाथसँ खसि पड़लनि आ औँठा थुरा गेलनि । मुँह एकदम्म फक्क ! रवि औँठा पकड़ैत कहलकनि–'बेसी चोट तऽ नहि लागल काकी !'

काकी पयर झीकि लेलथिन–'नै, किछु नहि भेल । मुदा, तोँ किएक जयबह खेतपर ? अखन तोहर काका छथुन, जन-बोनिहार छऽ । तोँ किएक हरान हेबऽ ?'

रवि कहलकनि–'बैसल-बैसल अकच्छ भऽ जाइत छी लालकाकी ! किछु तऽ करबाक अछि ! अपन खेत-पथार देखबासँ नीक काज आर की हैत ?'

लालकाकीक मुँह आर सुखा गेलनि । रविकेँ कोनो अर्थ नहि लगलैक ।

लालकाका कहलथिन–'से देखऽ लेल अखन तऽ हम छीहे । हमर बाद तोँही सभ ने देखबऽ ! एतेक दिनपर आयल छऽ ! एखन टहलऽ-बूलऽ, भेँट-घाँट करऽ लोकसभसँ ।'

रविकेँ विचित्र लगलैक । लालकाका-लालकाकी ओकरा खेत-पथार देखऽ नहि जाय देबऽ चाहैत छथिन । किएक ? ओकरा हरानी हेतैक ? मुदा मुँह किएक दुनूक एतेक फक्क भऽ गेल छलनि ? एहन कोन बात कहि देलियनि हम ?

कोनो काजमे लगबाक रविक पहिल चेष्टा निष्फल भऽ गेलैक ।

दोसर चेष्टा ओ स्कूलमे कयलक । ओही प्राइमरी स्कूलमे ओहो पढ़ने छल । ओकरा समयमे एक टा मास्टर रहथिन–अपने गामक । आब ओ रिटायर भऽ गेलथिन । हुनकर 'लालू जोगधर' रविकेँ सदिखन मोन रहैत छैक ।

आब स्कूल अपर प्राइमरी भऽ गेल छैक– तीन-तीन टा मास्टर । तीनू अनगौआँ । रवि एक दिन ओम्हर गेल । एक टा टुटलाही कुर्सीपर हेडमास्टर बैसल छलथिन आ बेंचपर दुनू मास्टर । कोठलीमे मोस्किलसँ दस-पन्द्रह टा छौंड़ा-छौंड़ी । रविकेँ आश्चर्य भेलैक । लग जा पुछलकनि— 'एतबे विद्यार्थी छैक स्कूलमे मास्टर साहेब ?'

अपरिचितक प्रश्न सूनि किछु चकित हेडमास्टर साहेब कहलथिन– 'रजिस्टरमे तऽ सभक नाम चढ़ा देने छिऐक, मुदा अबैत अछि यैह पन्द्रह-बीस । पाँच क्लास मिलाकऽ पन्द्रह-बीस । बढ़ा-चढ़ाकऽ नहि लिखबैक सरकारकेँ तऽ स्कूले बन्द कऽ देत । मुदा, एना कतेक दिन चलतै ई स्कूल ?'

ओतबे आश्चर्यसँ रवियो पुछलकनि–'जखन नाम छैक रजिस्टरमे, तखन पढ़ऽ अबैत किएक ने अछि विद्यार्थीसभ ?'

हेडमास्टर साहेब कहलथिन–'जेसभ कमौआ छथि, तनिकर धीयापूतासभ संगे रहैत छनि, शहरमे पढ़ैत छनि । बाँचल गाममे रहऽवला लोक । से, छौँड़ा सभकेँ पढ़बाक ऊहिए ने ! घरसँ विदा हैत आ कतहु खेलाय लागत । चाहे गार्जियने कोनो दोसर काजमे पठा दैत छथिन– 'एक दिन नहि जयबेँ स्कूल तऽ की हेतौ ?' ऊपरसँ कम्पीटीशन सेहो छैक । पहिने तीन-चारि गामक धीया-पूता पढ़ैत छल स्कूलमे, आब विशनपुरमे स्कूल छैक । ओइ पारक छौँड़ासभ आब विशनपुरे जाइत अछि । रहि गेल खाली हवेली मोहनपुरक धीयापूता । सेहो एक्के वर्गक । आन जातिक धीयापूता स्कूल अबिते नहि अछि, नाम लिखि दैत छिऐक, तैयो नहि । पाँचे-सात वर्षक भेल कि घर-घर कमाय लगैत अछि । पढ़त कखन ?'

बेंचपर बैसल दुनू मास्टर ओंघा रहल छलाह । एक टाकेँ झपकी टुटलनि तँ ऊठिकऽ आँखि मलैत कहलथिन–'आब हम जाइ छी मास्टर साहेब ! डेढ़ कोस जायब । काजो अछि गामपर ।'

हुनकर गेलाक किछुए काल बाद दोसरो मास्टर उठलाह आ बिना किछु कहने विदा भऽ गेलथिन । तखन जेना हेडमास्टरोकेँ होश भेलनि । जोरसँ धीयापूतासभकेँ कहलथिन–'जाइ जो, तोरोसभकेँ छुट्टी !'

छौँड़ासभ जोरसँ किलकारी मारलक आ अपन-अपन झोड़ा आ बैसऽवला सपटा झाड़ैत विदा भेल । हेडमास्टर साहेब चुनाओल तमाकू ठोर तर रखलनि आ विदा होबऽ लगलाह । फेर रविपर ध्यान गेलनि जे ओहिना ठाढ़ छल । कने लग आबि पुछलथिन–'कोनो काज अछि ?'

रविक ध्यान टुटलैक जेना ! कहलकनि–'काज तऽ अछि आ से अहीँ सँ अछि । काल्हिसँ हमहूँ एही स्कूलमे पढ़ाबऽ आयब । ओहिना धीयापूताकेँ पढ़ा देबैक । बैसल-बैसल मोन नहि लगैत अछि ।' आब हेडमास्टर चीन्हैत कहलथिन–'अपने रवि बाबू छी ?' रवि मूड़ी डोला देलकनि ।

हेडमास्टर हर्षित होइत कहलथिन–'बेस, तऽ आउ ने काल्हिसँ ! अइमे कोन हर्ज ?' आ, अपन गाम दिस विदा भेलाह ।

रविकेँ अपन नेनपन मोन पड़लैक । एही स्कूलमे केहन वातावरण रहैक ! एकसर गुरुजी रहथिन । सभ क्लासकेँ केहन आत्मीयता आ स्नेहसँ पढ़बैत छलथिन ! केहन भुसकौल रहैक शुरूमे मिहिर आ नारायण ! से, एक टा इंजीनियर भऽ गेलैक आ दोसर डिप्टी कलक्टर । रवि ओकरसभक सबक सुनैत छलैक आ अपने सभसँ पाछाँ रहि गेल ।

प्रात भेने समयपर स्कूल पहुँचि गेल रवि— ठीक दस बजे । तीनू गुरुजीमे ककरो पता नहि । एक टा चटिया आयल रहैक । पुछलकै–'गुरुजी कखन औथून ?'

चटिया कहलकै–'से कोनो ठीक छनि ! बारहो बजे औथिन आ दुइयो बाजि सकैत छनि । थर्ड मास्टर तऽ दू बजेसँ पहिने अयबे नहि करथिन आ फेर तीन बजे विदा ! सेकेण्ड मास्टर कने पहिने अबैत छथि, मुदा तीन बजे ओहो विदा । पढ़यबामे दुनू तेहने, मुदा मारऽमे बड़ चोख ! खलरिए ओदाड़ि देताह । हेडमास्टर साहेब सुद्धा छथिन । ओ नहि मारैत छथिन ककरो ।'

रवि बात बदलिकऽ पुछलकै–'तोहर की नाम छौक ?'

'सुन्दरकान्त झा ।' –छौँड़ा तेजीसँ बाजल ।

–'कोन क्लासमे पढ़ै छेँ ?'

'चौथामे'— छोँड़ा सगर्व बाजल ।

रवि ओकर आत्मविश्वाससँ प्रसन्न होइत कहलकै–'चल गाम, बाँकी चटियासभकेँ पकड़ि लाबी । हमरा चीन्है छैँ ?'

छौँड़ा फेर ओहिना तेजीसँ बजलैक– चिन्हब किएक ने ? अहाँ तऽ रवि कका छी । जै दिन अहाँ गाम अयलिऐक, तहिए देखि लेने रही हम ।'

रवि डेग आगू बढ़बैत कहलकै–'चल आगू-आगू तोँ ।'

पछबारि टोलमे एक टा घर लग आबि छौँड़ा सोर पाड़लकै–'चल रे, लुकरा आ फुदनू ! देख ने, के आयल छौक ?'

दू टा छौँड़ा आङनसँ दौड़ले बाहर अयलैक । रविकेँ देखि थकमका गेलैक । रवि लग बजा पुछलकै–'स्कूल किएक ने जाइत छेँ ?'

लुकरा झट बजलैक–'मास्टर साहेब बड़ मारैत छथि ।'

–'आब नहि मारथुन क्यो । चल हमरा संग ।'

छौँड़ा किछु धुकचुका रहल छलैक । रवि पीठपर हाथ रखैत कहलकै–'चल ने, हम पढ़ा देबौक, केकरो कोनो डर नहि ।'

दुनू छौँड़ा संग लागि गेलैक । फेर दोसर घर, फेर तेसर । सभ संग होइत गेलैक । खाली किर्तू आ झुनकू पड़ा गेलैक गाछी दिस । ने तँ पछबारि-उतरबारि टोलमे कोनो घर बाँकी नहि रहलैक । सभ घरक छौँड़ाकेँ संग लऽ लेलक रवि । भरि गाम आश्चर्यसँ तकैत रहलैक । स्त्रीगणसभ केबाड़ी-टाटक दोगसँ तकैत रहलैक ।

तहिना, नुकाकऽ तकैत ठाढ़ रहैक लव अपन आङनक मुहथरि लग । रवि सोर पाड़लकै–'आ, तोहूँ चल स्कूल ।'

छौँड़ा लग अयलैक मुदा हिचकिचाइत बजलैक–'हम कोना जयबै अइ स्कूलमे ? एतेक टा छी हम ! ई छोटका-छोटका छौँड़ामे कोना पढ़ब ?'

रवि नहि मानलकै–'चल तोँ । अइमे लाजक कोन गप्प छैक ? शुरूसँ सभ पढ़ा देबौक हम ।'

छौँड़ा तैयो हिचकिचाइत रहलैक–'किताबो-सिलेट नहि अछि हमरा ।'

रवि ओकरा लगभग जबर्दस्ती घीचैत कहलकै–'चल तोँ, सभ टा इन्तजाम भय जयतौक ।'

लव आङन दिस तकलक । माय गप्प सूनि लग आबि गेलि छलैक । इशारासँ जयबाक अनुमति देलकै । लवकेँ संग लऽ रवि आगू बढ़ल ।

स्कूलमे हेडमास्टर आबि गेल छलथिन । बड़का पलटनक संग रविकेँ अबैत देखि अकचकाकऽ कोठलीसँ बाहर आबि गेलथिन । लग आबि रवि कहलकनि– लियऽ मास्टर साहेब ! आब विद्यार्थीक कोनो कमी नहि । काल्हिसँ सभ अपने स्कूल आओत । अयबेँ कि नहि ?

सभ एक स्वरमे कहलकै–'आयब ।'

रवि लाइनमे ठाढ़ होयबाक आज्ञा देलकै । सभ हाथ जोड़ि ठाढ़ भऽ गेलैक । रविकेँ ओ प्रार्थना मोन पड़लैक जे ओकर गुरुजी ओकरासभसँ करबैत छलथिन । रवि आँखि मूनि गाबऽ लागल–

हे प्रभो आनन्ददाता, ज्ञान मुझको दीजिए
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर मुझसे कीजिए ।

छौँड़ासभ दोहरौलकै । रवि अगिला पाँती गौलक, फेर सभ दोहरौलकै । प्रार्थना समाप्त होइत देरी अपन-अपन जगहपर बैसि गेलैक ।

रविकेँ अपन हाइस्कूल मोन पड़लैक । ओतऽ प्रार्थना वैह शुरू करैत छल–'तमसो मा जयोतिर्गमय...'

हेडमास्टर साहेब गदगद भऽ जाइत छलथिन आ रविकेँ छातीसँ लगा लैत छलथिन । जहिया ओकर बोर्ड-परीक्षाक रिजल्ट भेल होयतैक, ओकरा कतेक तकने होयथिन ! ओकर भागि जयबाक समाचारसँ कतेक आघात लागल होयतनि हुनका ! आब तँ रिटायरो कऽ गेल होयथिन ।

ओ पुरान स्मृति रविकेँ विचलित कऽ देलकै, मुदा तुरत अपनाकेँ सम्हारि ओ पढ़बऽमे लागि गेल । दुनू मास्टर तखनो नहि आयल छलथिन । रविक उत्साह देखि हेडमास्टरो घूमि-घूमिकऽ पढ़बऽ लगलथिन ।

दोसर दिन रवि मलहटोली-धनुखटोलीमे सेहो गेल । ओतऽ काज ओतेक सहज नहि भेलैक । किछु छौँड़ासभ धूरामे खेलाइत रहैक नङटे । बेसी छोट नहि, आठो-दस वर्षक छौँड़ासभ मुदा ओकर स्कूल चलबाक बातपर क्यो ध्यान नहि देलकै । ओकरा घेरिकऽ कुतूहलसँ ठाढ़ अबस्स भऽ गेलैक, मुदा क्यो स्कूल चलबा लेल तैयार नहि भेलैक । मलहटोलीक माइंजन कल्लू सहनी कहलकै–'हमरा आरके धीयापूता स्कूल जाकऽ की करतै मालिक ? कोनो हुनर सिखत तऽ चारि सेर बोनिओ कमा लेतैक । जाले फेकत तऽ सेहो एक टा काज भेलैक । ई स्कूल जाकऽ की हेतैक मालिक ? आइ धरि क्यो नहि गेल अइ टोलसँ स्कूलमे मालिक ? बेकार समय बेरबाद कयलासँ की फैदा ?'

रवि ओकरा बुझा नहि सकलैक । अइ बीसम सदीक उत्तरार्धोमे ओइ टोलमे सभ औँठेछाप छलैक– माइंजन कल्लू सहनीसँ घटबार कलरा मलाह धरि ।

धनुकटोलीक हालति ओतेक खराब नहि छलैक । ओइ टोलक एक-दू टा छौँड़ा आब कहियो-काल स्कूल अबैत छलैक । मुदा से ओकरे घरसँ जे गामसँ बाहर कोनो पैघ शहरमे नीक कमाइत छलैक आ जकर स्त्री आ बच्चा घरे-घर अइँठ-कूठि धोबाक आ पानि भरबाक खबासी नहि करैत छलैक । बेसी घरमे छौँड़ा-छौँड़ी जनमिते कमाय जाय लगैत छलैक आ स्कूलक मुँहे नहि देखैत छलैक । ओइ टोलक माइंजन गङबा धानुक कहलकै–'मालिक, बात तऽ अहाँ नीक कहै छी । मुदा से करबाक बुत्ता कहाँ ? पेट भरबै तखन ने स्कूल पढ़ऽ लेल भेजबै !

कौपी-किताब तऽ बादमे । जखन पेटेमे अन्न नहि रहतैक, तऽ पढ़तैक-लिखतैक कोना ? जनमिते कोनो घर धरा दैत छिऐक । अइँठ-कूठि खा कहुना पोसा जाइत छैक । जीतैक तऽ कमाकऽ गुजर कैए लेतैक । मूर्खो रहतैक तैयो । हमरा आरके गुजर कोना भेल ? कहाँ पढ़ली-लिखली हमरासभ ?'

रवि ओकरा बुझबैत कहलकै– तोँ सभ नहि पढ़लेँ, तेँ गुजर नहि भेलौ, से बात नहि छैक गङबा ! मुदा तोँ चाहैत छेँ जे जहिना तोँ रहलेँ, तहिना तोहर धीयोपूता रहौक ? हाथमे ताकति छैक तऽ कमाकऽ गुजर कऽ लेत । मुदा पढ़त-लिखत नहि तऽ कोना बूझत जे आजुक दुनियाँ कहाँ पहुँचि गेल छैक, कतऽ की भऽ रहल छैक, ककरा कतेक अधिकार छैक ? तोरा ई नीक लगतौक जे तोरा जकाँ तोहर धीयोपूता अइँठ-कूठि खाइत जिनगी बिता दौक ?'

बात गङबाकेँ लगलैक । ओ अपन पोताकेँ संग कऽ देलकै । आरो तीन टा छौँड़ा संग भेलैक । पहिल दिन एतबे ।

बादमे ओइ टोलसँ बेसी छौँड़ा आबऽ लगलैक । मलहटोलीसँ पहिने एक टा, बादमे पाँच टा छौँड़ा आब लगलैक । चमरटोली, खतबेटोली, दुसधटोली आ मुसलमानटोली धारक ओइपार छलैक–लंका मोहनपुरमे । ओतुक्को धीयापूता धार पारकऽ स्कूल आबि सकैत छलैक । धारमे नाव छलैक । रवि ओइ टोलसभमे जयबाक नियार कऽ रहल छल, तावत दोसरे काण्ड भऽ गेलैक ।

ओइ दिन चटियासभक गेलाक बाद हेटमास्टर साहेब गम्भीर स्वरमे कहलथिन–'हमरा किछु कहबाक अछि रवि बाबू !'

रविक किछु बजबासँ पूर्व अपनहि कहऽ लगलथिन–'हम जनै छी जे ई हमरासँ अन्याय भऽ रहल अछि, अहाँक प्रति नहि– अइ गामक सभ छौँड़ाक प्रति, देशक नवका पीढ़ीक प्रति । मुदा आर कोनो उपाय नहि अछि । काल्हिसँ अपने पढ़बऽ नहि आउ स्कूलमे ।'

रविकेँ आश्चर्य आ दुख भेलैक । किछु तरल स्वरमे पुछलकनि–'कारण जानि सकैत छी हम ?'

हेडमास्टर अनुनय करैत कहलथिन–'अइपर जोर नहि दियऽ अहाँ । अपराध हमरासँ भऽ रहल अछि, जनैत छी । मुदा हमरो रोटीक प्रश्न अछि । सभ मिलि धमकी देने छथि जे हाकिम लग शिकाइत करताह जे हमरालोकनि मौज करैत छी आ स्कूलक सभ टा काज अपने चलबैत छी । एना तऽ हमर तीनू गोटेक नौकरी चल जायत । अपने क्षमा कऽ देब हमरा ।'

रवि हुनकर अन्तिम बातपर बिन ध्यान देने कहलकनि–'मुदा अइ दवाबक कारण ? हमरासँ कोन अनिष्ट भऽ रहल छनि गामक लोककेँ ?'

हेडमास्टर झट कहलथिन–'भारी अनिष्ट । अपने टोले-टोले जा सभ छौँड़ाकेँ बझा लबैत छिऐक । सभकेँ असुविधा भऽ रहल छनि । वैह कनटिरबा छौँड़ासभ तऽ असल काज करैत छनि सभ घरक । दिन भरि खटनी, माल-जालक देखब, हाट-बजार करब, घास-सानी करब, आ दरमाहा मात्र पाँचसँ सात टाका मास । कखनो अइँठ-कूठि दऽ देलथिन आ कखनो एक संध्या भोजन । ओकरासभकेँ बझाकऽ अपने स्कूल लऽ अनलिऐक । ई गुरुतर अपराध !'

रवि चुपचाप विदा भेल । हेडमास्टर एकबेर फेर गिड़गिड़ा उठलथिन–'हम निरपराध छी । हमर स्थिति देखि हमरा क्षमा कऽ देब ।'

रवि आगू बढ़ि गेल । हेडमास्टर साहेबकेँ कोनो जवाब नहि दऽ सकलनि । ईहो नहि देखलकै जे लव स्कूलेमे छलैक आ कि ओकर पाछाँ-पाछाँ आबि रहल छलैक । किछु दूर आबि रविकेँ टोकलकै–'काल्हिसँ अहाँ स्कूल नहि अयबैक रविमामा ?'

रवि घूमिकऽ तकलक आ लवकेँ माथपर स्नेहसँ हाथ रखैत कहलकै–'मुदा तोँ स्कूल अवश्य अबिहेँ, अहिना मोन लगा पढ़ैत रहिहेँ ।'

लव मुदा अविचलित रहलैक–'नै, हमहूँ नहि आयब स्कूल । एतेक टा भऽकऽ अइ नेन्नासभक स्कूलमे नहि आयब हम । हम तऽ अहीँ द्वारे अबैत रही । काल्हिसँ हमरो स्कूल बन्द, फेर वैह चरबाही ।'

रविकेँ लवक बातसँ बड़ पीड़ा भेलैक । लवक प्रतिभा विलक्षण छलैक । एतबे दिनमे बहुत सीखि गेल छलैक । रवि ओकरा पचमाक पोथी मङा देने रहैक । अंग्रेजीयो पढ़ा दैत छलैक आ जे एक बेर पढ़ा दैत छलैक रवि, से जेना अमिट भऽ जाइत छलैक लवक मस्तिष्कमे । कोनो चीज दोबारा पढ़ऽक काज नहि पड़ैत छलैक । अद्भुत् स्मरण-शक्ति छलैक ओकर ! ओ फेर काल्हिसँ नहि पढ़तैक से सोचबो कष्ट दऽ रहल छलैक ओकरा ।

ओ कहलकै–'नहि जेबेँ स्कूल तँ नहि जैहेँ । काल्हिसँ हमर दरबज्जेपर आबि जो । हम ओतहि पढ़ा देबौ तोरा ।'

'सत्ते !' लव खुशीसँ चहकि उठलैक–'कखन आयब ?'

रविकेँ ओकर प्रसन्नतासँ बेसी आनन्दक बोध भेलैक–'जखन तोरा फुरसति होउ । हम तऽ भरि दिन बेकारे बैसल रहब ।'

लोकसभ मुदा ओकरा चैनसँ बैसऽ नहि देलकै । प्रात भेने अनेरोक सहानुभूतिक पथार लागि गेलैक–

–'एना के कयलनि अछि ? केहन बढ़ियाँ तऽ अपने पढ़बैत छलिऐक !'

–'हमरालोकनिक काज किएक हर्ज हैत ? आनो टोलक छौँड़ासभ स्कूल जाइत अछि तऽ जाओ ।'

–'तोँ अवश्य पढ़ाबऽ स्कूलमे, देखैत छियनि जे के तोरा रोकैत छथुन !'

मुदा, रविकेँ उदास आ प्रतिक्रियाविहीन देखि आस्ते-आस्ते सहानुभूतिक ओ बाढ़ि घटऽ लगलैक । मुदा ओइ दिन गुणाकरक बातसँ चौँकि उठल छल रवि। ओ कहलकै–'किछु बुझलिऐक बाउ ? किएक एतेक काण्ड भेल ? के गुरुजीपर दवाब देलकै अहाँकेँ हँटबऽ लेल ?'

रवि ओकर मुँह देखैत रहलैक । महेशबाबूक दलाल गुणाकर । अबस्से कोनो चालि चलतैक– रवि ओकरा नेन्नेसँ चीन्हैत छलैक । मुदा ओ जे कहलकै से सूनि बिनचौंकने नहि रहल रवि–'सभ टा काण्ड अहाँक पित्ती लालबाबूक कराओल छनि । बुझलिऐक किछु ?'

चौंकिओकऽ सम्हरि गेल रवि–'की अनाप-सनाप बकैत छी ? लालकाका किएक एना करताह ?'

गुणाकर हँसलाह–'अपने नेन्ना छी अखन । दुनियाँक बात नहि बुझैत छिऐक । ओ नहि करताह तऽ आन ककरा गरज छैक ? गामक लोकके बेगार आ चरबाह-खबासक कोनो कमी छैक ? एक ताकब, दस भेटत । मुदा अही बहाने अपन स्वार्थ सधलनि अछि अहाँक लालकाका । आबो बुझलिऐक ?'

रवि कने रोषसँ कहलकै–'लालकाकाक कोन स्वार्थ सिद्ध हेतनि हमरा स्कूलमे नहि पढ़ौलासँ ?'

गुणाकर फेर बुझनुक जहाँ हँसलाह–'अपने ठीके शुद्धात्मा छी । छल-प्रपंच नहि बुझैत छिऐक । अरे, स्कूलमे नहि पढ़ौलासँ नहि, गाममे नहि रहलासँ । अपने कोनो काजमे लागि जायब तऽ गाममे रहि जायब । ओ नहि चाहैत छथि से । एकसर भोग करऽ चाहैत छथि सभ सम्पत्ति ।'

रवि गुणाकरकेँ जोरसँ डाँटऽ चाहै छल, मुदा नहि जानि किएक चुप्पे रहि गेल, बिगड़ि नहि भेलैक । गुणाकर हँसैत चल गेलैक । रवि गुम्म-सुम्म बैसल

रहल । माथ सनसना रहल छलैक । ओकर खेतपर जयबाक बात सूनि लालकाका आ काकीक मुँह फक्क भऽ गेल रहनि । कहुना नहि जाय देलथिन ओकरा खेतपर । फेर आइ गुणाकरक गप्प !

गुणाकर लुच्चा अछि–रवि मोनकेँ बुझबऽ चाहलक । भरि गामकेँ लड़ायब ओकर धन्धा छैक । सभकेँ लड़ाकऽ महेशबाबू माने मास्टरकाकाकेँ सर्वेसर्वा बनायब ओकर लक्ष्य छैक । हुनके एजेण्ट अछि ओ । ओकर बातक कोनो भरोस नहि ।

मुदा नहि जानि किएक, ओकर दिमाग सनसनाइते रहलैक । कलपैत हेडमास्टर मोन पड़लैक–'हमरा क्षमा कऽ देल जाय । हम नहि कहि सकब जे किएक ? मुदा अपने आयब काल्हिसँ तऽ हमरालोकनिक नोकरी नहि रहत, बड़का हाकिम लग शिकाइत भऽ जायत ।'

रवि जोरसँ माथ झाँटि सभ टा अण्टशण्ट बातकेँ दिमागसँ हँटबऽ चाहलक । मुदा माथ ओहिना सनसनाइत रहलैक आ ओ माथ पकड़ने बैसल रहल ।

लग आबि क्यो टोकलकै–'हमरा पढ़ा नहि देब रविमामा ?'

लव छलैक । रवि सहज होयबाक चेष्टा करैत कहलकै–'आ, बैस । अबस्स पढ़ा देबौक ।'

लव बैसि गेल । रवि ओकरा पढ़बऽ लगलैक गणित । किछु हिसाब लिखि देलकै सिलेटपर । छौँड़ा बनबऽ लगलैक । रवि फेर अपन गुनधुनमे लागि गेल । माथ ओहिना सनसना रहल छलैक । जरनघरामे फेकल बाबूक फोटो आ छड़ी मोन पड़लैक आ मोन पड़लैक लालकाकाक अपराधी मुद्रा ।

ओ अपनाकेँ धिक्कारऽ चाहलक । नीचतापूर्ण बात सोचि रहल छल ओ, आ सेहो मात्र एक टा गैरजिम्मेदार चुगिलाक कहलासँ । बिना कोनो ठोस आधारक पितृतुल्य लालकाकापर सन्देह कऽ रहल छल । क्यो जोरसँ ओकर नाम लेलकै आ ओ चौँकि उठल ।

लव ठाढ़ छलैक सिलेट लेने–'अहाँक मोन खराब अछि रविमामा ? एतेक कालसँ हम टोकैत छलहुँ ! अहाँक कतऽ ध्यान छल ?'

रवि सिलेट लैत कहलकै–'कतहु नहि, एहिना किछु ध्यानमे अण्टशण्ट आबि गेल छल ।'

सिलेट देखि रवि प्रसन्न भऽ उठल— सभ टा प्रश्नक हल ठीक । पीठ ठोकैत कहलकै–'तोँ तऽ बड़ तेज छेँ रौ लव ! तोरा तऽ हम दुइए वर्षमे मैट्रिक पास करा देबौक ।'

'सत्ते रविमामा !' –लव प्रसन्न भऽ उठलैक–'तखन तऽ हम आर मोनसँ पढ़ब । मुदा एक टा बात अहाँकेँ बिसरि गेल रविमामा !'

रवि स्नेहसँ पुछलकै–'कोन बात रौ !'

–'अहाँ कहने रही जे बाबूसँ भेँट करा देब । माय तऽ लैए ने जाइ-ए । एक दिन हम अपने पड़ाकऽ चल जायब । दसे कोसपर तऽ छैक ।'

रवि बुझबैत कहलकै–'एहन काज नहि करी, पड़ाकऽ नहि जाइ । एकदिन हमहीँ पहुँचा देबौक तोरा ।'

'प्रौमिस'–लव हँसिकऽ हाथ बढ़ा देलकै ।

ओकर आगू बढ़ल हाथ अपन हाथसँ पकड़ैत रवियो हँसिकऽ कहलकै–'प्रौमिस ।'

रवि मोनेमोन प्रतिज्ञा कयलक जे ओ गुणाकरक बात बिसरि जायत । लालकाका लेल कोनो तरहक संदेह अपन मोनमे नहि उपजऽ देत ।

तहिना सुनयना भौजी लेल जे संदेह ओकर मोनमे उठल छलैक सेहो निर्मूल छलैक । ओकरा लागल छलैक जेना भौजी तमसा गेलि होथिन । नारी-देह लेल कहल गेल ओकर बातसँ आहत भऽ ओकरासँ घृणा करऽ लागलि होथिन । ओ ओम्हर जयबे बन्द कऽ देने छल । ओइ दिन अपने चल अयलथिन भौजी । अबिते उपराग देलथिन–'अहाँ तऽ बेस रुसना लोक छी यौ ! एकबेर बिनबाते रूसिकऽ गामसँ चौदह वर्ष निपत्ता रहलहुँ । अखनो धरि लोक नहि बूझि सकल जे की भेल छल । आब बिनबाते हमरासँ रूसिकऽ अबरजात बन्न कयने छी ! कोन अपराध भेल हमरासँ ?'

रविकेँ लगलैक जेना भौजी सभ टा बड़ सहज भावसँ कहि रहलि छथिन। ओइ दिन ओकर बातक अधलाह नहि मानने छलथिन । देओर-भाउजमे तँ एहन बात हँसिओमे कहल जा सकैत छैक !

ओहो सहज भावसँ हँसिकऽ कहलकनि— 'अपराध अहाँसँ नहि, हमरेसँ भेल अछि । मार्जनक अवसर देल जाय ।'

भौजी प्रसन्न होइत कहलथिन— 'देल गेल अवसर । आइ दुपहरियामे आबि जाउ ।'

रवि गेल छल दुपहरियामे । भौजी प्रतीक्षेमे छलथिन । कने बेसी सजलि-धजलि। भौजी देखबा-सुनबामे बड़ सुन्नरि छलथिन । गोराइ उस्सठ नहि, एकदम चिक्कन आ प्रिय गोराइ, ताहिमे मिलल एकटा सिनुरिया काँति । आँखि पैघ-पैघ, सदिखन जेना काजरे लागल होइनि । किछु नमगर, लिखल-रङल मुँह । पातर ठोर आ ठाढ़, मुदा छोटे सन नाक । पीठपर छिड़िआयल घनघर कारी केश— लगभग ठेहुन धरि पहुँचैत । आलतासँ रङल पयर आ हाथमे लागल मेहदी । स्वस्थ देह, खूब गदरायल आ कसल आङीमे विद्रोही मुद्रा अपनौने देहक उभार । आँखिमे एक टा आमंत्रण, ठोरपर दाबल-दाबल मुस्की ।

रविकेँ सोलह वर्ष पूर्वक ओ दाबल-दाबल मुस्कीबाली सुनयना भौजी मोन पड़लथिन । ओइ भौजीसँ ओकरा डर होइत छलैक । ओकरा लगलैक जेना आबिकऽ कोनो गल्ती भऽ गेल होइ । मुदा, घुरबाक कोनो उपाय नहि छलैक ।

ओकरा टकटकी लगौने तकैत देखि प्रसन्न होइत सुनयना भौजी कहलथिन–'एना की देखै छी एकटक !'

रवि हँसिकऽ कहलकनि–'आर की देखब ? एहि गाममे अहाँ छोड़िकऽ देखबा जोगर वस्तुए की अछि आर ? समय दौड़ल चल गेल, मुदा अहाँ ओहिना ठमकल ठाढ़ि छी । जेना आयलि रही कनियाँ बनलि, तहिना आइयो छी । कने आरो बेसी सुन्दरि भऽ गेलि छी ।'

भौजी तनिकऽ कने देहक रेखाकेँ आर जगजिआर करैत कहलथिन–'अहाँकेँ हमर सुन्दरते टा सुझैत अछि, आर किछु नहि ?'

रवि कने आँखि बचबैत कहलथिन–'आरो सुझैत अछि भौजी– अहाँक स्नेह, अहाँक आदर...'

भौजी बात कटैत कहलथिन–'आ हमर देह ! अइमे कोनो आकर्षण नहि ?'

रविकेँ कोनो जवाब नहि दऽ भेलैक । सुनयना भौजी लग सटैत कहलथिन–'बाजू, अइ देहमे आइयो आकर्षण छैक कि नहि ? ओइ दिन तऽ अहाँ कहने रही

जे मौगीक देह लेल चिन्ताक कोन प्रयोजन ! बेगरता होइते भेटि जायत । आइ ई देह सामने अछि, ओकर आकर्षण नहि होइत अछि मोनमे ?'

रवि दृढ़तापूर्वक कहलकनि–'नहि भौजी ! एहि देहक कोनो आकर्षण नहि । आकर्षण अहाँक स्नेहक । अहाँ हमरा लेल खाली नारी-देह नहि भऽ सकैत छी । अहाँ ओइसँ बड़ ऊपर छी–पूजनीय आ...'

भौजी बीचेमे टोकि देलथिन–'रहऽ दियऽ ई पूजा, आदरक गप्प ! हम देहक गप्प कऽ रहलि छी । एहि देह लेल अहाँकेँ लोभ अछि, हमरा बूझल अछि। जहिया नीक जकाँ चेतनो नै भेल रही अहाँ, तहियो एहि देहकेँ निहारैत रही। पुरुषक ओ दृष्टि ओइ दिन अनचिन्हार नहि छल हमरा लेल ! ओ इच्छा अहाँक आँखिमे आइयो मरल नहि अछि– हम स्पष्ट देखि रहलि छी । झूठ-मूठक आदर्शक बहाना नहि करू ।'

रवि हुनक देहक सामीप्यसँ कने दूर हँटैत कहलकनि–'अहाँक देह लोभा सकबाक सामर्थ्य रखैत अछि, हम स्वीकार करै छी । मुदा, जाहि दृष्टिमे अहाँकेँ ओ लोभ देखऽमे आयल छल, ओ लोभ नहि, जिज्ञासा छलैक एक टा किशोर-मनक। ओइ दृष्टिमे प्रशंसा छैक अहाँक देह-लावण्यक लेल आइयो । एकरा अन्यथा नहि बुझू । हम कहने रही ओइ दिन अहाँकेँ–नारीदेहक भोगक अर्थमे हम ब्रह्मचारी वा आदर्शवादी नहि छी । मुदा, हमर एहन परीक्षा नहि लियऽ । खाली एक टा स्त्रीदेह भऽकऽ नहि देखि सकब अहाँकेँ कहियो...'

भौजी जेना अपमानसँ क्रुद्ध भऽ उठलथिन–'रहऽ दियऽ ई आदर्श ! हम जनैत छी अहाँक सभ टा आदर्श ! चौदह वर्ष धरि कोनो आदर्श लेल बौआइत रहल छी अहाँ ? अहाँ की बूझि लेने छी हमरा- कामान्धा स्त्री ! ई इच्छा हमर देहक नहि अछि, हमर मोनक अछि । ई सुन्न घर-आङन देखैत छिऐक...! देहक इच्छासँ हारि मानऽवाली स्त्री हमहूँ नहि छी...। से रहैत तऽ गाममे पुरुषक कमी छैक ! मुदा, एक टा रिक्तता पतिता जकाँ, निर्लज्जि जकाँ ई प्रस्ताव करबा देलक अहाँक लग जे घरक बात घरे रहत, आ हमर अवशताक तमाशा अहाँ महान बनि देखऽ चाहैत छी! निकलि जाउ एतऽसँ ! घाट-घाटक पानि पीबि आब आदर्श बघारैत छी !'

रवि प्रसन्न होइत बाजल–'हम जनैत रही भौजी, अबस्से कोनो बात छैक। हमर भौजी एहन नहि सोचि सकैत छथि । मुदा तैयो हमरा क्षमा करू भौजी ! अहाँक मोनक ओइ रिक्तताकेँ भरबाक माध्यम हम नहि भऽ सकब । अपने दृष्टिमे घृणित भऽ जायब हम ।'

भौजी ओहिना फुफुआइत रहलथिन–'अहाँ महान बनल रहू अपन दृष्टिमे । निर्लज्जि बनि जखन अपने मुँहेँ ई याचना करब तऽ पात्र भेटि जायत हमरा । अहाँ निकलि जाउ अइ घरसँ अखने ! फेर घुरिकऽ पयर नहि देब एम्हर ।'

रवि बुझयबाक चेष्टा कयलकनि–'एना आवेशमे कोनो काज नहि कऽ बैसब भौजी !'

भौजी घृणासँ ठोर उनटा कहलथिन–'रहऽ दियऽ अपन उपदेश आ निकलू अइ घरसँ !'

रवि भारी डेगे घरसँ बाहर आबि गेल–अपमानसँ नहि, दुख आ दुश्चिन्तासँ । ई कोन बाट धऽ लेलथिन भौजी ? एनामे ओ किछुओ कऽ बैसथिन ! रवि बाहर बाटपर आबि बड़ी काल धरि प्रतीक्षामे रहल जे शान्त भऽ भौजी फेर बजा लेथिन । मुदा केबाड़ बन्द भऽ गेल छलैक आ दुपहरियाक रौदमे ओ निरर्थक ठाढ़ छल ।

किछु काल बाद ओकर डेग नहि जानि, किएक हाइ स्कूल दिस बढ़ि गेलैक । स्कूलसँ पहिने खेते-खेत छलैक– पूब-पश्चिम आ उत्तरमे ! दक्षिणमे गाछीसभ छलैक । स्कूलक मकानसभ पक्का छलैक–होस्टल खपड़ैल रहैक । अइ पन्द्रह वर्षमे कोनो विशेष परिवर्तन नहि भेल छलैक । मात्र एतबे परिवर्तन जे स्कूलक भवन चितकाबर भऽ गेल छलैक आ ओ बड़ पुरान लागि रहल छलैक ।

होस्टलक आगूमे एक टा सतरंजीपर एक टा भारी देहवला मास्टर पड़ल छलाह आ दूटा छौंड़ा हुनकर मालिसमे लागल छल । बाँकी क्लास सभमे हल्ला मचल छलैक, जेना कोनोमे मास्टरे नहि होइ ! बहुत रास छौंड़ा मैदान आ बरण्डापर हल्ला मचबैत ठाढ़ छल । एतऽ किएक अयलहुँ आ आब किम्हर जाइ– ई सोचिए रहल छल रवि कि एक दिससँ दौड़ल विक्रम भाइ अयलथिन–'एम्हर कोना अयलेँ रवि ! कोनो काज छौक ?'

काज तँ ओकरा छलैक विक्रमे भाइसँ, मुदा कहतनि कोना ? कहल पार नहि लगतैक ओकरासँ । की कहतनि विक्रम भाइकेँ ? वैह तँ चिट्ठी पहुँचबैत छलनि दुनूक । वैह तँ वर्षामे, रातिक उत्तरार्धमे भिजैत ठाढ़ देखने रहनि दुनूकेँ–आलिंगित, चुम्बित-प्रतिचुम्बित । विक्रम भाइ बड़ मानैत छथिन भौजीकेँ । भौजी सेहो बड़ मानैत छथिन भाइकेँ । मुदा, हुनकर मोनमे एक टा रिक्तता प्रबल आकांक्षाक रूप धऽ रहल छनि । विक्रम भाइकेँ बूझल छनि से ? नहिओँ बुझल छनि, तेँ की ? रवि नहि कहि सकतनि ओ बात ।

ओ दोसरे बात कहलकनि–'बहुत दिन भऽ गेल छल देखना । एहिना स्कूल देखऽ चल आयल रही ।'

विक्रम कने दुखी स्वरमे कहलथिन–'देखबा जोगर किछु नहि छैक स्कूलमे । जे छैक से निन्दनीय आ घृणित । हेडमास्टर साहेब सप्ताहमे तीन दिन दरभंगा । आफिसेक काज रहैत छनि–टी.ए. भेटैत छनि । संगमे रहैत छथिन किरानी । दूनू मिलि सप्ताहमे तीन दिन काज करैत छथि, तैयो खतम नहि होइत छनि । वैह, ओइ क्लासमे देखऽ जिम्हर हल्ला भऽ रहल छैक–ओहीमे असिस्टेन्ट हेडमास्टर बैसल छथि, विश्वास हेतह ? नहि होअऽ तऽ कने लग जा देखि लैह । कुर्सिएपर बैसल-बैसल सूति रहल हेताह आ छौंड़ासभ उत्पात मचौने हेतनि । ओकर बगलवला क्लास तिवारीजीक छनि । हेडमास्टरे जकाँ ओहो नेता छथि । हेडमास्टर छथि कांग्रेसी आ तिवारीजी कम्युनिस्ट । अखनो किम्हरो नेतागिरीमे गेल हेताह आ क्लास खाली पड़ल छनि । तकरो बगलमे देखि लैह–ओ क्लास यादवजीक छनि । आब स्कूलमे ब्राह्मण-कायस्थक अलाबा, कोइरी, यादव, पटवा, धानुक आ हरिजनोक धीयापूता पढ़ऽ लागल छैक । यादवजी क्लास नहि जा स्टाफरूममे ओकर संख्या जोड़ैत हेताह जे बैकवार्डक भोट कतेक भेल आ सभकेँ सिखबैत हेथिन जे बैकवार्ड फॉरवार्डसँ ट्यूशन नहि पढ़य । आ, सभक आगुएमे देखि लैह विद्यालयक आदर्श नमूना । ओइ सतरंजीपर पड़ल छथि होस्टल सुपरिन्टेन्डेण्ड ! स्कूलक समय तेलमालिश भऽ रहल छनि । रातिओकेँ मालिश चाहियनि, से खाली निमोछिया छौंड़ासभसँ । तीन बेर मारि लागि चुकलनि मुदा कोनो फर्क नहि । कतेक स्वप्न रहल होयतनि मोनमे जखन नाना अपन जमीन-सम्पत्ति दऽ ई स्कूल खोलबौने हेताह ! सालमे तीन मास छुट्टी, तीन मास हड़ताल विद्यार्थीक आ तीन मास शिक्षकक । बाँकी तीन मासमे अघोषित हड़ताल । नै पढ़ब– खाली सर्टिफिकेट चाही । नहि पढ़ायब– ककरा पढ़ायब ? अनेरे जान किएक देब ? खाली वेतन चाही । खिस्सा खतम । आब तँ बड़के-बड़के नेता कहैत छथिन–'क्लास जुनि जो । परीक्षाक वहिष्कार कर ।' नहि जानि, की हेतैक अइ देशक !'

रविकेँ अपन हेडमास्टर मोन पड़लथिन । घण्टी बजैत देरी दौड़ले स्टाफसभ दिस जाइत छलथिन । सभ शिक्षक हुनका देखिते अपन-अपन क्लास विदा होइत छलथिन । किम्हरो कोनो हल्ला नहि, विद्यार्थीसभकेँ क्लाससँ बाहर बरण्डापर अयबाक मौके नहि भेटैत छलैक ।

एक दिससँ जोरसँ पिहकारी पड़लैक । विक्रम ओम्हरे देखबैत कहलथिन–'ई

एक टा दोसर आफत । पाँच-सात बरखसँ छौंड़ीसभ सेहो पढ़ऽ लागलि छैक स्कूलमे । वातावरण एकदम गुण्डागर्दीक । तेसरा दिनपर छूरा बाहर होइत रहैत छैक । तोँ जाह आब, साँझखन डेरापर अबिहऽ । हम कने देखैत छिऐक ओम्हर ।'

साँझखन रवि विक्रम भाइक घर दिस नहि जा सकल । सुनयना भौजीक तामस आ धमकी मोन पड़लैक । ओ कतहु नहि गेल । अपने कोठलीमे बैसल रहि गेल । मोन एक टा अन्तर्द्वन्द्वमे फँसल छलैक । गाममे आब बेसी दिन रहब कठिन भेल जा रहल छलैक । ओ फेरसँ घुरि जयबाक निर्णयपर मंथन करैत बैसल छल ।

रतुका भोजनक बादो ओ ओहिना बैसल रहल अपन कोठलीमे । बिछौनपर जयबाक वा सुतबाक प्रयास करबाक इच्छे नहि भऽ रहल छलैक । ओ निर्णय कऽ लेबऽ चाहैत छल आ मोन दुनू दिससँ तर्क-वितर्कमे लागल छलैक ।

चौदह वर्षक बाद घूरल छल । जाहि आशासँ घूरल छल, से अबिते धराशायी भऽ गेलैक । बाबूसँ भेँट नहि भऽ सकलैक । सभ टा खण्डित स्वप्न आ एकाकी जीवनक पीड़ा अपन संगे लेने चल गेलथिन ओ । रवि कनियोँ कम्म नहि कऽ सकलनि ओइ पीड़ाकेँ, नहि पूर्ण कऽ सकलनि हुनकर कोनो स्वप्न । सभ टाकेँ चूर कऽ एक दिन निपत्ता भऽ गेलनि आ घूरि अयलाक बाद किछुओ कऽ सकबाक अवसरे नहि देलथिन बाबूजी ।

चेष्टा तैयो कयलक रवि–गामे रहबाक, ओइ जिनगीसँ अपनाकेँ जोड़िकऽ रखबाक । मुदा लगैत छैक जेना सभ टा प्रयास व्यर्थ जा रहल होइ । आङनमे कोनो तेहन आत्मीयता आ स्नेहक वातावरण नहि लागि रहल छलैक । जाहि दिन घूरल छल तहिया लालकाकासँ लपटिकऽ कानल छल, लालकाकियोक आँखिमे नोर छलनि । बस्स ! तकर बाद एक टा तटस्थ उदासीन वातावरणमे ओ औना रहल छल ! भऽ सकैत छैक, ओकरे भ्रम होइ । बाबूसँ भेँट नहि होयबाक निराशाक बाद ओकरा बाँकी सभ चीज उदासीन आ निष्प्रयोजन लागि रहल होइ । आ प्रतिज्ञा कयने छल जे लालकाका लेल कोनो सन्देह अपन मोनमे नहि उपजऽ देत । मुदा संदेहक ओ अजगर ओकर सम्पूर्ण अस्तित्वकेँ जकड़ि लेने छलैक । मुक्त होयबाक चेष्टामे ओ आर जकड़ले चल गेल छल ।

आ, जकर सन्देह नहि छलैक, सेहो घटलै ओकर जीवनमे । सदिखन

ओकर जीवनमे एहिना अप्रत्याशित घटित होइत रहलैक अछि । जनमिते माय बिदा भेलैक अप्रत्याशित । पढ़बा-लिखबामे नव यश आ कीर्ति स्थापित करऽमे लागल छल कि अप्रत्याशित एक टा कमजोर क्षणमे काण्ड कऽ बैसल आ जकर डरे, अपने अपराधक डरे चौदह वर्ष धरि पड़ायले रहल । फेर अप्रत्याशित एक दिन घुरिओ आयल । गाममे फेरसँ रहबाक चेष्टा कयलक । मुदा, आब लगैत छैक जेना सभ टा बाट बन्द होइक ।

मुदा जाहि बाटपर सुनयना भौजी ओकरा घीचऽ चाहैत छलथिन, से अप्रत्याशितक संग एकदम तोड़ि देबऽवला छलैक । सुनयना भौजी ओकरा प्रिय छलथिन, बड़ मानैत छलनि हुनका ! एहन प्रस्ताव लऽ कहियो उपस्थित होयथिन, से ओकरा कहियो स्वप्नोमे सन्देह नहि भेल छलैक । मुदा, भौजी प्रस्ताव लऽ सदेह उपस्थित भेल छलथिन । ओकरा अस्वीकृत कऽ ओ घूरि आयल छल, मुदा ओ प्रस्ताव ओकरा भीतर तक चीरि देने छलैक । एक दिन अपराधी बनल छल ओ, एक टा आवेशमे, नवयौवनक आवेशमे, एक टा काण्ड कऽ बैसल छल । अपन सभसँ प्रिय बालसंगीक समक्ष अपराधी बनल छल । ओइ अपराधक बोझ अपन मोनपर लदने जहाँ-तहाँ बौआइत रहल । क्रोधमे, अपन जीवन नष्ट होयबाक क्रोधमे कविताकेँ दोषी मानि ओकरापर क्रोध आ घृणा सेहो करैत रहल । मुदा गाम घुरलाक बाद लगलैक जेना ओ क्रोध आ घृणा वस्तुतः अपनेपर छलैक, कवितापर नहि । कविता निर्दोष छलैक । दोषी रविओ लेल कोनो दुर्भावना नहि छलैक कविताक मोनमे । अपन अन्तःकरणसँ क्षमा कऽ देने छलैक । आ, क्षमा भेटि गेलाक बाद रवि नव उत्साहक संग गाममे रहबाक चेष्टा कयने छल ।

कौखन कविताक स्थिति ओकरा फेरसँ सोचबा लेल बाध्य करैत छलैक । अपन एकमात्र सन्तानक संग गाममे उपेक्षित आ अभावक जिनगी बिता रहलि छलैक । कोन विवशता ओकरा एहन जीवन लेल बाध्य कयने छैक ? स्वामी सुखी-सम्पन्न छैक । चल किएक नहि जाइत अछि अपन स्वामीक लग ?

रविकेँ कोनो उत्तर नहि भेटैत छलैक । ओ लवकेँ सभबेर पुछलापर आश्वासन दैत छलैक जे ओकरा बापक लग पहुँचा देतैक । मुदा बाट ओकरा नहि सुझि रहल छलैक । कविता हँसिकऽ कहलकै– 'लैए नहि जाइत छथि ।' ओइ हँसीमे नुकायल कथाकेँ तकबाक रविक चेष्टा व्यर्थ गेल छैक । दोबारा कवितासँ पुछबाक अवसरे नहि भेटल छलैक ।

जाहि कविताकेँ ओइ दिन देखने छलैक से बेर-बेर ओकरा उद्विग्न कऽ

दैत छलैक । ग्रीष्मक ओइ दुपहरियामे ओकर कोठलीमे भीजल नूआ गारैत कवितासँ ओकर कोनो साम्य नहि छलैक । कहाँ हेरा गेल छलैक ओकर स्वास्थ्य, सौन्दर्यक आभा आ यौवनक दीप्ति ? रवि चिन्हिओ नहि सकलैक ओइ कविताकेँ ? हँसलैक तखन चिन्हलकै रवि । मुदा हँसैत कोना छलैक कविता ? रविकेँ आश्चर्य होइत छलैक सोचिकऽ जे कविता अपन वर्तमान जीवनमे हँसि कोना लैत छलैक ! स्वामी छोड़ने छैक । एक टा बेटा छैक आ अभावक जिनगी । भरिसक भविष्यक आशा छैक–अप्पन बेटाक भविष्य !

मुदा रवि कोन आसपर बैसल अछि गाममे ? कोन भविष्यक स्वप्न छैक ओकर मोनमे ? गाम आ ओकर लोकक भविष्य ? सेहो चिन्ता आ चेष्टा कऽ हारि गेल ओ । कतहु ककरो ओकर प्रयोजन नहि छलैक । निष्प्रयोजन उद्देश्यहीन जिनगी जीबि रहल छल । जतबे निरुद्देश्य ओ भयभीत पलायन छलैक, ततबे उद्देश्यहीन ई आपसी सेहो प्रमाणित भेल छैक ।

तखन किएक ने भागि चली ? –ई प्रश्न ओकर मोनमे उठैत छैक ! फेर दोसर प्रश्न ठाढ़ भऽ जाइत छैक–भागिकऽ किएक ? कहिकऽ किएक ने ? कहलोपर के रोकतैक ओकरा गाममे ? रोकतैक क्यो ? लालकाका...लालकाकी...क्यो ?

आ ई सोचब ओकरा बेर-बेर जेना आरीसँ चीरि रहल छलैक । क्यो टोकऽवला नहि छलैक ओकरा गाममे । जहिया गामसँ पड़ायल छल, तहिया रोकऽवला छलथिन । चौदह वर्षक बाद जहिया गाम घुरि रहल छल, तहियो क्यो रोकऽवला नहि छलैक गाम जयबासँ । बड़ सहज आ बिना ककरोसँ अपनाकेँ जोड़ने ओ घुरि आयल छल । आइ फेर गामसँ बिदा होयत तँ क्यो नहि टोकतैक ।

मुदा एना घुरि जयबा लेल तँ गाम नहि आयल छल । बाबूसँ भेँटक आशाक संग घुरल छल । आइयो ओ आशा करऽ चाहैत छल जे ओकर जयबाक बात सूनि क्यो कहतैक–'नै जो रवि ! ई अप्पन गाम छौक तोहर, हमसभ अप्पन छियौक । हमरासभकेँ छोड़िकऽ नहि जो ।'

अइ आशाक निर्मूल होयब ओकरा बेसी कष्ट दऽ रहल छलैक आ घूरि जयबाक अपन निर्णयपर अडिग रहबा लेल बाध्य कऽ रहल छलैक । रवि निर्णय लऽ लेलक ।

राति बड़ बेसी बीति गेल छलैक । सौँसे गाम निस्तब्ध लागि रहल छलैक । कोठलीक दरबज्जा खोलि ओ आङन दिस आयल । इजोरिया राति

छलैक ? अङनाक ओसारासँ उतरि ओ पाछाँ दिस बाड़ीमे गेल । लघुशंका कऽ घूरल तँ लालकाकाक कोठली लग काकीक स्वर ओकर कानमे पड़लैक–'ई हरहरी बज्र कोना खसल हमर धीयापूताक माथपर ? बारह वर्षक बाद तऽ लोक श्राद्धो कऽ दैत छैक ! फेर ई मुर्दा कोना घूरि आयल ?'

लालकाकाक स्वरमे निषेध नहि, एक टा आशंका छलनि– 'चुप्प रहू, जे होयबाक छल, से भेल।'

लालकाकीक स्वर आर तीव्र भऽ गेलनि–'चुप्प कोना रहू ? अपन धीयापूताक गरदनि कटैत देखि चुप्प कोना रहू ? मुर्दा घुरि आयल आ गाममे अड्डा रोपि देलक । आब कोन आस ? आगि देलकनि मनोज, ओकरो नाम कहाँ किछु लिखलथिन बूढ़ा ? नम्बरी घुइयाँ छलाह । सभ टा कयलियनि हम, अन्त समय गूँह–मूत सभ उठौलियनि, मुदा मोन अँटकले रहनि बेटापर आ बेटोक अक्खज जान देखियौक ! चौदह वर्षक बाद नहि जानि किम्हरसँ आबि गेल । अपन जेठ जनक हाल देखिते छी, छोट जनकेँ कोनो मतलबे नहि घरसँ । दुनू छोटका छथि, सभक मुँहक आहार छिना गेल । आब कोना चुप्प रहू हम ?'

लालकाकी कानऽ लगलथिन । रवि ओहीठाम आङनमे बैसि गेल । लगलैक जेना समस्त ब्रह्माण्ड नाचि गेल होइ, ओ धरतीपर ठाढ़ नहि रहि सकल। ओकरा दूध पिऔने छलथिन लालकाकी, मुदा आइ ओकर जीवित घुरि अयलापर कानि रहलि छथिन । ओकर माय छथिन लालकाकी, वैह पोसिकऽ पैघ कयने छथिन, मुदा आइ हुनकर छातीपर बज्र बनि खसल छनि ओ ! लालकाकी कानि रहलि छथिन.. लालकाकी कानि रहलि छथिन...

रविकेँ लगलैक जेना सम्पूर्ण पुथ्वीपर कतहु हवा नहि छैक, ओकर स्वास रुकि गेलैक । आ, वायुविहीन पृथ्वी नाचि रहल छैक, मेघ तारा चन्द्रमा सभ नाचि रहल छैक आ सभक संग आङनक माटिपर बैसल रवि नाचि रहल अछि, वायुविहीन धरतीपर चाक जकाँ नाचि रहल अछि !

आ, लालकाकी कानि रहलि छथिन ।

(दोसर भाग)

लंका मोहनपुर

इलाका बड़ डकैत भऽ गेल छैक । बिलटा कहने रहैक रविकेँ । चौदह वर्ष बाद घूरल रविकेँ ओ कोनो नव लोक बुझने छलैक ।

मुदा ई गप्प ओ ककरो कहि सकैत छैक–इलाका सत्ते बड़ डकैत भऽ गेल छैक । बिलटासँ बढ़िकऽ आर क्यो नहि जनैत छैक ई बात । पछिला तीस वर्षसँ ओ एही गफूरगंज स्टेशनपर रहैत अछि । भरि इलाकाक लोक एही स्टेशनपर उतरैत छलैक, जहियासँ रेलवेलाइन बनलैक तहियेसँ । तहिया ने दक्षिणमे स्टेशन बनल छलैक, आ ने उत्तरे दिस । दक्षिणमे अगिला स्टेशन दरभंगा छलैक । तीन कोस धरिक लोक गफूरेगंजमे उतरैत छलैक आ उत्तरमे तँ दू कोस धरिक । पूब आ पश्चिममे तँ गाड़ीक लाइन गेले नहि छलैक, पाँच–पाँच कोसक लोक एही स्टेशनपर अबैत छलैक । मुदा इलाका एतेक डकैत नहि रहैक तहिया । बिलटा नीक जकाँ जनैत छैक ।

इलाकामे लाइन लगबाक खिस्सा बिलटा अपन बाबासँ सुनने छल । ओ काज कयने छलैक कुलीक, लाइन बिछबैत काल । सय साल पहिलुका गप्प । बाबा बड़ विस्तारसँ कहैत रहैक बिलटाकेँ । आब तँ बिलटो पचास वर्षक भेल । लाइन लगलापर ट्रालीपर बैसल ललमुहाँ साहेब आयल रहैक । बिलटाकेँ आइ धरि अफसोच होइत छैक–ओ नहि देखि सकल कोनो ललमुहाँ साहेब आ मेमकेँ । ओकर बाप देखने रहैक । जहिया गफूरगंज–हाटक कातमे कमलापर पुल बनल रहैक, बिलटाक बाप कुली रहैक ओइमे । पुल पहिनो रहैक, मुदा छोटका पुल । बादमे बड़का पुल बनलैक, दू वर्ष धरि बनैत रहलैक । बिलटाक बाप दू वर्षमे एको दिन बेकार नहि बैसलैक । कुलीक काजमे ओहो माहिर छल ।

बापक बाद बिलटो लागि गेल एही कुलीएगिरीमे । तीस वर्षसँ एही गफूरगंज स्टेशनसँ बन्हाकऽ रहि गेल अछि । एक टा मोह जकाँ भऽ गेल छैक

स्टेशनसँ । आ, जहिया दोसरो स्त्री पड़ा गेलैक छोड़िकऽ, बिलटा स्थायी रूपसँ स्टेशनेपर घर बना लेलक । सम्बन्ध करबाक ओकरा कोनो इच्छा नहि छलैक । पहिले स्त्रीक पड़यलाक बाद ओकर मोन टूटि गेल रहैक । दोसर करबाक इच्छे नहि रहैक । स्टेशनेपर पड़ल रहैत छल । बेर-बेर फुलकुम्मरी मोन पड़ैत छलैक । क्यो नहि रहैक ओकर फुलकुम्मरी सन सौसें धनुखटोलीमे । ओ भोरसँ राति धरि मेहनति करय । आठो ट्रेन देखि जाय– चारि टा अप, चारि टा डाउन । बारह बजे राति धरि। आ, सभ टा कमा फुलकुम्मरीक हाथमे दऽ दैक । बड़ शानसँ रहैत छलैक ओ । बिलटा अपने गुदरी लटकौने रहैत छल । टोलमे मंगलाक बहुकें पहिने बड़ शान रहैक । मंगला कानपुरमे कमाइत छल । सभ मास अपन कनियाँक नाम डेढ़ सय टाका पठबैत छलैक । फुलकुम्मरी ओकरोसँ नीक नूआ-आङी पहिरैत छलैक, तेल-फुलेल लगबैत छलैक ।

मंगलाक बहुकें नहि सहि भेलैक । एक दिन तीन सय तिहत्तरि डाउनक पसिंजर देखि दुपहरियामे खाय लेल अबैत रहय बिलटा । मंगलाक बहु बाट छेकि कहलकै–'खाली मोटा उघि-उघि टाके कमाइत रहबऽ बिलटा बौआ ! कहियो साँझे घर आबि घरोक हाल देखऽ !'

मंगलाक बहु भौजी लगैत छलैक बिलटाकें । डाही मौगी छैक, फुलकुम्मरीसँ जरैत छैक । हँसीमे बात टारैत कहलकै–'साँझे आबिकऽ की हाल देखबै भौजी ? अपने घरवाली हय, कोनो भागल जाइ हय !'

मंगलाक बहु खूब जोरसँ कहलकै–'भागे के कोन काम हइ । घरेमे साँझियेसँ मास्टरबाकें ढुकौने रहै हय ।'

बिलटा बूझि गेल । डाहे मंगलाक बहु आन्हरि भऽ गेलि छलैक आ ओकरो आन्हरे बूझि रहलि छलैक, जेना ओकरा बुझले नहि होइ ! कहलकै–'काल ले तऽ मस्टरबा तोरे घर ढूकल रहैत रहलौ भौजी ! हमरा तऽ देखले हय ।'

मंगलाक बहु लोहछिकऽ बजलैक–'हे लू, भलाइ के तऽ जमाने ने रहलै ! हम चेता देलिऐ तऽ हमरे गारी पढ़िहे हय मनसा !'

बिलटा कोनो गारि नहि पढ़ने छलैक । महेश मास्टर बहुत दिनसँ ओकरा लग अबैत छलैक । बिलटा अपन आँखिसँ देखने छलैक । सटले-सटल तँ घर छैक । मंगला सालक साल कानपुर रहैत छैक । ओकर कनियाँक यैह हाल छलैक । बिलटा देखियोकऽ अनठा दैत छलैक । मुदा आइ डाहे जरिकऽ ओकरा

फुलकुम्मरीपर आङुर उठा देलकै तँ ओकरा चुप्प नहि रहि भेलैक, उकटि देलकै ओकरो ।

मुदा, मोनमे जेना किछु चकरी मारिकऽ बैसि गेलैक । सदिखन फनि उठबऽ लगलैक । एक राति नौबज्जी ट्रेनक पसिंजर छोड़ि, ट्रेन आबऽसँ पहिने धार टपि अपन टोल आबि गेल बिलटा । अपन घरक लग आबि ठमकि गेल ओ । घरसँ कोनो पुरुषक आवाज आबि रहल छलैक । बिलटा चीन्हि गेलनि–मास्टर साहेब छलथिन, नामी बाबूक बड़का बेटा । घरक फट्टक भीतरसँ बन्द छलैक । बाहरसँ जोरसँ चिचिआयल बिलटा–'खोल फट्टक !'

कने काल शान्त भऽ गेलैक । कोनो उत्तर नहि । फेर फाटक खुजलैक । मास्टर साहेब हँसैत बहरयलथिन–'की बात छै रे बिलटा ? आइ बड़ सबेरे आबि गेलैं ?'

मास्टर साहेब हँसैत चल गेलथिन । बिलटा बताह जकाँ भीतर पैसल आ लगलैक लाते-मुक्के ओंघराबऽ फुलकुम्मरीकें । मारैत-मारैत अपने थाकिकऽ हकमऽ लागल । फुलकुम्मरी एको बेर किलोल नहि कयलकै । हकमैत बिलटापर एकदम जहर सन बोल फेकलकै–'बस्स, समापत हो गेलैक मर्दानिगी ! मर्द हैक तऽ लगबितैक दू-चारि हाथ मस्टरबाकें । हमहूँ बुझतिऐक जे हमर घरवला आनिवाला हय । सभ टा मर्दानगी एक टा कमजोर मौगीपर !'

'चोप्प !' बिलटा गरजिकऽ एक लात देलकै ओकर थुथूनेपर आ फेर बताह जकाँ स्टेशन विदा भऽ गेल । भरि बाट फुलकुम्मरीक बातक जहर ओकरा टीसैत रहलैक । ओकरा बिसरि गेलैक जे फुलकुम्मरी ओकरा संग धोखा कयने छलैक, दोसर मर्दकें रखने छलैक अप्पन कोठलीमे । ओकरा खाली एतबे मोन रहलैक जे मस्टरबा ओकर आगूसँ हँसैत चल गेलैक आ ओ एक टा डेरबुक नेन्ना जकाँ कोठलीमे पैसि गेल । मर्दानगी देखौलक एक टा मौगीपर ! आ, कहाँ छलैक ओकर टोलक पुरुषसभ ? मस्टरबा सभ दिन मंगलाक बहुक घर पैसैत रहलैक, सभ चुपचाप देखैत रहलैक । मस्टरबा बिलटाक घर पैसलैक, तैयो ओसभ चुप्पे रहलैक । डाहे मंगलाक बहु नहि कहितैक तँ ओ बुझबे नहि करैत ! सौंसे टोल हिजरा भऽ गेल छैक ।

फेर लगले बुझयलैक जे तामसमे अनेरो टोलक लोकपर दोष मढ़ि रहल अछि । टोल तँ एहिना सभ दिन हिजड़ा छलैक । टोलक बेटी-पुतहु एहिना इच्छा-अनिच्छासँ बाबू-भैयाक मोन भरैत रहलैक अछि । ओ तँ अपने हिजड़ा जकाँ सभ दिन मस्टरबाकें मंगलाक बहुक घर जाइत देखैत रहलैक । ओ तँ अनकर घर

आ घरवाली छलैक । आइ ओकरे घर आ घरवाली लगसँ मस्टरबा फट्टक खोलि निधोख हँसैत चल गेलैक आ ओ हिजड़ा जकाँ एक टा मौगीकेँ लाते-मुक्के ओंघड़ा अपन मर्दानगी देखा लेलक ! फुलकुम्मरी ठीके तँ कहने छलैक–'लगाकऽ देखबितैक एक्को हाथ मस्टरबाकेँ...'

तीन दिन तक मुँह नहि देखा भेलैक बिलटाकेँ टोलमे । सभक सामने ओ चिचिआयल छल आ मस्टरबा जखन घरसँ बहरायल छल, टोलक लोक जमा भऽ गेल रहैक । जखन फुलकुम्मरीकेँ मारि-पीटि ओ घरसँ बहरायल छल, तखनो टोलक स्त्रीगण-पुरुषक भीड़ जमे छलैक । लाजे तीन दिन नहि घूरल बिलटा ।

जखन घूरल तँ देरी भऽ गेल छलैक । फुलकुम्मरी टाका-पैसा, गहना-गुड़िया, थारी-बाटी लऽ लापता भऽ गेल रहैक । सुन्न घरक फट्टक खूजल छलैक । बिलटा ओइ सुन्न घरमे दुख आ आघातसँ सुन्न भेल बैसल रहल । दिन भरि भूखल-पियासल बैसल रहल, फुलकुम्मरी घूरिकऽ नहि अयलैक ।

ओहो घूरिकऽ घर नहि गेल । स्टेशनेपर रहऽ लागल । ओही स्टेशन-परिवारक अंग भऽ रहि गेल ! बड़ाबाबू कहथिन–'लाइन क्लियर दे दो बिलट ! गाड़ी दरभंगा छोड़ दिया । सिनगल भी गिरा देना ।' बिलटा झट दौड़ि टाङल लोहाकेँ टनटना दैक खूब जोरसँ आ दौड़िकऽ सिनगल खसा दैक । गाड़ी आबि जाइ, बिलटा सवारी ताकऽ लेल सूरसार शुरू करय, तावत छोटा बाबू हाक देथिन–'गेटपर ठाढ़ भऽ जो बिलट ! टिकट ओसूलि ले ।' बिलट पहिने टिकट ओसूलय आ तखन प्लेटफार्मपर मोटरी आ यात्रीक तलाशमे जाय । बड़ाबाबू कहैक–'तुम तो बिलकुल रेलबइ का आदमी है बिलट !'

तहिया इलाका एतेक डकैत नहि भेल रहैक । बिलटसँ नीक जकाँ आर के जनैत छैक ई बात ?

भरि इलाकाक लोक एही स्टेशनपर उतरैत छलैक । सभकेँ टिकट रहैत छलैक । कोनो गुण्डागर्दी नहि । राति-विराति स्टेशन मास्टरक कोठली खूजल रहैत छलनि । इलाकामे बिजली नहि छलैक । स्टेशनोपर नहि । बड़का लैम्पक रोशनीमे बड़ाबाबू-छोटाबाबू टिकट कटैत छलथिन । सभ टा टाका-पैसा ओहिना रहैत छलनि । कोनो भय नहि । सभ बाहरसँ टिकट लेलक, कोनो-कोनो बाबू-भैया भीतरो जा टिकट लऽ लेलनि । कोनो उपद्रव नहि, कोनो हंगामा नहि !

एक टा बंगाली बड़ाबाबू बड़ डेरबुक आयल रहथिन । हुनका बड़ डर

होइनि । पहिने बिलटोसँ डर होइनि–'तोम् कोन हय ? भीतर काहे आता हय !' बिलटाकेँ हँसी लागि जाइ, पैटमैनकेँ बजा दैनि । कृष्णा अपन सभ काज बिलटाकेँ थम्हा निश्चिन्त रहैत छल । फेर नहि जानि कोना कृष्णासँ बेसी बिलटेकेँ मानऽ लगलथिन बड़ाबाबू ! जोर दऽ ड्रेस पहिरबा देलथिन–'ई क्या जामा पहिनता है तुम ! रेलबइ का आदमी है, ठीक माफिक रहो !' पुरना ड्रेससभ दिया देलथिन । पहिल दिन बड़ हँसी लगलैक ओ 'डिरेस' पहिरिकऽ बिलटाकेँ ।

ओहूसँ बेसी हँसी ओकरा बड़ाबाबूक डर देखि कऽ लगैक । बड़ाबाबू-छोटाबाबूक क्वाटर प्लेटफार्मक बगलेमे रहैक ! दुनूमे क्यो परिवार नहि रखैत छलाह । जहिआ छोटाबाबू गाम चल जाथिन, बड़ा बाबूक डरे हालति खराब भऽ जाइनि ! साँझे हल्ला मचा देथिन–'सभ ठो दरबज्जा बन्द करो, किसी को भीतर मत आने दो !'

आखरी बरहबज्जी ट्रेन गेलाक बाद बड़का लैम्प बिलटाक हाथमे देथिन–'चलो, घर ठो पहुँचा दो ।'

आ डेरा पहुँचाकऽ जहाँ जाय लागय बिलटा, हाथ पकड़ि लेथिन–'मत जाओ, डोर लगता है ।'

मुदा इलाका डकैत नहि भेल रहैक तहिया !

राति-विराति पसिंजर उतरैत छलैक आ अप्पन-अप्पन घर चल जाइत छलैक । रुपैया-पैसा, जनी-जाति ककरो डर ने ! बारह बजे रातिकेँ उतरि सुन्न बाट, गाछी आ श्मशान दने लोक अप्पन-अप्पन गाम चल जाइत छल । बरहबज्जी ट्रेनक पसिंजरक सामान नहि पहुँचबैत छलैक बिलटा । पता पूछि लैत छलैक आ भोरे पहुँचा दैत छलैक । इलाकाक लोक निश्चिन्त स्टेशनपर सामान छोड़ि जाइत छलैक ।

कोनो-कोनो पसिंजरे जिद्द कऽ दैत छलैक–रातियोकेँ । गिड़गिड़ाय लगैत छलैक । हवेली मोहनपुरक लोकक अपन नौकर अबैत छलनि, लालटेन टॉर्च लऽकऽ । ओम्हर कम्मेकाल जाइत छल ! लंका मोहनपुरक लोक बेसी लठियाकुमैत, अपने माथपर उठा लैत छल । कुलीक काज कम्मेकाल पड़ैत छलैक । दूर-दूरक पसिंजरकेँ कुली करऽ पड़ैत छलैक आ स्टेशनपर एकमात्र कुली छल बिलटा ।

ओइ राति एक टा पसिंजर जिद्द कऽ देलकै । गरमी मास रहैक । बरहबज्जी ट्रेनसँ उतरल छलैक । संगमे जनानी रहैक । मोटरी बेसी भारी नहि–एक टा बिछौनक मोटरी आ एक टा बक्सा रहैक । बिलटा कहलकै–'अहाँक गाम दूर

अछि–नवगामा ! दू कोससँ बेसिए हैत । एतेक रातिकेँ कोना जायब आब ? राति रहि जाउ वेटिंगरूममे । भोरे पहुँचा देब ।'

पसिंजर जिद्द धऽ लेलकै–'कहुना पहुँचा दे । जे मङबेँ से देबौक ! तोहीँ भोरे चल अबिहेँ । इजोरिया राति छैक ।'

बिलटाकेँ जाय पड़लैक । रातुक समय आ जनानीक डेग । दूसँ बेसी बाजि गेलैक । तैयो ओइ गाममे नहि रुकल । तुरन्ते विदा भऽ गेल बिलटा । इजोरिया पसरले छलैक । डेग झटकारने गीत गबैत विदा भेल ।

किछु दूर आबि लगलैक जेना क्यो पछोड़ धयने होइ । कने देह सिहरलैक। गाछिए-गाछी रास्ता । दूर-दूर तक कोनो गाम वा घर नहि । रातिक अन्तिम पहर । कोनो भूत-प्रेत पाछाँ धयने छलैक । ओ हाथ महक ठेङा कने कसिकऽ पकड़ि लेलक।

पाछाँसँ अबैत छाया कने स्पष्ट भेलैक– एक टा स्त्रीछाया । भूत-प्रेत नहि, चुड़ैल पाछाँ धयने छैक । बिलटा डेग बढ़ौलक । घूरिकऽ पाछाँ नहि तकलक किछु काल ।

नवगामाक बाध टपि चमरटोली लग पहुँचल तँ घूरिकऽ पाछाँ तकलक। ओहिना पछोड़ धयने छलैक चुड़ैल । बिलटाकेँ तामस भेलैक–ओना नहि मानत ई । ओ ठेङा आर सरिया लेलक आ डेग छोट कऽ लेलक । ओ चुड़ैल लग अबैत गेलैक आ जहिना एकदम लग भेलैक कि ठेङा उठा लेलक पलटिकऽ बिलटा–'छोड़ैँ छेँ कि नहि हमर बाट ? भाग, अप्पन रस्ता ले ।'

भगबाक सत्ती आर लग सटि गेलैक ओ चुड़ैल । बिलटाक ठेङा उठले रहि गेलैक । इजोरियामे देखलकै– ई तँ मनुक्खजातिक छलैक– एक टा जनानी ! कपारपर एक टा पट्टी बान्हल रहैक जेना कप्पार फूटल होइ ! नवे वयसक जनाना ! कारी रंग आ कठमस्त देह । लगमे सटिकऽ ठाढ़ छलैक । बिलटा ठेङा नीचाँ करैत कहलकै–'के छेँ तोँ ? एकसरि कहाँ जाइ छैँ एतना रातिकेँ ?'

मौगी तैयो किछु नहि बजलैक । आगू बढ़लैक । बिलटोकेँ आगू बढ़ऽ पड़लैक । संगे-संग स्टेशन धरि आबि गेलैक मौगी । ओकरा स्टेशनपर बैसैत देखि बिलटा सूतऽ लेल अपन स्थानपर चल गेल । वेटिंगरूमक एक टा कुंजी ओकरा लग रहैत छलैक । रातिकेँ ओकरे खोलि ओ सूति रहैत छल । ओना वेटिंगरूम बन्द छलैक । फस्ट क्लासक पसिंजर कहिओ काल होइत छलैक तँ वेटिंगरूम खोलल जाइत छलैक । दोसर कुंजी बड़ाबाबूक संग रहैत छलनि ।

सूतिकऽ अबेरसँ उठल बिलटा । सतबज्जी गाड़ीक बेर भऽ गेल छलैक । ओ धड़फड़ाकऽ स्टेशन मास्टरक कोठली दिस पड़ायल । बाटमे ओकर डेग थकमका गेलैक । ओ मौगी ओहिना बैसलि छलैक । राति भरि बैसले रहि गेलैक भरिसक ।

कने लग जा टोकलकै बिलटा–'इहाँ बैसल की करै छैँ ? गाड़ी अबै हइ, पकड़ि लेतौ । जो जहाँ जेबाक हउ ! गाड़ीसँ जैबाक हउ, तऽ टिकट लऽ ले !'

मौगी तैयो चुप्पे छलैक । बिगड़िकऽ बिलटा कहलकै–'केहन बौकी मौगी हय ! रातिसँ कहै छिऐ, कोनो ध्याने नै दै हय । बोल ने गे, केने जयबेँ ? कहाँ घर हउ ?'

मौगी मूड़ी उठौलकै–'कोनो घर न हय हम्मर । कहाँ जयबै हम ?'

फरीछमे बिलटाक ध्यान गेलैक जे मौगीकेँ नीक जकाँ थुराइ भेल छै । कारी देहमे जहाँ-तहाँ दाग छैक । एकदम खाली देह । एक टा नूआ मात्र शरीरपर । ने कोनो मोटरी-चोटरी । अबस्से भागिकऽ आयल छै मौगी ! बिलटा कने आर जोरसँ डँटैत कहलकै–'झगड़ा कऽ पड़ाकऽ आयल छै घरसँ ? ओतना रातिमे अकेले ! भारी करेजा हउ तोरो, रात भर बैठले रह गेले एही जग ! जो आब, घर घूरि जो !' मौगी कानऽ लगलैक–'नै, नहि जयबै हम । जान लऽ लेतैक हम्मर ।'

'जो, मर'— बिलटा मोनेमोन बड़बड़ायल आ दोसर दिस चल गेल । गाड़ी अयलैक–दुनू दिससँ । पसिंजर चढ़लै-उतरलै । दुपहरियोक गाड़ी चल गेलैक । साँझ भेलै । मुदा ओ मौगी ओहिना बैसलि छलैक– भूखलि-पिआसलि । बिलटाकेँ नहि रहि भेलैक । फेर लग जा कहलकै–'जाइ किएक ने हइ ? एतै जान देतै भूखे-पियासे ? घूरि जाउ अपन घर ।'

मुदा ओ मौगी जेना सुनबे नहि कयलकै । बौक जकाँ बैसलि रहलैक । बिलटा फेर लोहछिकऽ चल गेल, मुदा ओकर ध्यान ओम्हरे लागल रहलैक । नौबज्जी गाड़ी सेहो चल गेलैक ।

हारिकऽ बिलटा बड़ाबाबू लग पहुँचल–'एक गो जनानी हय बड़ा बाबू ! अहाँ राखि लेबै ओकरा ?'

बड़ाबाबू बमकि गेलथिन–'क्या बकता है ! हम दूसरा आदमी को जनानी को काहे रखेगा ?'

बिलटा बात फड़िछबैत कहलकनि–'से नै कहै छी बड़ाबाबू ! एगो

दुखियारी हय बेचारी, भोरेसँ स्टेशनपर भूखल-पिआसल बैठल हय । कतबो भगवै छियै, भगिते ने हय । अहाँ राखि लिऔ, डेरामे खाना-ऊना बना देत । बड़ाबाबू किछु विचारि कहलथिन— 'अच्छा ले आओ ।'

प्रसन्न होइत बिलटा ओइ मौगी लग पहुँचल आ कहलकै–'उठ गे बौकी। बड़ाबाबू बजबै छथुन ।'

ओ मौगिया ऊठिकऽ अयलैक ओकर संग । बड़ाबाबू लैम्पक रोशनीमे नीक जकाँ देखलथिन ओकरा आ कहलथिन–'ना बाबा ! ई तो जोबान औरत हय, इसको अकेला कैसे रखेगा डेरामे ?'

मौगिया मूड़ी झुकौने घरसँ बाहर जा फेर ओही ठाम बैसि गेलैक । बिलटा भारी चिन्तामे पड़ि गेल । किछु सोचैत बड़ाबाबू कहलथिन–'एक ठो बात करो बिलट ! तुम रख लो इस औरत को । तुम अकेला है, तुम्हारा घर बस जायेगा।'

बिलटकेँ बड़ाबाबूक बातक कोनो जवाब तुरत नहि दऽ भेलैक । मौगिया किछु बजिते नहि छैक । नहि जानि कोन गामक छैक । कहाँसँ पड़ाकऽ आयलि छैक । ओकरा घर लऽ जाकऽ कोनो आफतमे ने पड़ि जाय ! कोनो तिरिया चरित्तर ने पसारने होइ ! फुलकुम्मरी मोन पड़लैक ओकरा ।

मुदा जखन राति बारह बजेक डाउन ट्रेन चल गेलैक तँ बिलटाक मोन औनाय लगलैक । बड़ाबाबू अपन डेरा चल गेलथिन । प्लेटफार्मक पाछाँमे टीनक शेडक भितरे एक टा पानवाला बैसैत छलैक, सेहो दोकान बन्द कऽ चल गेलैक। चमरा पितुआ तँ साँझे चल जाइत छलैक । भोरे आठ बजे अबैत छलैक आ टीनक ओही शेडमे, टिकट खिड़कीसँ हँटिकऽ दक्षिणबारी कात बैसि जाइत छलैक अपन सपटा बिछा । फेरीवलासभ सेहो रातिकेँ नहिएँ रहैत छलैक । दुइए टा फेरीवला छलैक । सोनमा गुलाबछड़ी बेचैत छलैक आ यदुआ चिनियाबदाम । कहियोकाल पेड़ा बना कामेश्वर झा सेहो घूमि जाइत छलाह । लंका मोहनपुरक कामेश्वर झा। पेड़ामे भाङ मिलाओल रहैत छलैक । बेसीकाल हाटेपर आ गफूरगंज बजारमे बेचैत छलाह आ कहिओ काल ट्रेनक पसिंजरकेँ सेहो ओ भाङवला पेड़ा खुआ दैत छलथिन ।

मुदा ओ मौगी तँ बिन भाङे खयने माति गेल छलैक । भोरसँ बारह बजे राति एकेठाम बैसल छलैक । हिलडोल तक नहि कयलकै । बिलटा आगू-पाछू करैत एकबेर फेर टोकलकै–'किएक एना जान दइ हइ ? घुरि जाउ अप्पन घर ।'

मौगी जेना सुनबे नहि कयलकै । लोहछिकऽ किछु आर कहऽ जाइत छलैक बिलटा, मुदा नहि जानि कोना ओ बड़ाबाबूक प्रस्ताव दोहरा देलकै–'हमर घर चलतै ? क्यो ने हय । हमहू अकेले छी ।'

जेना जादू भेलैक ! मौगी ऊठिकऽ ठाढ़ि भऽ गेलैक । नूआ सरिआ लेलकै आ आँचर नीक जकाँ माथपर राखि लेलकै । बिलटा आगू बढ़ल, ओ चुपचाप पाछाँ चलऽ लगलैक । बारहसँ ऊपरक समय, इजोरिया राति । रातिक ओइ स्तब्धतामे दुनू गोटे आगू बढ़ैत रहल । नाव घाटपर छलैक, मुदा मलाहक कोनो पता नहि छलैक । बारह बजेक पसिंजरक बाटा-बाटी देखि मलहा चल गेल छलैक । बिलटा अपने लग्गा लेलक आ नाव अइ पार अनलक ।

टोल एकदम निस्तब्ध छलैक । दुनूकेँ अबैत देखि कुकूर भूकऽ लगलैक । अपन घर लग पहुँचल । दू वर्षसँ अपन कोठलीमे पयर नहि देने छल । फुलकुम्मरीक भागि गेलाक बाद ओ टोलमे नहि घुरल छल । कोठलीक फट्टक ओहिना भिड़काओल छलैक । ओकरा ठेलिकऽ खोलैत बिलटा पुछलकै–'की नाम हइ एकर ?'

'कजरी !' —बिलटाकेँ ओ नाम आ ओ लजायल स्वर बड़ नीक लगलैक ।

इलाका तैयो डकैत नहि भेल छलैक !

बिलटा नीक जकाँ जनैत छलैक । एक टा टो.टी.सी. जाहि डिब्बामे जाइ, पड़ाहि लागि जाइ । क्यो यदि बिनटिकटे प्लेटफार्मोपर रहैक तँ ओहो पड़ाकऽ प्लेटफार्मक काँटवला तारक ओइ पार चल जाइक । जहिया चेकिंग होइ, बड़ाबाबू बिलटोकेँ हँटा देथिन–'तुम आज बाहर खड़ा रहो, कृष्णा ड्यूटी करेगा ।'

खाली कहिओ काल मारा-मारी कऽ लैक ट्रेनमे लंका मोहनपुरक लोक । सभ लठियाकुमैत रहैक ओइ गाममे । ट्रेनमे चढ़बाकाल, सीटक लेल, मोटा रखबाक लेल अनेरो झगड़ा-फसाद कऽ लैक । अन्तहिया पसिंजरकेँ मारि बैसैक कहिओ काल । तेँ हवेली मोहनपुरक लोक कहैक–लंका टोल, माने लंका मोहनपुर ।

गफूरगंज स्टेशनसँ जे लाइन उत्तर दिस जाइत छैक, तकर पहिले गुमती लगसँ एक टा कच्ची सड़क लंका मोहनपुर दिस जाइत छैक–सोझे पूब दिस नहि, कने पूबे-उतरे । ई कच्ची सड़क गुमतीक पश्चिममे गफूरगंज हाट धरि जाइत छैक ।

हाटसँ एक टा सड़क चल जाइत छैक रेलवे पुल धरि उत्तरमे आ दक्षिणमे वैह कच्ची सड़क दरभंगा चल जाइत छैक । एक टा कच्ची सड़क गफूरगंज स्टेशनसँ सोझे पश्चिम दिस सेहो जाइत छैक । ओइ सड़कक दुनू कात बेसी मुसलमानक आबादी छैक आ सड़क आगू जा गफूरगंज हाटसँ अबैत कच्ची सड़कमे मिलि जाइत छैक। ओही चौराहा लगमे खादीभंडार छैक आ खादीभंडारसँ हाट धरिक रास्ताक दुनू कात बस्ती छैक–बनिया, सोनार आ तमोलीक । बीचमे बड़का हवेली छलैक मुन्नीलाल अग्रवाल, मारवाड़ीक । सभसँ पैघ सेठ छल गफूरगंजक मुन्नीलाल । दिवालीमे जुआमे सभ हारि गेल, कंगाल भऽ गेल । ओही दुखे जान चल गेलैक, बड़का दोकान नीलाम भऽ गेलैक । धीयापूतासभ आब भूजा बेचैत छैक । आब ओइ बाटमे नामी बनिया अछि मक्खन साहु । ओकर कारबार पसरल जाइत छैक । आ ओ सालेसाल कोठा पिटने जाइत अछि । मुदा तकर गप्प एतऽ नहि । तहिया इलाका डकैत नहि भेल रहैक ।

गफूरगंजक हाट नामी छलैक । सप्ताहमे तीन दिन हाट लगैत छलैक । सोम बुध आ शनिकेँ । खद्दर भंडारसँ रेलवे पुल धरिक बाटक दुनू कात लागल हाट । चौराहासँ गुमती धरि जाइत बाटक दुनू दिस लागल हाट । बाटक कातमे खाली मैदान छलैक । ओहो भरि जाइत छलैक । सभ चीजक हाट– माछ-मासुसँ लऽकऽ लोहा-लक्कर धरि । भरि इलाकाक स्त्रिगण-पुरुष एही हाटपर अबैत छल । सड़कक कातमे स्थायी दोकानोसभ छलैक जाहिमे कपड़ा-लत्ता आ तेल-साबुन सेहो भेटैत छलैक । बारह बजैत-बजैत कुजड़नीसभ तरकारी माथपर लेने आ पैकार घोड़ीपर सामान लदने पहुँचि जाइत छलैक । मलाहसभ पतियानीसँ सामान लऽ बैसि जाइत छल । तहिया हलाली मासु कम्मे लोक खाइ, तैयो एक टा खद्दिक अपन मासुक दोकान सभ पेठियामे खोलय । बेसी बिक्री मलाहसभक होइ । सस्त माँछ । दस आने-आठ आने सेर रऽहु । बिलटाकेँ आइयो मोन छैक ।

बिलटाकेँ गफूरगंज हाट बेसी मोन पड़ैत छैक । हाटमे बेसी मौगियेसभ जाइत छलैक । बेचनिहारसभ बेसी कुजड़निए । इलाका भरिक गामक लोकसभ अपन सौदा-लुतुफ हाटमे कऽ लैत छल । साँझ भऽ गेलोपर स्त्रिगणसभ, बोनि कमयलाक बाद, पाइ भेटिते डेग झटकारैत हाट चल अबैत छलि आ निश्शंक अपन-अपन घर घूरि जाइत छलि । पैकारसभ राति-मुन्हारि साँझमे अपन सामान लदने घर घूरि जाइत छल । ककरो कोनो चीजक डर नहि होइत छलैक ।

हाटोमे किछु उपद्रव करैक खाली लंका मोहनपुरक लोक । कोनो कुजड़नी,

कोनो सौदा-लुतुफ लैत मौगीकेँ किछु कहि देलहुँ, कने देह रगड़ि देलहुँ, बस्स एतबे । सेहो खाली लंका मोहनपुरक लोक । हवेली मोहनपुरक लोक अपने हाट नहि अबैत छल, नौकर-चाकर अबैत छलैक । खाली मलहटोली आ धनुखटोलीक स्त्रिगण अबैत छलैक ।

बिलटा मना करैक कजरीकेँ–'तोँ किएक जयबैँ हाट-बजार ? हमहीँ टीशनसँ घुरती काल लेने अयबौक ।' मुदा ओ नहि मानैक । कहैक–'थाकल रहै छै । ई फेर सौदा-बजार करतै ! आ हम की करबै दिन भरि ? कतौ काजो तऽ नै करऽ दै छै । दिन भरि बैसलि खाइ छी आ मोटाइ छी ।'

बिलटाकेँ मना नहि कऽ होइ । हाट जाय दैक । बड़ मानैत छलैक कजरी ओकरा । रातिकेँ घुरलापर घण्टो ओकर देह जाँति दैत छलैक । खूब सक्कत कमासुत हाथ रहैक कजरीक ! बिलटाकेँ नीक लगैक आ ओकरा आँखि लागि जाइ । आँखि खुजलापर देखैक जे कजरी ओंघा रहलि छैक, मुदा तैयो ओकर हाथ चलि रहल छैक, आ ओकर पोर-पोरकेँ दबा रहलि छैक । बिलटा सिनेहसँ लग घीचि लैक । ओंघायल कजरी फुसफुसाकऽ मना करैक– रहऽ दौ, ई थाकल हेतैक ।

भोर भेने नव स्फूर्तिक संग स्टेशन विदा होइत छल बिलटा । कजरी खाली दैत छलैक, मङैत कहिओ ने छलैक किछुओ । कमाइक टाका-पैसाकेँ हाथो ने लगबैक–'राखौ ने अपने ! हम की करबैक लऽकऽ ? कतौ हेरा-तेरा जयतैक ।' बिलटा नहि मानैक, ओकरे खूँटमे बान्हि दैक । तकरा नीक जकाँ एक टा डिब्बामे बन्न कऽ कोठीमे राखि दैक कजरी । एक-एक टा पाइ पूछिकऽ खर्च करैक । बिलटाकेँ फुलकुम्मरी मोन पड़ि जाइ । स्टेशनसँ अबैत देरी पहिने सभ टा पाइ धरा लै । ओइसँ पहिने देहमे हाथो नहि लगबऽ दैक । कजरीक सिनेहमे ओ फुलकुम्मरीकेँ बिसरऽ चाहैत छल, मुदा लगैत छलैक जेना ओ जहर जकाँ ओकर शोणितमे मिलि गेलि छै–'सभ टा मर्दानिगी एक टा जनानिएपर ! लगबिते एक हाथ मस्टरबाकेँ तऽ बुझतिऐक जे हमरो घरवाला मर्द हय !' जखन नामीबाबूक हवेली आ ओइसँ बहराइत मास्टरकेँ देखैत छल बिलटा तँ ओकर देहमे एक टा सनसनाहटि होबऽ लगैत छलैक । नहि जानि किएक ? ओ अपनो नहि बुझैत छलैक ।

ओ तऽ ईहो नहि बुझने छलैक जे कजरियो चल जयतैक ओकरा छोड़िकऽ एक दिन । नहि, ओ छोड़िकऽ नहि गेलि छलैक ओकरा । ओ तँ शनिक पेठिया गेलि रहैक ! घूरिकऽ नहि अयलैक । क्यो ने देखलकै फेर ओकरा । पेठियामे माइंजन गङबा देखने छलैक । दू टा मोछैल पहलमान घेरने छलैक ओकरा । डेरायल

लागि रहलि छलैक । मांइजन फेर नहि देखलकै । नहि जानि, किम्हर चल गेलैक तीनू ?

बिलटा स्टेशनसँ घूरल छल । घरक फट्टक लागल छलैक–ताला बन्न । आश्चर्य भेलैक । चारू भर तकलक । मंगला-बहुकेँ पुछलकै, सौँसे टोलकेँ पुछलकै, क्यो किछु नहि कहलकै । कहलकै माइंजन गङबा, आ बिलटा बूझि गेलैक ।

एक्के वर्ष रहलैक कजरी । कहिओ ने कहलकै जे के छलैक, कतऽसँ आयलि छलैक ? बिलटो पूछब छोड़ि देलकै । कजरी ओकरा घरमे छलैक, ओकर छलैक, एहिसँ अतिरिक्त सभ बात ओकरा बिसरि गेल छलैक । कजरी घूरिकऽ नहि अयलैक । घर फेर काटऽ लगलैक बिलटाकेँ । घरमे सभ-किछु ओहिना छलैक । कोनो वस्तु ने लऽ गेल छलैक ओ । ओकर नूओ-आङी पड़ले छलैक । खाली देहपर एक टा वस्त्र ! जहिना आयलि रहैक, तहिना चल गेलैक ।

बिलटा फेर स्टेशने धऽ लेलक । गामसँ कोनो मतलब नहि ! आब तँ पच्चीस बरख भऽ गेलैक । पचास वर्षक भऽ गेल बिलटा !

कतेक बड़ाबाबू अयलथिन आ चल गेलथिन । सभक लेल बिलटाक स्थायी ड्यूटी–'जरा लाइन-क्लियर दे देना बिलट ! जरा सिगनल गिरा दो, दो सौ पचपन अप आ रही है ।'

एही अप-डाउनक आबा-जाही देखैत जीवनक पच्चीस वर्ष बीति गेलैक आ बिलटा नवसँ बूढ़ भऽ गेल । आ, इलाका डकैत भऽ गेलैक ।

पहिल हंगामा शुरू कयलकै विद्यार्थीसभ । नहि जानि, कहाँ-कहाँक विद्यार्थी सभ ! दस-दस स्टेशनक विद्यार्थी नित्य जाय लगलैक दरभंगा— कालेजिया छौँड़ासभ ! गामेमे खा-पी, गामेसँ ट्रेन धऽ कालेज जाइ । लंका मोहनपुर तँ पहिनेसँ नामी छल, अइ विद्यार्थीक भीड़मे ओकरो बड़का गुट शामिल भऽ गेलैक । पहिने सभ पास बनबौलकै । फेर सभ टा फ्री भऽ गेलैक । ने पासक काज, ने टिकट । सभ फस्टे क्लासमे चलऽ लगलैक । सभ दिन बन्द रहऽवला फस्ट क्लासक वेटिंगरूम ओकरसभक अड्डा भऽ गेलैक । टी.टी. आ गार्डकेँ ओकरासभसँ डर होबऽ लगलैक । के अनेरो मारि खाय ? जकरा जतहि मोन होइ, ट्रेन रोकि दैक । गार्डक झण्डा छीनि, गाड़ी ठाढ़ कऽ दै । ड्राइवरक डिब्बामे चढ़ि गाड़ी ठाढ़ करबा लेल विवश कऽ दैक । विद्यार्थीकेँ सात खून माफ !

आ, विद्यार्थीक दलक नामपर सभ स्टेशनक गुण्डा-बदमाश रोज बिना

टिकट आबऽ-जाय लगलैक । कोनो रोक-टोक नै ! फेर उत्पात शुरू भऽ गेलैक । कहिओ कोनो मौगीक चेन झीकि पड़ा जाइत छैक तँ कहिओ कोनो यात्रीकेँ छूरा देखा सभ टा वस्तु-जात छीनि लैत छैक । कहिओ ककरो बैग लऽ कूदि जाइत छैक तँ कहिओ ककरो सूटकेस चीरि भीतरसँ सभ टा सामान निकालि लैत छैक । बिलटा सभ जनैत छैक । इलाका भारी डकैत भऽ गेल छैक ।

रेलवे विभागमे गफूरगंज स्टेशनक नाम बदनाम भऽ गेल छैक । क्यो एहि स्टेशनपर पोस्टिंग नहि चाहैत छैक । दू बेर बड़ाबाबूकेँ मारि-पीटि सभ टा टाका-पैसा छीनि लेलकै लंका मोहनपुरक लोक । नरेश, शिबू, सोहन आ कन्हाइ समेत बीस टा आर लोकपर मोकदमा आइयो चलिते छैक । सभकेँ बान्हिकऽ लऽ गेल रहैक आ फेर सभ हँसिते जमानतपर छूटि आयल । आ, छुटलाक साते दिनक बाद छोटाबाबूकेँ पीटि देलकै । ट्रेनक सभ टा सीटक गद्दी उठा लऽ गेलैक आ पंखासभ उखाड़ि लेलकै डिब्बासँ । गार्ड डरक लेल गाड़ी छोड़ि पड़ा गेलैक आ गाड़ी दू घण्टा गफूरगंजेमे ठाढ़ रहलैक । फेर पुलिस, फेर गिरफ्तारी, फेर वारण्ट !

इलाका सत्ते डकैत भऽ गेल छैक ।

सभ अपन-अपन धन्धा शुरू कऽ देने छैक । टी.टी.सी., गार्ड आ ड्राइवरक अलगे धन्धा छैक । दिनुका आ रतुका दुनू ट्रेनमे अइ लाइनमे खाली कुजड़नी आ पैकारसभ चढ़ैत छैक–खाली बोरा । भोरका ट्रेनमे खाली दूधक डिब्बा स्टेशने-स्टेशने । बाँसक डण्टाक संग डिब्बा सभसँ दूधक टिन, बड़का-बड़का टिनसभ लटकाओल रहैत छैक । दूध पेराकऽ सभ टा मक्खन बहाराकऽ दुद्धी दरभंगा जाइत छैक भोरका ट्रेनसँ आ बरहबज्जी ट्रेनसँ सभ घूरि अबैत छैक । एकरासभकेँ विद्यार्थियोक डर नहि होइत छैक । गाड़ीक ड्राइवर, सिपाही, टी.टी.सी.–सभक शेयर बान्हल छैक ।

आ, सझुका गाड़ीसँ बोराक बोरा अन्न ! बजारसँ लऽ अनैत छैक सभ आ स्टेशन पहुँचऽसँ पहिने गाड़ी स्थिर होइत छैक आ लाइनक कातमे बोरासभक पथार लागि जाइत छैक । ओहि सभ स्थानपर लोक पहिनेसँ ठाढ़ रहैत छैक ।

आ, रतुका गाड़ीमे खाली कुजड़नी आ तमोलिन । डिब्बे-डिब्बे भरल । टी. टी., गार्डकेँ अठन्नी-चौअन्नी धरा एम्हरसँ ओम्हर टहलि अबैत अछि । टिकटोक नै काज ! बेसी फसाद कयलकै सिपहिया आ टी.टी., तँ कने नवकी कुजड़नी हँसिकऽ हाथ दबा देलकै । बस्स !

गफूरोगंजमे ई लीला चलैत छलैक । रतुका गाड़ीसँ तमोलिन आ कुजड़नी

सभ जाइत छैक– बरहबज्जी गाड़ीसँ । भोरे छओ बजे घूरि अबैत छैक । बड़ाबाबू मौस्तैज रहैत छथिन आब–'चवन्नी वसूल लो बिलट सब से ! कोई छूटने न पावे।'

आ, गाड़ी गेलापर सभ टा असुललाहा पैसा बड़ाबाबूकेँ दऽ दैत छनि बिलटा आ कहिओ-काल प्रसन्न भऽ बड़ाबाबू एक टा चौअन्नी दैत कहैत छथिन–'मौज करो बिलट !'

बिलटाकेँ ई झमेला आब अखरैत छैक । वयस भेलैक ! भारी-भारी मोटामे आब सकैत नहि अछि । स्टेशनपर कुलीसभ मारि आबि गेल छैक, नवका-नवका छौँड़ासभ ! टिकस ओसूल करबामे आ बड़ाबाबूक पाइ ओसूल करबामे ओकर अपन हर्ज होबऽ लगैत छैक । सभ टा पसिंजर चल जाइत छैक।

मुदा सभसँ बेसी अखरल रहैक ओइ राति बिलटाकेँ ! इलाकाक गुण्डबा छौंड़ासभ एक टा दुरगमनिया कनियाँकेँ डिब्बासँ उतारि लेलकै जबर्दस्ती । गाड़ीक खतराक जिंजिरक कनेक्शन काटि देलकै । ओकर वर कतबो किलोल कयलकै आ जिंजीर खिचलकै, गाड़ी ठाढ़ नहि भेलैक । रातुक अन्हारमे ओ छौंड़बासभ ओइ चिकरैत नवकनियाँकेँ उठा पूब दिस पड़यलैक ।

नहि रहि भेलैक बिलटाकेँ । जोरसँ ललकारलकै सभकेँ–'डूबि मरै जा सभ ! एतेक लोक छेँ स्टेशनपर आ एक टा मौगीक इज्जति लूटि रहल छै सभ ! अबै जो सभ हमरा संग ।'

हल्ला करैत दौड़ल बिलटा । किछु लोक संग देलकै । बदमाशसभ डेरा गेलैक । ओइ दुरगमनियाँ कनियाँकेँ छोड़ि पड़ा गेलैक । ओकरा उठा सभ स्टेशनपर अनलकै, चुप्प करौलकै । हल्ला-गुल्लासँ डेराकऽ बड़ाबाबू अपन कोठलीमे नुका गेल रहथिन । सभ टा काण्ड भेलाक बाद बहरयलथिन–'शाबास बिलट, आज तो कमाल कर दिया तुमने ।'

दोसर ट्रेनसँ घूरिकऽ ओकर वर अयलैक । बेर-बेर हाथ जोड़लकै बिलटाकेँ । कनियाँ कानि-कानि कऽ पयर छुलकै । भोरे दरभंगासँ पुलिसो-दरोगा अयलैक । नाम पुछैक बिलटासँ । बिलटा चिन्हने रहैक कतेक गोटेकेँ, मुदा कहलकै–'अन्हार छलैक दरोगा साहेब ! ककरो ने चिन्हलिऐक ।'

दारोगा चल गेलैक–बिलटकेँ पीठ ठोकलकै आ कहलकै जे ओकरा इनाम भेटतैक । मुदा, बिलटकेँ इनाम भेटि गेल छलैक । ओइ कनैत नवकनियाँक आँखिक कृतज्ञता ।

ओकरा फुलकुम्मरी मोन पड़लैक । एकदिन ओकर मर्दानगीकेँ धिक्कारने छलैक । आइ कने देखितैक ओ ओकर साहस !

मुदा ने फुलकुम्मरी छलैक, ने छलैक कजरी ! बिलटा एकसर छल आ बूढ़ भऽ गेल छल । गुण्डबासभ बदला लेतैक– ओ जनैत छल । ओ चाहितैक तँ सभकेँ पकड़बा दितैक । मुदा ओकर काज भऽ गेल छलैक । ओ ओइ चिकरैत नवकनियाँकेँ बचा लेने छलैक ।

मुदा ककरा-ककरा बचौतैक बिलटा ? सौंसे इलाका तँ डकैत भऽ गेल छैक ।

सभसँ पहिल डकैत छथि मुखिया एकबाली चौधरी । जोड़ीदार छथिन सरपंच हरिश्चन्द्र चौधरी ।

एकबाली चौधरी पहिले चुनावमे मुखिया भेल रहथि । तकर बीस वर्ष भेलैक । आइयो गामक मुखिया वैह छथि ।

मुखिया होइत देरी सभसँ पहिने गफूरगंज स्टेशनक पहिल गुमती लग, जतऽसँ कच्ची सड़क लंका मोहनपुर जाइत छैक, एक टा बोर्ड एक टा खुट्टामे ठोकि गड़बौलनि–'मोहनपुर पुबारिपार अपनेक स्वागत करैत अछि ।' मुदा, ओही बोर्ड लग ठाढ़ भऽ अनगौआँ बटोही एखनो पुछैत छैक–'लंका मोहनपुर कोन बाट जाइत छैक ?' आर तँ आर, लंका मोहनपुरक लोककेँ अपनो क्यो पुछैत छनि जे कतऽ रहैत छी, तँ जबाब दैत छथिन–लंका मोहनपुर । माने मोहनपुर पुबारि पार ।

लोक कहैत छैक जे एही कच्ची सड़क द्वारे हवेली मोहनपुरक चौधरीसभ पुबारि पार छोड़ने छलाह ! ई परगन्ना श्रीकान्त चौधरीक पुरखाकेँ मुगल-बादशाहसँ पण्डिताइक जागीरमे भेटल रहनि । सौँसे इलाका जंगले-जंगल रहैक आ जंगलक बीच बहैत कमलाक धार । पहिने ठाकुर कहबैत छलाह श्रीकान्त चौधरीक पुरखा । जागीरक संग भेटलनि चौधरीक खिताब ! पहिने दुनू लिखैत छलाह–अशर्फी ठाकुर चौधरी ! फेर शुरूमे लिखऽ लगलाह–ठाकुर दिगम्बर चौधरी । आ, बादमे खाली चौधरिए रहि गेलाह जेना श्रीकान्त चौधरी ।

बहुत दिन धरि श्रीकान्त चौधरीक पुरखालोकनि पुबारिपारमे रहथिन मुदा

बड़ असुविधा होबऽ लगलनि बादमे । परगना की भेटलनि, जंजाल भऽ गेलनि । जंगल काटि बसल छलाह पुबारि पारमे । मुदा जखन-तखन एही कच्ची सड़कपर बादशाहक घोड़सवार आबनि आ लगान ले' बड़ तंग करनि । कैक बेर बेइज्जतिक नैबात आबि जाइनि । अकच्छ भऽ पुबारि पार छोड़ि दुइए पीढ़ीक बाद पछबारि पार चल गेलाह । ओम्हरका जंगल काटल गेलैक आ सभक्यो बसि गेलाह । सभक्यो माने चौधरीलोकनि ! बाँकी लोक रहि गेल पुबारिए पारमे ।

ओना, चौधराना लंका मोहनपुरमे एखनो छैक । चौधरानाक लोकसभ कहैत छथिन जे ओलोकनि ओइपारक चौधरीलोकनिक देयाद थिकाह । उपटिकऽ जखन ओइपार जाइत गेलाह तँ एक फरीक एही पार रहि गेलथिन । मुदा, हवेली मोहनपुरक लोक अइ बातकेँ नहि गछैत छथिन–'लंका मोहनपुरसँ हमरालोकनिक कोनो सम्पर्क कहियो नहि रहल । एक बेर जे पुरखालोकनि पुबारि पार छोड़िकऽ पछबारि पार अयला तऽ कोनो चीज ने छोड़लनि अपन । रहि गेलनि जमीन-जाल आ राड़-रोहिया । पूरा खतबेटोली-दुसधटोली हमरेलोकनिक जमीनमे बसल अछि । मुसलमान टोलक बासक सभ जमीन हमरेलोकनिक थिक । लंका मोहनपुरक सभक्यो बभनटोली समेत हमरेलोकनिक जमीनमे बसल छथि । ओलोकनि एकतरफा खाइत-पीबैत छथि । हमरालोकनि खाली हकार-तिहार मानैत छियनि आ पान-सुपारी लऽ लैत छियनि, सेहो खाली चौधराने भरि, बस्स ।'

बभनटोली तीन भागमे बँटल छैक–बलुआही, पीपरपाँती आ चौधराना । धारक अइ पार बालुक मैदान समाप्त होइते बलुआही टोल शुरू भऽ जाइत छैक । ठीक बालुक मैदानक बाद नहि, कच्ची सड़कक बाद । बलुआही माँटि जतऽ खतम होइत छैक ओहीठामसँ सड़क जाइत छैक– उत्तरे-दक्षिण जे सोझे गफूरगंजक रेलवे गुमती लगसँ अबैत छैक । एही सड़कक बाद पूबमे बलुआही टोल शुरू भऽ जाइत छैक । अइ टोलक सर्वेसर्वा छलाह रामौतार मिसर । बेस चतरल-चाकर लोक रहथि । रंग एकदम कारी । हिनके एक बेर नामीबाबूक संग मसलंगपर ओङठल देखलथिन तँ सामियानामे बैसब छोड़ि देलथिन श्रीकान्त चौधरी । नामी चौधरीक बेस दोस्तियाना रहनि रामौतार मिसरसँ ! हुनकर बेटोक अइ टोलमे बेस अबर-जात । मास्टर महेशकेँ अइ टोलमे खूब समर्थन छनि ।

मुदा, एकबाली चौधरीकेँ समर्थन देलथिन अलगू चौधरीक बेटा हरिश्चन्द्र चौधरी । अलगू चौधरी पितिऔत छलथिन श्रीकान्त चौधरीक, मुदा दुनू पट्टीदारमे नहि बनलनि कहिओ । तेसर पट्टीदार छलथिन बिराज चौधरी । दुनू पट्टीदारी

झगड़ासँ अलगे रहब हुनका नीक लगलनि । कहलथिन–'हम फेर पुबारिए पार चल जायब । लंका मोहनपुर दिस नहि ।' सोझे धार पार कऽ गफूरगंज स्टेशनक सोझमे स्टेशन आ रेलवे-लाइनसँ पहिनहि बड़का प्लौट छलैक, पैघ पोखरि आ गाछी रहैक । बिराज चौधरी ओतहि बसलाह । हुनकर चारू बालक फराक-फराक चारि टा घर बना लेने छलथिन ओइ टोलपर आ ओकरा लोक कहैत छलैक–'पोखरि हवेली' । श्रीकान्त चौधरी आ अलगू चौधरीक झगड़ामे बिराज चौधरी किम्हरो नहि रहथि, मुदा हुनकर बेटासभ हरिश्चन्द्रे चौधरीक समर्थक छथिन, कट्टर समर्थक । जे कहथि सरपंच भाइ !

समर्थन जुटबऽमे हरिश्चन्द्र चौधरी माहिर छथि । काँगरेसी आंदोलनमे एक बेर जहल गेल रहथि, तेँ इलाकामे पुरान काँगरेसीक इज्जति भेटैत छनि आ जहल जयबाक ओइ सार्टिफिकेटकेँ हरिश्चन्द्र चौधरी सभ बोटमे भजबैत छथि । खाली बलुआहीक लोक नहि मोजर दैत छनि ।

बलुआही टोलक बाद छैक पीपरपाँती । कहियो पतियानीसँ पीपरक गाछ रहल होयतैक, आब एक्को टा नहि छैक । तैयो टोलक नाम छैक पीपरपाँती । लाठीमे ई टोल बेश मजगूत । बलुआही टोलवलाकेँ खेहारिकऽ घर घुसा दैत छनि । रामौतार आ हुनकर देयादसभकेँ दस बीघा जोत छनि, ताही बलेँ पीपरपाँतीकेँ जाँतिकऽ रखैत छथि । कखनो मोन-दू मोन अन्न दऽ देलहुँ अगुआसभकेँ, आ कखनो नगदे । बड़ लठियाकुमैतसभ छैक अइ टोलमे । कोनो बात-विचार नहि, एक्के बेर मूर्खक लाठी माझहि कप्पार । आ, जखन चौधरानावलासभ सहका दैत छैक एकरासभकेँ तखन तँ बलुआहीक लोककेँ घर ढुका छोड़ि दैत छनि । वर्षमे दू-एक बेर ई रमन-चमन होइते रहैत छैक ।

पीपरपाँतीकेँ कतबो मदति दैत छैक बलुआहीवलासभ, ओसभ रहैत अछि चौधरानाक कब्जामे । लाठीमे पीपपाँतियोसँ मजगूत छैक चौधराना । जेहने समङगर तेहने लठैत । बेसी लोक पुलिस आ होमगार्डमे छैक । जमीन-जथा आ टाको-पैसामे सुखी । एही टोलक छलाह एकबाली चौधरी । टोलक लाठी हुनके इशारापर उठैत छलनि ।

मुदा, सभ टा लठैं घोसाड़ि देने रहनि नवगामाबलासभ ! एक बेर बान्ह काटि छोड़ि देलथिन लंका मोहनपुरवलासभ । हिनकासभकेँ लाठीक जोरक बड़ दावा । अपनामे कतबो लाठा-लठौअलि होइनि, बाहरवलासँ झगड़ा होइते सभ मिलि-जुलि जाइत छलाह । नवगामावलासभ दोसर पंचायतमे छल । गाम ओकर डूबऽ लगलैक तँ मुखिया एकबाली चौधरीकेँ कहलकनि आ फेर अपने हसेड़ी

बान्हि गाम आबि बान्ह बान्हि देलकनि । ओसभ घूरल जाइत छल कि फेर कोनो मोचण्ड बान्ह काटि देलकै, कहा-सुनी होबऽ लगलैक । लाठी चला देलथिन लंका मोहनपुरक पहलमान गामी मिसर । पीपरपाँतीक छलाह । मारि बझि गेलैक, नवगामावलासभ कम्मे छल, तैयारो भऽ नहि आयल छल, खाली लाठी रहैक हाथमे । ई सभ गड़ाँस भाला लऽ खेहारलथिन । पहिने मारि खा पाछाँ हँटि गेल ओ सभ । मुदा नामी लठैत आ खेलायल रहय ओहोसभ । एक टा गाछीमे छपकि गेल। खेहारैत-खेहारैत लंका मोहनपुरवलासभ गफूरगंज गुमती लग आबि गेलाह । गुमतीसँ पहिने गाछी छलैक बाटक दुनू कात । ओही गाछीमे छपकल छल ओसभ । निकलिकऽ नीक जकाँ थूरि देलकनि । गामी मिसरक माथा खण्डी-खण्डी, चतुर्भुज चौधरीक हाथ टूटल । आ, पीठ आ देहपर लाठीक मारि कतेको गोटेकेँ । चुमकीसँ मारि ओसभ ससरि गेलनि आ सभ टा लाठी-भाला धयले रहि गेलनि । मामिला-मोकदमा भेलैक दुनू दिससँ । पाँच वर्ष धरि चललैक, से खिस्सा फराके छैक ।

ई पुरना गप्प छैक । तहिया इलाका एतेक बदनाम नहि रहैक । कहिओ आपसमे मारा-मारी भऽ जाइ दू गाममे, तैयो बाट-घाट लोक निश्चिन्त चलय । बटोही, धीयापूता आ स्त्रीगणक जान आ इज्जति सुरक्षित रहैक ।

इज्जति एक बेर माखनोपुरवला लेने रहनि लंका मोहनपुरक । ओहो गाम दोसरे पंचायतमे छलैक । चौधरानोसँ पूब रहैक ओ गाम । जूड़शीतल दिन खरहा मारऽ विदा भेलाह लंका मोहनपुरक लोक । आ, खरहा खेहारैत-खेहारैत गामक सिमान टपि गेलाह लंका मोहनपुरवला आ एक टा खरहा मारलनि । ओइ मुइल खरहाकेँ उठबऽ जहिना बढ़लाह चतुर्भुज चौधरी कि माखनपुरवला उठा लेलकनि ओ खरहा– 'शिकार हमर थिक ।' ओइ मुइल खरहाक टाङ धयलनि चतुर्भुज चौधरि–'शिकार हमरालोकनिक थिक ।' झिक्का-तिरी होबऽ लगलनि । आ, माखनपुरवलाकेँ मारि, खरहा छीनि भगा दैत गेलथिन ।

लगले एक टा बड़का हँसेड़ी बहरयलैक माखनपुरसँ आ खेहारने-खेहारने चौधराना धरि ठेका देलकनि सभकेँ । आब ईहो गप्प पुरान भेलैक ।

चौधराना छैक सभसँ आखिरमे । पुबारि पारक सभसँ पुबारी कात । पीपरपाँतीक बाद छैक किछु गाछी आ खेत । तकर बाद दू टा पैघ सन पोखरि आ पोखरिक पुबारि भीड़पर पसरल चौधराना ! अइ टोलक लोक कहैत छथिन–'हमरालोकनि हवेली मोहनपुरक चौधरीक देयाद थिकहुँ ।' हवेली मोहनपुरमे बेसी लोक से नहिएँ मानैत छनि ।

एकरा भजौलनि हरिश्चन्द्र चौधरी । जहिना चुनावक गप्प भेलैक, झट एकबाली चौधरीकेँ पकड़लनि–'देखू दियाद ! हमरा अहाँमे कोन झगड़ा ? दुनू तऽ एक्के छी । अहीँ चुनि लियऽ । मुखिया आ कि सरपंच ?'

एही पंचायतमे गफूरगंज सेहो छलैक । पन्द्रह सयसँ बेसी लोक– लगभग दू हजार । मुदा ओकर चलऽ नहि दैत छलथिन एकबाली आ हरिश्चन्द्र मिलिकऽ । दुनूक अड्डा साँझमे गफूरेगंजमे रहैत छलनि । पाँच सय लोक रहैक मुसलमान टोलमे । खाँ साहेबकेँ सभ दिन अपना संग बैसबैत छलथिन, संगे चाह-पान । आ, तहिना संग रहैत छलनि साहुजी । माखन साहु नहि, ओकर बाप झमेली साहु । दुनूकेँ मिला लेलासँ पहिल बेर कोनो विरोध नहि भेलनि, दुनू गोटे निर्विरोध चुनल गेलाह ।

आ, हवेली मोहनपुरक लोककेँ कहलथिन हरिश्चन्द्र चौधरी 'पीठ ठोकैत जाउ, पाँच सय वोटपर कमसँ कम सरपंचक गद्दी तऽ हथिया लेलहुँ । महेशकेँ बनयबनि नेता तऽ सेहो नहि हैत । पाँच सय कोन, तीनिए सय बूझू । दू सय तऽ धनुखटोली आ मलहटोलीक लोक अछि एहि पारमे । ओकर नेता तऽ छैक झमेली साहु । जे ओ कहतैक, सैह करैत जायत ।'

मुदा, एकबाली चौधरीकेँ दोसरे बात कहैत छलथिन–'अहाँ देयाद छी, तेँ छोड़ि देलहुँ । अप्पन गामक पाँच सयक अलावा, अहूँक पारक सात सय बोट हमरे थिक । दुसधटोली खतबेटोलीक लोक हमरेसभक जऽन अछि । साहु आ खाँ हमर दोस्ते छथि–ओहो दू हजार भोट हमरे बूझू । मुदा, अहाँ संगे तकर कोन हिसाब ?'

मुखिया एकबाली चौधरी खेलायल छलाह । हरिश्चन्द्र चौधरीकेँ किछु नहि कहलथिन, मुदा गामक लोककेँ बलुआही मैदानक आगाँ बजा कहलथिन–'ई थिक हमरालोकनिक उत्कर्षक प्रारम्भ । हवेली मोहनपुरक लोक सभ दिन हमरालोकनिकेँ छोटहा आ संगतिक अयोग्य बुझलनि । आब समय आबि गेल छैक । हमरोलोकनिमे चाही जागरण– आत्मसम्मानक लेल जागरण । हमरालोकनि कथीमे कम छियनि ? धन-बीत रहनि कहिओ, आब की छनि ! पढ़ल-लिखल छथि, से हमहूँलोकनि पाछाँ नहि रहब । आब असल ताकति होइत छैक लोक आ ओकर वोटक । अहाँलोकनि हमर संग रहू, देखा देबनि हवेली मोहनपुरवलाकेँ ।'

से ठीके, दुनू पारकेँ देखा देलथिन एकबाली चौधरी । देखिते-देखिते एकबाल बढ़ैत गेलनि, पहिने ठीकासभ भेटलनि, छोट-छोट सड़क मरम्मतिक, फेर बड़का-बड़का ठीका । अपन पुरना घर बिला गेलनि आ पैघ सन अटारी ठाढ़ कऽ लेलनि ।

ओना, बोलीक बड़ मधुर छलाह एकबाली चौधरी । हाथ जोड़ि सभकें कहैत छलथिन–'ककरा लेल करैत छी हम ! अहीं सभक लेल ने ! जाहिसँ अहूँ सभक इज्जति बढ़य, इलाकामे किछु कहबी । की छनि हवेली मोहनपुरवलाकें जे सभ मान-प्रतिष्ठा हुनकेलोकनिक हेतनि ?'

लोककें नीक लगैत छलैक । हवेली मोहनपुर द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी उपेक्षित होइत रहल छल ओसभ । एतेक टा गाम छलैक, मुदा अपना पारमे किछु नहि छलैक । एक टा भगवानक मन्दिरो टा नहि । कमलामे स्नानक बाद नावपर धार पार कऽ ओइ पार राधाकृष्ण आ महादेवक दर्शन करऽ जाय पड़ैत छलैक । आ, ओइसभ उत्सवमे लंका मोहनपुरक लोक राड़-रोहियाक संग पाछाँ बैसैत छल, ठाढ़ रहैत छल । शामियानामे आगू सतरंजीपर हवेली मोहनपुरक लोकसभ आ पाछाँ घासपर लंका मोहनपुरक लोक, तकर पाछाँ आन जातिसभ । बड़ अखरैत छलैक ओइसभकें बादमे । पुरखालोकनि तँ हवेली मोहनपुरक लोककें 'सरकारे' कहैत छलथिन ।

पहिल जोर लगौलक पोस्टआफिसक बेरमे । पहिने पोस्टआफिसकें घीचिकऽ हरिश्चन्द्र चौधरी हवेली मोहनपुर लऽ गेलाह । पोस्टमास्टर भेलथिन हुनके पितिऔत–बल्लू चौधरी । आ, बल्लू चौधरी डाकबाबूक नामसँ विख्यात भऽ गेलाह । डाकबाबूक शान लगले ततेक बढ़ि गेलनि जे लोक अवाक् ! जथा-पात तँ सभ बिका गेल रहनि पहिनहिँ, पोस्ट आफिससँ कहुना गुजर होयतनि से देखि लोक विरोध नहि कयने रहनि । मुदा, देखिते-देखिते डाकबाबूक शान तेहन बढ़ल जे लोक अवाक् ! अधिक काल लोककें सुनाकऽ हुनकर भाउज कहथिन–'आइ कोनो इन्तजाम नहि भऽ सकलनि । जलखैमे खाली सेव आ किसमिसे देलियनि आ एक गिलास दूध ।' तेसरा दिनपरकें पेठियासँ ललमुहाँ रऽहु आबि जाइनि आङनमे ।

मुदा, ओइ दिन पुलिस आबि गेलनि । ओइ पारक बेसी लोक परदेसिया छल– कलकत्ता, सिल्लीगुड़ी, आसाम रहैत छल आ सभक मनीआर्डर अबैत छलैक । मासक मास ओकर परिवारसभकें पाइ नहि भेटलैक तँ हल्ला मचलैक । जाँच भेलैक आ डाकबाबू पकड़ल गेलाह । डाकबाबू मस्त लोक छलाह । जाइत काल कहलथिन–'हमरा अपना लेल चिन्ता नहि अछि । हम तँ भितरो मौजे करब ! मुदा ईलोकनि जे छथि, हमर भैयारी आ परिवार, हिनकर की हेतनि ? मुफ्तक टाकापर मौज उड़यबाक आदति जे लागल छनि !'

बादमे सभकें माया भेलैक डाकबाबू लेल । बेचारे अनके लेल जहल गेलाह । मौज आ गुलछर्रा सभ भाइ उड़ौलनि । घूरिकऽ देखहु नहि जाइत छलथिन जहलमे ।

आ, मौकाक फायदा उठौलक लंका मोहनपुरक लोक । डाकघर उठाकऽ अप्पन पार लऽ गेल । आब बड़का साइनबोर्ड लटकौलक– पोस्ट आफिस, मोहनपुर पछबारि पार । मुदा डाकखानाक मोहर एखनो पुरने छलैक–हवेली मोहनपुर । ओ नहि बदलि सकलैक ।

पोस्टआफिसक जगह फेर बदललैक । दोसरे चुनावमे हरिश्चन्द्र चौधरी चालि चलि देलथिन–एम्हर दियाद-दियाद करैत रहलथिन आ ओम्हर झमेलीसाहुकें मुखियामे ठाढ़ करबा देलथिन । एकबालियो पाछाँ रहऽबला नहि छलथिन । सरपंचमे ठाढ़ करा देलथिन खाँ साहबकें ।

फेर दुनू फेरामे पड़ि गेलाह । झमेली आ खान दुनू कहऽ लगलनि–'सभ चीज अहीं सभ बाँटि लैत छी आ गफूरगंजक लोक मुँह देखैत रहऽ ? से नहि हैत आब । पंचायत आफिस ओतहि, पोस्ट आफिस आ हेल्प सेन्टरो ओतहि ।'

कहुना दुनूकें परतारलनि एकबाली ! पोस्ट आफिसक नवका घर गफूरगंजक लगमे लेल गेलैक, एकदम गुमतीसँ सटिकऽ पूबे । पंचायतक भवनो बनलैक गफूरेगंजक लगमे आ तकरे सटल हेल्थसेन्टरक भवनक शिलान्यास भेलैक ।

खान साहेब मानि गेलथिन– हरिश्चन्द्र चौधरी सरपंच आ उप-सरपंच खान साहेब । मुदा झमेली साहुक बेटा मक्खन बड़ बखेड़ा कयलकनि । ओ टाका-पैसावला छल । ओकर बाप मुखिया बनैक, ताहि लेल जोर लगौने छल ।

तखन हरिश्चन्द्र चौधरी देलथिन घोड़किल्ली–'नेना छऽ माखन ! नहि बुझैत छहक राजनीति ! तोहर बाप हमरालोकनिक मित्र छथि तें कहैत छियऽ । नहि मानबऽ तऽ ठाढ़ कराकऽ बेइज्जत करा लहुन । तोरा जँ भ्रम होअऽ जे दुसधटोली, खतबेटोली, धनुखटोली आ मलहटोलीक वोट तोरा भेटतऽ तऽ भ्रम छऽ । ओसभ हमरेसभक पट्टीदारक जन अछि, एकोटा वोट तोरा नहि देतह । खान साहेबो तोरा धोखे देथुन, एक्को टा मुसलमानक वोट तोरा नहि भेटतह ।'

मक्खन साहु डेरा गेल । बापकें बैसा लेलक ।

सेहो पुरना बात भेलैक आब । आब परिस्थिति बदलि गेल छैक । एकबालीक खिलाफ आब लंके मोहनपुरमे बाजऽ लागल छनि–'की कयलनि एतेक दिन मुखिया रहि— खाली अपन कोठा पीटि लेलनि ! इलाकाक कोनो उपकार भेलैक ? अइबेर शिबू ठाढ़ हैत ।'

शिबूक घर बलुआहीमे छैक । बलुआहीक लोक आब बेस पढ़ि-लिखि

गेल अछि । दू टा इंजीनियर, एक टा डाक्टर आ तीन टा ओकील । ढौए-ढाकी किरानी सभ । आन कोनो टोलमे एतेक पढ़ल-लिखल लोक नहि । रामौतार मिसरक परिवार नहि पढ़ि सकलनि, मुदा सर्वेसर्वा वैहसभ छलाह । हुनके पोता छलनि शिबू। महेश मास्टर सनकौने छलथिन बलुआहावलाकेँ–'पढ़ल-लिखल तोँसभ, धन-बीत तोरालोकनिकेँ, आ मुखिआ होथि एकबाली !'

बलुआहीवलासभ जोर लगौलक । पीपरपाँतीकेँ फोड़लक किछु लोक । गाममे काज शुरू कयलक । बालुपर सभकेँ बजा टोलक सभ पढ़ल-लिखल बेराबेरी भाषण कयलक । चन्दा असुललक आ एक टा मन्दिरक निर्माण कयलक। आब ओइ पार नहि जायत कोनो लोक । एही पार दुर्गोपूजा हैत, नाटक हैत, मेला लागत । आ सभक अगुआ भेल शिबू । पीठपर छलथिन डाक्टर, इंजीनियर आ प्रोफेसर । शिबू मैट्रिकेमे फेल भऽ गेल, मुदा रहय बड़ जाबिर लोक ! ओकरा लेल कोनो काज कठिन नहि । सौँसे बलुआही डेराइ ओकरासँ । सभ सोचलक–एकरे नेता बना दे, टोल सुरक्षित रहत ।

असुरक्षित भऽ गेलाह एकबाली । अपनो टोलमे किछु-किछु विरोध होबऽ लगलनि । भातिजे छलनि नरेश । ओ हरदम चक्कू संग रखैत छल । इलाका डेराइत छलैक । मुखियाक गद्दी लेल ओहो उम्मेदवार छल ।

आ, सभसँ बड़का उम्मेदवार छल तेजू । हवेली मोहनपुरक लोक तँ नहि, मुदा मास्टर महेश खूब सहकौने छलथिन ओकरा । पीठपर छलथिन मिहिर आ नारायण–'टाका-पैसाक परवाहि नहि, जे खर्च हैत, देब । मुखियाक गद्दी अइ पार आबक चाही, चाहे जेना हो ! लंकाटोल एतेक वर्षसँ गद्दी हथियौने अछि, सरपंची हाथमे लऽ हरिश्चन्द्र चौधरी गाम भरिकेँ ठकैत छथि ।' मिहिर आ नारायण लंकाटोलक बहुत रास हीरोसभकेँ नौकरी देऔने छलथिन, तकरे भरोस छलनि जे ओइ पारक बोट बाँटि लेब । तेजू खूब उत्साहमे छल–भगवतीक कृपा एकरे कहैत छैक ! सभ दिससँ मदति भेटि रहल छलैक । कमलाक कनियाँक सेहो, आ मिहिर आ नारायणक सेहो ! संगीक सङ-सङ भैयारियो छलैक दुनूक ।

दुनूक मंसूबा मुदा किछु आर छलैक । तेजूक अऽढ़मे अपन क्षेत्र तैयार करऽ चाहैत छल । दुनू अफरात टाका कमा लेने छल । आब राजनीतिक प्रश्रय आ प्रभुत्व चाहैत छल । मुदा, नौकरी छोड़बासँ पहिने स्थिति खूब मजगूत कऽ लेबऽ चाहैत छल । तेँ आगू कयने छलनि मास्टर महेश आ तेजूकेँ । सभ टा टाका ओही दुनूक छलैक ।

बुद्धि आरो लोकसभ लगौने छल । तिवारीजी दुसधटोली आ खतबेटोलीमे घूमि कम्युनिस्ट उम्मीदवार लेल क्षेत्र तैयार कऽ रहल छलाह । मलहटोली आ धनुखटोलीमे हुनकर अड्डे रहैत छलनि । अपने घरक सुखी छलाह तिवारीजी । समस्तीपुर लग घर रहनि, बेस सुखितगर लोक । मजदूर आ जनकेँ अपन कब्जामे रखैत छलाह । एहू गाममे यैह धन्धा करैत छलाह । घूमि-घूमि सभक कान फुकैत छलथिन, बेर-कुबेर टाको दऽ दैत छलथिन पैँच-उधार !

मुदा, हिनकासँ बेसी यादवजीक प्रभाव छलनि अइ टोलसभमे । एखनो एक्को टा पढ़ल-लिखल लोक नहि छलैक अइ टोलसभमे । यादवजीक बात सुनैत छलनि अबस्स, मुदा ककरो आगू बढ़बाक साहस नहि छलैक ।

आगू बढ़ल छल गफूरगंजक लोक । ओतऽ यादवजीक चलती रहनि । सभकेँ अपनामे मिला अगिला चुनाव लेल झमेली साहुक बदला मक्खन साहुकेँ तैयार कयने छलाह यादवजी । आ, लंका मोहनपुर आ हवेली मोहनपुरक ब्राह्मणेतर लोकक टोलमे हुनकर प्रयास जारी छलनि ।

एकबाली चौधरीकेँ सभ खबरि छलनि । लोक आ समयकेँ चिन्हबामे ओ माहिर छलाह । एहन सन क्रम बनौने छलाह जेना किछु बुझले नहि होइनि । सभ ठाम, सभ अवसरपर एक्के बात कहैत छलथिन–'आब बहुत भेल । नवो लोककेँ भार लेबऽ दियनु ।'

भरि गाम अपन समर्थक द्वारा प्रचार करबा देने छलथिन–एकबाली अइ बेर नहि ठाढ़ होयताह ।

गेनमा मुदा ठाढ़ भऽ गेलनि–सेहो तनिकऽ ।

साफ कहलकनि–'हमरा बुते नहि होत मालिक ! कोनो दोसर जन ताकि लू ।'

तामसे थरथरा उठलाह मास्टर महेश–'तोहर एहन मजाल ? काज नहि करबें ? कोनो बेगार कहै छियौक ?'

गेनमा तैयो अड़ल रहल–'बेगारे तऽ भेल । बोनि वास्ते तीन दिन दौड़त हमर जनानी आ बोनिक सत्ती सभ चौल करतैक ओकरा संग ।'

—'ओ ! तऽ ई बात छैक ! आब तोहर कनियाँकेँ किछु ने कहतौक क्यो ! बड़ महतमानि भेल छौक ! एना हँसी-मजाक तऽ होयबे करैत छैक । पूछि ले अपन मायेसँ ? कीसभ ने कहैत छैक लोक !' महेश कने पैतरा बदलैत कहलथिन ।

मुदा गेनमा अड़ल छल—'खाली सेहे बात नहि हय मालिक ! समयपर बोनि नहि मिलत तऽ खयबै की ? कमाउ तीन दिन, बोनि भेटत एक टा, सेहो पुरना साबिक रेट ! हमरा तऽ जहाँ अधिक मजूरी मिलत, समयपर बोनि देत, ऊहेँ कमायब ।'

महेश बाबूक क्रोध बेसम्हार भऽ गेलनि—'देखै छिऔ हमहूँ जे के काज दैत छौ हमरा अछैत अइ गाममे आ कहाँसँ बोनि लबैत छेँ ? सभ टा रड़पनी घोसाड़ि दैत छिऔक हमहूँ । पहिने हमर घराड़ी खाली कर ।'

गेनमा निडर भऽ कहलकनि—'अहाँक घराड़ी केहन ! ई घराड़ी तऽ हमर हय । चारि पुस्तसँ अही घराड़ीपर छी, के हटाओत अइपरसँ हमरा ?'

महेश बाबू ओकर निडर अभिव्यक्तिसँ चौँकैत कहलथिन—'ओ, तँ ई आब तोहर भऽ गेलौ ! तिवारीजी आ यादवजी बाजि रहल छथि ! आ ई जे घराड़ीक संग बड़की टा बाड़ी छैक, से ककर छैक ? सर्वेवलाक कैम्प लगले छैक स्टेशन लग । कने यादवजीक संग पूछि आ, जे नक्सा कोना कटल छैक ?'

गेनमा दौड़ले गेल सर्वे कैम्प । कागज देखि कहलकै—'तोहर घराड़ीक नक्सा काटि देने छियौक । मुदा बाड़ी छौक सात कट्ठा । से तऽ हुनके नाम छनि। ई कोना हेतौक तोहर ?'

गेनमा शंका कयलकै—'आ कब्जा जे हय हम्मर !'

सरकारी आदमी कहलकै—'ताहिसँ की हेतौक ? तोरा बटाइ छौक ओ । जमीन तऽ हुनके छनि— लालबाबूक । बिना हुनकर लिखने किछु ने हेतौक ।'

गेनमा दौड़ल गेल हवेली । लालबाबूकेँ कहलकनि—'कने चलिकऽ सरबे आफीसमे बोलि दिऔक मालिक ! हम तऽ अहीँक प्रजा छी ।'

लालबाबू कहलथिन—'सर्वे आफिस जयबाक कोन काज ? तोँ टाकाक इन्तजाम कर ! सातो कट्ठा जमीन तोरे लिखि देबौ । अनकासँ बेसी लेबै, तोरासँ साते हजार । घराड़ीक जमीन हजार रुपैए कट्ठा क्यो देतौ अइ गाममे ?'

गेनमा आसमानसँ खसल—'सात हजार ! एतना टाका सातो पुस्त नहि

देखलक मालिक ! हम कहाँ से लायब ? अहाँके लेल तऽ किच्छो ने हय ई सात कट्ठा । सभ दिन नाम लेब अहाँक ।'

लालबाबू कहलथिन—'तोहर नाम लेलासँ हमर आ हमर धीया-पूताक पेट भरत ? टाका जमा कर, तखन बात करिहैँ ।'

गेनमा जाइत-जाइत कहि गेलनि—'ई अहाँ न्याय नहि कऽ रहल छी । गरीबक पेटपर लात नहि मारियौक ।'

रवि दुनू गोटेक गप्प सूनि रहल छल । लालकाकाक कोनो बातपर आश्चर्य कयनाइ आब ओ छोड़ि देने छल । तैयो गेनमाक संग हुनकर बात सुनि बड़ आश्चर्य भेलैक ओकरा । अपने घराड़ी लेल सात हजार टाका ! ई तँ भारी अन्याय होयतैक । गेनमाक मायकेँ ओ चिन्हैत छलैक, मुदा गेनमाकेँ नहि देखने रहैक । ओकर जेठ भाइसभकेँ चिन्हैत छलैक । जेठके भाइक नामपर सभ कहैत छलैक— यदुआ माय । गेनमा माय क्यो नहि कहैत छलैक । गेनमाक गेलाक बाद रवि पुछलकनि—'ई के छल लालकाका ?'

लालकाका कने अनिच्छासँ कहलथिन—'वैह यदुआक भाइ गेनमा— खतबे टोलीक । एकर मायकेँ देखने हेबहक । सभक अङना अबैत छलि चिपड़ी पाथऽ ! तकर बेटाक गप्प सुनलह आइ, पेटपर लात मारबाक गप्प कऽ गेल दरबज्जापर आबि । जमाना जे नहि देखबय !'

रविकेँ नीक लागल छलैक गेनमाक गप्प । गाममे पहिल बेर सुनने छल कोनो पिछड़लवर्गक लोकक मुँहे एहन गप्प । ओकरा लागल रहैक जे गाम ओतेक स्थिर आ ठमकल नहि छैक, जतेक बुझने छलैक । कतहु-ने-कतहु कोनो नव चेतना सुगबुगा रहल छलैक ।

मुदा ओइ सुगबुगीकेँ तुरत दबा देबऽ लेल महेश मास्टर कटिबद्ध छलाह । संग दऽ रहल छलथिन लालकाका । रविकेँ एक बेर लगसँ खतबेटोलीकेँ देखबाक इच्छा भेलैक ।

ओही दिन धार टपि गेल रवि आ टहलैत खतबेटोली दिस गेल । चौदह-पन्द्रह वर्षक बादो कोनो परिवर्तन नहि भेल छलैक । ओहिना छलैक टोल । छोट-छोट घर मोस्किलसँ तीन-चारि हाथ ऊँच आ पाँच-सात हाथ लम्बा । सटले-सटल घरसभ । सम्पन्नता आ विभवक कतहु कोनो लक्षण नहि । सर्वत्र अभाव आ दरिद्र्य पसरल । पोआरक नारसँ छारल घर आ टाटसँ हुलकी दैत घरक

द्ररिद्रता । सभ घरपर लत्ती-फत्ती पसरल । माल-जाल कतहु नहि एको टा । धीया-पूता खोलिकऽ चरबऽ लऽ गेल छलैक प्राय: । टोलमे धूरामे ओंघराइत नाङट नेन्नासभ।

यदुआ-मायक घर रविकेँ देखल छलैक । ओम्हरे जाय चाहलक ओ। दिनुका समय छलैक । ओकरा टोलमे अबैत देखि बाहर बैसल किछु स्त्रिगण-पुरुष अपरिचित दृष्टिएँ ताकऽ लगलैक । ओ सोझे यदुआ-मायक घर दिस बढ़ल ।

किछु दूरेसँ घोंघाउज सुनऽमे अयलैक । यदुआ-मायक आङनमे कोनो बातपर भारी विवाद ठाढ़ छलैक ।

–'सभक जड़ि तोही छेँ गेनमा ! बहुक कहलापर महेश मास्टरसँ राड़ि ठाढ़ कयलेँ !' —एक टा पुरुष-स्वर ।

–'कहिओ हमरो सभक जुआनी रहलै । हवेलीमे हँसी-ठट्ठा कऽ दैक लोक ! कहाँ कहिओ बतंगड़ ठाढ़ भेलैक ?' –एक टा नारी-स्वर ।

–'एक टा यैह महासुन्नरी छै ! हमरासभ तऽ कोनो काजक रहबे ने करिऐक कहियो ! के देखतैक हमरा सभकेँ ?'–एक टा दोसर स्त्री-स्वर ।

पुरुष-स्वर फेर कहलकै–'हम तऽ साफ कहै छिऔ गेनमा ! हम महेश मालिकक पयर पकड़ि लेबैक, लालबाबूक पयर धऽ मना लेबनि । हमर हिस्सा दू कट्ठा छोड़ि देताह ।'–ई यदुआक स्वर छलैक ।

एक टा दोसर पुरुष-स्वर सेहो वैह बात दोहरौलकै–'हँ भाइ ! आर कोनो उपाय नहि । खाली बाड़िएक गप्प नहि छैक ! बोनि-बुतात बन्न करबा देताह ! हम तऽ पैर पकड़ि माफी माङि लेबनि । की परबोधन, तोही कह ।'

तेसर पुरुष-स्वर–'हँ भाइ ! सैह करह ! गेनमा अनेरो झंझटि बेसाहि लेलक । चल रे गेनमा ! तोहू चल । माफी माङि लिहैँ, बात खतम भऽ जयतौक !'

–'हर्गिज नहि ! हम नहि पकड़बै ओकर पैर ! काज करा बोनिमे कटौती करतैक ओ, हमरासभक जनीजातिकेँ बेइज्जति करतैक ओ, आ हमही माफियो मङबैक ? ई हमरा बुते नहि हेतैक ।'

–मानि जो बौआ ! तोहर बड़का भाइसभ ठीके कहै छौ । माफी माङि बात खतम कर । इहो कोनो झगड़ा-फसादक गप्प हइ ! एना तऽ हेबे करै हइ हवेली-ड्यौढ़ीमे । हरिश्चन्द्र बाबू आ बिराज बाबूक पट्टीक जनकेँ पूछि लौक ! सभजग एहिनती होइ छै, एकर क्यो बतंगड़ करै हइ !'

गेनमा तैयो अड़ल छलै–'सभ सहै छै तेँ हमहूँ सहबै ? लऽ लेतै बाड़ीक जमीन, तऽ लऽ लौ । हाथ-पयर तऽ हय ! ई तऽ नहि काटि लैतै क्यो !'

बुढ़िया फेर बुझौलकै–'ई नट्टिन मौगी तोहर दिमाग खराब कऽ देने हउ ! हाथो-पैर काटि लै छै, तोँ नहि देखने छही गेनमा ! अप्पनसभक मालिक दयालु हइ, कने हँसि-बाजि लेलकै तऽ की भेलै ! फसाद नहि ठाढ़ करऽ बौआ !'

गेनमा नहि मानलकै— 'तऽ जाउ तीनू भाइ, लिखा लौक अप्पन-अप्पन हिस्साक जमीन ! हम बिना बाड़िए रहि लेबैक, मुदा ओइ बदमाससँ माफी नै मङबै जे हमरा आरकेँ बहु-बेटीक इज्जतिपर आँखि राखत ।'

रवि आङनमे आबि गेलैक । सभ हड़बड़ा गेलैक ! यदुआ-माय लग अबैत कहलकै–'बौआ, अहाँ गेनमाक बातक ध्यान नहि देबै बौआ, ई एहिनती बड़-बड़ करै हय । आउ ऐन्ने, अइ चटकुन्नीपर बैसू बौआ !'

रवि कहलकै–'नै, बैसबौ नहि अखन ! गेनमा, तोँ हमरा संग चल !'

सभ डेरा गेलैक । यदुआ-माय नेहोरा करऽ लगलैक–'माफ कऽ दिऔ मालिक, नै बुझै हय अखन !'

रवि बीचेमे टोकैत कहलकै–'नै गै, से बात नहि छैक । गेनमा तोँ हमरा संगे आ ।'

गेनमा ओकरा पहिने कहिओ देखने नहि छलैक, ओकरासँ छोटे छलैक । रविक स्वरसँ आश्वस्त होइत कहलकै–'चलू मालिक !'

रवि ओकरा सर्वे-कैम्पमे लऽ गेलैक । ओतऽ तैनात कर्मचारीकेँ जाइते कहलकै–'सर्वेक नामपर एहन अन्हेर नहि करियौक । गरीबक बाड़ी-झाड़ी किएक छीनैत छिऐक अहाँसभ ? पुस्त-दर-पुस्त भोग कयलक आ आब कहैत छिऐक जे एकर नहि छैक ?'

कर्मचारी किछु नहि बुझलकै । ओ रविकेँ नहि चीन्हैत छलैक । जमीनक नम्बर आदि किछु नहि कहि सकलैक रवि । सभ टा बात बूझि कहलकै–'अहाँ लालबाबूक भातिज छियनि ? मुदा लालबाबू आ महेशबाबू तऽ सभ टा कागज देखा नक्शा बनबौने छथि । कागजक बातमे हम की करब ?'

रवि ओहिना तमसायले मुद्रामे कहलकै–'अहाँ नहि किछु करब तऽ हमही करब । हमरो जमीन अछि ओ, सभ टा लीखि देबैक एकरासभकेँ ।'

कर्मचारी किछु धकचुकाइत ठाढ़ रहलैक । फेर कहलकै–'अहाँ सत्ते लालबाबूक भातिज छियनि ?'

–'एकर मतलब ?' रवि कने बेसी तमसाइत कहलकै ।

ओ सर्वेकर्मचारी कहलकै–'तमसाउ नहि अहाँ । हमसभ तँ पछिलो बेर मासक मास कैम्प रखने रही । अहाँ-पारक सभ जमीन-जथाक नक्शा बनौलहुँ । मुदा, हमरा आश्चर्य भऽ रहल अछि । लालबाबू तऽ हमरासभकेँ कहने छलाह जे हुनकर जेठ भाइ निस्संतान मुइल छलथिन । सभ टा जमीन अपना नाम करबा लेने छथि ओ ।'

लालकाकाक बातपर आश्चर्य कयनाइ छोड़ि देने छलनि, मुदा ओइ कर्मचारीक बात ओकर मोनपर बज्र जकाँ खसलैक आ किछु क्षण धरि कोनो बोल नहि बहार भेलैक ओकर मुँहसँ । किछु काल बाद अपनाकेँ सम्हारैत रवि कहलकै–'सूचना लेल धन्यवाद ! हम हुनक ओही भाइ निस्संतान राम चौधरीक बेटा छी–रवि ।'

गेनमाक संग रवि घूरि गेल । गेनमाकेँ विदा करैत कहलकै– तोँ चिन्ता नहि कर गेनमा ! तोहर बाड़ी-झाड़ी तोरे रहतौक । मुदा एखन तोँ जो । बादमे भेँट करिहेँ ।'

रवि हवेली मोहनपुर दिस बिदा भेल । लालकाका आ काकी एतेक नीचाँ उतरि गेलथिन ! ओकर जीवित घूरि अयलाक दुखसँ ओइ दिन लालकाकी हिचुकि-हिचुकि कनैत रहथिन । लालकाका सरकारी खातामे अपन भाइकेँ निस्संतान घोषित कऽ चुकल छथि । रवि तैयो किएक रूकल अछि गाममे ?

घर आबि लालकाकाकेँ कहलकनि— 'हम सोचैत छी जे फेर किम्हरो चल जाइ लालकाका ! एना बैसल-बैसल मोन नहि लगैत अछि ।'

लालकाका ओकर प्रश्नपर चौँकलथिन आ अपन असल भाव नुकबैत कहलथिन–'एतेक दिनपर अयलह आ फेर लगले चल जयबह ! किछु दिन आर रहि जा ।'

किछु दिन आर रहि जा । बस्स ! लालकाकाकेँ कोनो रोक नहि छनि । रवि जा सकैत अछि । क्यो नहि रोकतैक ओकरा ।

–'किछु दिनक बाद किएक ? आइए चल जाइ ! गामक लेखे तँ हम मरिए गेल छी !'

लालकाका रोकैत कहलथिन–'एना जुनि बाजऽ ! मरथुन तोहर दुश्मन । तोरा तऽ अशेष अरुदा छऽ । नहि मोन लगैत छह तऽ किछु दिनक बाद चल जैहऽ । गाममे छैक की राखल ?'

लालकाका ओकर जयबाक बात बेर-बेर दोहरा रहल छलथिन । रवि तखन स्पष्ट कहलकनि–'हमर रहब आ जायबसँ कोन अंतर पड़ैत छैक आब ? अहाँक भाइ तँ निस्संतान मुइल छलाह लालकाका !'

लालकाका खूब जोरसँ चौँकलाह । किछु क्षण कोनो बाते नहि फुरयलनि । फेर लग आबि पीठपर हाथ रखैत कहलथिन–'तोरा अबस्से क्यो कान भरैत छऽ रवि ! अइमे तामस करबाक कोनो बात नहि छैक । जखन बारह वर्ष धरि नहि घुरलह तोँ, तऽ लोकसभ श्राद्ध करबा लेल विवश करऽ लागल । भाइकेँ नहि कहलियनि जे दुख हेतनि । मुदा तोहीँ कहऽ, की लिखबितिऐक ? तहिया के जनैत छल जे तोँ चौदह वर्षक बाद एना घूमिकऽ गाम आबि जयबह ? भाइ निस्संतान मुइला, से लिखायब छोड़ि आर उपाये कोन छल ? तोहर अमंगलक कामना करबह हम, तेहन पतित नहि भेल छी अखनो...'

लालकाका कनबाक चेष्टा करऽ लगलथिन !

यदुआ-माय सेहो चेष्टा कयने छलि ।

रविबाबूक संग गेनमा चल गेलैक आ अङनामे रहि गेलैक तीनू जेठका बेटा आ ओकरासभक आङनवाली । फेर झगड़ा मचि जैतैक मौगिआही, मुदा तीनू भाइ अपन-अपन आङनावालीकेँ लेने गेलैक आ आङनमे रहि गेल खाली यदुआ-माय आ गेनमा-बहु ।

यदुआक माय अपन पुतहुकेँ बुझौलकै— 'तोरे नीमन लेल सभ कहलकौ ! एना क्यो सहकबै हय अपन मरदकेँ ! क्यो किछु बोली देलकौ वा हाथे लगा देलकौ, तऽ गलि नै गेलौ तोहर देह ?'

गेनमाक बहु कने आँखि विस्फारित कऽ अपन सासुक मुँह देखऽ लागलि । यदुआक माय फेर बुझौलकै–'ई तऽ तेना आँखि चिआरिकऽ देखि रहलि हय जेना हम कोनो बड़ अधलाह बात कहने रहिऐ ! गय, एक दिन हमहूँ तोरे सन रही गामक

पुतहु । तोरे ससुरक पँजरामे सटकल सूतल रही कि मालिकक लठैत अयलैक आ उठाकऽ लऽ गेलैक । एकर ससुर तेना काछि लेलकैक जेना निभेर सूतल होइ ! भोरुकबासँ पहिने जखन फेनू ओहिना पँजरामे आबिकऽ सूति रहलिऐ तैयो ओहिना कछने पड़ल रहै एकर ससुर । कहिओ पुछबो ने कयलक जे के उठाकऽ लऽ गेल रहौ तोरा ?'

गेनमाक बहु आरो अवाक् ! की-की बाजि रहलि छलैक ओकर सासु ? केहन निर्लज्जी जकाँ ! एहनसन क्रम जेना क्यो उठाकऽ मन्दिरमे लऽ गेल होइ आ पूजा कऽ घूरि आयलि हो !

यदुआक माय ओकर ओ दृष्टि नहि देखलकै, अपने धुनिमे कहैत गेलैक-'आ हमहीँ किएक, आरो कतना गेल होतै एहिनाती, मुदा तोरा जकाँ अपन घरबालाकेँ जान मरबा देबाक तऽ क्यो नहि चरित्तर रचने छलै । तोरे तऽ बड़की गोतनी हउ-इहे यदुआक बहु । जुआनीमे तोरा से बेसी पानी रहलै चेहरापर । ओकरा तऽ हमहीँ पहुँचा देलिऐ हवेली । ककरो घरबाला कहिओ कोनो फसाद नै कयलकै । पूछि ले जाकऽ सौँसे दुसधटोलीमे ! एहन छोट बात ले' कोइ कयने हय एहन फसाद आइ ले ? घराड़ी-बाड़ी जेतौ, बोनि-रोजगार नहि भेटतैक गेनमाकेँ, भूखे मरबेँ दुनू परानी ! तखनी के पुछतौक ? आइ हवेलीक लोक पुछै हउ, काल्हि रस्तो के लोक नहि पुछतौ । अखनियो चेति ले ।'

आब गेनमाक बहुकेँ नहि रहल गेलैक । जोरसँ बाजि उठलै-'बस्स करौ अपन उपदेश ! लिहाजे हम चुप्प छिऐ तऽ जे मोनमे आबि रहल छै, बकने जाइ छै। हम कोनो रण्डी-बेसवा छी जे जकरा आगू ई कहतैक, उघारिकऽ पसरि जयबै ! लाजो ने होइ हइ अपन कथा बखानैत ! बुढ़ाड़ियोमे चालि कहाँ छूटल हइ ? अखनो गंदा-गंदा बात कऽ रस लै हइ, सेहो नवका छौंड़ा सभसे ! एकरा कोनो गत्तरमे लाज नहि हइ तऽ सभ अपन लाज बेचि देतै ? हम तऽ भूखे मरि जयबै, मुदा जे आँखि उठा तकतै, तकर आँखि फोड़ि देबै ।'

'जय हो पतिबरता देवी !' यदुआ-माय हाथ उठा भगल करऽ लगलैक-'कने दौग गय यदुआ-बहु ! दुनू छोटकिओ के लेने आ । देख अपन पतिबरता गोतनीकेँ आ परनाम कर एकरा । हमरासभ रण्डी-बेसबा छी, एगो देवी आयलि हय टोलमे ! सभकेँ बजा लही, दरसन करतै ।'

तीनू मौगी बुढ़ियाक भगल सूनि दौड़लि अयलै आ रण्डी-बेसबाक बात सूनि तीनू एक्के सङ लुधकि गेलैक गेनमा बहुपर-आ लगलै सौँसे देह नोचऽ-'रण्डी तोँ, तोहर माय, तोहर नानी...!'

गेनमा-बहु बचबा लेल संघर्ष करऽ लागलि । मुदा ओइ तीनूक मदतिमे सासुओ आबि गेलैक । पटका-पटकी होबऽ लगलैक । चारू मिलि गेनमा-बहुक मुँह-देह नछोड़ि सोनिते-सोनिताम कऽ देलकै । गेनमा-बहु एकसरि जी-जानसँ संघर्ष करैत रहलि ।

तखने गेनमा घूरि अयलैक । अङनामे मचल झोँटा-झोँटी देखि जोरसँ बमकल-'देखू अइ मौगीसभक तमेसा ! इम्हर जानपर आफत हय आ ईसभ अपनेमे झौहरि आ नोचा-नोचीमे लागल हय !'

सभ थकमका गेलैक । यदुआक बहु आगू आबि कहैत गेलैक-'हम जाइ छी अपन अङना । मुदा बुझा ले अपन पतिबरताकेँ । हमरासभकेँ गारी देत तऽ बेजाय बात हो जेतै ।'

भाउजिसभ अप्पन आङन गेलैक तँ माय आगू अयलैक-'ओकरेसभकेँ नहि, हमरो गारी देलक ई मौगी । कने बुझा दहिक एकरा ! अइ नट्टिनके इशारापर नहि नाच ।'

'चुप्प बुढ़िया' —गेनमा ओकरो डँटलकै । ओकर पित्त लहरल छलैक । सर्वेआफिससँ रविबाबूक सङ निराश घुरल छल । ओकरा कोनो बाट नहि सूझि रहल छलैक । महेश मास्टर बाड़ी-झाड़ी छीनिकऽ रहतैक ।

अपन घरबाली दिस ओकर ध्यान बादमे गेलैक । केश नोचल छलैक आ नूआ-बस्तर खूजिकऽ लटकि गेल छलैक । मुँहपर नछोड़सभ छलैक पैघ । तैयो ओ ओकरे डाँटि देलकै-'बड़ा जुआनी चढ़ल हए एकरा ! सभक सङ कुश्ती खेलाइ हय । माय-भौजीकेँ गारी किएक देलहिक ? एतना हिआब कहाँ से आबि गेलौ तोरामे ?'

बहु कोनो जवाब नहि देलकै तँ ओकरा अपने संकोच भेलैक । कने मोलायम स्वरमे कहलकै- 'जाउ, मुँह-हाथ धो लौक आ नूआ बदलि लौक । ई दू गो टाका हइ, हाटसँ लऽ आनौ जे जरूरी होइ ।'

गेनमाक बहु चुपचाप अयलैक आ गेनमाक हाथसँ टाका लऽ कोठलीमे चल गेलैक । गेनमो अङनासँ बहरा गेल । गेनमा-बहु हाथमे दू टा शीशी लेने बहरायलि आ डेग झटकारने हाट दिस बिदा भेल ।

गेनमा दरबज्जे-दरबज्जे घूमल । सभकेँ कहलकै, मुदा क्यो सङ देबऽ

लेल तैयार नहि भेलैक । उनटे ओकरे बुझबऽ लगलैक सभ-'तोँ नहि बुझैत छहिक गेनमा ! कने शान्त भऽ कऽ विचार । मालिक-गिरहथसँ बिगाड़ कऽ कतेक दिन टिकबै हमरासभ गाममे ? एक्को कोला खेत हय ककरो ? ओहो बीघा-दूबीघा बटाइ के दै हय ? हरवाही-रोपनीमे बोनि के दै हय ? अराड़ि करबै, काल्हिएसँ सभ बन्न। बाड़ी छोड़ियो देतौक दू कट्ठा, तऽ ओइसँ गुजर हेतौक ? रोज-मजदूरी के देतौक ? गाम आ इलाकामे आर काजे कोन छैक ? छोट-छोट बात ले' एतना भारी बबाल नहि खड़ा कर गेनमा !'

गेनमाकेँ क्रोध आबि गेलैक । ओ टोलाक पुरुषक बीच गरजिकऽ बाजल-'ई सभ एकरा छोट-छोट बात कहै हइ ! घरक इज्जतिक बात एकरासभकेँ छोट बात बुझाइत हइ तऽ बड़की गो बात कोन हइ-पेट ? ओकरे भरे लेल सभ अपन-अपन इज्जति दऽ देतैक ? आ पेट की ककरो भरोसे भरै छै ईसभ ? भरोसा तऽ एके टा हइ-अपन दुनू हाथक, अपन ताकतिक । तखन एतेक डेरायल आ अनका कृपापर किएक छैक ईसभ ? मेहनति करबै आ पेट भरबै । बाजौ, सङ देतैक ई सब हमर ?'

एक्को टा बोली समर्थनमे नहि बहरयलैक । गेनमा हताश नहि भेल। फेरसँ कहलकै सभकेँ- 'हम जनैत छिऐ जे ईसभ किएक ने बाजऽ चाहैत छैक ? मुदा चुप्प रहलासँ ई बात रुकतैक नहि । आइ हमर इज्जति आ हमर बाड़ीपर डाका देबेके कोसिस भेल हय, कल तोरासभकेँ होतउ । आ तोँ सभ एहिनती बैसिकऽ चुपचाप तमेसा देखबेँ ?'

तैयो क्यो किछु नहि बजलैक । अपन टोलमे ककरोसँ कोनो मदतिक आशा नहि छलैक, गेनमा बूझि गेल । तैयो हारि मानऽ लेल तैयार नहि छल ओ । ओ अपन टोलसँ उठल आ दुसधटोली दिस चल गेल ।

झलफल अन्हार भऽ गेल रहैक । गेनमा-बहु डेग झटकारने पेठियासँ घुरलि अबैत रहय । एक टा शीशीमे कने किरासन रहैक आ दोसरमे कने कड़ू तेल। नूआक गेठीमे बान्हल कने नोन-मसल्ला रहैक । ओ धड़फड़ायले गफूरगंज बजारक गुमती टपि गेलि रहय ।

गुमतीसँ बलुआही धरि फाँक छलैक । खाली दुनू कात गाछी आ खेत।

सड़क सोझे उत्तर नहि गेल छलैक । पहिने पूब जा किछु दूर, फेर उत्तरे-दक्षिणे भऽ गेल छलैक । अइ बाटे एकसरि जाइत काल गेनमाक बहुक देह बेसीकाल सिहरि जाइत छलैक ।

आर मौगीसभ पाछुए रहि गेलि रहैक । ओ डेग झटकारने गुमती टपि गेलि रहय । बीच बाटमे आबि पाछाँ तकलक तँ कोनो सुगबुगी नहि लगलैक । ओसभ बड़ पाछाँ छूटि गेलि छलैक । हाट-बजारक लोको घूमि गेल छलैक ।

ओ डेग आरो झटकारलक जे कहुना बस्ती लग पहुँचि जाय । फेर कोनो डर नहि । डर एही फाँकामे ! सेहो आर कथूक नहि, खाली लंका मोहनपुरक मनसा सभक । बूढ़-नव सभ एक्के रंग छैक । एकसरि देखिते झिक्का-तीरी शुरू कऽ देतैक । पेठियासँ घुरतीकाल गेनमा-बहु तेँ सभ दिन हेँजेमे रहैत छलि । एकसरि आगू नहि बढ़ैत छलि अन्हार भेलापर । मुदा आइ सभ पाछुए छूटि गेलि छलैक ।

हवेलीक बात एखनो दोसर छैक । ओतऽसँ एखनो अन्हारो भेलापर बोनि लऽ चल अबैत अछि गेनमा-बहु । कोनो-कोनो उकट्ठी छौँड़ा किछु बजबो कयलकै तँ हँसिकऽ अनठा दैत छलैक । ओतऽ डर खाली महेश मास्टरक आ हुनकर दूत-भूतक । ओकरासभसँ साकांक्ष रहैत छलि गेनमा-बहु ।

मुदा, ओइ साँझ जबर्दस्ती करऽ लगलथिन महेश मास्टर । बुढ़ारी बयसोक कोनो लाज-लेहाज नहि । हाथ पकड़ि कोठलीमे खीचऽ लागल छलथिन तँ पड़ाकऽ बोनि-बुता छोड़िकऽ चल आयलि छलि अङना । गेनमाकेँ कहि देने छलैक ।

सासु ओकरेपर बिगड़ऽ लागलि छलैक । गेनमा काजपर नहि गेलैक, महेश मास्टर बिगड़िकऽ आङनसँ चल गेलैक । ओ अबस्से कोनो कुचक्र रचतैक । गेनमा-बहुक हृदय आशंकित छलैक ।

आब लागि रहल छलैक जे अनेरो गेनमाकेँ कहलकै ! चुप्पे रहि जाइत, सैह नीक । एकदम्म सोझेसाझी कहि देलकै महेश मास्टरकेँ । अबस्से कोनो काण्ड करतैक ओ ।

फेर अपन मरदपर गर्वसँ छाती सेहो फूलि उठलैक-'मर्द हय हमर गेनमा ! ने तँ ठीके तँ कहलक हमर सासु ! के चिन्ता करै हइ टोलमे जे ककर हाथ पकड़लकै हवेलीमे आ ककरा घीचिकऽ कोठलीमे ले गेलैक ? दिनभरि कमा-खटा साँझमे मनसासभ ताड़ी पीबि मस्त हो जाइत हइ । मौगीसभ हवेलीसँ बोनि अनै हइ, कुटान-पिसान करै हइ आ रान्हिकऽ मनसाक आगूमे राखि दै हइ । पेट भरिते आ

ताड़ीक अद्धा पेटमे जाइते थाकल मनसा टूटि पड़ै हइ मौगीपर आ फेर निफिकिर हो फोँफ कटै हइ खाली माँटि आ चटकुन्नीसभपर ! मौगीकेँ दुख-सुख कब्ब सुनतैक मनसा ? ओकर इच्छा मरलैक आ निचिन्त हो गेलैक । मौगीसभ साँझ-परात झौहरि करऽ हइ, गारी-गरौज करऽ हइ आ मनसा जखन लग घीचै हइ निशामे बुत्त, तऽ चैनसँ पसरि जाइ हइ ।

गेनमाक बहुकेँ बड़ गर्व भेलैक अपन पुरुषपर–'सत्ते गेनमा ओहन नहि हय ! ओकरा खाली अपने भूख से मतलब नै हइ । ओ हमरो सुख-दुख बुझै हय। ओ जान दऽ देत, मुदा अनका लग उघार नहि होअऽ देत हमरा ।'

अपन सासुपर ओकर घृणा आरो बढ़ि गेलैक–'केहन निर्लज्जी हय बुढ़िया ! अहू वयसमे केहन-केहन बिखिन्न-बिखिन्न हँसी-मजाक करै हइ सभसँ ! हवेलीक पुरुष, चाहे ओ नान्हि गो बच्चे रहै, लल्लो-चप्पो करै लगै हय–अहूकेँ चाही बौआ ! ताकि दू एक गो !'

कखनो कोनो बुढ़बेकेँ पकड़ि लेतै–'कनियाँ मरि गेली मालिक ! बहुत दिन हो गेल । मौगीकेँ मोन होइ हय, ताकि दू अहूँकेँ एक गो ! बुढ़िया से काम चलत तँ एक गो छीहे हम ।'

आ, फेर निर्लज्ज निरघिन हँसी हँसतैक । सूनिकऽ आगि लागि जाइत छैक गेनमाक बहुक देहमे । अधिक काल ओ संगे रहैत छैक आ ओकरा संग रहलापर बुढ़िया आरो सहकाबऽ लगैत छैक छौँड़ासभकेँ ।

आ, ओइ दिन तँ साफे कहि देलकै 'मनसाक पँजरासे उठाके ले गेलैक ओकरा आ मनसा कछने पड़ल रहलैक । अपन बड़की पुतहुकेँ अपने हवेली पहुँचा अयलै ! धन्न है इहो बुढ़िया !'

मुदा, गेनमा बड़ मानै अछि अपन मायकेँ । गेनमाक बहुकेँ नीक जकाँ बूझल छैक । तीनू जेठका बेटा एक्को साँझ खायो लेल नहि पुछैत छैक । छोटका बेटा गेनमा रखने छैक अप्पन आङनमे । कहियो काल कोनो कटनीमे, कोनो मकानक जोड़ाइ लेल गिलेबा उघऽमे बुढ़ियो कमा लैत अछि । मुदा गेनमा भूखल नै रहऽ दै छै बुढ़ियाकेँ । जे कमाकऽ लबै अछि, तीनू गोटे बाँटि-कूटि खा लैत अछि ।

गेनमाक बहुकेँ नहि सोहाइत छलैक बुढ़िया । आइ गेनमो डँटलकै– 'चुप्प रहऽ बुढ़ियो !' आइ धरि माय छोड़ि आर किछु नहि कहने छलैक । बुढ़ियाकेँ लागल हेतैक नीक जकाँ ।

जोरसँ ठेस लगलैक । गेनमाक बहु पयर पकड़ि बैसि गेलि । सोनित बहऽ लागल छलैक । क्यो बाटेपर ईंटा राखि देने छलैक । बहैत सोनितकेँ बन्द करबा लेल बाटपरक माँटि तोपि देलकै बहुत रास आ फेर ऊठिकऽ डेग झटकारलक ।

अपन टोल पहुँचैत-पहुँचैत नीक जकाँ अन्हार भऽ गेल रहैक । आङनमे बुढ़िया पड़लि खोँ-खोँ करैत बीड़ी पीबि रहलि छलैक जकरा भुकभुक आङनक अन्हारोमे देखलकै । कोठलीमे जा ठेकनाकऽ राखल डिबिया तकलक आ ओइमे शीशीक किरासन अन्दाजसँ अन्हारेमे ढारि दियासलाइ जरा डिबिया लेसि लेलक ।

फेर चुल्हि पजारऽ लागलि । भोरे खयलक मनसा । भुखायल हेतैक ! ओ हब्बर-हब्बर करऽ लागलि । आइ कोनो काजोपर नहि गेलै । नहि जानि, किम्हर गेलैक ? तामसे मोन घोर छैक, कोनो काण्ड ने कऽ बैसैक ! ओकर अन्देसा बढ़ल गेलैक जकरा दबा ओ भानस-भात कयलक । मोट-मोट रोटी पका लेलक आ बाड़ीमे दू-चारि टा भाटा छलैक, तकरे तोड़ि पका नोन-तेल दऽ साना कऽ लेलक । गेनमा तैयो नहि अयलैक । सामनेक छोटकी घरमे बुढ़िया एखनो पड़लि खोँ-खोँ कऽ रहलि छलैक । टोलमे पिलुआ वा नेङड़ाक बहुमे गारि-गरौज मचल छलैक आ ताड़ी पीबि बहदुरा अपन बहुएपर बहादुरी देखा रहल छल । मुदा गेनमाक कतहु पता नहि छलैक । गेनमाक बहुक मोन छटपटा रहल छलैक । ओकर ध्यान दुनू मौगीक गारि-गरौज आ बहदुराक घिनौन गारि आ मारिपर नहि छलैक । ओ आशंकापूर्वक गेनमाक प्रतीक्षा कऽ रहलि छलि ।

बड़ी काल बीति गेलैक । गेनमाक कोनो पता नहि छलैक । ओकरा नहि रहि भेलैक । बुढ़िया लग जाकऽ टोकलकै–'ओ' अखनी ले नै घुरल हइ । कने देखे वास्ते भेजौ नै ककरो !'

बुढ़िया कुनमुना उठलैक–'मर ! हम ककरा भेजबै एतना रात के ? एतेक बेगरता हउ तऽ जो अपने । आगि लेसलेँ अपने आ पानी ढारतौ कोइ आर !'

तामसे किछु कहऽ जा रहल छलै गेनमा-बहु कि क्यो दौड़ले आङनमे अयलैक । यदुआक बेटा कलुआ छलैक । दौड़ैत-दौड़ैत हाँफऽ लागल छलैक । ओहिना हफैत बजलैक- 'गेनमा काकेँ बान्हि के रखले हइ ड्योढ़ी के लोक । बहुते आदमी गेलै हय । दुसधटोली से चौकीदारकाका सेहो गेलै हय । कहलकै, चोरी कयले हइ । चलान करतै ।'

गेनमा-बहुसँ पहिने यदुआ-माय छड़पिकऽ बैसि रहलैक–'भेलै एकर

कलेजा ठण्डा ! इहे वास्ते सहकोले रहलै ओकरा ! जो आब, छोड़ा लबहिक ।

गेनमा-बहु सासुक बात सुनऽ लेल अङनामे ठाढ़ि नहि छलै । ओ तँ लगले दौड़लै कलुआक हाथ पकड़ने–'कने आ तऽ कलुआ हमरा जौरे !'

कलुआ ओकर सङ दौड़लैक । गेनमाक बहु बताहि जकाँ दौड़ि रहलि छलैक धारक दिस । हेलाव पानि छलैक । हेलि गेलि आ फेर दौड़लि । खसैत-पड़ैत दौगले चल गेलि ।

गेनमाक बात दुसधटोलिएमे क्यो नहि मानलक । ओ घरे-घर बौआइते रहि गेल ।

बचनुआ साफ-साफ जबाब दऽ देलकै–'मास्टर साहेब तोहर मालिक हउ, तोँ जान । हम तऽ हरिश्चन्द्र बाबूक पट्टीमे छी । तोरा मालिक के वास्ते हम अपन मालिकक काम किए छोड़ू ? काज छोड़ू आ भूखे मरू ! बढ़ियाँ रस्ता सिखा रहल छेँ गेनमा हमरा !'

भुल्ला तँ ओहूसँ रुच्छ जबाब देलकै–'तोहर माथ खराप हो गेल हउ गेनमा ? बहुक इज्जतिक नामपर नेतागिरी करे चाहै छेँ ? ने इज्जति रहतौ, ने नेतागिरी । ई गाम बाबू-भैयाक हइ, अइमे छोटका लोकक नेतागिरी नै चलतौ । जो कल्ल-बल्ल माँफी माङि ले मालिक से आ काज शुरू कर । अङनाबाली के सेहो हवेली भेज दही...'

चौकीदार ढोढ़बा कहलकै–'तोरे नीक वास्ते कहै हउ सभ । अनेरो फसाद नहि ठाढ़ कर । घर-घराड़ीसभ छिना जेतौ । भूखे मरबेँ आ सभ तोहर इज्जतिक तमाशा देखतौ । बात मानि जो आ माँफी मागि ले मालिक से ।'

गेनमा तैयो अड़ल रहल । कथीक माँफी ? कसूर की हय हमर ? घरवालीसे जबर्दस्ती करे चाहलक आ ओ नै मानलकै से हमर कसूर ? हम मजदूर छी, जहाँ मोन होत, काम करब । नै गेलिऐ ओकराकिहाँ बेगारी बास्ते, से हमर कसूर ? निसाफ करौ ईसभ । कोन कसूरक माँफी मङिऔ हम ?'

ढोढ़बा बिगड़िकऽ कहलकै–'बेसी पिंगल नहि पढ़ गेनमा ! हमहूँ सभ बुझै छिऐ जे कसूर ककर हइ । मुदा हमरा इहो बुझल हय जे हमरा की करै चाही । दोसरा के कहलापर अपन घर नै उजाड़ि लेबै हम । तोरा बड़ अखरै हउ ई अन्याय, तऽ के ले फैसला मालिक से, हम किए जैबौ ओइमे ? हमर मालिक छथि गोवर्धन बाबू आ हुनकर बेटासभ । तोँ तऽ लालबाबूक पट्टीमे छेँ, हुनकेसँ निसाफ माङ । मालिकसभ लग नहि जयबेँ तऽ पंचायतमे जो, मुखियाजी के बोलहुन । हमरासभके पास किए भाषण कयले छेँ ? जो अपने टोलमे, ओकरेसभ से काज बन्न कराले पहिने ।'

गेनमा बुझि गेल जे व्यर्थ चेष्टा कऽ रहल छल । सौँसे खतबेटोली आ दुसधटोलीमे क्यो ओकर सङ नहि देतैक । ओकरा एकसरे फैसला करऽ पड़तैक, चाहे जेना होइ ।

ओ अन्हारेमे दुसधटोलीसँ बहरायल आ धार टपि गेल । एक बेर फेर हवेलीमे चेष्टा करत । लालबाबूकेँ कहतनि । रविबाबूकेँ फेरसँ कहतनि जे हमर बाड़ी-झाड़ीकेँ बचा दियऽ मास्टर साहेबक चालिसँ । गरीबक दू कट्ठा जमीन हड़पलासँ कोनो मातबर नै भऽ जायब अहाँलोकनि ।

–'एतेक रातिकेँ कतऽ जाइ छेँ गेनमा ?' टोकलकै क्यो तँ ओकर ध्यान टुटलैक । महेशबाबूक जासूस गुणाकर छलैक । नहि जानि किएक पछोड़ धऽ लेने छलैक । ओ डेग तेज करैत कहलकै–'ओहीनती । कने काम हय ड्योढ़ीमे ।'

गुणाकर फेर नहि टोकलकै । ओकर सङ एक टा आर क्यो छलैक से अन्हारमे दौड़िकऽ आगू चल गेलैक । गेनमाक इच्छा भेलैक जे घूरि जाय । मुदा एतेक दूर आबिकऽ घुरि जायब सेहो कोनादन लगलैक । ओ आगू बढ़ैत गेल ।

नामी बाबूक घर लग अबिते चरू दिससँ लोकसभ दौड़लैक– चोर-चोर ! सङे-सङे अबैत गुणाकरो चिचिया उठलैक– चोर-चोर । फेर ककरो लाठी माथपर लगलैक, फेर दोसर-तेसर.... । तकर बाद होश नहि रहलैक । ओ ओतहि ओंघरा गेल ।

होश भेलैक तँ ओ नामी बाबूक दरबज्जापर ओंघरायल छल घासपर । दुनू हाथ पाछाँ पीठपर बान्हल छलैक आ पयरो रस्सिएसँ बान्हल छलैक । चारू कात भीड़ जमा रहैक–सभक हाथमे लांलटेन । कोनो-कोनोक हाथमे टौर्च । हाथ महक टौर्च ओकर मुँहपर बारैत महेशबाबू कहलथिन–'देखू ने भगल एकर ! मारिक डरे कछने पड़ल छल !'

महेश बाबूक बोलीपर ओकर ध्यान गेलैक जे माथसँ कपारपर टघरि किछु

बहि रहल छलैक । सौँसे देह सोनिते-सोनिताम भेल छलैक । ओ उठबाक चेष्टा कयलक । पयर-हाथ बान्हल रहलोपर कहुना ओंघराइत-ओंघराइत ठाढ़ होयबाक चेष्टा कयलक । मुदा प्रयास व्यर्थ गेलैक ।

ओकर ओइ चेष्टापर गुणाकर बजलाह-'एकदम सेन्हा-चोर अछि बाबू ! देखू ने, हाथ-पयर बान्हलो छैक, तैयो केना उनटि-पुनटि रहल अछि ! एहन अन्हेर नै नै देखल अछि । साँझे-रातिमे एकदम बखारिएपर हमला ! ओ तऽ जहाँ धान भुभुआ कऽ खसलैक, हमर कान ठाढ़ भेल बाटपर । हाथमे लाठी रहय । ओही ठाम बखारिए लग सुता देलिऐक ।'

गेनमा जोरसँ बाजल-'एकदम झूठ बात । बाटपर अनेरो पीछे से लाठी मारलनि हमरा आ ऊपरसँ झूठ-मूठ चोरी के इलजाम ! कोनो बखारी-तखारी नै कटने छिऐक हम ।'

-'चुप्प चोरा !' लाठीक एक हूर गुणाकर फेर गेनमाक पाँजरमे देलथिन आ ओ गैंचिकऽ ओंघरा गेल ।

रवियो ओहि ठाम हल्ला सुनि पहुँचि गेल छल । गेनमाकेँ ओना गैंचिकऽ खसैत देखि बाजल-'एना नहि मारियौ । बात तऽ सुनियौ जे की कहैत अछि ?'

गुणाकर आँखि तररैत बजलाह-'मारियौक नहि ? ई की बाजि रहल छी अहाँ ? चोरबाक बात सुनबै ? ओकरा तऽ खाल खीचि लेबै जीविते ।' ओ देलथिन फेर एक हूर । गेनमा किकियाकऽ रहि गेल । रविकेँ क्रोध भेलैक आ बीचमे अबैत बाजल-'अनेरो बहादुरी नै देखाउ । चोरी कयने अछि तऽ सजाय भेटबे करतैक । एना जान नहि लियौक एकर ।'

महेश बाबू रुष्ट होइत कहलथिन-'तोँ बीचमे नहि बाजह रवि ! तोँ चीन्हैत नहि छहक एकरासभकेँ । बिन बुझने-सुझने अनेरो पक्ष लऽ सहकबहक नहि ।'

रवि बुझबैत कहलकनि-'पक्ष लेबाक सबाल नहि छैक मास्टरकाका ! सबाल छैक सत्य-असत्यक फैसलाक । चोरोकेँ अपन बात कहबाक अवसर भेटबाक चाहिऐक । मारि-मारिकऽ जान लऽ लेलासँ एकर प्रतिकार संभव नहि छैक ।'

महेश बाबू कने बेसी रुष्ट स्वरमे कहलथिन-'तोँ चौदह वर्ष बाद गाम घूरल छऽ रवि, मुदा लक्षण एखनो तोहर ठीक नै बुझाइ छऽ । अनेरो सभ बातमे टाङ अड़बैत छऽ-कहियो स्कूलक पढ़ाइ, तऽ कहियो सर्वेक झमेला । आ, आब

खुल्लम-खुल्ला छोटका लोककेँ सहकेबहक, से नै बर्दास्त करबऽ हमरालोकनि । एकरा चलान हम अबस्से करबैक ।'

रवि अपन तामस रोकैत कहलकनि-'अहाँ हमरापर निरर्थक आरोप लगा रहल छी मास्टरकाका ! ई बात ठीक जे अहाँ जकाँ छोटका लोक आ बड़का लोक हमर शब्दकोषमे नहि अछि । हम सभ लोककेँ एक्के रङ बुझैत छिऐक । बरसो अपने वैह सभ काज कऽ आयल छी, जकरा अहाँ छोट काज कहैत छिऐक । मुदा चोरिकेँ प्रोत्साहन हम कहियो ने देबैक । गेनमा चोरी कयने अछि तँ ओकरा अबस्स सजाय भेटतैक । मुदा पहिने ओकर अपराध प्रमाणित होबऽ दियौक ।'

गुणाकर छड़पि उठलाह-'हद कयल अहूँ रविबाबू ! सेन्हेपर पकड़लिऐक हम आ तैयो अपराध प्रमाणित हैब बाँकिए छैक ? एकर तऽ हाथ-पयर काटि लेबाक चाही । एकदम सेन्हा-चोर अछि । बखारीक पेनी काटि ओहिमे छिट्टा लगौने छल । देखियौ बखारीक नीचाँ भुभुआयल धान आ ओतऽ पड़ल एकर छिट्टा आ हाँसू । आरो कोनो प्रमाण चाही अहाँकेँ ?'

रवि कहलकनि-'हमरा कोनो प्रमाण नहि चाही । प्रमाण कचहरी आ पंचक सामने उपस्थित करब । तैयो एक टा बात पुछैत छी, अन्हारमे अहाँ कोना बूझि गेलिऐ जे बखारी लग गेनमे अछि आ एखन जे छिट्टा आ हाँसू पड़ल छैक ओतऽ, से गेनमेक छैक ?'

महेशबाबू तरङि उठलथिन-'अपन ओकालति बन्द करऽ रवि ! न्याय आ पंचैती हमरोलोकनि बुझैत छिऐक । तोहर रङ-ढङ ठीक नहि देखि रहल छियऽ हम । लाल, कने लऽ जैयनु हिनका एतऽसँ, अनेरो बात बढ़ा रहल छथि ।'

लालकाका आगू अयलथिन-'चलऽ रवि, अङना चलऽ । अइ गामक हाल-चाल तोरा नहि बूझल छऽ, बड़ दिनपर गाम आयल छऽ । अनेरो अइमे किएक पड़ैत छह ?'

रवि ओतऽसँ विदा होबऽ लागल । ताबे दुसधटोलीसँ ढोढ़बा चौकीदार आबि गेलैक । ओकरा देखिते महेश बाबू कहलथिन-'चलान करऽ अइ चोरकेँ । बजा ला दफादारकेँ ढोढ़बा !'

रवि महेशबाबूक दरबज्जासँ ऊठिकऽ चल आयल !

सभक सामने महेश बाबू ओकरा अप्रत्यक्ष आ प्रत्यक्षो रूपें बात कहलथिन। ओ ओकर विरोध करऽ चाहैत छल । मुदा ओकरा ओतऽसँ ऊठिकऽ चल आबऽ पड़लैक, एहि दुआरे नहि जे लालकाका मना कयलथिन । एहि दुआरे जे अपन बातक कोनो समर्थन ओकरा उपस्थित जन-समुदायसँ नहि भेटल छलैक । सभ ओकरा चोरक समर्थक बूझि रहल छलैक ।

नहि जानि किएक, ओकर मोन गेनमाकें चोर मानबा लेल तैयार नहि भऽ रहल छलैक । दिनमे ओकरे सङ सर्वेआफिस गेल छलैक गेनमा । ओ अपन बाड़ी आ बासक रक्षा चाहैत छल, जकर उपभोग ओ कैक पुश्तसँ कऽ रहल छल । महेश बाबू ओकरे हड़पबाक धमकी दऽ आयल छलथिन ।

गेनमा चोर किन्हु नै भऽ सकैत छल । ओकरामे स्वाभिमान छैक, साहस छैक । मुँहेपर कहलकनि महेश बाबूकें जे आब अहाँक काज नहि करब, हमरोसभक इज्जति अछि । इज्जति दऽकऽ फेकल रोटीक टुकड़ी हमरा नहि चाही। ओ साफ-साफ कहि देने छलनि ।

रवि ओकर मदति करऽ चाहैत छलैक, मुदा सर्वेआफिससँ घुरैत काल ओकर अपने मोन ओहिना आहत छलैक । लालकाका अपन जेठ भाइकें निस्संतान लिखा सभ टा नक्शा अपन नाम करा लेले छलथिन सर्वेमे । रवि हुनका लेल मरि गेल छल ।

कहलकनि तँ कानऽ लगलथिन लालकाका–'तोहर अमंगलक कामना करबह हम ! अखनो एतेक नीच नहि भेल छी !' रविकें कनैत लालकाकी मोन पड़लथिन–'ई हरहरी बज्र कहाँसँ खसल ?' आ, कनैत लालकाकाकें देखि ओकर मोन घृणासँ पचपचा उठलैक ।

ओकरा सम्पूर्ण गामेसँ घृणा भऽ गेल छलैक । सर्वेआफिस जयबाक समाचार जेना बिजली जकाँ सौंसे गाममे पसरि गेल छलैक । रवि अपन कोठलीमे एकसरे बैसल छल कि चोर जकाँ नुकाइत महेश बाबू अयलथिन–'तोरे तकैत छलियह रवि !'

रवि ऊठिकऽ जगह दैत कहलकनि–'की बात छैक मास्टरकाका ?'

महेश बाबू फुसफुसाकऽ कहलथिन– 'बात तँ तोरो सभ टा बुझले भऽ गेलह आब । गेले छलऽ सर्वेआफिस । ओही दिन हमरालोकनि विरोध कयने

छलियनि लालक जे एना नहि करऽ । ओ कहलनि जे चौदह वर्ष भेलैक, रविक कोनो पता नहि छैक । आब ओकर घुरबाक आशा व्यर्थ ! श्राद्ध करबा लेल भाइ तैयार नहि भेला, नहि तँ सेहो करबा दितिऐक । हमरालोकनि चुप्प रहि गेलहुँ ओइ दिन । मुदा आब चुप्प नहि रहबनि । तोहर अधिकार तोरा भेटबेक चाही । लालक नेतिमे खोट आबि गेल छनि, हमरा बूझल अछि । मुदा तों निश्चिन्त रहऽ, जाधरि हम छी, तोहर हक नहि मारि सकैत छथुन लाल ।'

रवि कोनो उत्तर नहि दऽ सकलनि । अइ आकस्मिक सहानुभूतिक कोनो अर्थ नहि लागि रहल छलैक ।

महेश बाबू अपने कहलथिन–'एक टा काज तों करऽ रवि ! हमर घर लग जे पुरना घराड़ी छैक दस कट्ठा तोहर पट्टीक, तकरा तों लिखि दैह हमर नामसँ । लालकें किछु नै कहियहुन । ओ भारी चुट्ट छथि । कतेको बेर कहलियनि, तैयारे नहि होइत छथि । ओ घराड़ी तों हमर नाम लिखि दैह, आ देखहुन जे कोना हम लालक सभ टा बुधियारी घोसाड़ि दैत छियनि !'

रविकें सहानूभूतिक अप्रत्याशित बाढ़िक अर्थ लागि गेलैक । किछु रुच्छे स्वरमे कहलनि–'हम की जानऽ गेलिऐक जमीन-जथाक हाल-चाल ? सभ टा तँ लालेकाका जनै छथि । हुनकेसँ लिखा लियऽ ने ! हम कहबनि हुनका, हमरा कोनो आपत्ति नहि ।'

महेश बाबू ओहिना फुसफुसाइत कहलथिन–'सभ टा लाहैब करबऽ तों । लालकें किएक कहबहुन तों ? आधाक मालिक छऽ तों । लिख दैह ने तों, बाँकी सभ टा हम बूझि लेबनि । तों निश्चन्त रहऽ ।'

आब साफे-साफ कहऽ पड़लैक रविकें–'ई लिखा-पढ़ीक हाल लालेकाका कहताह । हमरा कोनो काज नहि अछि आधा हिस्साक । एकसर छी, खाइत छी आ पड़ल रहैत छी । अनेरो जमीन-जथाक झंझटिमे के पड़य ?'

महेश बाबू रुष्ट भऽ चल गेलथिन । रवि तखने बूझि गेल जे हुनकर रुष्ट होयब ओकर किछु अपकारे करतैक । मुदा गाममे ककरोसँ कोनो उपकारक आशा ओ छोड़ि देने छल ।

मुदा लोक आशा नहि छोड़ने छल । महेश बाबूक बाद ओहिना नुकाइत हरिश्चन्द्र चौधरी आयल रहथिन–सरपंच हरिश्चन्द्र चौधरी । अबिते कहलथिन–'तों तँ किम्हर रहैत छऽ रवि, भेटो-घाट नै होइत अछि । एतेक वर्षपर गाम आयल छऽ

तैयो जेना गामसँ कोनो मतलबे नहि होअऽ ! हौ, हमरालोकनि जखन छी, तखन चिन्ता किएक करैत छऽ ? जेहने रामभाइ तेहने हमरालोकनि । तोँ निश्चिन्त रहऽ। अप्पन पित्ती किछु कुचक्र रचने छथुन, तेँ सभ पित्तीकेँ तोँ बैमान मानि लैह, ई तोहर अन्याय हेतह । न्याय लेल एखन छी हम गाममे ।'

हरिश्चन्द्र चौधरीक न्यायक कथा ओकरा जानल-सूनल छलैक । मुदा हुनकर अयबाक उद्देश्य ओ नहि बूझि सकल तत्काल । कहलकनि–'अहीँ लोकनिक स्नेह लेल तँ घुरल छी गाम हरीकाका ! आर अछिए के हमर ?'

हरिश्चन्द्र चौधरी बड़ स्नेहसँ कहलथिन–'एना नै बाजी । के नहि छऽ तोहर ! भरि गाम तोरे छऽ । सभ टा इलाका तोरे छऽ । बाप-दादाक बसाओल परोपट्टा छऽ ई, एकर सभ लोक तोरे छऽ । आ अखन वयसे की भेल छऽ तोहर ? विवाह करबऽ, परिवार हेतऽ । सभ टा हेतऽ । अखन कोन अबेर भेल छऽ ?'

रविकेँ एतेक स्नेह भीतरसँ पघिला रहल छलैक । मुदा ओ विश्वास नहि करऽ चाहैत छल । ओकरा लागि रहल छलैक जे अबस्से कोनो विशेष अर्थ छैक अइ आत्मीयता आ स्नेहक ।

अर्थ छलैक । अपने स्पष्ट कयलथिन हरिश्चन्द्र चौधरी । कने लग सटि आस्तेसँ कहलथिन–'लालकेँ हम तेहन पटकनियाँ देबनि जे होश नहि हेतनि फेर। तोरा चिन्ता करऽक नहि काज । तोँ खाली सभ टा 'पावर आफ एटोरनी' हमरा दऽ दैह, सभ टा बेच-बिकिन करबाक अधिकार । फेर तोँ निश्चन्त बैसबह गाममे आ नाच नचता लाल ।'

रविकेँ एकरे प्रतीक्षा छलैक । हरीकाका अपनै असल रंगमे आबि गेल छलथिन । हुनका सभ टा बेचबा-बिकिनबाक अधिकार चाहियनि । सभ टा रजिस्ट्री लिखा-पढ़ी करथिन ओकर नाम आ ओकर हिस्साक रक्षा करथिन लालकाकासँ ? ओ हँसबाक चेष्टा करैत कहलकनि–'हमरा की फैदा हैत लालकाकाकेँ नाच नचाकऽ ? आ, हिस्सा लऽकऽ की करब हम ? लालकाकाक छनि तऽ हमरे अछि। अहाँ चिन्ता नै करू हरीकाका ! हमरा कोनो दुख नहि अछि गाममे, बेस सुखी छी हम । अहाँलोकनि छीहे, तखन चिन्ता कोन ?'

हँसब पार नहि लगलैक । घृणासँ मोन ततेक पचपचा उठलैक जे बाहर जाकऽ बोकरि देबाक इच्छा भेलैक । मुदा ओ बैसले रहल ।

हरिश्चन्द्र चौधरी ठाढ़ होइत कने रुष्ट स्वरमे कहलथिन–'तोरे नीक लेल

कहैत छलियऽ, निश्चिन्त भऽ अइ गाममे रहितऽ, तोरा नहि पसिन्द छऽ तँ बड़ बेश । अपने पता चलि जेतह ।'

जाइत-जाइत स्पष्ट धमकी दऽ गेलथिन–'अपने पता चलि जेतह ।' गामक सरपंचक धमकी । रवि जनैत छल– अइमे अर्थ छलैक । मुदा गामक सभ टा बात ओकरा लेल ओही क्षण अर्थहीन भऽ गेल रहैक जखन ओ लालकाकीक कानब सुनने छल । जे अपन दूध पिआ पोसने छलथिन, से ओकर घूरिकऽ गाम चल आयलापर कानलि छलथिन । रवि अपने कानसँ सुनने छल आ तहियासँ किछुओ सूनिकऽ ओकरा आश्चर्य नहि होइत छलैक ।

बेर-बेर एक्के टा बातक आश्चर्य ओकरा होइत छलैक । ओ गाममे किएक छल ? कोन लोभ ओकरा बान्हिकऽ रखने छलैक ? घुरल छल बाबूसँ भेँट होयबाक आशामे । मुदा आब ? आब किएक बैसल छल ओ गाममे ? ओकरा घूरि जयबाक चाहिऐक ।

यैह बात ओइ दिन कविताकेँ कहि देलकै रवि । गाम अयलाक बाद दोबारा कवितासँ भेँट नहि भेलैक । एक दिन भेँट भेलैक आ लगलैक जेना कविता ओकरा शुद्ध मनसँ क्षमा कऽ देने छैक, ओकर मोनमे ओकरा लेल कोनो प्रतिशोध वा प्रतिहिंसाक भाव नहि छैक । रवि तकर बाद अपनाकेँ हल्लुक अनुभव कयने छल आ नव ढंगसँ जीबाक, काज करबाक चेष्टा कयने छल ।

ओ चेष्टा बेर-बेर निष्फल भेल छलैक । जाहि अपराध-बोधक पाथर ओकर छातीपर छलैक चौदह वर्ष, ओकरा उतारिते एक टा ओहूसँ पैघ पाथर छातीपर खसलैक । पहिने लालकाकीक कानब ! फेर लालकाकाक प्रति उपजल शंकाक पुष्टि आ तखन सम्पूर्ण गाममे पसरल स्वार्थ-लोलुप व्यवहार । ओकर आत्मा फेर एहि वातावरणसँ मुक्तिक लेल छटपटा उठल छलैक । ओइ दिन महेश बाबू आ हरिश्चन्द्र चौधरीक गेलाक बाद तँ जेना ओ निर्णय लऽ लेने छल ।

आ, कविताकेँ कहि देने छलैक । नहि जानि किएक, ओकर डेग उतरबारि टोल दिस बढ़ि गेल छलैक । कविताक घरसँ आगू बढ़ि गेल छल । एक बेर तकने छलैक । मुदा क्यो बाहरमे नहि छलैक । एकदम सुन्न छलैक । आङनमे होयतैक कविता । रवि सोचियोकऽ आङनक भीतर पैसबाक साहस नहि कयलक । ओ आगू बढ़ि गेल ।

तेजूक दोकान दिस गेल । लेसिकऽ लालटेन टाङल छलैक दोकानमे आ

बैसार जमल छलैक । तेजूक जेठका बेटा दोकानमे बैसल छलैक आ तेजू अपने गप्पमे लागल छल । ओकरा देखिते कहलकै– 'आ भाइ ! आइ फेर कोना मोन पड़लौ ई दोस्त !'

ठीके, कतेक दिन भऽ गेल छलैक ओम्हर गेना ! रवि बैसैत कहलकै–'ओहिना बाझल रही झूठ-फूस काजमे । मौके नहि भेटल । सुना अप्पन, की हाल छौक ?'

तेजू उसाहपूर्वक कहलकै–'अइ ठामक हाल तँ आब एक्के बेर कहबौक भाइ ! कहुना अइ एकबाली चौधरीसँ मुखियाक गद्दी छीनऽ दे । वोट नजदीक आबि रहल छैक । तोँ गाम आबि गेल छैँ । तोरो मदति करऽ पड़तौक ।'

रवि हँसिकऽ कहलकै–'हमर मदतिसँ तँ भारी फायदा हेतौक ! जेहो बोट भेटबाक, सेहो नहि भेटतौक । हम छी भगौआ-पड़ौआ लोक, श्राद्धो कऽ देबक चाहैत छलैक हमर । हमरा के चीन्हत गाममे आ के देतौक भोट हमर कहलासँ ?'

तेजू सहानुभूतिपूर्वक कहलकै–'बेकारक बात बजै छैँ तोँ । तोँ भगौआ-पड़ौआ लोक किएक रहबेँ ? आ, तोँ छैँ पढ़ल-लिखल लोक, हमर हाल तँ बुझले छौक । इलाकामे तोहर कहबाक बहुत असरि हेतैक । कहुना अइ बेर एकबलियासँ गद्दी छिनबाक अछि । एतेक वर्षसँ हथियाकऽ महंथी कऽ रहल अछि । सभ टा बड़का ठीका अपने लैत अछि, सभ टा रिलीफ बँटबारामे अधिया मारि लैत अछि । हरिश्चन्द्र बाबू अपन सरपंचीसँ प्रसन्न रहैत छथि । दू टा कौरा फेकि दैत छनि, ओहीमे तिरपित ।'

दरबज्जापर बैसल आर लोकसभ तेजूक समर्थनमे टीपऽ लगलथिन । लंका मोहनपुरक प्रति आक्रोश बहार होबऽ लगलैक ।

बंगट मिसर कहलथिन–'तेजू बाबू ठीके कहैत छथि । ई एकबाली भितरिया घाघ अछि । ऊपरसँ मीठ-मीठ बोल आ भितरे-भितरे रेति देत ! देखू ने ओकर चलाकी ! आस्ते-आस्ते सभ किछु अपने पार लऽ गेल । पंचायत आफिस बनबौलक, मलेरिया सेन्टर, कम्युनिटी हौल, पोस्टआफिस–सभ टा लऽ गेल लंका मोहनपुर ! हमरालोकनि मुँहे देखैत रहि गेलहुँ ।'

अशर्फी झाकेँ भेलनि जे तेजूक समर्थनमे ओ पछुआ गेलाह । झट कहलथिन–'से तँ ठीके । सभ टा मुङबा खयलक एकबाली, हमरालोकनि मुँह तकैत रहलहुँ । ऊपरसँ हरिश्चन्द्र बाबू कहताह जे हमर पीठ ठोकू–पाँचे सय भोटमे सरपंचीक गद्दी लऽ अनैत छी । जेना हमरालोकनि किछु बुझिते नहि छिऐक !

दलाल छथि ओ एकबालीक । अहूँक दोकानमे ओ ओकरे दलाली लेल बैसल रहैत छथि जे एतुक्का सभ टा गप्प जाकऽ ओकरा कहथिन आ दू टा कौरा देतनि ।'

तेजू बुधियार जकाँ हँसल–'सैह तँ छैक असल चालि ! हुनका सामनेमे कहले अही लेल जाइत छैक ओ बातसभ जे अइ बेर तैयारी छैक गद्दी छिनबाक । आ तेँ देखहक अइ बेर ओकर चालि । पहिनेसँ सभ ठाम घोषणा कऽ रहल अछि–'हम अइ बेर ठाढ़ नहि हैब ।'

बंगट मिसर बीचेमे बात लोकैत कहलथिन–'नाटक करै-ए ओ ! ओ एतेक जल्दी गद्दी छोड़त ! लतियाकऽ हँटयबैक तखने हँटत । मुदा पैतराबाजी खूब कऽ रहल अछि । गफूरगंजमे सभकेँ सनका रहल छैक जे तोँ ठाढ़ हो आ एम्हर हरिश्चन्द्र चौधरी प्रचार करैत छथिन जे पाँचो सय भोट हवेली मोहनपुरमे नहि अछि। पाँचमे डेढ़-दू सय भोट धानुख आ मलाहसभक अछि । ओ भोट तेजूकेँ किन्नहु नहि भेटतनि । साहु लऽ जायत ओ सभ टा भोट ।'

तेजू बीचेमे तरङिकऽ बाजल–'हुनके कहने सभ टा भोट साहुकेँ भेटि जयतैक ! हमरालोकनि बैसल तमाशा देखब ! राड़-रोहिया हमरासभक, भरि साल बोनि-बुतात देबैक हमरालोकनि, आ भोट लऽ जयताह साहु ! देखबनि हमहूँ किने ! हबेली मोहनपुरक बूथपर एक टा भोट किनको नहि हेतनि ।'

अशर्फी झा उत्साहित होइत बजलाह–'से की कहै छी तेजूबाबू ! खाली हवेली मोहनपुरेक बूथ टा किएक, लंका मोहनपुरोक बूथमे अधिया भोट नै लेबनि हमरालोकनि ? हरिश्चन्द्र चौधरी ने परतारैत छै हमरालोकनिकेँ जे लंका मोहनपुरमे दू हजार भोट छै ! मुदा ताहिमे पाँच सय भोट दुसाध-खतबे आ मुसलमानक छैक । ओ तँ हमरसभक जन थिक–अही हवेली मोहनपुरक रैयत ! ओ वोट कतऽ जायत । चमरटोलीमे चारिए घर छैक, मुदा ओहो वोट तऽ हमरे अछि ।'

बंगट मिसर नहलापर दहला देलथिन–'खाली 'छोटके लोक'क भोट किएक, बभनटोलीक भोट सेहो अधिया लेबनि । एतेक रास नढ़ेरसभकेँ जे मिहिर आ नारायण नौकरी दिऔलथिन अछि से बेकारे जयतनि ! सभ गाममे बैसल नढ़ेरपनी करैत छल आ तेसरा दिनपर अप्पन बाप-पित्तीकेँ लठियबैत छल, से सभ आइ बाबू भऽ गेल अछि, सरकारी नोकरी पाबि हाकिम कहबै अछि । से की बेकार जयतैक ? लोककेँ बूझल नहि छैक जे तेजू बाबू तँ खाली नामे लेल छथि, असली उम्मीदवार छथि नारायण बाबू आ मिहिर बाबू ।'

एतेक कालसँ चुप्प बैसल पण्डित बाबू आ फकीर बाबू एक्के बेर बाजि उठलाह–'भारी लंगट छऽ तोहूँ बंगट ! कतऽ की बाजी, कोनो विचार नै । दुनूकें सरकारी नौकरी छनि, लाहेब करबहुन । रवि की सोचत ? ओकरा हेतैक जे सत्ते वैह दुनू उम्मीदवार अछि ।'

तेजुओ जोरसँ डँटलकनि–'सत्ते बंगटबाबू, कोनो कंट्रोल नहि रहैत अछि बजबाकाल अहाँकें । हम नाम लेल किएक उम्मीदवार रहब ?'

बंगट कने आर बकलेल जकाँ बाजि उठलाह–'से नहि, माने ई कहलहुँ जे टाका-पैसा तँ हुनकेसभक खर्च हेतनि ।'

तेजू जोरसँ बमकि उठल–'टाका हुनकर किएक खर्च हेतनि यौ ? हम कोनो कंगाल छी ! अप्पन बले लड़ब, जनताक समर्थन चाही । अहाँ नहि बुझैत छिऐक । चुप्प रहू ।'

बंगट मिसर चुप्प भऽ गेलाह । तेजूक डाँटसँ हुनका भीतरे-भीतर क्रोध भेलनि–'जेना हमरा बुझले ने होअय जे ककर टाका छैक ! कंगाल नै तँ आर की छी ? दोकानोमे तँ ओकरेसभक टाका छैक आ टाका छैक कमलाक बहुक ! अप्पन की अछि ? सभ टा तँ बेचि-बिकिन खयने छी ।'

रविकें हँसी लगलैक तेजूक बुधियारीपर । बुधियार काका मोन पड़लथिन–'सब मूर्खनाथ !' हँसी आर जगजिआर भऽ गेलैक ।

तेजू कने अप्रतिभ होइत बाजल– 'हसलें किएक भाइ ? कोनो अनटोटल बजना गेल ?'

रवि अपनाकें सम्हारैत कहलकै– 'नै रे, से बात नहि । अपन कपारपर हँसी लागल जे हम ओहिना रहि गेलहुँ आ तोरालोकनि सभ आगू बढ़ि गेलें– तों, मिहिर, नारायण...

तेजू खूब स्नेह देखबैत कहलकै–'तों किएक पछुअयबैं ककरोसँ ? पढ़ै छलें, तैयो सभमे फस्ट छलें, खेलोमे सबसँ आगाँ । आइ नहियो नोकरी करै छें, तैयो सभसँ आगाँ छें । भाइमे एकसर छें–आठ आनाक मालिक । पड़तनि भरि गाममे एखनो ककरो एक माथपर एतेक जमीन ?'

जमीनक बातपर रविकें फेर सर्वेआफिस मोन पड़लैक, लालकाका मोन पड़लथिन । लालकाकाक भाइ निस्संतान मुइल छलथिन । रवि तँ बाइली लोक छल । नहि, बाइली लोक नहि, मुइल लोकक बौआइत प्रेत ।

ओकरा फेर हँसी लगलैक–एक टा भीजल हँसी । तेजू फेर टोकलकै–'फेर हँसलें भाइ ?'

रवि नीक जकाँ सम्हरैत हँसिकऽ कहलकै–'तोरे बातपर हँसी लागल भाइ ! माथपर एतेक जमीन लऽकऽ की करब ? पढ़ने-लिखने रहितहुँ तँ दस लोकमे बजितहुँ, ककरो पढ़बितिऐक ।'

तेजू बुझनुक जकाँ हँसल–'तों रहि गेलें वैह रवि– रामकाकाक असली बेटा, ओहिना । आदर्शक पाछाँ पागल । बबो तोहर ओहने उदार छलथुन । हमरालोकनि तऽ छोट लोक छी भाइ ! नफा-नोकसान सोचिकऽ कोनो काज करै छी आ बजै छी । हमरा रहैत ओतेक जमीन तऽ हमरा कोनो बातक चिन्ता नहि रहैत ।'

रवि बात बदलैत कहलकै–'चिन्ता तँ हमरो नहि अछि भाइ ! खाइ छी बैसल-बैसल आ पड़ल रहै छी । एकरे जिनगी कहैत होइ तँ आरामेसँ बीति रहल अछि । बीति की रहल अछि, बीतिए गेल अछि । चौदह वर्ष अपने गमा आयल छी ।'

तेजू टोकि देलकै–'कतऽ गेल रहें रवि ? किएक पड़ायल रहें ? हम तऽ दोस्त छियौ, हमरो तऽ कह ?'

रवि डेरा गेल । बात एक टा एहन बिन्दुपर पहुँचि गेल छलै, जाहिसँ ओ बँचैत आयल छल । शुरू-शुरूमे सभ यैह प्रश्न पुछैत छलैक आ रवि टारि जाइत छल । तेजुओ पुछने छलैक आ रवि टारि देने रहैक । आब ई प्रश्न पूछब लोक छोड़ि देने छलैक । आइ फेर अकस्मात् सभक सामने तेजू वैह प्रश्न पूछि बैसलैक । रवि उठैत कहलकै–'आब आइ चलै छी भाइ !'

तेजू हाथ धऽ बैसा देलकै–'अरे, तऽ जाइ किएक छें ? नहि कहबें तऽ नहि कह । हम तऽ ओहिना पुछने छलियौक, कोनो जिद थोड़े छल हमर !'

रवि बैसैत कहलकै–नै, ताहि ले' नहि ! ओहिना । अबेर भेल आब ।'

मुदा, रवि उठल नहि । बैसले रहल । गप्प फेर मुखियाजी आ चुनावेक शुरू भऽ गेलैक । चाह सेहो आबि गेलैक ।

चाह पीबि डाँट खाकऽ सुटकल बंगट मिसर फेर सुगबुगयलाह–'हमर बात अहाँलोकनिकें अधलाह लागि गेल । मुदा सुपत बात हम कहबे करब । तेजू बाबूकें जाबत दस गोटेक मदति नहि हेतनि ता कोना जिततह ? एसगर महेश बाबूक बलें तऽ सभ टा नहि भऽ जयतनि ?'

तेजू फेर डँटलकनि–'अच्छा, से देखल जेतैक जखन समय हेतैक । दस लोक मदति करबे करत । अखन ई बात अहाँ बन्द करू ने ! रवि की कहैत अछि, से सुनू ।'

रविकेँ गुणाकर मोन पड़लैक । कहने रहैक जे कमलाक बहुकेँ महेश बाबू तेहन पटकनियाँ देथिन जे ओकरो मोन रहतैक । बड़ भभटपन करै छनि हुनका लग ! तेजू ककर लोक छैक ? महेश बाबू कहथिन तऽ नङटियाकऽ ओइ मौगीकेँ सामनेमे आनि देतनि तेजू । बंगटो मिसर सैह कहि रहल छलथिन । ओकरो किछु-किछु अर्थ लागि रहल छलैक । तेजू फेर टोकलकै–'कोन सोचमे पड़ि गेलेँ रवि ?'

–'नै, कोनो सोच नहि । एहिना विचारैत रही जे तोँ मुखिया भऽ जयबेँ तऽ हमरोसभ कहबैक लोककेँ जे हमरे सङतुरिया मुखिया अछि ।'

तेजू प्रसन्न होइत कहलकै–'ई तोँ बजलेँ एक टा बात तखनसँ ! मुखिया तऽ हम हेबे करबौ आ अइ एकबालीकेँ दस लोकक सामने बेइज्जत सेहो करबैक। बड़का भारी छिनार अछि इहो एकबालिया ।'

गप्पक एहू अप्रत्याशित मोड़सँ रवि चौंकि गेल । बंगट मिसर उत्साहित होइत कहलथिन–'से कोन नव बात करबै अहाँ ? ककरा ने बूझल छैक जे अपन भाउजिसँ फँसल अछि ई मुखिया । विधवा भौजी छैक आ अपनो अछि मौगीकेँ खयने । दुनू खूब खुलि खेलाइ अछि ।'

अशर्फी झा गप्प लोकलथिन–'मियाँ बुझलकै पियाजु ! यौ, ई सभ ककरा नहि बूझल छैक ? मुदा तेजू बाबू जे कहलनि सेहो किछु बुझियैक ?'

तेजू अपने फड़िछबैत बाजल–'हमरो कहैत लाज होइत अछि । अपने परिवारक गप्प भेल । ओइ पार चल जाइत गेलाह, तेँ सम्बन्ध तँ नहि छूटि गेल ! पोखरि हवेली तँ हवेली मोहनपुरेक अंग थिक । ओही ठाम परिकल अछि ई एकबलिया !'

पंडित बाबू कहलथिन–'तँ अइमे एकबाली चौधरिक कोन दोष ? जिनकर स्त्री छलथिन, वैह जखन सभकेँ छोड़ि अपने दोसर विवाह कऽ दार्जिलिंगेमे बसि गेलाह, तँ स्त्री तऽ छुट्टा हेबे करथिन । नहि एकबाली तऽ क्यो आने ।'

फकीर बाबू टोकलथिन–'ई बात तऽ ठीक नहि कहि रहल छी पण्डितबाबू ! पुरुष कतहु परदेस चल जायत, तँ स्त्रीकेँ आजादी भेटि जयतैक ? एना तऽ हमरा

लोकनिक समाजे भ्रष्ट भऽ जायत । आ, मुखियाक एक टा कर्तव्य होइत छैक । ओकरे कृत्य एहन हेतैक तँ ओकर विरोध हेतैक ।'

तेजू प्रसन्न होइत बाजल– 'सैह तऽ हमहूँ कहैत छी फकीरकाका ! एकर विरोध हेबेक चाही । हमरालोकनिक समाजमे एना खुल्लम-खुल्ला व्यभिचार नहि चलि सकैत अछि । अइ मुखियाकेँ अइ बेर हम सभ दिससँ नाङट कऽकऽ छोड़ि देबै, अहाँसभ देखैत रहू ने !'

रविकेँ सभ टा बात मनोरंजक लगलैक । तेजू मुखियापर चरित्रहीनताक आरोप लगा रहल छलैक । गामक लोक ओकरा समर्थन कऽ रहल छलैक, ओही गामक लोक जतऽ तेजू राति होइते कमलाक आङन दिस विदा होइत अछि आ दोकान बेटापर छोड़ि दैत अछि । पण्डितकाका आ फकीरकाका सन बूढ़-बूढ़ानुस ओकर सङ दऽ रहल छथिन । बंगट मिसरकेँ बजना गेलैक जे असली उम्मेदवार छथि मिहिर आ नारायण ! पण्डितकाका आ फकीरकाकाक क्रोधसँ ओइ सत्यपर परदा नहि पड़लैक । –रवि बूझि गेलैक ।

रवि ऊठिकऽ विदा होबऽ लागल तँ पण्डितकाका आ फकीरकाका दुनू सूचना देलथिन अपन-अपन बेटाक आगमनक । दूर्गापूजा आबि रहल छलैक । मिहिर आ नारायण दुनू आबि रहल छैक । रवि दुनू गोटेक सूचनापर हर्ष प्रकट कयलकनि जे एतेक वर्ष बाद पुरान मित्रसभसँ भेँट होयतैक ।

मुदा, तेजूक दलान छोड़ैत काल हर्ष प्रकट कयलाक बादो ओ मोने-मोन बूझि रहल छल जे प्राय: ओकरा भेँट नहि होयतैक । दूर्गापूजा धरि गाममे ठहरि सकब ओकरा लेल संभव नहि होयतैक आ गाम छोड़बासँ पहिने ओ एक बेर फेर कवितासँ भेँट करऽ चाहैत छल । कारण ओकरा अपनो नहि बूझऽमे आबि रहल छलैक । ओकरा भेँट करबाक उत्कट इच्छा भऽ रहल छलैक–बस्स, एतबे टा ओकरा बूझल छलैक ।

तेजूक घर दिस जाइत रवि देखने छलैक–सुन्न दलान । दलान तऽ छलैके नहि, खाली एक टा घर, बाहर दिस ओसारो नहि । टाटसँ घेरल आङन । रवि इच्छा रहितो आङन नहि जा सकल । तेजूक दलानसँ घूरैत काल नीक जकाँ साँझ भऽ गेल छलैक । कविताक आङन पैसबाक पहिने कने थकमकायल रवि । फेर आङन पैसि गेल । आङनो सुन्न छलैक । घरक भीतर डिबियाक इजोत छलैक आ ताहिसँ आ घरक दरबज्जा खूजल रहबाक कारणेँ लगलैक जेना घरमे क्यो होइ । ने तँ मनुक्खक उपस्थितिक ओइ आङनमे कोनो चेन्ह नहि छलैक । रवि किछु काल ओहिना ठाढ़

रहल । देह कने सिहरि गेलेक । भीतर कोठलीमे जयबाक वा सोर पाड़बाक जेना साहसे ने भऽ रहल होइ । फेर कनेँ खखसिकऽ बाजल–'कविता !'

रविकेँ अपने स्वर अपरिचित आ भरभरायल सन लगलैक । मुदा घरसँ कविता जेना लगले चीन्हि गेलैक । हाथमे डिबिया लेने फुर्तीसँ बाहर अयलैक आ ओसारासँ नीचाँ उतरि कहलकै–'आइ कोना मोन पड़ि गेलौ कविता तोरा ?'

रवि कविताक सहज बोली सूनि आङनक ओइ भयावह सुन्नसँ उपजल सिहरनकेँ दबा बाजल–'मोन सभ दिन पड़ै छले कविता ! मुदा नहि जानि किएक अयबाक साहस नहि भेल । तोँही चल अबितेँ !'

कविता कहलकै–'बेस कहलेँ ! तोरा पुरुष भऽ साहस नहि भेलौ आ हम माउगि भऽ चल अबितियौक ।'

रवि पूर्ण सहज भऽ होइत बाजल–'पुरुष-माउगक गप्प नै छैक कविता ! हम तँ अपने गाममे अनचिन्हार भऽ गेल छी । देखिकऽ लोक अनठीयो बूझि लेत। तोरा तँ सभ चीन्है छौ । कखनो, कतहु जा सकैत छेँ ।'

कविता कहलकै–'सेहो खूब कहलेँ तोँ ! कतहु कखनो जा सकैत छी ! बगलेमे जासूस लागल अछि । पितिऔते भाइ-भाउजि छथि । बापक मुँहमे आगि देबाक ऋणक बदलामे ओकर बेटीसँ सभ किछु छीनि बैसल छथि । तैयो सन्तोष नहि छनि । कहुना एतऽसँ हम पड़ाइ, तकरे चिन्ता रहैत छनि । आ चिन्ता रहैत छनि जे के आयल, के गेल अइ आङनमे ? भाइ भऽ प्रमाद देबासँ नहि चुकैत छथि कहियो ।'

रविकेँ लगलैक जेना आङन आयब अनुचित भेलैक । चलबाक उपक्रम करैत कहलकै–'बेस, तँ चलै छी अखन ! ओहिना चल आयल रही, नै देखने रहियौक तोरा बहुत दिनसँ !'

कविता हँसलैक । रवि कने आश्चर्यसँ पुछलकै–'हँसलेँ किएक ?'

कविता कहलकै–'सभ लोक झूठो नहि बाजि सकैत अछि ! तोँ कहलेँ जे ओहिना चल आयल रही तँ तोहर झूठ पकड़ा गेलौक, तेँ हँसी लागल ! ओहिना आबऽबला लोक तँ तोँ नहि छेँ !'

रवि स्वीकृति दैत कहलकै–'ठीके पकड़लेँ तोँ कविता ! ओहिना नहि आयल रही हम । तोरा कहऽ आयल रहियौ जे आर बेसी दिन अइ गाममे नहि रहि

सकब भरिसक । लवकेँ हम कहने रहिऐक जे ओकर बाप लग पहुँचा देबैक । ओ काज हमर बाँकी रहि जायत । ई काज तोँही कऽ दे कविता ! लऽ जाही ओकरा बापक लग ।'

'जबर्दस्ती !' कविता पुछलकै–'ओ नहि बजबैत छथि तैयो जबर्दस्ती लऽ जैयौक ओकरा ओकर बाप लग ! ताहिमे मान बढ़तैक ओकर ?'

रवि ओकर बातक उत्तर नहि दऽ कहलकै–'बैसऽ लेल नहि कहबेँ कविता ? एहिना ठाढ़े रहू आङनमे ?'

कविता शीघ्रतासँ फेर कोठलीमे गेलैक आ एक टा पटिया आनि ओसारापर बिछा कहलकै–'आ, बैस !'

रविकेँ जेना तीर जकाँ किछु गड़ि गेलैक मोनमे । कविता नहि बिसरलि छैक ओ बात । ओइ एकान्त दुपहरियाक ओ कोठली ओकरा नहि बिसरलि छैक । ओ रविकेँ अपन घरमे अयबाक निमंत्रण नहि देतैक । बाहर ओसारापर पटिया बिछा देने छैक ।

कविता टोकलकै–'आ, बैस ने ! कतेक कालसँ ठाढ़ छेँ आङनमे !'

रवि ओकर आग्रह अस्वीकार करैत कहलकै–'रहऽ दे कविता ! आब जायब, अबेर भेल । खाली हमर आग्रह ध्यान रखिहेँ । संभव होउ तँ लवकेँ अपन बाप लग पहुँचा दहिक ।'

कविता तत्काल कहलकै–'अबस्स पहुँचा देबैक । जहिए संभव हेतैक, पहुँचा देबैक । ओही लेल तँ ई अखबज प्राण अँटकल अछि । मुदा एना तमसाकऽ नहि जा सकै छेँ तोँ, कने बैसि ले ।'

रविकेँ आश्चर्य भेलैक । पुछलकै–'तोँ कोना बुझलहिक जे हम तमसाकऽ जा रहल छियौ ?'

–'तोरा तँ बुझले छौ जे हम लालबुझक्कड़ि छी ।'

रविक मुँह फक भऽ गेलैक । डिबियाक इजोतमे कविता नहि देखलकै, मुदा रविक मुँह एकदम विवर्ण भऽ गेलैक । एक दिन कविता कहने रहैक जे 'तोहीँ लालबुझक्कड़ छेँ, तोँहीँ बुझा दे ।' आ, रविक विवेक वासनाक उद्दाम वेगमे बहि गेल छलैक ।

आ, ओही वेगमे बढ़ि गेल छलनि बाबूक सभ टा स्वप्न, रविक अप्पन

सम्पूर्ण महत्त्वाकांक्षा । रविकेँ लगलैक जे लाख सहज होयबाक चेष्टा करय, एक टा बात ओकर मर्मस्थलमे पाथरक रेखा जकाँ खिचा गेल छैक । ओ बेर-बेर मोन पाड़तैक जे ओकर अपराध अक्षम्य छलैक । कविता क्षमा कऽ दैक, तैयो !

कविता कहलकै–'तोरा सङ यैह मोस्किल छौक । अपने किछु बजबेँ आ फेर ओकरे मोनमे रबर जकाँ तानि-तानि नमारैत रहबेँ । तोरा नहि लऽ गेलियौक कोठलीमे, तकर तामस भेलौ ! मुदा अपना डर लेल से नहि कयलियौक । हमरा तोरासँ कहियो कोनो डर नहि छल । आइयो नहि अछि, सत्ते कहैत छियौ । मुदा ई समाज, गामक लोक– एकरे द्वारे बाहरे बैसऽ कहलियौ । काल्हिए भरि गाम पसारि देतौक किछु आ तोँ भागि पडयबेँ ।'

रवि कहलकै–'से तँ नहियो पसारत क्यो किछु तैयो भगबे करब अइ गामसँ । सत्ते कहै छियौ कविता ! मुदा एक टा बात पूछै छियौ कविता ! काल्हि जे किछु पसारत क्यो, से झूठ हेतैक । मुदा एक दिन ओ सत्य घटित भेल छलैक । से किएक ने जनलक गामक लोक ?'

कविता दृढ़ स्वरमे कहलकै–'जनितैक कोना ? जे लोककेँ कहितैक जे की भेल छलैक, से तँ अपने डरे पड़ा गेल । तखन कहितैक के ? हम कहितिऐक जे रवि ओही लेल पड़ा गेल आ लोक मानि जाइत जे मेधावी आ चरित्रवान रवि, रामकाका सन साधु पुरुषक बेटा रवि एहन कृत्य कऽ गामसँ पड़ा गेल ? आ, लोक मानियो जाइत तँ हम कहितिऐक सभकेँ, डिगडिगिया पिटितहुँ चारूकात जे हमरा संग अन्याय भेल अछि, अहाँ न्याय करू ? एक दिन साहस कऽ रामकाका लग गेल रही जे हुनकेसँ न्याय मङबनि । हुनका ततेक हताश आ दुःखसँ हारल देखलियनि जे हुनका आर आघात देबाक साहसे नहि भेल ।'

रवि कृतज्ञतासँ कहलकै–'ई हमरा ऊपर तोहर सभसँ पैघ ऋण रहलौक । बाबूकेँ तोँ यदि ओ कहि दितहुन तँ हुनकर मृत्यु आरो कठिन आ कष्टदायक भऽ जैतनि । तोहर ई उपकार हमरा मृत्यु पर्यन्त मोन रहत कविता !'

–'खाली उपकार मोन रहतौ ? आ कविता ?'

–'तोहूँ मोन रहबेँ कविता ! सभ दिन मोन रहबेँ । एक्को दिन लेल कहाँ बिसरि सकलियौक तोरा ?'

–'एक्को दिन लेल नहि बिसरलौ जे कविता द्वारे तोहर सम्पूर्ण जीवन नष्ट भऽ गेलौ ! सभ दिन घृणापूर्वक स्मरण कऽ कविताकेँ कोसैत रहलेँ !'

रवि अवाक् भऽ गेल । कविता ओकर सभ टा बात कोना बुझने जा रहलि छलैक । ओकर दृष्टिसँ जेना किछुओ नुकायल नहि छलैक । जेना ओकर निर्वासित जीवनक प्रत्येक दिन ओ ओकरे संग रहलि होइ ।

–'ओ दोसर स्थिति छलैक कविता ! दोष अपन छल आ रोष तोरापर छल । तोँ क्षमा कऽ देलेँ आ आब शान्तिपूर्वक अइ गामसँ जा सकब । शेष जीवनमे तोँ बड़ आत्मीयताक संग मोन पड़बेँ, हम सत्त कहैत छियौक कविता !'

–'आर किछु ने पुछबाक छौक तोरा ? किछु कहबाक नै छौ ?' कविताक अइ आकस्मिक प्रश्न लेल रवि एकदम प्रस्तुत नहि छल ।

–'आर हम की कहबौ कविता ? सभ टा तँ कहिए देलियौ तोरा ! तोहूँ ई गाम छोड़ि लवकेँ लऽ अपन सासुर चल जैहेँ, सैह कहने जाइत छियौक । लव कहाँ छौक ?'

–'गफूरगंज गेल अछि–हाट ! आब अबिते हैत !'

रवि विदा भऽ गेल । कविता अङनेमे ओहिना डिबिया लेने ठाढ़ि रहलैक । आगू बढ़ि मुँहथरि धरि रोशनियो ने देखा देलकै ।

रवि बाटपर आबि गेल आ अपन टोल दिस विदा भऽ गेल । दूरेसँ लगलैक जेना खूब घोँघाउज मचल होइ कतहु । अपन टोल अबैत-अबैत पता लागि गेलैक जे नामीबाबाक घरक आगूमे खूब भीड़ लागल छलैक आ हल्ला-गुल्ला भऽ रहल छलैक । रवियो ओम्हरे विदा भेल ।

गेनमाक हाथ बन्हले रहलैक । पयर खोलि देलकै चौकीदार । दफदार सेहो आबि गेल रहैक । दुनूक संग गेनमाकेँ थाना विदा करऽ लगलथिन महेश बाबू ! डोरी चौकीदारक हाथमे छलैक ।

तखने अपस्याँत दौड़ैत गेनमा-बहु अयलैक आ चौकीदारक पयरसँ लपटि गेलैक–'एतेक अन्याय नै करऽ चौकोदारकाका ! हमर मरद बेकसूरी हय । ओकरा छोड़ि दहक ।'

चौकीदार पयर छोड़बैत कहलकै–'पैर छोड़ हमर बतही ! कसूरक फैसला पुलिस आ अदालति करतै । हमरा अपन ड्यूटी करे दे ।'

डोरी लेने चौकीदार बिदा भेलै । वैह डोरी गेनमाक दुनू हाथ आ डाँड़मे बान्हल छलैक । ओहो बिदा भेल पाछाँ–पाछाँ ।

गेनमा–बहु पयर नहि छोड़लकै चौकीदारक–'हम नहि छोड़बऽ काका तोरा । ई ड्यूटी हइ हो काका ? बेकसूरी आदमीकेँ रस्सा लगौले जाइ हऽ ।'

चौकीदार पयर झिकझोरि छोड़बैत बाजल–'बेकसूरी कोना हइ गे ! ई मालिकके बखारी कटलकनि, आँखिसँ देखलकै लोक ।'

गेनमाक बहु जेना प्रचण्ड बताहि भऽ गेलक–'ई मालिक पकड़लकै हमर मरदकेँ ? ई मालिक झुट्ठा हय । ई मालिक छिनार हय । हमर हाथ पकड़ैत रहल हवेलीमे । हमर मरद मुँहपर डाँटि देलकै, तकरे ओलि सधबै हय । एकर बातपर नै जा हो कक्का ! एकरा छोड़ि दहक ।'

महेश बाबू तरङ्किऽ लग अयलाह । हाथमे बेँत छलनि जाहिसँ गेनमाक गत्र–गत्र दगने छलथिन । वैह बेँत सट–सट गेनमा–बहुक पीठपर मारैत कहलथिन–'तोहर एहन मजाल गे नटिनियाँ ! तोँ हमरे दरबज्जापर आबि हमरा गारि देबेँ ! लगाबऽ गुणाकर एकरा पचास जूता !'

गुणाकर जूता खोलि ताबड़तोड़ देबऽ लगलथिन आ महेश बाबूक बेँत सेहो बजरैत रहलनि । मौगी मुदा चुप नहि भेलनि । ओहिना गारि पढ़ैत रहलनि महेश बाबूकेँ— छिनार, झुट्ठा कहैत रहलनि ।

मारिसँ ओकर बोली क्रमशः बन्द होबऽ लगलैक, मुदा जूता आ बेँत ओहिना बजरैत रहलैक । तखने अन्हारसँ मुखिया एकबाली चौधरी प्रकट भेलाह । संगमे लंका मोहनपुरक किछु आर लोक रहनि । अबिते महेश बाबूकेँ रोकलथिन–'एना नहि होअय मास्टर साहेब ! स्त्रीगणपर एना हाथ छोड़ब उचित नहि । बस्स करू गुणाकर !'

गुणाकरक हाथ ठमकि गेलनि । महेशबाबू बेंत रोकैत गरजिकऽ बजलाह–'हमरा उचित–अनुचित नहि सिखाउ मुखियाजी ! ई मौगी दरबज्जापर आबि हमरा गारि पढ़त आ एकरा छोड़ि देबैक ! एकरा नङटे गाछसँ टाङि घोरन लुधका देबैक हम ।'

'बात की थिकैक ?' –मुखियाजी प्रश्न कयलथिन ।

–'बात की रहतैक ! एकर सायँ गेनमा हमर बखारी हाँसूसँ काटि धान चोरा रहल छल । गुणाकर पकड़लथिन । दफादार ओकरा थाना लऽ जा रहल छैक आ ई मौगी दरबज्जा चढ़ि हमरे उनटे गारि पढ़ि रहलि अछि । लगाबऽ गुणाकर एकरा पचास जूता आर ।'

गुणाकर जूता उसाहऽ लगलाह, मुदा मुखिया बीचेमे रोकि देलथिन–'अहाँ थम्हू गुणाकर ! ई ठीक बात नहि भऽ रहल अछि मास्टर साहेब ! एक टा जनानीकेँ एतेक मारि ! सायँ चोरि कयने छैक तँ ओकर तरीका छैक । बगलेमे सरपरंच छथि । हुनको बजबा लितियनि । पंचायत अछि, ओतहि फैसला होइत । पुलिसेमे देबाक अछि, तऽ सैह करितहुँ । मुदा एना स्त्रीगणपर जुलुम ठीक नहि ।'

महेश बाबू गरजिकऽ बजलाह–'बस्स करू मुखियाजी ! हमर दरबज्जापर बिन–बजाओल आबि हमरा न्याय सिखा रहल छी ? सात पुरखासँ एकरसभक न्याय हमरालोकनि करैत आयल छिऐक, अखनो करबैक । एक बेर आर अहाँलोकनि अइ दरबज्जापर अपन जोर देखबऽ आयल रही । की हाल भेल रहय से बिसरि गेल ?'

आ, अन्हारमे बूढ़ा नामी बाबूक गर्जन सेहो सुनाइ पड़लनि–'आ हम अखन जिबिते छी मुखियाजी ! अखनो बन्दूक उठा सकैत अछि हमर हाथ ।'

एक बेर नामी बाबूक संग लंका मोहनपुर चौधरानावलाक झगड़ा भेल रहनि । अलगू चौधरी लंका मोहनपुरवलाकेँ सहका देने रहथिन । बात किछु नहि रहैक । नावपर किछु छौंड़ासभ बदमासी कयने रहनि । सभकेँ पकड़बाकऽ पिटने छलथिन नामी बाबू । ओही छौंड़ाक गार्जियनसभ लाठी लऽकऽ नामी बाबूक दरबज्जापर आबि गेल रहैक । कोठेपरसँ दू टा हवाइ फायर कयलथिन नामी बाबू । सभ लंक लऽकऽ पड़ायल ।

नामी बाबूक गर्जनक मुखियाजी कोनो उत्तर नहि देलथिन । दफादार गेनमाकेँ लऽ थाना विदा भेल । मुखियाजी गेनमा–बहुकेँ कहलथिन–'जो, तोँ अपन घर जो । पुलिसमे केस दर्ज होबऽ दहिक । बादमे जमानति भऽ जेतौक ।'

गेनमाक बहु चुपचाप ऊठि विदा भेलि । दरबज्जापर जमा भीड़ो आस्ते–आस्ते सहटऽ लागल । मुखियाजी सेहो किछु बिचारैत लंका मोहनपुर विदा भेलाह ।

मुदा, महेश चौधरीक तामस शान्त नहि भेलनि । गुणाकरकेँ लग बजा कानमे कहलथिन–'अइ मुखियाकेँ तँ हम बादमे बूझि लेबनि । मुदा अइ मौगीक इन्तजाम आइए हेबाक चाही । गणेशकेँ संग कऽ लैह । आरो लोकक काज होअऽ

तँ लऽ लैह । यदुआ-मायकेँ ताड़ी-पीनी लेल किछु टाका दऽ दिअहक । आ, अइ मौगीकेँ नङटियाकऽ बीच आङनमे बेरा-बेरी भरि राति नोचि-नाचिकऽ छोड़ि दिअहक। गत्र-गत्रमे निशान कऽ दिअहक जे काल्हि सौँसे इलाकाक लोक देखैक।'

गुणाकर चल गेलाह । महेश बाबू ओतहि ठाढ़ छलाह । बाप कहलथिन– 'अही द्वारे कहैत छलियह तोरा सभ दिन जे होशियारीसँ सभ काज करह । ई लक्षण नीक नहि छऽ । खतबेटोलीक एक टा मौगी दरबज्जापर आबि तोरा की-की ने कहि गेलह ! काल्हि भरि गाम चर्चा हेतह ।'

महेश बाबूक तामसकेँ बापक गप्प आर बढ़ा देलकनि । ओइ छिनरी मौगीक एहन मजाल ! काल्हि देखतैक भोरे गामक लोक । सायँ जहलमे रहतैक आ अपने चितंग पड़लि रहति नाङटि भेलि बीच आङनमे ।

गेनमाक आङनमे गुणाकर एकसरे पैसलाह । ककरो संग नहि कयलनि । हुनकर मोन बड़ दिनसँ ललचायल रहनि गेनमा-बहुपर । मुदा, ओइपर महेश बाबू आँखि गड़ौने रहथिन । ओ चुप्पे छलाह ।

आइ अपने स्वीकृति दऽ देलथिन । गुणाकर हुलसल विदा भेलाह । हाथमे अपनासँ ऊँच लाठी रहनि । लम्बाइमे अपने कने कम्मे रहथि-पाँच फीट चारि इंच! मुदा बेस चाकर । अखाढ़ा खेलाइ छलाह पहिने । हाथ-पयर-जांघक मांसपेशी खूब कस्सल-कस्सल । पचासक वयस भेलनि, तैयो सभ टा दाँत दुरुस्त छलनि आ केश एकदम कारी । सभ दिन कड़ूतेल लगबैत छलाह केश आ देहमे । नित्य मालिससँ कारी देह खूब चमकैत रहैत छलनि । देहपर अधिक काल कोनो अंगा नहि । डाँड़मे ढट्ठा बान्हल धोती आ हाथमे पैघ सन लाठी । डाँड़सँ खोसल बटुआमे तमाकू आ चून ।

आङन पैसऽसँ पहिने नीक जकाँ तमाकू चुना ठोर तर दबलनि आ रातुक अन्हारमे छपकले गेनमाक आङन पैसलाह । आङन निस्तब्ध छलैक आ घरक फट्टक बन्द । सामने कने टा एक टा आर कोठली छलैक बिन चौखटि-दरबज्जाक । यदुआ-मायकेँ आस्तेसँ हिला देलथिन ।

बुढ़िया चेहाकऽ उठलि-'के हय ?'

गुणाकर मुँहपर हाथ राखि देलथिन– 'डेरो जुनि । हम छी गुणाकर । ई ले दसटकिया !'

यदुआ-माय प्रसन्न होइत बाजलि-'आइ बेसी भाङ पीले छी गुणाकर बाबू ! दसटकही कहिओ जुआनीमे नहि देली आ आइ अइ बुढ़ियाकेँ दसटकिया !'

गुणाकर आस्तेसँ डँटलथिन–'ई हँसी-मजाक बन्द कर । ई दसटकिया तोरे छौ, मुदा तोरा लेल नहि । तोहर छोटकी पुतहु जे छौ बड़का इज्जतिबाली, तकरा लेल । बड़ गुमान छै ओकरा, आइ बुझा देबैक । कने फट्टक खोला दे ।'

यदुआ-माय सिहरि गेलि । गुणाकर राक्षस छै, ओकरा बुझल छैक । मौगी-देहकेँ जानवर जकाँ भम्होड़ैत छैक, जेना भूखल बाघकेँ शिकार भेटल होइ । कहियो काल अप्पन अइँठ-कूठ महेश बाबू ओकरो फेकि दैत छथिन आ ओइ अइँठ-कूठकेँ सिसोहिकऽ राखि दैत छैक गुणाकर । यदुआ-माय जनैत छलैक ।

विरोध करबाक कोनो उपाय नहि छलैक, कोनो इच्छो नहि छलैक । गेनमा आ ओकर बहु अपने झंझटि बेसाहने छैक । अही मौगी द्वारे आइ ओकर बेटाकेँ थाना लऽ गेलैक । बड़ शान छै एकरा ! आइ घोसाड़ि देतैक गुणाकर सभ टा । फट्टक लग जा कने आस्तेसँ बजलैक–'कने फट्टक खोल गय गेनमा बहु ! एगो बीड़ी दे । खोल फट्टक !'

पहिल बेर क्यो नहि बजलैक । यदुआ-माय फेर सोर पाड़लकै, दोसर बेर, तेसर बेर । गेनमाक बहु लोहछिकऽ उठलै–'अइ बुढ़ियाक तमेशा देखू ! अइ सुतली रातिमे बीड़ीक बेगरता हो गेलै !'

फट्टक खुजलैक आ फट्टक खुजैत देरी बुढ़ियाक सत्ती गुणाकर झपटलनि ओकरापर । मुँहसँ एको शब्द नहि बहार होबऽ देलथिन । एक हाथसँ मुँह दबा उठा लेलथिन कोरामे आ ओहिना कोरामे लेने माँटिपर बैसि गेलाह । मौगी बेसी हाथ-पयर नै फेकि रहलि छलैक । गुणाकर चपचपाइत ओकरा माँटिपर पाड़लनि ।

कने हाथक पकड़ि ढील भेले छलनि कि मौगिया हाथसँ छिटकि कोठलीक अन्हारमे कोम्हरो बिला गेलनि आ, जाबत सम्हरथि ताबत खच्च दऽ कोनो चीज कन्हामे धँसलनि, फेर दोसर, तेसर । गुणाकर ओहीठाम ओंघरा गेलाह ।

ओ दबिला, शोनिते रङल दबिला लेने आङनमे आयलि गेनमा-बहु ।

यदुआ-माय ओतहि ठाढ़ि छलैक । उठा लेलकै ओकरोपर दबिला-'आइ एकरो खण्डी-खण्डी कऽ दैत छिऐ । भीतरमे मस्टरबाकेँ काटिकऽ राखि देले छिऐक । दुनू पाप एक्के दिन हँटि जाउ धरतीसँ ।'

यदुआ-माय हाथ जोड़ि पयरपर खसलैक— 'काटि दे भवानी ! तोँ देवी छेँ ! छछात दुर्गा । काटि दे, हमरो उद्धार भऽ जायत ।'

गेनमा-बहु दबिला नीचाँ करैत कहलकै- 'एकर शोनितसँ के अपन हाथ रङतैक, गंदा शोनित हइ, घिनोन । भरि जिनगी अपने खेल खेलौलकै आ बुढ़ारीमे बेटी-पुतहुके सौदा करै हय ।'

यदुआ-माय ओहिना पयरपर खसल रहलैक-'ठीक कहले भवानी ! मुदा अइ पापिनोक उद्धार कऽ दे भवानी ! तोँ एतना देरी से किए अयले भवानी अइ गाममे ? तोँ आर पहिले अबितेँ भवानी !'

बुढ़िया बताहि भऽ गेलि छलैक । भवानी-भवानी रट लगबैत जमीनपर ओंघरा रहलि छलैक । जानक डरे भगलो ने कयने होइ !

मुदा, भगलो कयने होइ तैयो ओकर शोनितसँ अपन हाथ रङबाक इच्छा नहि भेलैक गेनमा-बहुकेँ । भीतरघरमे एक टा लहास पड़ल छलैक जकरा ओ मास्टर महेशक लहास बूझि रहलि छलैक । आङनमे बुढ़िया भवानीक रट मारने छलैक ।

ओइ अन्हारमे क्यो देखितैक तँ सत्ते भवानी लागि रहलि छलैक गेनमा-बहु । सौँसे देहपर शोणितक छिटका आ हाथमे दबिला । बीसक वयस आ गोर रंग । कस्सल देह आ कटगर नाक-आँखि । मुदा, क्रोध आ घृणासँ तनल आ ओइ भवानी-मूर्तिक पयरपर यदुआक माय ओंघरा-ओंघरा गोड़ लागि रहलि छलैक ।

किछु काल बाद ऊठिकऽ ठाढ़ि भेलै बुढ़िया-'दबिला हमरा दे भवानी ! तोँ भागि जो अप्पन नैहर ।'

गेनमा-बहुक लेल ई अप्रत्याशित छलैक । सत्ते, बुढ़िया बताहि भऽ गेलि छलैक । ओ दबिलावला हाथ दूर करैत कहलकै-'ई की करतैक दबिला लऽकऽ ? आरो दू चारि टाकेँ अन्हारमे नुकौने हइ की ? बुला ले, ओकरोसभकेँ खण्डी कऽ दिऐक आइ ।'

यदुआ-माय हाथ जोड़ि देलकै-'कऽ देबहिक तोँ, मानै छियौ हम । तोँ छछात दुर्गा छेँ । मुदा दबिला दे हमरा आ भागि जो अप्पन नैहर ।'

गेनमाक बहु अड़ल रहलैक-'हर्गिज नहि । ककरो नहि देबैक ई दबिला । घरमे मस्टरबा दू खण्डी भेल पड़ल हइ । पुलिसकेँ बजा लौक ।'

यदुआ-माय कहलकै— 'मस्टरबा नै हउ भवानी, ओकर कुकूर हउ गुणाकर । अइ कुकूर वास्ते हम छियौ भवानी । दबिला दऽ दे हमरा । तोहर बड़का गो जिनगी हउ । गेनमा छूटिकऽ आबि जेतौक । कोनो दोसरे गाम बसि जैहेँ । भागि जो भवानी !'

-'नै, हम नै भगबै । भागिकऽ कहाँ जयबै ? मस्टरबा आ गुणाकर तँ सभ जौर हइ । आब भगबै नहि कतौ । बजा लौ पुलिसकेँ ।'

'जय भवानी'-बुढ़िया अङनासँ बाहर दौड़लैक । सत्ते पगला गेलि छलैक बुढ़िया । अन्हारमे नै जानि किम्हर दौड़ले गेलैक ।

मुदा, गेनमा-बहुकेँ डर नहि भेलैक-'जाउ जिम्हर जयबाक होइ, बुला लौ जकरा बुलाबेके होइ । आइ सभकेँ अही दबिलासँ काटि देबैक ।'

ओ हाथमे दबिला लेने ओही ठाम आङनमे बैसि गेलि ।

महेश बाबूक दरबज्जापरसँ मुखियाजी सोझे अपन टोल नहि गेलाह । पहिने गेला पोखरि हवेली । कुसुमदाइ बाट तकैत होयथिन ।

मुखियाक मोन अशान्त छलनि, अपमानक ज्वालासँ दग्ध । महेश बाबू अपमान कयने छलथिन दस लोकक सामने । हुनकर मोन बढ़ल जा रहल छनि । बलुआहीमे रामौतारक बेटा-पोतासभ हुनकर संग छनि, पीपरपाँती आ बलुआहीक आरो लोक सभकेँ ओ अपना दिस मिलौने जा रहल छथि । मुखिया एकबाली चौधरीकेँ सभ ठामक खबरि रहैत छनि । ओही दिन प्रोफेसरक दरबज्जापर मीटिंग भेल रहैक- बलुआहीक प्रोफेसर वीरेन्द्र । बूढ़ा नकछेदी अपने गप्प उठौने रहथि-'अइ बेर मुखिया बदलब आवश्यक अछि । अपन गामक नामपर सभ बेर वोट लऽ लैत अछि एकबाली आ अपन भोँट भरि लैत अछि ।'

प्रोफेसरक भाइ नरेन्द्र बजलाह-'एकदम गोबरक चोत छथि मुखिया । कोनो गप्पक लूरि छनि ? कोनो मंत्री-नेता चीन्हैत छनि ? खाली दरभंगामे पैरबीक ठीका लऽ ली । बस्स, एतबे अबैत छनि ।'

पीपरपाँतीक बटोहीझा कहलथिन–'हमरालोकनि तँ सभ बेर संग देलियनि मुखियाक, मुदा अइ बेर हुनका बदलब आवश्यक अछि । बगलेमे अछि विशनपुर, जकरा क्यो चिन्हितो नहि छलैक इलाकामे । तकर मुखिया अपन गामकेँ 'आदर्श ग्राम' घोषित करबा सभ टा सुविधा लऽ लेलक । आ, हमरालोकनि मुँह तकैत रहलहुँ । हवेली मोहनपुरमे सभ घर पढ़ल-लिखल लोक, हमरोलोकनि आब पछुआयल नहि छी, गफूरगंजमे रेलवे स्टेशन । मुदा, पक्की सड़क बनबा लेलक बिशनपुरबला, उनटा लऽ गेल सड़ककेँ, आन पंचायत दने । हमर मुखिया गोबरक चोत छथि, हिनका बदलू अइ बेर ।'

एकबाली चौधरीकेँ सभ खबरि भेल रहनि । हवेली मोहनपुरक योजना हुनका बूझल छलनि । तेजू तँ कल्हुका छौड़ा छथि, असल छथि महेश आ टाका-पैसाक जोर रहतनि मिहिर आ नारायणक । दू नम्बरक पैसाक जोर ।

ओहो पैतरा बदलि लेने छथि । सभ ठाम अपनेलोकसँ प्रचार करा देने छथिन–'एकबाली अइ बेर ठाढ़ नहि होयताह । हवेली मोहनपुरक हरिश्चन्द्र चौधरी पुरान छथि, हुनके बना दियनु । नै तऽ झमेली साहुक बेटा मक्खन साहु अछिए । जमाना देखियौक । सभसँ बेसी बोट तँ ओकरेसभक छैक । कतेक दिन तक ओकरा दबाकऽ रखबैक, शोषण करबैक ?'

झमेली साहु आ ओकर बेटा मक्खनकेँ बीच-बीचमे मुखिया सहका दैत छथिन । सभ टा योजना ठीके काज कऽ रहल छनि । कोनो विशेष चिन्ता नहि छनि ।

मुदा, आइ महेश बाबू दस लोकमे ललकारने छलथिन । ओ ओही पारमे रहथि जखन हल्ला मचलैक । देखबा लेल पहुँचि गेल छलाह । हुनकर मोन अशान्त छलनि आ अशान्त मोनक इलाज छलथिन कुसुमदाइ, पोखरि हवेलीक कुसुमदाइ । गामक बेटी नहि छलीह, पुतहु छलीह । मुन्नर चौधरीक स्त्री । गाममे सभ कहै छनि–मुन्नरक स्त्री वा टुन्नीक माय । मुदा मुखियाजी दुलारसँ कहैत छथिन कुसुमदाइ ।

मुखिया पुरान चमचोर छथि । चिकनफट सेहो बेस । खादीक धोती-कुर्त्ता हरदम कड़ाकड़ायल आ निदग्ग रहैत छनि । सफाचट दाढ़ी-मोछ । भुट्ट होयबाक कारणेँ वयस किछु कम्म बुझाइत छनि । केश खिजाबसँ रङल । देह बेस सोंटल, मुदा छोट छीन धोधि । मुँहमे पान आ हाथमे छड़ी । रंग कारी आ नाक पसरल । आँखिमे एक टा कृत्रिम विनम्रता । अपने धीया-पूता जहिया पकड़ने रहनि भाउजिक संग, बड़ गंजन कयने रहनि । मुखिया लेखे धनसन । सभ टा देहसँ झाड़ि लेलनि । भाउजि देहसँ लटकले रहलथिन । बूढ़ि होइत भाउजि आब भार लागऽ लागल

छथिन । एकबाली अपने पचास पार कऽ गेल छथि । भाउजि सेहो पैंतालीससँ कम्म नहि होयथिन । पाकल केश आ पिचकल गालबाली पैंतालीस वर्षक गोरि-नारि भाउजि आब एकबालीकेँ असर्ध लगैत छथिन । हुनकर बिछौनपर सुतलाक बाद भरि दिन जी ओकाइत रहैत छलनि, जेना कोनो असर्ध वस्तु छूबि लेने होथि ।

मुदा, मुक्ति नहि छलनि । एक दिन अपने स्नेहसँ बिछौनपर नोतने छलथिन । आब ओइपरसँ उतारब मोस्किल भऽ रहल छनि । एकबाली अपने उतरि गेल छलाह ओइ बिछौनासँ बहुत पहिने । कुसुमदाइक बिछौन महमह करैत छलनि । पहिले दिन सभ टा जीहक पचपची ठीक भऽ गेलनि आ मुँहमे एक टा नीक सन सुगन्ध भरि गेलनि ।

ओना, कुसुमोदाइ पैँतालीससँ कम्म नहि छलीह । मुदा देखबामे तीसे सन लगैत छलीह । तीस वर्षक जेठ बेटी टुन्नी सासुर बसैत छनि, से कुसुमदाइक जेठ बहिन सन लगैत छलनि । दुनू बेटा अट्ठारह आ सोलह वर्षक भऽ गेल छनि । छोटकियो बेटी सासुर बसैत छलनि ।

मुदा, से बादक गप्प छैक । जहिया मुन्नर चौधरी निपत्ता भेलाह, जेठकी बेटी पन्द्रह वर्षक रहनि, दूनू बेटा आठ वर्ष आ छओ वर्षक । सभसँ छोट बेटी कोरामे रहनि । क्यो-क्यो कहैत छनि जे कोरोमे नहि, पेटमे रहनि । बेसी लोक कहैत छनि जे पेटोमे नहि रहनि, मुन्नर चौधरीक पड़यलाक बाद पेट मे अयलनि । ठीक-ठीक ककरो मोनो नहि छैक । एतबा मोन छैक जे पन्द्रह वर्ष पूर्व एक दिन मुन्नर चौधरी निपत्ता भऽ गेलाह । की भेलनि, लोक नहि बुझलकनि । वर्ष दिन बाद खबरि अयलैक जे दार्जिलिंगमे छथि, एक टा पहाड़िनसँ बिआह कऽ लेने छथि ।

लोककेँ हुनकर स्त्रीपर बड़ दया भेलैक । चारि टा सन्तान । एक टा बिआह जोगर बेटी आ स्वामी छोड़ि पड़ा गेलथिन । मुदा मुन्नर चौधरीक स्त्री साहस कयलनि आ सभ टा काज होबऽ लगलनि । बेटी सासुर गेलनि, बेटासभ स्कूल जाय लगलनि । जमीन-जथा छलनि, नीक उपजा भऽ जाइत छलनि ।

फेर लोकमे कनफुसकी होबऽ लगलैक जे मुन्नरक अङनामे साँझेसँ लुच्चासभ जमा रहैत छनि, चिलम फुकैत छनि आ ओतहि पड़ल रहैत छनि । स्वाति ने गाम छोड़ि पड़यलाह मुन्नर !

जहिया एकबाली मुन्नर चौधरीक अङनामे प्रवेश कयलनि, बाँकी सभ भागि पड़ायल । एकबालीकेँ गन्ध लागल रहनि आ सुंघैत पहुँचल रहथि एक

दिन–'एना कतेक दिन चलत ? कही तँ हम किछु मदति करी । अइ पंचायतक सेन्टरपर ट्रेण्ड दाइक जगह खाली छैक । अहाँक बहाली करबा सकैत छी, मुदा...'

मुदा बुझबामे मुन्नरक स्त्री बड़ होशियारि छलथिन । एकबालीक मोन हुलसि उठलनि । ओ सिनेहसँ कहलथिन–'एतेक दिन धरि अहाँ कहाँ नुकायलि रही कुसुमदाइ !'

कुसुमदाइ ट्रेण्ड दाइ बनि गेलीह । रुपैया-पैसाक आमदनीक जरिया भऽ गेलनि । बेटासभ अङनेमे काण्ड देखैत बुझनुक भऽ गेल छनि । टोक-चाल नहि करैत छनि । छोटकी बेटीकेँ सासुर विदा करबामे एकबाली बड़ मदति कयलथिन। बेटो दुनूकेँ कालेजमे पढ़बाक व्यवस्था करबा देलथिन । आङन खाली भऽ गेलनि आ एकबाली निधोख जाय-आबऽ लगलाह । कुसुमदाइक सिङार-पटार बढ़ि गेलनि। ठोर हरदम रङल, कसल-कसल आङी, रंग-विरंगी साड़ी, आँखिपर चश्मा । सौंसे इलाका हाथमे छत्ता लेने बूलि जाइत छलीह । गोरि-नारि आ मांसल देहबाली कुसुमदाइक देह सालमे एक बेर पियरा जाइत छलनि, देहक मासु गलि जाइत छलनि । तहिया कम्मेकाल घरसँ बहराइत छलीह कुसुमदाइ । ओना, अट्ठारह-बीसक छौँड़ो लोभाकऽ टकटकी लगा दैत छलनि । बिराज बाबूक जेठ बालक, मुन्नरक जेठ भाइ रघुनाथ चौधरी शुरूमे बड़ हल्ला कयलनि–'ई मौगी तँ निर्लज्जि अछिए, नै तँ मुन्नर किएक एना घर छोड़ितथि ? मुदा, अइ मुखियाक करनी तँ देखू ! एकरा तँ कारी-चून लगाकऽ इलाकामे घुमयबाक चाही ।'

भरि गाम वैह प्रचार कयलथिन । मुदा, हुनकर डर एकबालीकेँ नहि छलनि। ओ निधोख जाइत-अबैत छला । हुनका सम्हारऽ लेल हरिश्चन्द्र चौधरी छलथिन।

आइ महेश दस लोकमे ललकारने छलथिन आ मोन उद्विग्न छलनि । एकबालीक उद्विग्न मोनक इलाज छलनि कुसुमदाइक हाथ । ओम्हरे विदा भेलाह। तीन दिनसँ गेलो नहि छलाह ।

एकबालीकेँ देखिते कुसुमदाइ प्रसन्न भऽ उठलीह–'आउ मुखियाजी ! बाट तकैत-तकैत तीन दिनसँ आँखि दुखा गेल । एहन कोन तामस हमरापर जे आयब त्यागि देल । अखनो मोन तमसायले देखैत छी ।'

एकबाली धड़फड़ायल रहथि । घरमे अबिते पजिया लेलथिन–'अहाँपर कोना तमसायब कुसुमदाइ ? अहाँ तँ हमर जान छी । आइ मोन बड़ भारी अछि–माथ टनकि रहल अछि ।'

कुसुमदाइ देह छोड़ाकऽ जाय लगलीह–'थम्हू, कने गमकौआ तेल लगा दैत छी माथमे । तुरत सभ ठीक भऽ जायत ।'

एकबाली जाय नहि देलथिन । नीक जकाँ बाँहिमे समटैत कहलथिन–'असल गमकौआ तँ अहाँ छी कुसुमदाइ !'

कुसुमदाइ बाँहिसँ छिटकि गेलथिन–'नै, आइ लोभ नहि, आइ...' कुसुमदाइ हँसलीह— एकबाली एकदम सुस्त भऽ गेलाह । माथक टनक आर बढ़ि गेलनि । ऊठिकऽ ठाढ़ होइत कहलथिन–'तखन आइ चलै छी । मोन ठीक नहि अछि । फेर काल्हि आयब ।'

बिना उत्तरक प्रतीक्षा कयने एकबाली घरसँ बाहर आबि अपन घर दिस विदा भेलाह । रातिक अन्हार बेस नीक जकाँ पसरि गेल छलैक । एकबाली अपन हाथक बड़का टार्च बारैत अपन टोल पहुँचि गेलाह ।

अपन कोठलीमे आबि देखलनि जे टेबुलपर थारीमे खयनाइ झँपिकऽ राखल छनि आ हुनकर बिछौनपर भाउजि चितंग पड़लि छथिन । अनेरो पित्त लहरि गेलनि । समधानिकऽ एक लात देलथिन भाउजिक पाँजरमे–'उठू ! एना की पड़लि छी हमर बिछौनपर ? जाउ अपन कोठली ।'

भाउजि अप्रतिभ भऽ गेलथिन । ई अपमान आ तिरस्कार अप्रत्याशित छलनि । उठैत कहलथिन–'भऽ आयल हैब पोखरि हवेलीसँ, तेँ एतेक रोआब अछि। कुकूर छी, सभ भीड़मे मूँह देबे करब ।'

झनकैत-पटकैत भाउजि कोठलीसँ चल गेलथिन आ हुनका जाइते एकबालीकेँ लगलनि जे गलती भऽ गेलनि । एना लात नहि मारऽ चाहैत छलनि । मुदा, मोन बड़ उद्विग्न छलनि आ लात चलि गेल रहनि ।

खयनाइ ओहिना झँपल रहलनि आ एकबाली अपन गुनधुनमे लागल रहलाह । राति बितैत गेलैक ।

आँखिमे निन्न नहि छलनि एकबालीक । बड़ी राति बितलापर लगलनि जेना क्यो नाम धऽ सोर पाड़ि रहल होइनि । ऊठिकऽ हाथमे टार्च लेलनि आ बाहर अयलाह । दरबज्जापर एक टा माउगि चिकरि रहल छलनि–'दरबज्जा खोलू मुखियाजी !'

मुखिया ओइ मौगीकेँ मुहपर टौर्चक रोशनी दैत पुछलथिन–'तोँ के छिएँ गय, की बात छैक ?'

–'हम यदुआ-माय छी मालिक, खतबेटोलीके । कने चलू हमरा जौरे । हमर भवानीके बचा लू ।'

मुखिया खौँझाइत कहलथिन–'एतेक रातिके अही लेल हल्ला मचौने छेँ ? के छौ तोहर भवानी ?'

यदुआक माय आगू आबि पयर छानि लेलकनि–'हमर गेनमा-बहु मालिक ! उहे भवानी हय छछात दुर्गा । गुणाकरके दबिलासँ दोखरि देलकै । घरमे लहास पड़ल हइ आ अपने दबिला लेने बैसलि हय भवानी । एकदम्म बेकसूरी हय हमर भवानी । साँझे गेनमाकेँ थाना भेजलक आ रातिए गुणाकर पैसलै घरमे । सभ महेश मास्टरकेँ कुचक्र हय मुखियाजी ! बचा लू हमर भवानीके ।'

मुखियाक माथ एखनो टभकि रहल छलनि । दस लोकमे महेश बेइज्जत कयने छलथिन । आब कहाँ जयता महेश ? आ, गेनमा-बहुक आकृति मोन पाड़ि आँखिमे एक टा दोसरे चमक आबि गेलनि । आगाँ बढ़ैत कहलथिन–'आ तऽ हमर संग !'

मुखियाक टॉर्च जखन यदुआ-मायक आङनमे पड़लैक, तखनो ओहिना दबिला लेने बैसलि छलैक गेनमा-बहु । टोल एकदम निस्तब्ध छलैक जेना, किछु भेले नहि होइ । कोनो-कोनो घरमे कखनो-कखनो क्यो खें-खें कऽ उठैत छलैक आ मुखियाक आगमनपर अनेरुआ कुकूरसभ खूब झौहरि कयने छलैक ।

गेनमा-बहुकेँ देखि मुखियाक माथक टभक आर बढ़ि गेलनि । आइ कुसुमोदाइ हुनकर इलाज नहि कयलथिन । गेनमा-बहु बाघिन छैक–खा जयतैक मुखियाकेँ । घरमे गुणाकर खण्डी भेल पड़ल छैक । मुखिया किछु सोचि मोनेमोन मुसकिया उठलाह— बाघिनक शिकार । कहलथिन–'फेक दे ई दबिला गेनमा-बहु !'

गेनमा-बहुकेँ जेना होश भेलैक । देखलक जे आङनमे सासुक संग मुखियाजी ठाढ़ छलथिन । टार्च मिझा गेल रहैक आ अन्हारमे मुखियाक ठोरपरक कुटिल हँसी ओ नहि देखलकै । मुखिया पुछलथिन–'तोँ अप्पन इज्जति बचबऽ लेल काटि देलहुन गुणाकरकेँ । एसगरे छलथुन ? घर कोना पैसलथुन ?'

गेनमा-बहु बिगड़ि उठलैक–'इहे नट्टिन बुढ़िया मेल कयले रहय ।'

बुढ़िया फेर हाथ जोड़ि देलकै–'भवानी ठीके कहै हय, ई पाप हमहीँ कयली ।'

मुखिया ओकरा डँटलथिन–'तोँ बन्द कर अपन भगल । गेनमा-बहु, तोँ बाज । महेश सेहो फँसय आ तोँ बाँचि जो अइ खूनक मामिलामे, से तोँ चाहै छेँ कि ने ?'

गेनमा-बहु चुप्प रहलैक । उत्साहित होइत मुखिया कहलथिन–'तोहर इज्जति लेलथुन महेश आ गुणाकर दुनू । गुणाकर बादमे । पहिने महेश । जाय लगलथुन तँ तोहर हाथमे दबिला आबि गेलौ आ दोखड़ि देलहुन गुणाकरकेँ । बुझलहिक कि ने ? पहिने तोहर इज्जति गेलहु, तखन तोँ प्राण लेलहिक ।'

यदुआ-माय फेर बाजलि–'भवानीके इज्जतिपर हाथ देलक, प्राण तँ जेबे करतैक ।' ओ एकदम बताहि भऽ गेलि छलैक ।

मुखिया किछु सोचिकऽ कहलथिन–'सबूत मुदा कमजोर छौक । गेनमा-बहु, तोँ भीतर आ । सबूत बना दैत छियौक ।'

मुखिया गेनमा-बहुकेँ घरक भीतर लऽ गेलथिन । जखन बहरयला, मुखियाक टभकैत माथ शान्त भऽ गेल छलनि आ मोन तृप्त । पाछाँ-पाछाँ अबैत गेनमा-बहुकेँ कहलथिन–'आब कोनो चिन्ता नहि । सबूत पक्का भऽ गेल छौक । महेश आ गुणाकर तोहर इज्जति लेलथुन आ तोँ गुणाकरक जान लेलहुन । खबरि पठबैत छिऐक थाना-पुलिसकेँ । तोँ निश्चिन्त रह । जेना कहलियौ अछि, सैह कहियहिक । डाक्टरी परीक्षा लेल सबूत पक्का कऽ देने छियौक । गेनमोकेँ छोड़ा लेबैक, तोँ चिन्ता जुनि कर ।'

घरे-घरे सभ सूतल छलैक टोलमे । कोनो सुगबुगी नहि छलैक । मुर्दा पड़ल टोल । ताड़ीक निसाँमे बुत्त सूतल टोल । मुखियाकेँ बहराइते कुकूरसभ एक बेर फेर झौहरि कयलकै । मुखियाक डेग लग्गा सनक भऽ गेल छलनि–तृप्त आ उल्लसित ।

गेनमा-बहु आङनमे बैसलि छलि, बगलमे दबिला राखल छलैक । यदुआ-माय अपन पुतहुक चारू कात परिक्रमा करैत हाथ उठा-उठा बाजि रहलि छलि–'जय भवानी–जय भवानी...!'

कोठलीमे शोणिते-शोणिताम भेल गुणाकरक देह पड़ल छलैक ।

गुणाकरक प्राण मुदा अख्खज छलैक । दबिला कण्ठक कातमे गरदनिमे धँसि गेल रहैक–दुनू कात । मुदा गरदनि बाँचल रहैक । अन्हारमे गेनमा-बहु बुझलकै जे दू खंड भऽ गेलैक । जखन पुलिस अयलैक तँ लादि-पाटिकऽ गुणाकरकें लोक अस्पताल लऽ गेलैक । मास दिन पड़ल रहलाह आ बाँचि गेलाह ।

गेनमाक बहु पकड़ल गेलि तँ बन्दे रहि गेलि । क्यो छोड़बऽ नहि गेलैक । सबूत मुखिया बना देने छलथिन । ओ अपन बयान देलकै आ महेश बाबू पकड़ल गेला बलात्कारक अपराधमे । जमानतपर छुटियो गेला । पेशकार छोट भाइ जी-जान लगा देलथिन । मुदा गेनमा-बहु ओहिना बन्द रहलि । क्यो छोड़बऽ नहि अयलैक, जमानतो नहि भेलैक । डाक्टरी जाँच भेलैक । मुदा ओइसँ पहिने दरोगाजी आ बादमे सिपाहीजी सबूत पक्का कयलथिन । कहलथिन-'सबूत ठीक नहि छौ, ठीक करऽ पड़तौक ।'

होश भेलापर गुणाकरक देल बयानसँ सभ टा पकिया कयल सबूत बेकार होबऽ लगलैक–'झूठे महेश बाबूक नाम ! ओ किएक जयथिन ओइ मौगी लग ? जाइत तऽ हम रही, से कोनो आइएसँ ! से नहि रहितैक, तऽ दरबज्जा कोना खोललक ? कोनो सेन्ह काटिकऽ गेल छलिऐ ? मौगिआ ओइ दिन ताड़ी बेसी पीने छलि, अनाप-सनाप बकऽ लागलि, गारि देबऽ लागलि । बिगड़िकऽ दू चाट देलिऐ तऽ सोझे दबिला चला देलक ।'

गेनमा-बहुकें मुखियाजीक भरोस छलैक, सबूत बनौने छलथिन । मुदा ओ सबूत बना निश्चिन्त भऽ गेलथिन । महेश बाबू पकड़ल गेला आ जमानतपर रिहा भेला । मुखिया एक चालिमे दू शिकार कयलनि ।

गेनमाक जमानति क्यो नहि देलकै । बुढ़िया यदुआक माय बताहि जकाँ अपन तीनू बेटाकें नेहोरा कयलक, भरि टोल, भरि गाम नेहोरा कयलक-'हमर गेनमाकें छोड़ा ला, हमर भवानीकें छोड़ा ला ।'

बतही कहि सभ ओकरा दुरदुरा देलकै । चोर आ खूनीकें के छोड़बितैक ? सभ ओइ दुनूकें बिसरि अप्पन-अप्पन काजमे लागि गेल । जेना किछु भेले ने होइ । एक टा मौगी मनसा जहल चल गेलैक तऽ की भेलैक ? टोलक लोक अपन काजमे लागि गेल– चोरि-छिनरपनमे तऽ ई सभ होइते रहैत छैक ।

मुखिया एकबाली चौधरीकें बहुत-किछु भेटलनि । महेश बाबूकें हथकड़ी लगलनि आ जमानतपर छुटलाह । गाममे आब सभ ठाम लोक एकबालीकें कहऽ लगलनि— 'से कोना हैत मुखियाजी ? ठाढ़ तऽ अहाँकें हेबे पड़त ।'

एकबाली हँसिकऽ रहि जाइत छलाह । हवेली मोहनपुरमे ओइ दिन महेश बाबू मुखियाकें ललकारैत सौसें गामकें ललकारने रहथिन । ई बात खूब प्रचारित कयलनि मुखिया–'ओलोकनि अखनो सैह बुझैत छथि जे ओलोकनि श्रेष्ठ छथि आ हमरालोकनि नीच । हमरालोकनि हुनक दरबज्जापर जैयनु, भोजन करियनु, ओ नहि करताह । ओसभ मालिक छथि, हमरालोकनि रैयत । ओलोकनि श्रेष्ठ ब्राह्मण छथि, आ हमरालोकनि छोटहा ।'

लंका मोहनपुरमे सभ ठाम प्रतिक्रिया होबऽ लगलैक–'कथीक छोटहा यौ ! आब कोन चीजमे झूस छियनि ! पहिने पैघ छलाह धनपर–चारि कोसक परगनाक मालिक छलाह । आब की छनि ? चूल्हिपर अदहन चढ़ा अन्न लेल गूफरगंज बजार दौड़ैत छथि । तखन विद्या अयलनि । पढ़ि-लिखि दस टा ओहदापर गेलाह । आब हमरालोकनि कोन पछुआयल छी ? डाक्टर अछि, इंजीनियर अछि, प्रोफेसर अछि । तैयो कहैत छथि हमरालोकनिकें लठियाकुमैत ! आब तँ हुनकोलोकनिक धीया-पूता पढ़ब-लिखब छोड़ि नढ़ेरपनीमे लागल रहैत छनि । आब तँ कहबनि जे हमरेलोकनि छी हवेली मोहनपुर आ ओसभ छथि लंका मोहनपुर ।'

बलुआहीक बद्री मिसरकें नहि सहि होइत छनि आ कहैत छथिन— 'बेसी लुबलुब नहि करैत जाह ! अखनो परतर करबहक हवेलीक संस्कार आ सभ्यताक ? तोरालोकनि तऽ पढ़ियो-लिखिकऽ वैह लठियाकुमैत छऽ । तेसरा दिनपर भाइ-बापसँ लाठा-लाठी करैत छऽ । तोरालोकनिकें पढ़ने, नहि पढ़ने की फर्क ? अइसँ तऽ मूर्खे नीक छलह तोरालोकनि । एहन पढ़ब-लिखब कोन काजक ? ने ककरो लेहाज आ ने कोनो सभ्यता ।'

नवतुरियासभ लोहछि जाइत छनि अइ गप्पपर । एक-दोसरकें कानमे कहैत छैक–'बूढ़ा सभ्यता सिखा रहल छथुन ! अपने सभ राति पुतहु लग सुतैत छथुन बुढ़ारियोमे, आ हमरालोकनिकें सभ्यता सिखा रहल छथुन !'

सभ हँसऽ लगैत छनि भभाकऽ । बूढ़ा बद्री मिसर फेर टोकैत छथिन–'यैह फर्क छैक हवेली मोहनपुर आ लंका मोहनपुरमे । श्रेष्ठक बातपर अशिष्टतापूर्वक ठिठिआयब, यैह पढ़ैत-लिखैत गेल छी अहाँलोकनि ? अखनो हवेलीक धोअनो नहि भेल छी ।'

बद्री मिसर अधिक काल हवेली जाइत छथि । महेश चौधरी आ नामी चौधरी लग उठैत-बैसैत छथि, लोक जनैत छनि । ओना, लंका मोहनपुरक लोक आब हवेली बिन-बजाओल जयबामे अपन अपमान बुझैत अछि ।

मुदा, बूढ़ा बद्री मिसर एखनो ओइ पार जा मन्दिरमे प्रणाम कऽ अबैत छथि। पूजामे एखनो नाटक ओही पारमे देखैत छथि–हवेलीक परतर तोरालोकनि करबह ! तोरालोकनि तऽ नौटंकी करैत छह ।'

बद्री मिसरक संग देबऽवला बेसी लोक नहि छनि आब लंका मोहनपुरमे। लंका मोहनपुर नहि, मोहनपुर पुबारि पार ! गफूरगंज-गुमती लग बड़का बोर्ड टाङल छैक । आ, एकबालीक एजेन्ट सभ ठाम प्रचार करैत छनि–'हवेली मोहनपुरक लोक एखनो वैह सामन्ती युगमे छथि । सभ चीजपर हुनका विशेषाधिकार चाहियनि । मिल्कियत गेलनि मुदा रोआब छनिहें । पाँचे सय लोकक बले मुखियाक गद्दी चाहियनि ! हमरालोकनि दू हजार लोक बकलेल छी ! माँटिक मुरूत ! जे ओ कहता, मानि जयबनि ! जहिया किछु नहि छल, तहिया मुखियाक गद्दी देबे ने कयलियनि आ आब तऽ हमहूँ लोकनि पढ़ि-लिखि गेल छी ।'

यैह पढ़ि-लिखि जायब काल भऽ गेल छैक पुबारियो पारमे । जहिया क्यो ने पढ़ल-लिखल रहै वा कम्मे पढ़ल-लिखल रहै, गामक नामपर तुरत मेल भऽ जाइ। आब पढ़ि-लिखि गेल अछि तँ मेल होयब मोस्किल भऽ गेल छैक । टोला-टोली काट छैक । टोलोमे देयादी आ पड़ोसिया-काट छैक आ सभसँ ऊपर छैक पढ़ल-लिखल बेकार बैसल धीया-पूताक समस्या । हवेली मोहनपुरक मिहिर आ नारायण सभकें काज धरा रहल छथिन । हुनकासँ पहिने बिराज चौधरीक छोट भाइ जज भेल रहथिन– रामेश्वर चौधरी । सभकें सिविल कोर्टमे भरि देलथिन–खाली हवेलिएक लोकके नहि, लंको मोहनपुरक लोकके–इलाकाक लोकके । जजसाहेब गाम छोड़ि पटने बसि गेल छथि, गामक राजनीतिसँ कोनो मतलब नहि रहै छनि। मुदा मिहिर आ नारायण तँ चुनि-चुनिकऽ नौकरी दिया रहल छथिन । जे तेजूकें भोट देतनि, तकरा नौकरी। लिस्ट बनबैत छलथिन महेश बाबू । सभकें हुनके खोशामद रहैत छलैक । मुखिया एकबाली जनैत छथि । गामक नवतुरिया आ ओकर गार्जियनोसभ महेश बाबूक खोशामदमे रहैत अछि । एकबाली सभकें कहलथिन–'बुधियारीसँ काज लैह । नौकरियो लऽ लैह आ देखारो नहि होअऽ । कहुन जे अहींक सङ छी। बाँकी इन्तजाम हमरापर छोड़ि दैह । राजनीतिक गप्प छैक । तोरालोकनि नहि बुझबहक अखन । चुनाव आबऽ दहक, अखन छैक किछु दिन देरी । तखन देखिअहक राजनीतिक असल दाव-पेंच ।'

दाव-पेंच तिवारियोजी लगौलनि ।

ओना, धनुखटोलीक माइंजन गङबा तिवारीक बात सुनैत छलनि । मुदा ओइ दिन एकदम बमकि गेलनि–'बेकारे हमरासभकें फुसलबै छी तिवारीजी ! अहाँ सभ बुत्ते कुच्छो नहि होइत । हमरा आरके एहिना लोक बेकसूरी सतबैत रहत ।'

तिवारीजी कहलथिन–'नै माइंजन ! आब से समय नहि रहलैक । कने आँखि खोलि दुनियाँक खबरि लैह । शोषकक पोल खुजि गेल छैक । मजदूर जागि गेल अछि आ अपन हक लऽ रहल अछि । तोरालोकनि कहिया धरि सुतले रहबऽ !'

गङबा तैयो नहि मानलकनि–'पोल तऽ सभ दिन खुजले हइ । लोक नै जनै हइ जे गेनमा चोरी नै कयने हइ ? लोक नै जनै हइ जे ओकर बहु इज्जति बचबे खातिर जान लेबऽ चाहलकै ? आइ ओ दुनू जहलमे बन्द हइ । के गेलै ओकरा बचबे खातिर ? अहूँ गेलिऐ तिवारीजी ? कहाँ हय अहाँक पार्टी ? जमानतपर छोड़ा दियौ ने ओकरा !'

तिवारी कने सिटपिटा गेलाह । हुनका माइंजन गङबापर भरोस छलनि । बेर-कुबेर मदति करैत छलथिन । ओ विधानसभा चुनाव लेल अपन पार्टीक क्षेत्र तैयार करऽमे लागल छलाह । पंचायतक चुनावक हुनका कोनो विशेष मतलब नहि छलनि । अनगौआँ छलाह । मुखिया लेल अइ पंचायतसँ अपन पार्टीक उम्मेदवार ठाढ़ करबाक पक्षमे नहि छलाह ।

मुदा गङबा आइ उकटि देलकनि । जहियासँ गेनमा आ ओकर बहु पकड़ल गेल छलैक, सभ किछु शान्त छलैक, जेना किछु भेले ने होइ । कोनो उत्तेजना, कोनो प्रतिक्रिया नहि । सभ जेना ओकरा बिसरि अपन काजमे लागल छल । तिवारीजी विचारलनि जे अपन काज शुरू करी, ओ खिस्सा तँ लोकके बिसरि गेल छैक ।

मुदा भितरे-भीतर आगि सुनगि रहल छलैक । तिवारियोजीकें पता नहि छलनि । गङबाक प्रश्नपर गोङिआय लगलाह–'ओ तँ हम ओइ दिन गाम गेल रही, ने तँ अबस्से जैतिऐक थाना-कचहरी आ छोड़ा दितिऐक दुनूकें ।'

गङबा तैयो नहि छोड़लकनि–'अखने कोन अबेर भेल हय तिवारीजी ! जमानति दिया दियौक । इलाकाक लोकसभ, छोटका लोकसभ कहत जे तिवारीजी सत्ते मदतिया छथि हमरासभक ।'

तिवारीजी कन्नी काटऽ लगलाह । ओ हेडमास्टर महेश बाबूसँ दुश्मनी मोल लेबऽ नहि चाहैत छलाह । अपन सभ टा प्रचार कार्य तरे-तर करैत छलाह ।

कचहरीमे ठाढ़ भऽ गेनमाक मोकदमा देखलासँ खुल्लम-खुल्ला लड़ाइ भऽ जयतनि आ तिवारीजी अनेरोक दुश्मनीसँ बँचऽ चाहैत छलाह ।

गङबाकेँ बुझौलथिन–'तोँ नहि बुझैत छहक माइंजन ! ओ मामिला एतेक सोझ नहि छैक । खूनक मोकदमा छैक, मोइमे जमानति हैब मोस्किल छैक ।'

माइंजन गङबा नहि मानलकनि–'मस्किल कोन छैक तिवारीजी ? गेनमा-बहुक इज्जति लेलथिन अहाँक हेडमास्टर साहेब आ गुणाकर, हुनका जमानति हो गेलनि । मुखियाजीक भातिज नरेश आ रामोतार बाबूक पोता तेसरा दिनपर छूरेबाजी करै हय, कखनो स्टेशन मास्टर, तँ कखनो कोनो दोकानदार के छूरा मारि अबै हय । ओकरा जमानत हो जाइत हइ आ गेनमा आ ओकर बहुकेँ नै हेतैक ? सेहे तँ हमहूँ कहै छी तिवारीजी जे गरीब लेल दोसर कानून हइ । ओकरा बराबरिक बात अहाँ खाली वोट वास्ते कहै छिऐ, मोनसँ नै मानै छिऐ । अहूँके मोनमे ओकरा वास्ते दोसरे कानून हय ।'

तिवारीजी माइंजनक बदलल रंग-ढंग देखि कहलथिन–'आइ तोरा की भऽ गेलह माइंजन ? हमर मोन तोँ नै जनैत छह ! हम तँ सभ दिन तोरेसभ लेल खटैत रहैत छी । हमर मोनमे तोरासभ लेल बराबरीक किएक, ओइसँ पैघ स्थान छऽ ।'

–'सत्त कहै छी तिवारीजी ?'

–'झूठ किएक कहबऽ ? परीक्षा लऽ लैह माइंजन !'

–'अच्छा तँ एगो बात करू तिवारीजी ! हमर बेटी बड़ सुन्नर हय, अहाँ तँ देखले छिऐ । अहूँक बेटा छथि । हमर बेटीकेँ अपन पुतहु बना लियऽ । हम–अहाँ सम्बन्धी बनि जैब ।'

तिवारीजी बमकला–'तोहर दिमाग आइ खराब भऽ गेल छऽ माइंजन ! अण्ट-सण्ट बाजि रहल छऽ । हौ, हमरा लेल तँ अइ देशक सभ लोक अप्पन आ सम्बन्धी अछि, एक टा तोहीँ किएक ? आइ हम चलैत छियऽ, तोरासँ दोसर दिन गप्प करब ।'

तिवारीजी पड़ा गेलथिन । माइंजन गङबाकेँ हँसी लागि गेलैक । एकेटा प्रश्नपर तिवारीजीकेँ समानता आ बराबरीक उपदेश बिसरि गेलनि । सभ स्वार्थी अछि, अपन स्वार्थ लेल झूठ-मूठ सिद्धान्तक अढ़ लैत अछि, माइंजन बूझि गेल अछि ।

ओकर मोनमे बहुत दिनसँ आगि सुनगि रहल छलैक । माइंजन गङबा सभ

दिन देखैत छलैक, छोट-छोट नेनासभ पढ़ब-लिखब छोड़ि अइँठ-कूठ उठबै छै, माल-जाल चरबै छै । रवि बाबू कहने छलथिन–छौंड़ासभकेँ स्कूल पठा । ओ पठौने छलैक । फेर रवि बाबूक स्कूले जायब बन्द कऽ देलकनि अइ गामक लोक । ओकरा पढ़ल-लिखल लोक नहि चाहिऐक, अइँठ-कूठ खयनिहार आ माल-जाल जकाँ खटनिहार 'छोटका लोक' पढ़ि-लिखिकऽ बराबरीपर आबि जयतैक तँ छोट-छोट काज के करतैक ? रवि बाबू कहने छलैक–'तोँ की चाहै छऽ माइंजन ? जहिना तोहर भरि जिनगी अइँठ-कूठ मारि-गारि खाइत बीति गेलऽ तहिना तोहरसभक धीयो-पूताक बीति जाइ ? ई पसिन्द हेतऽ तोरा ?'

माइंजनकेँ पसिन्द नहि छलैक । मुदा कोनो उपाय नहि छलैक । पेटक समस्या सभसँ ऊपर छलैक आ तकरा लेल आधार छलैक ओही अइँठ-कूठक । टोलक स्त्रीगण आ धीया-पूता सभ आङने-आङन काज करै छै, पानि भरै छै, थारी-बाटी मजै छै, अइँठ-कूठ उठबै छै आ बदलामे एक रिकबी अइँठ-कूठ लऽ अनै छै पेट भरबा लेल । पुरुषसभ, जहिया हवेली रहैक, खबासीमे छल । आब हवेलीसभक हालति अपने पस्त छैक, खबास के राखत ? आब तँ खाली छोट-छोट धीया-पूता आ स्त्रीगणसभ काज करै छै हवेलीमे– गेलै आ काज कऽ चल अयलैक । अइँठ-कूठक संग दरमाहा दू टाकासँ पाँच टाका धरि ।

पुरुष कहियो कमाइत छैक, कहियो नहि । हवेलीसँ किछु जमीन बटाइपर जकरा भेटल छैक, से कने आरामसँ अछि । माइंजन अपनो ओही बलपर माइंजन अछि । टोलमे आइ धरि एको धूर अप्पन जमीन क्यो नहि किनने छैक । बासोक जमीन मालिकेसभक देल छैक ।

बासक जमीनक नामपर गङबाकेँ बिलटाक डीह मोन पड़ि गेलैक । महेश मास्टर ओइ डीहकेँ हड़पबाक कोशिशमे छैक । कोनो आन गामसँ जन आनि बसबऽ लेल छैक । ओइ दिन गङबासँ कहने रहैक–'देख गङबा ! बिलटा तँ घराड़ी छोड़नहि अछि । हमरा काज होइत अछि, ऐ ठाम दोसरकेँ बसा देबैक ।'

गङबाकेँ नहि कहि भेलैक बिलटाकेँ ! बिलटा टोलमे आयब-जायब छोड़ने छैक । अपन घरक भार गङबाकेँ दैत कहने रहैक–'कने देखिहऽ माइंजन भाइ एकरा । फट्टक खुजले रहैक हरदम, कहीं कजरी आबिकऽ घूरि ने जाय !'

माइंजनक आँखि नोरा गेल रहैक । कजरी लेल प्राणो दैत छलैक बिलटा । ओ आब की घूरिकऽ औतैक ? मुदा बिलटाकेँ नहि कहि भेलैक । एक बेर कहने रहैक माइंजन–'टोलकेँ नै छोड़ बिलटा ! आयल-गेल कर ।'

बिलटा हाथ पकड़ि लेलकै–'नै माइंजन भाइ ! ओइ घरमे अकेले नै रहल जाइ हय । कजरी घुरत, तखने अयबौ हमहूँ । ताले तोही हमर घरके जिम्मेदारी राखऽ भाइ !'

ओ जिम्मेदारी आब भारी पड़ि रहल छैक । महेश बाबूक कुदृष्टि फेर पड़ल छैक । एक बेर पड़ल रहैक तँ घर उजरल रहैक, फुलकुम्मरी पड़ायलि रहैक । अइ बेर डीहे हड़पि जयतैक ।

बिलटाकें नहि कहि सकल छैक माइंजन । मुदा आब कहऽ पड़तैक ।

कहऽमे ओकरा डर होइत छैक । बिलटा पहिनहिसँ मास्टर महेशपर कन्हुआयल छैक । कोनो काण्ड ने कऽ बैसैक । अनेरो गेनमा जकाँ बिसा जयतैक । दुनू परानी जहलमे बन्द छैक मास दिनसँ । आ, मस्टरबाकें एक्को दिन जहल नहि जाय पड़लैक । भाइ पेशकार छैक । दौड़-धूप कयलकै आ झट जमानत भऽ गेलैक । अस्पतालसँ घूरल गुणाकर आ दुनू फेर ओहिना गाममे शिकारी जकाँ घुमैत अछि ।

तिवारीजीकें लोहछाकऽ भगा देलकै बिलटा, मुदा ओकर असली तामस गेनमाक घरक लोकपर छैक, ओकर टोलक लोकपर छैक । तीन-तीन टा सहोदर भाइ छैक, ओहो जमानत देबऽ नहि गेलैक । एतेक टा टोल छैक, ककरो साहस नहि भेलैक जे एक टा बेकसूरी दिससँ ठाढ़ होइ ! धिक्कार छैक सभकें !'

धिक्कार तँ ओ अपनो लेल रखने अछि मोनमे । कहाँ बढ़ल आगू वैह ! सभ तँ गरीबहे छैक–सौंसे दुसधटोली, खतबेटोली, मलहटोली, चमरटोली आ धनुखटोलीक लोक । कहाँ एक टा गरीब दिससँ ठाढ़ भेलैक क्यो ? गेनमा आ ओकर बहु एहिना जहलमे सड़तैक । कतहु कोनो आगि नहि सुनगतैक । कतहु कोनो चिनगी नहि छैक । कतहु नहि !

तरे तर आगि सुनगि रहल छलैक । तिवारीजी ओइ दिन बूझि गेलथिन ।

दुसधटोलीमे सेहो ओइ दिन तिवारीजीक स्वागत नहि भेलनि । सभक आकृति तनल, ठोरपर चुप्पी ।

पुछलथिन–'की बात छैक ढोढ़बा ? सभ चुप्प छैं ।'

चौकीदार ढोढ़बा बाजल–'की बोलू हमरासभ ! जे बोलत, ओकर जीह काटि लेबैक अहाँसभ । हाथ-पैर बान्हि जहलमे दऽ देबै । गरीब के बोले के हक नै हइ ।'

तिवारीजी कहलथिन–'देखऽ हौ चौकीदार, तोरो वैह भ्रम छऽ ? गरीबकें हक छैक आ ककरोसँ कम्म हक नहि छैक, मुदा ई हक मङलासँ नहि भेटैत छैक, छिनलासँ भेटैत छैक । जाधरि तोरालोकनि एना दीन-हीन बनल रहबऽ, कोनो अधिकार नहि भेटतह । अपन हककें चीन्हऽ आ ओकरा हासिल करबा लेल अपनामे साहस आ संकल्प आनह ।'

प्रबोधन कहलकनि–'साहस तँ कयने छल हमर भाइ गेनमा । ने हक भेटलैक, ने न्याय । जहलमे पड़ल हय । कोइ घूरिके देखे नै गेलै गामक लोक ।'

तिवारी बुझौलथिन–'एक टा गेनमासँ काज नहि चलतौक । सभ टोलमे दू टा चारि टा गेनमा बनबऽ पड़तौक, तखन तोहर बातमे असरि हेतौक । ई छिट-फुट विद्रोहसँ किछु तत्काल भेटब मस्किल छौ ।'

बेटसर कहलकनि–'इहो बेस कहली अहाँ ! हमरासभ गेनमा जकाँ बेराबेरी जहल जाइ बेकसूरी, अहाँ बैठल तमेशा देखब ! इहे असली नेता छी अहाँ !'

तिवारीजीकें कने क्रोध भेलनि जकरा पीबि ओ कहलथिन– 'बेसी लुबलुब नहि कर बटेसर ! यदि तों सभ अपनामे एकता आ साहस नहि अनबैं तऽ हम की करबौ ? ई तऽ कोनो नव गप्प नहि छैक । गेनमाकें के जहल लऽ गेलै ? –यैह तोहर चौकीदार ढोढ़बा । सभ दिन अखनो अन्हरोखे उठिके महेस मास्टरक काज के करै छै ? तोरेलोकनि । अखनो वोट ककरा देबहक तों सभ–वैह एकबाली चौधरी कि तेजूझा ।'

बटेसर आ प्रबोधन तैयो नहि मानलकनि–'सेहे तऽ कहै छी तिवारीजी जे हमरा आर एकबाली बाबू, चाहे तेजूबाबूकें नै दू, मक्खनसाहुकें दियनु, अहाँक पार्टीकें दियऽ । मुदा ओइ से की होत ? अपन गाममे मुखिया ने एकबाली चौधरी हय, एम.एल.ए. तँ नौरंगी यादवे हय दू बेर से । की कयलक हमरा आर वास्ते ? नौरंगी अहाँक पार्टीक नहि हय, मुदा अपनाकें वोट लेबे काल 'छोटका लोक' कहै छल । आब तँ ओहो बड़का लोक हय– दिल्ली-पटना रहै हय ! हमरा आर से कोन मतलब हइ ? फेर वोटमे काज पड़तैक, तखनी औत । अपन विशनपुरकें खूब चकचकौले हय, सड़क ले गेल, बिजली ले गेल, गाम वास्ते नहि, अपना वास्ते ! अपन घर हइ ओतऽ ! हमरा आरके की देलक ?'

ओसभ ततेक बकलेल नहि छल जतेक तिवारीजी बुझने छलथिन। जहियासँ हाइ स्कूलमे रामकरन मिसर आयल रहथिन, हुनक मदति लेल तिवारीजी चेष्टामे लागल छथि। दू चुनावसँ कांग्रेसो पछड़ि जाइत अछि अइ इलाकामे! सोसलिस्ट पार्टीक नौरंगी यादव जीतैत छथि ई सीट। तिवारीक उम्मीदवार रामकरन मिसर दोसरो स्थान नहि पबैत छथिन। असल लड़ाइ सोसलिस्ट पार्टीक नौरंगी यादव आ काँग्रेसी उम्मेदवार रुद्रनारायण लालमे रहैत छनि। विशनपुरक नौरंगी आ नवटोलीक रुद्रनारायण लाल। मोहनपुरक हरिश्चन्द्र आ एकबाली टिकटक प्रत्याशी सभ बेर रहैत छथि, मुदा बाजी मारि लैत छथि रुद्रनारायण लाल।

मुदा, अइ बेर तिवारीजी खूब भरोस देने छलथिन रामकरन मिसरकेँ। मिसरजीकेँ शिकाइत छलनि जे मोहनपुर पंचायतमे हुनका कोनो वोट नहि भेटैत छनि–सभ टा वोट रुद्रनारायण आ किछु-किछु नौरंगी लऽ जाइत अछि। तिवारी रविकेँ दरभंगा जा कहि अबैत छथिन मिसरजीकेँ जे अइ बेर कोनो चिन्ता नहि, सभ टा काज भऽ रहल अछि।

असल काज मुदा कयने छथि भितरे-भितरे यादवजी। स्कूलमे मास्टरी कम, नौरंगीक लेल क्षेत्रमे स्थिति मजगूत करबामे हुनकर बेसी समय जाइत छनि। टोले-टोले घूमि अपन रामवाण छोड़ि जाइत छथि–'समय आबि गेल छौक। वाभन आ बड़का जातिसभ बड़ शोषण कयने छौ। आब हमरसभक बेर अछि। मजा चिखा दहिक। सभ 'छोटका लोक' मिलि जो आ देखा दही जे के पैघ अछि आ के छोट? ई तिवारी तँ 'बड़के लोक' सभक दलाल छौ। गप्प बराबरिक करै छौ आ रामकरन मिश्रक संग जतिआरे निबाहै छौ। तोहूँसभ मोन राख, मुखियामे मक्खन साहु आ एम.एल.ए. मे नौरंगी यादव– कोल्हु-छाप आ महीस-छाप।

गेनमाक मामिला मुदा दुनू गोटेकेँ देखार कऽ देने छलनि। खुल्लमखुल्ला हेडमास्टर महेश बाबूक खिलाफ एखन तिवारीजी, यादवजी आबऽ नहि चाहैत छलाह। तरे-तर काज चलि रहल छलनि। तेँ गेनमाक बेरमे दूनू गोटे अनठा देलथिन आ गेनमाकेँ जमानतो नहि भेलैक। दूनू गोटे निश्चिन्त छलाह जे लोक बात बिसरि जयतैक। ड्यौढ़ी हवेलीमे चोरि लेल एकाध टा जन-बोनिहार एना जहल जाइते रहैत छैक। खाली गेनमेक गप्प रहितैक तँ छोड़ा दितथिन। मुदा, ओकर बहु तँ ओइसँ पैघ काण्ड कयने छलैक। ओ मास्टरपर बलात्कारक आरोप लगा देने छलनि आ गुणाकरकेँ दबिलासँ काटि देने छलनि– कहुना प्राण बँचलनि।

मुदा, से ने कोनो अखबारमे छपलैक, ने ओइपर विधानसभा पार्लियामेण्टमे

बहस भेलैक। कोनो रिपोंटर लंका मोहनपुर धरि नहि पहुँचलैक। ने अखबारमे बड़का हेडलाइन बाहर भेलैक–'पिछड़ावर्गपर पाशविक अत्याचार', 'हरिजन स्त्रीक इज्जतिपर हमला!' ने जाँचक माङ भेलैक, ने कोनो कमीशन बनलैक। जहिना गाम शान्त रहलैक, तहिना इलाका, प्रान्त आ देशो शान्ते रहलैक। जेना ई भूखण्ड कोनो दोसर महादेशमे होइ–अन्ध महादेशमे जतऽ रेल, बिजली, समाचारपत्र नहि पहुँचैत होइ। नेताक पहुँचबाक तँ गप्पे नहि छैक। ओकरा लेल चाहिऐक फैल बाट, जाहिपर आगाँ-पाछाँ मोटर-जीपर काफिला जा सकै, सभ ठाम जा सकब हुनका लेल संभव नहि!

मुदा, अइ ठाम ओ पहुँचितथि। ई घटना हुनका प्रचार लेल, विधानसभामे पक्ष वा विपक्षमे गरजऽ लेल नीक मसाला दितनि। गड़बड़ कयलथिन तिवारीजी आ यादवजी। दुनू स्कूलमे मास्टर छलाह–अनेरो हेडमास्टरसँ अराड़ि करऽ नै चाहैत छलाह– हुनकर क्षेत्र छनि, ओ जानथि। जागरण-समानताक गप्प तँ पार्टी लेल छैक। सभ ठाम एहिना होइत छैक–गामोमे, शहरोमे। एकरा तूल देलासँ नौरंगीक बदनामी होइतनि। ओ इलाकाक प्रतिनिध छथि, यादवजी तेँ चुप्प रहलाह। रामकरन मिश्रकेँ खबरि भेलासँ विपक्ष द्वारा विधानसभामे प्रश्न करा दितऽथिन, तिवारीजी तेँ चुप्प रहलाह। हेडमास्टर महेश बाबूसँ दुश्मनी करब ठीक नहि।

मुदा ओइ दिन गङबा, ढोँढ़बा, प्रबोधन आ बटेसरा तिवारीजीक अकिल गुम्म कऽ देलकनि। ओ जतेक शान्त बुझैत छलथिन इलाकाकेँ, से नहि छलैक। गेनमा नहि छुटतैक तँ दोसर गेनमा ठाढ़ होयतैक। तेसर औतैक। अभाव आ अशिक्षाक तरमे कोनो नव चेतना सुगबुगा रहल छलैक। एकरा के दबा सकतैक? तिवारीजीकेँ प्रसन्न होबऽ चाहैत छलनि। ओ एना आशंकित किएक भऽ गेलाह?

रविकेँ एतेक पैघ काण्डक आशंका नहि छलैक।

गेनमापर पड़ैत मारिक ओ मास्टरकाकाक दरबज्जापर विरोध कयने छलैक। लालकाका ओकरा ओतऽसँ विदा कऽ देने छलथिन। मुदा तैयो ओकरा एतेक पैघ घटनाक आशंका नहि छलैक। सेहो ओही राति।

ओ किछु नहि कऽ सकलैक। चाहियोकऽ ओ आगू नहि बढ़ि सकल।

थाना-पुलिस-कचहरी भेलैक । गेनमा आ ओकर बहु बन्दे रहलैक । मास्टरकाका छुटि अयलाह । रविकेँ खाली सूचना भेटैत रहलैक । ओ अपने किछुओ नहि कऽ सकल, जाकऽ देखियो नहि सकलैक ।

यदुआ-माय एक दिन आयलि छलैक प्रचण्ड बताहि भेलि । कपड़ा-लत्ता गुदड़ी भेल-आँखि लाल-लाल, जेना सूतलि नहि होइ कतेको रातिसँ । हाथ ओकर हरदम दुनू ऊपरे उठल रहैत छैक जेना ककरो गोहारि कऽ रहलि होइ ! रवि लग ओहिना हाथ उठौने बजलैक-'हमर भवानीकेँ बचा लू बौआ.....हमर गेनमाकेँ बचा लू ! दुनू बेकसूरी हय...'

फेर हँसऽ लगलैक एक टा डेराओन हँसी-'भवानीकेँ बन्द कयने छै, बुझा देतौ । काटि देतौ सभकेँ खण्डी-खण्डी...!'

आ, जहिना आयलि छलैक, तहिना हाथ उठौने गोहारि करैत चल गेलैक। रवि तैयो किछु ने कऽ सकलैक । एक दिन ओहो निरपराध जहल गेल छल । क्यो ओकरा दिससँ गवाही नहि देने छलैक । ओकरा सभ टा मोन छलैक अपन चौदह वर्षक संघर्ष आ यंत्रणाक कथा। गामक लोक नहि जनैत छैक आइयो । अपन कमायल दरमाहा मङने छलैक आ मालिक पठा देलकै जहल । चोरीक आरोपमे ।

रवि जनैत छलैक जे गेनमा चोरी नहि कयने छलैक । ओकर अपन मोन कहैत छलैक । आ, गेनमा-बहुक साहसपर तँ ओकरा आश्चर्यक संग श्रद्धा होइत छलैक । इच्छा होइत छलैक जे जाकऽ एक बेर देखैत यदुआ-मायक भवानीकेँ ।

मुदा, ओकरामे भरिसक साहसक अभाव छलैक । एक दिन एकटा कमजोर क्षणमे अपराध कऽ बैसल छल । ओइ अपराधक मार्जनक अवसर छलैक । बाबूसँ कहितनि जे हमरा बुते अपराध भऽ गेल अछि, हम दोषी छी, हमरा सजाय दियऽ । कविताकेँ कहितैक- आब यैह उपाय छैक कविता, दोसर रास्ता नहि । तोँ पकड़ि ले हमर हाथ । मुदा, से कहबाक बदला कायर जकाँ भागि गेल गामसँ चौदह वर्ष धरि । अर्थहीन जीवनमे अनेको ठाम बेर-बेर सताओल गेल आ कायर जकाँ भागि पड़ायल ।

आ, फेर गामसँ भागि पड़यबाक सभ तैयारी कऽ लेने छल रवि । कविताकेँ कहि देने छलैक । तकर बादो मासोसँ बेसी गाममे पड़ल रहल-अकर्मण्य आ उपेक्षित । क्यो कहिओ किछु पूछऽ नहि अयलैक ।

रविए हाल पूछऽ गेल रहनि । साँझक बेर रहैक । विक्रम भाइ गामेपर छलथिन । रविकेँ देखि जेना कोनो असौकर्यमे पड़ि गेलथिन- ने स्वागत, ने बैसबाक आग्रह । रवि भीतर जाय लागल तँ रोकि देलथिन-'ओमहर नै जा रवि, तोहर भौजीकेँ पसिन्न नहि छनि । किदनसभ कहैत छली तोरा बारेमे ! सूनिकऽ दुख आ आश्चर्य भेल । तोँ एहन कऽ जयबह, क्यो नहि सोचि सकैत छल । विश्वास नहि भेल, मुदा तोहर भौजी झूठ किएक कहतीह ? तोरा ओतेक मानैत छलथुन, तोरा घुरलापर कतेक प्रसन्न छलथुन । फेर महेशमामा कहलनि जे कविताक घरमे परिकल छऽ । ओकर स्वामी छोड़ने छैक । अनेरो बदनामी हेतैक, गाममे टिकब मस्किल भऽ जयतैक । बाहर जे कयलह से कयलह, गामकेँ तऽ बारि दैह । तोहर भौजी कहैत छलीह जे तोँ मौगीकेँ बड़ सस्त वस्तु बुझैत छहक, जखन चाही, भेटि जायत । सुनिकऽ बड़कामामा मोन पड़लाह-कतेक उच्च आदर्श छलनि हुनकर ! आ तोँ एतेक नीचाँ खसि पड़ल छऽ ! मनुक्ख कोना बदलि जाइत अछि !'

रवि अइ अप्रत्याशित आक्रमणसँ विवर्ण भऽ गेल । पयर जमीनमे सटि गेलैक आ अपमानसँ सौँसे देह थरथरा उठलैक । कहुना सम्हारैत घूरि गेल आ जाइत-जाइत कहलकनि-'ठीके मनुक्ख बदलि जाइत अछि भाइ ! ओकरा किछुओ ने मोन रहैत छैक । आ, हम तऽ मनुक्खो नहि छी, प्रेत छी- चौदह वर्ष पहिने मुइल मनुक्खक प्रेत ! ओकर छायोसँ बचबाक चाही !'

भोरे रवि लालकाकाकेँ कहलकनि-'हम आइ जायब लालकाका ! गाड़ी कतेक बजे छैक ?'

लालकाका वस्तुतः चौंकलथिन-'गाड़ी तऽ दस बजे छैक, मुदा आइए कोना जयबह ? अखन रहऽ किछु दिन !'

-'नै लाल काका ! आब बहुत दिन भेल । एक टा आदमीक इन्तजाम कऽ दियऽ !'

लालकाका रोकलथिन-'एना एकाएक ? कोनो कुभाव लऽकऽ नै जा रवि अपन लालकाका लेल !'

रवि हुनका आश्वासन देलकनि-'ककरो लेल कोनो कुभाव वा भाव नहि लालकाका ! एकदम सोचल-विचारल यात्रा अछि ! हमरो तऽ किछु करबाक चाही ! एक टा सूटकेश आ बिछौन अछि, एक टा कुलीसँ काज चलि जायत !'

लालकाका चल गेलथिन आ बात बिजली जकाँ पसरि गेलैक गाममे । पहिने मास्टरकाका दौड़ल अयलथिन आ एकसरमे कहलथिन-'तोरा ओइ दिनुका

बातक अधलाह लागि गेलह ? तोँ गाममे नहि छलऽ । एतुक्का छोटका लोकक हाल नहि बुझल छऽ, तेँ कहने छलियऽ ! एना गाम छोड़िकऽ नहि जा ! सभटा सम्पत्ति नष्ट भऽ जयतह ! लाल सभ टा खा जयथुन, आधाक मालिक छऽ तोँ । तोरा कोन काज छऽ नौकरी करबाक ? फेर सोचि लैह एक बेर ।''

लाल सोचि लेने छल । मास्टरकाका चल गेलथिन ! हरीकाका अयलथिन–'ई बतहपनी छोड़ रवि ! गामसँ नै जा ! हम तँ ओहू दिन बाट देखौने छलियऽ ! कोनो प्रपंचसँ डेराकऽ लोक अपन धन-सम्पत्ति तऽ नहि त्यागैत अछि एना ! हम एखनो तैयार छियऽ मदति लेल !'

रवि तैयार नहि भेलनि । ओहो चल गेलथिन । पण्डितकाका आ फकीरकाका सेहो अयलथिन–'पूजा एकदम लग आबि गेल छैक । किछुओ दिन रुकि जैतह तऽ पुरान संगीसभसँ भेँट भऽ जैतह ।'

तेजुओ दौड़ल अयलैक–'ई की भाइ ! तोरासँ वोटमे कतेक काज लेबाक छल । पूजेक बाद तऽ हेतैक ! आ तोँ जा रहल छेँ ?'

मनोज हँसिकऽ कहलकै– 'गाममे मोन नहि लगलौ ब्रदर ? बाहरक चीज भेटि गेलापर, गौआँरी चीज नहि सोहाइत छैक, आइ नो ब्रदर, गो अहेड । माइ बेस्ट विसेज ।'

मनोजक कनियाँ स्नेहसँ आग्रह कयलकै–'जल्दी-जल्दी आयब गाम । एना चौदह वर्ष निपत्ता नहि भऽ जायब ।'

लालकाकी कानऽ लगलथिन– अही लेल पोसने छलियऽ तोरा ? माय-बाप नहि छथुन, हमरालोकनि तऽ छियऽ ! तोरा कनियो माया नहि होइत छऽ हमरासभपर ?'

रवि तैयो नहि रुकल । चौदह वर्ष पूर्व एक दिन दौड़ले पड़ायल छल गामसँ । तहिया ओ नहि जनैत छल जे ओ पलायन एतेक दिन धरि गामसँ फराक कऽ देतैक । आइ बूझि रहल छल जे ई अन्तिम विदा छैक । एकर बाद गाम आ ओकर लोकसँ कहिओ कोनो सम्पर्क नहि रहि जयतैक । ओइ पलायनमे मात्र भय आ आशंका छलैक, अइ विदामे छलैक मर्मान्तक पीड़ा आ कचोट ।

ई पीड़ा एकतरफा छलैक, सेहो रवि जनैत छल । ककरो मोनमे कतहु ओकरा लेल कोनो ममता वा चिन्ता नहि छलैक । लालकाकीक दूध सुखा गेल छलनि आ लालकाका बेसी बुझनुक आ संसारी भऽ गेल छलथिन । गामक लोकक संग सौदेबाजीमे रवि अपटु छल, ककरो संग मेल नहि भऽ सकलैक ।

आगू-आगू मोटरी लेने करिया छलैक आ पाछाँ-पाछाँ रवि । धारक कात धरि लालकाका अरियाति गेल छलथिन, काकियो बड़ी दूर धरि संग छलथिन । मुदा, गोड़ लागि विदा होइत कालो कोनो कोमल भाव फेर नहि जनमि सकलैक । ओ तँ एक टा निस्तब्ध रातिमे कानब सूनि सुखा गेल छलैक ।

गाड़ी बहुत लेट छलैक । रवि करियोकेँ पाइ दऽ घुरा देलकै । स्टेशनपर गाड़ीक प्रतीक्षामे बैसल ओ सोचि रहल छल जे कतऽक टिकट खरीदय ! ओकरा लेखे कोनो स्थानक नाम कोनो महत्त्व नहि रखैत छलैक । खाली निर्णय लेबाक देरी छलैक– सभठाम एक्के रंग । निर्णय लेबाक गुनधुनमे स्टेशनक बेंचपर बैसल रविक आँखियो झपा गेल रहैक ।

क्यो झकझोड़िकऽ जगा देलकै ओकरा–'सूति रहलिऐ रविमामा !'

आँखि खोलि देखलक– लव ठाढ़ छलैक ! कने आश्चर्यसँ पुछलकै–'तोँ कोना एतऽ ?'

लव कहलकै–'अहीँ लग तऽ आयल छी ! अहाँ तऽ बेस झुट्ठा बहरयलहुँ ! अपन प्रामिस बिसरि गेल ? हमरा बिना बाबूजी लग पहुँचौने भागल जाइत रही ! माय चिट्ठी देलक आ कहलक चल जो दौड़ले स्टेशनपर । ओ तोरा बाबू लग अबस्स पहुँचा देथुन । देखू ने, दौड़ैत-दौड़ैत केहन हकमि गेल छी ! लेट छैक गाड़ी तेँ, ने तऽ अहाँ पड़ाइए गेल रहितहुँ । हे लियऽ अपन चिट्ठी ।'

रवि उत्सुकतासँ चिट्ठी पढ़ऽ लागल—

'लवकेँ तोँ गछने छलहिक, ओकरा बाप लग पहुँचा देबहिक । हमरा पुछने छलेँ–'चल किएक ने जाइत छेँ हुनका लग ?' हम जबाब देने रहियौ–'लऽ जे नहि जाइत छथि !' तोँ नहि टिकि सकबेँ गाममे तकर आशंका छल, तोँ अपनो कहने रहैँ । मुदा, एकाएक विदा भऽ जयबेँ, से विश्वास नहि छल ।

तोँ नहि पहुँचा सकलहिक लवकेँ ओकर बाप लग । हमहीँ पहुँचा दैत छिऐक ? हमरा नहि लऽ गेला, तकर कोनो दुख नहि । लवकेँ ओकर बाप अबस्स भेटबाक चाही । ताही लेल अइ बंजर धरतीपर एतेक दिन जीवि गेलहुँ हम ।

एक दिन तोँ हाथ पकड़ि झिकने छलैँ आ हम निर्विरोध चल आयलि रहियौक । बादमे कानल रही, कानिकऽ धमकी देने रहियौक । तोँ डरे पड़ा गेलेँ ।

हम चुप्पे रहलहुँ । ककरो किछु नै कहलिऐक । बेर-बेर आश्चर्य होइत

छल जे हम तोहर विरोध किएक ने कयने छलियौक ? चुपचाप तोहर बाँहिमे सिमटि गेलि छलियौक । एहन सद्ध आ डेरबुक तऽ नहि रही हम ! तोहर क्रियामे मात्र एक टा उत्तेजना छलौक, क्षणिक उद्दाम इच्छा । ओइमे कोनो प्रेमक आह्वान नहि छलैक–ई बुझबा जोबर हम रही । तखन किएक रहलौँ चुपचाप ? बेर-बेर सन्देह होबऽ लागल जे तोरे सन कोनो सुप्त कामना हमरो मोनमे तऽ नहि छल ! कामना छल वा नहि, मुदा तोहर उद्दाम आवेगक परिणाम हमरा गर्भमे छल ।

मुदा, ओइ दिन 'ओ' सभ टा स्पष्ट कऽ देलनि । बियाहसँ एक दिन पूर्व रामकाकासँ की कहऽ गेलि रहियनि, से अपनो नहि बूझल छल । मुदा, 'ओ' सभ टा स्पष्ट कऽ देलनि । चतुर्थीक राति साहस कऽ ठाढ़ भऽ गेलि रही आ कहने रहियनि– 'हमरा किछु कहबाक अछि ।'

ओ सभ टा सूनि कहने छलाह–'बस्स एतबे ? यैह कहबाक छल ?'

हमरा आश्चर्य भेल छल ! ने क्रोध, ने घृणा ! एकदम गम्भीर स्वर । हम अकचका कऽ मुँह देखऽ लगलियनि ।

ओ गम्भीरतासँ कहलकनि– 'ई यदि मात्र एक टा दुर्घटना छल आ ओकरा अहाँ बिसरि सकै छी, तऽ हमरा लेल कोनो फर्क नहि पड़ैत अछि । हमरा कहि देबाक साहस अहाँ कयलहुँ, ताहिसँ अहाँक लेल मोनमे आदर जन्म लेलक । आइ धरि अहाँ लेल स्नेह छल, अहाँक जिनगीकेँ सुखी देखबाक इच्छा छल । मुदा, अहाँकेँ कोन इच्छा ई कहि देबऽ लेल बाध्य कयने अछि ? मात्र कर्त्तव्यबोध वा आर किछु ?'

हमरा किछु ने फुरायल । ओ फेर अपने कहलनि–'ई बातकेँ अहाँ नुका सकैत छलहुँ । सभसँ नुकौने रहलहुँ एतेक दिन । तखन हमरा किएक कहि देलहुँ ई बात ? मात्र कर्त्तव्यबोध वा आर किछु ? की चाहैत छी हमरासँ अहाँ ? हमरा अहाँक देहक लेल चिन्ता नहि अछि, अहाँ जाहि रूपमे छी, हमरा लेल अहाँकेँ ग्रहण करब सौभाग्य हैत । मुदा, अहाँ अपन मोनकेँ देखू । कोनो आर बात तऽ नहि अछि अहाँक मोनमे !'

आ, सभटा बात स्पष्ट भऽ गेल । तोरा लग ओ निर्विरोध समर्पण ! ओ मात्र तोहर शारीरिक बलक भय वा अपन सुप्त इच्छा, शारीरिक इच्छाक परिणाम नहि छल, ओहिमे आर किछु छलैक । ओकरा हम नहि बुझलिऐक । ओ बूझि गेलाह । तोँ हमर मोनमे छलेँ !

हम तँ नेन्नेसँ तोरा सङ छलौ, लड़ै-झगड़ै छलौँ, मेलो भऽ जाइत छल ! मुदा तोँ ततेक समीप छलेँ जे ई बुझबाक अवसरे नहि भेटल जे तोरा प्रति कोन भाव अछि मोनमे ! ओ लगले बूझि गेलाह ।

ओ भोरे चल गेलाह । जाइत काल प्रणाम कयने छलियनि । आइयो करैत छियनि प्रणाम ओइ देव-पुरुषकेँ ।

तोँ, आब कोनादन लगैत अछि 'तोँ' लिखैत, अहाँ जा रहल छी । अहाँक मोनमे तहियो कोनो भाव नहि छल जहिया प्रबल आवेशमे अपन अंकमे समेटने रही ! आइ हमरा लेल, हमर स्थिति लेल अहाँक मोनमे दया अछि आ अपन कृत्यक लेल संताप । मात्र एतबे ।

जे नै अछि अहाँक मोनमे हमरा लेल, से मङबो नहि करैत छी । अही गाममे अही बंजर धरतीपर बाँकियो दिन बिता लेब हम । हमरा अभ्यास भऽ गेल अछि ।

मुदा, लवकेँ लेने जैयौक । अहीँवला प्रतिभा छैक ओकरामे, ओकरा मनुक्ख बना दियौक । ओकर बापसँ ओकरा भेँट करा दियौक...'

रवि पत्र पढ़ैत विस्मय, आनन्द आ अश्रुसँ भीजि गेल । ऊठिकऽ लवक हाथ पकड़ि लेलकै–'हाथ कसिकऽ पकड़ि ले लव, तोहर बाप फेर चोराकऽ पड़ा नै सकतौक !'

लवक आकृति प्रसन्नतासँ चमकि उठलैक आ ओ दुनू हाथे रविक हाथ पकड़ि लेलकै–'आब कोना पड़ायब ?'

तखने ओकर ध्यान प्लेटफार्मक कोन दिस गेलैक । आ, ओ बाजि उठलैक–'हे देखू, मायो आबि गेलैक !'

लवक हाथ पकड़ने रवि जोरसँ दौड़ल, जेना कविता कतहु पड़ा जयतैक ! लग आबि बामा हाथे कविताक दहिना हाथ धऽ लेलकै–'लवकेँ नहि, पहिने हमरा मनुक्ख बना दे कविता ! हमर सङ चल ।'

कविताक आकृतिपर एकटा नवकनियाँक लाज पसरि गेलैक, मुदा ओ आत्मविश्वासक सङ बजलैक–'चलू ।'

ओ डेग ओम्हर बढ़ौलकैक जेम्हरसँ रवि दौड़ल आयल छलैक । रवि हाथ झीकि लेलकै–'ओम्हर नहि कविता ! गाम दिस चल । ओ कथा जे ओइ दिन तोँ नहि कहि सकलही, हम कहबैक आइ सभकेँ ।'

कविताक आकृति ओहिना प्रसन्नताक आधिक्यसँ दमकैत रहलैक आ ओ घूरिकऽ गाम दिस पयर बढ़ौलकै– 'चलू' ।

बिलटा लगेमे ठाढ़ छल । ओ सभ टा देखलकै । रवियो देखलकै ओकरा आ कहलकै–'कने हमर सभ टा सामान उठा ले बिलट !'

आगू-आगू रवि आ ओकर दुनू कात लव आ कविता । एक-दोसरक हाथमे हाथ । पाछाँ-पाछाँ माथपर मोटरी लेने बिलटा ।

किछुए डेग जाकऽ कविता लजा गेलैक । दिनक इजोत पसरल छलैक आ चारू कातसँ लोकक टकटकी लागल छलैक । ओ हाथ छोड़ि देलकै आ रविक पाछाँ-पाछाँ चलऽ लगलैक ।

बिलटा पाछाँसँ देखि रहल छलैक । ओकरा एकटा इजोरिया राति मोन पड़लैक । ओ पुछने रहैक–'की नाम हइ एकर ?'

–'कजरी' ।

बिलटाकेँ ओ नाम आ ओ लजायल स्वर नीक लागल रहैक ।

रविक पाछाँ-पाछाँ लजायल कनियाँ जकाँ चलैत कविता बिलटाकेँ बड़ नीक लगलैक ।

माथपर बोझ रहितो ओकर डेग तहिना आनन्दसँ उमकल रहैक जेना कजरीक सङ गाम जाइत काल रहैक ।

आ, गाम लग आबि रहल छलैक ।

(तेसर भाग)

उत्तरकाण्ड

एक बेर सौँसे गाम उमड़लैक । मुदा से बादमे । पहिने लालकाका ।

दरबज्जेपर छलथिन । रविकेँ फेर घुरैत देखि आ ओकर संग माथपरसँ आँचर लेने एक टा स्त्रीकेँ देखि आश्चर्यचकित रहि गेलथिन । रविक संग कविता आ लवो गोड़ लगलकनि । लालकाका आशीर्वाद देबाक बदला पयर पाछाँ करैत पुछलथिन– 'ई की ? ईसभ के छथि ?'

रवि कहलकनि–'अहाँक पुतहु आ पोता । हिनके छोड़ि पड़ायल रही चौदह वर्ष पूर्व । घुरियोकऽ कहबाक साहस नहि भेल । मुदा एक बेर हम फेर घूरि आयल छी अपन स्त्री-बेटाक संग लालकाका ! हमरा आशीर्वाद दियऽ ।'

लालकाका बिगड़ि उठलथिन– 'एकदम अनर्गल बात ! ई तोहर स्त्री-बेटा कोना भऽ सकैत छऽ ? ई तँ वसन्त ठाकुरक बेटी कविता आ ओकर नाति लव थिकैक । एकर बिआह हरीझाक सारक संग भेल रहैक । हमहूँ रही ओइ विवाहक दिन । ईसभ नाटक आ व्यभिचार गाममे नहि चलतह रवि, बाहर जे कयलह से कयलह । एकरासभकेँ जाय दहक अप्पन घर ।'

–'नै लालकाका ! छोड़ि देबाक लेल एकरासभक हाथ नहि पकड़ने छिऐक आइ । चौदह वर्ष धरि एकरासभकेँ अनेक दुख आ अत्याचार सहऽ पड़ल छैक हमर कायरताक कारण ! आइ सौँसे गामक समक्ष हमरा स्वीकार कऽ लेबऽ दियऽ जे ई हमर स्त्री आ बेटा थिक ।'

लालकाका ओहिना तरङल छलथिन–'तोहर स्वीकार कयने की हेतह ? हम नहि स्वीकार करबह ई बात । गामक क्यो स्वीकार नहि करतह । चौदह वर्षक बेटाक संग एकाएक तोहर स्त्रीक अवतरणक कथा क्यो नहि सुनतह । एकरासभकेँ अप्पन घर जाय दहक ।'

रवि दृढ़तापूर्वक कहलकनि–'एकरासभक घर यैह थिकैक– हमर घर ।

एतेक दिन धरि एकरासभकेँ एकर अधिकारसँ वंचित रखलिऐक । आइ स्वीकार करऽ दियऽ लालकाका ! हमरा अइ पुनीत कार्यसँ नै रोकू ।'

लालकाका तामसे गरजि उठलथिन–'ई थिकह तोहर पुनीत कार्य ? हमरा लग ई सभ बजैत तोरा लाज नै भऽ रहल छऽ ? ककरो स्त्री आ बेटाकेँ अपन घर आनि ओकरा अपन स्त्री-बेटा घोषित कऽ रहल छऽ ! हमरा सभ पता अछि । अइ बेर तोँ वसन्त ठाकुरक घर परिकल छलऽ । नेनोमे तोरा अइ छौँड़ीक संग लागि छलऽ । मुदा, एना खुल्लम-खुल्ला व्यभिचार गाममे नहि चलतह ।'

रविओ उत्तेजित होबऽ लागल । कने कड़ा स्वरमे कहलकनि–'गाममे कोन-कोन पुण्य काज होइत अछि, से हमरा बूझल अछि । एक-एक टा पुण्यात्माकेँ चीन्हि गेल छियनि किछुए मासमे हम । मुदा, ओइ पाप-पुण्यक विचार करबाक लेल नै घुरल छी हम । हम तँ भरि गामकेँ एक टा सत्यसँ अवगत कराबऽ चाहैत छिऐक । हम कायर छी । डरेँ चौदह वर्ष पूर्व लोककेँ नहि कहि सकलिऐक । हमर स्त्री-बेटा गाममे उपेक्षित रहल । आइ सभक सामने हम एकरा स्वीकार कऽ रहल छिऐक । हमरा अइ कर्त्तव्यसँ नहि रोकू ।'

लालकाकापर रविक बातक कोनो असरि नहि भेलनि आ ओ पूर्ववत् अपन बातपर अड़ल रहलथिन–'रोकबऽ हम किएक, रोकतह सम्पूर्ण गाम, सम्पूर्ण समाज। ई दोसरक स्त्री छैक, दोसरक बच्चा छैक । एकरा तोँ अपन कहि देबहक तेँ तोहर नहि भऽ जयतह । पण्डित मंत्र पढ़ा हरिबाबूक सारक संग एकर विवाह करौने छलैक । चालि-ढालि नीक नै छलैक, तेँ ने वर पहिल यात्राक बाद घूरिकऽ नहि अयलैक !'

रवि हुनकर बात कटैत कहलकनि–'हमर स्त्रीपर एहन लांछन नहि लगाउ लालकाका ! हम अनुरोध करैत छी । हम अहाँक अनादर नहि करऽ चाहैत छी । मंत्र पढ़ा जे विवाह पण्डितजी करौलथिन से अहाँसभ देखने छलिऐक, ओहो सत्य छलैक । मुदा ओइसँ पूर्व हम कविताकेँ स्त्री रूपमे ग्रहण कयने छलिऐक । डरेँ बाबूकेँ ई नहि कहि भेल आ हम भागि पड़यलहुँ । हमर शिशु एकर गर्भमे छलैक । मंत्र पढ़ि जकर हाथमे एकर हाथ देल गेल रहैक, से नीक लोक छलथिन । सभटा बात सुनलथिन, तँ बिना स्पर्श कयने चल गेलथिन अपन गाम । ई कविता हमर स्त्री थिक लालकाका ! लव हमर बेटा अछि । मंत्र दस लोकक सामने नहि पढ़ने छी, ताहिसँ की सभ टा सम्बन्ध बदलि जाय ? ओ मंत्र अइ सत्यसँ ऊपर नहि छैक जे आइ हम कहि रहल छी ।'

लालकाका अड़ल रहलथिन–'सत्य चोराओल नहि जाइत छैक । विवाह एक टा पवित्र सम्बन्ध छैक, जकर साक्षी समाज होइत छैक । चोराकऽ पाप होइत छैक । ओइ पाप लेल हमर घरमे कोनो स्थान नहि छैक ।'

रविक उत्तेजना आब बेसम्हार होबऽ लगलैक–'अहाँक घरमे नहि छैक तँ नहि रहौक, हमर ह्रदयमे छैक । हमर घरमे छैक । हम लऽ जाइत छिऐक एकरासभकेँ अपन घर, बाबूक घर । अहाँ नहि देब आशीर्वाद तँ नहि दियऽ, बाबू हमरा आशीर्वाद देताह । हमर एकसर घूरि अयलापर अहाँ दुखी रही, हमर मृत्युक कामना कयने रही । हमर सपरिवार घूरि आयब कोना बर्दाश्त हैत अहाँकेँ ?'

लालकाका तामसे थरथर काँपऽ लगलथिन । रवि ओइपर बिन ध्यान देने ओइ कोठलीमे पैसि गेल जकरा खाली कऽ भोरे गेल छल । कविता आ लवकेँ कहलकै–'माय आ बाबूक फोटोकेँ प्रणाम कऽ आशीर्वाद ले ।'

तीनू प्रणाम कयलकै । कविताक आकृति जे स्टेशनसँ घुरैतकाल लाजे नवकनियाँ जकाँ रक्तिम आ उल्लाससँ दमकैत छलैक, फेर विवर्ण आ पिरौछ भऽ गेल छलैक ! रविकेँ हताश भावसँ तकैत कलकै–'आब की हैत ?'

रवि ओकर पीठ थपथपा आश्वासन देलकै–'सभ ठीके हेतौ । तोँ चिन्ता जुनि कर ।'

जतबा काल लालकाकासँ बहस भेलै, सामान माथपर लेने बिलटा ठाढ़ छलैक । कोठलीमे आबि सामान राखि देलकै आ पुछलकै–'आरो कोनो काज हय मालिक ?'

रवि पाइ दैत कहलकै–'नै, तोँ जो ।'

बिलटा जाय लगलैक तँ कविता टोकलकै आ अपन डाँड़मे खोँसल कुंजी दैत कहलकै–'कने हमर आङनसँ कपड़ा-लत्ता, वर्तन-वासन आ किछु अन्नो-पानि आनि दे । लवोकेँ संग लऽ जाहिक ।'

बिलटा कुंजी लऽ प्रसन्नतासँ विदा भेल । लव संग गेलैक ।

कविताक आकृति ओहिना विवर्ण आ डेरायल छलैक । रवि ओकरा स्नेहसँ लग घीचि अपन बाँहिमे समटैत कहलकै–'एना त्रस्त आ भयभीत किएक छैँ ? अपन स्वामी आ बेटाक संग अपन घर आयलि छेँ, अइमे डेरयबाक कोन काज ? एक दिन अही आङनक एक टा कोठलीमे एक टा उत्तेजक क्षणमे तोरा संग अन्याय

भेल रहौक । आइ ओइ आङनमे पुतहु बना आनि देलियौक तँ लगैत अछि जेना तोरा संग सम्पूर्ण तँ नहि, आंशिको न्याय भऽ सकलौ । जे बीति गेलैक, तकर उपाय नहि छैक कविता ! चौदह वर्षसँ बेसी तोरा बड़ सहऽ पड़लौक—दुख, अपमान आ लांछन । सभटा हमरे कारण । आइ अपन बाँहिमे समेटि अपन सम्पूर्ण अन्त:करणसँ तोरा स्वीकार करैत छियौक । सभटा बिसरि जो कविता ! आइ जे भऽ रहल छैक, तकरे सत्य मान ।'

कविता रविक छातीमे मूड़ी गाड़ने कहलकै—'हमरा लेल तँ ओहो सत्य छल जे ओइ दिन अइ आङनमे घटित भेल । से नै रहैत तँ जकरा संग मंत्र पढ़ा बिआहलि गेल छल, चल जैतहुँ । हम तँ तहिएसँ प्रतीक्षामे रही आजुक । आइ ओ दिन आबि गेल अछि तँ डर लागि रहल अछि । नहि जानि, किएक लागि रहल अछि जे एतेक सुख हमरा सहि नहि हैत । जन्मेसँ दुख सहैक अभ्यास भऽ गेल अछि । सुख, सेहो एतेक रास एक बेर पाबि, बड़ डर भऽ रहल अछि ।'

रवि कविताक कँपैत देहकेँ अपन बाँहिक बंधनसँ स्थिर करबाक चेष्टा करैत कहलकै—'कोनो डर नहि कविता ! हम छियौ तोरासभ लेल, लव लेल आ तोरा लेल लालकाका, ई गाम आ सौँसे समाजसँ लड़ि सकै छी हम । बिसरि जो ओइ रविकेँ जे एकदिन अपन कलंकित मुँह नुका चुपचाप पड़ा गेल रहौ । आइ ओइ कलंककेँ अप्पन माथपर साटि लेने अछि रवि । ओहिना माथपर सटने सम्पूर्ण गाम आ समाजक समक्ष ठाढ़ हैत रवि । ओकरा ककरो डर नहि छैक ।'

बाहर गलगुल होबऽ लागल छलैक । रवि कविताकेँ छोड़ि देलकै । ओ नीक जकाँ आँचर लऽ सम्हरिकऽ ठाढ़ि भऽ गेलैक । दरबज्जापर भीड़ जमा भऽ रहल छलैक, लालकाका सभकेँ बजा रहल छथिन, से ओकरा अन्दाज भऽ गेलैक। अङनोमे भीड़ जमा भऽ रहल छलैक । रवि कोठलीसँ बाहर आयल । लालकाकी आ मनोजक कनियाँ ठाढ़ि छलथिन कोठलिए लग आ आङनमे बहुत रास स्त्रीगण छलैक । रवि लालकाकीकेँ कहलकनि—'हमर स्त्री-बेटाकेँ आशीर्वाद नहि देबैक लालकाकी !'

लालकाकी झझकि उठलथिन—'केहन स्त्री आ केहन बेटा ! एक टा बाल-बच्चावाली बिआहलि स्त्रिगणकेँ अपन घर लऽ अनने छऽ आ हमरासँ आशीर्वाद मङैत छऽ ? यैहसभ करबा लेल गाम घुरल छलऽ ? अइसँ तँ.....'

रवि बीचमे कहलकनि—'अइसँ तँ मरिए गेल रहितहुँ सैह नीक ! बारह वर्षक बाद तँ लोक श्राद्धो कऽ दैत छैक । मुदा बूढ़ा नहि माननलि, बैमान घुइयाँ

छलाह आ मुर्दा चौदह वर्षक बाद हड़हड़ी बज्र जकाँ अहाँक छातीपर खसल । मुदा, अइ मुर्दाकेँ अहाँ दूध पिऔने छलिऐक लालकाकी !'

लालकाकीक आँखि कने आश्चर्यसँ विस्फारित भेलनि, मुदा पकड़ल जयबाक संकोचक बदला ओइमे क्रोधक लपटि आबि गेलनि—'दूध पिअबैत काल कहाँ बुझने छलिऐक जे साँपकेँ दूध पिया रहलि छी, एकदिन हमरे डँसत । तोहर अइ कृत्यपर भरि गाम थू-थू भऽ रहल छऽ । ककरो मुँह देखयबा जोगर रहब हमरालोकनि ?'

लालकाकी मरि गेल छलथिन, ओतऽ ममताक आशा करब व्यर्थ छलैक । ओ तँ मात्र मनोज, लल्लू, बौआ आ छोटकूक माय छलथिन, रविक माय नहि, ओकर लालकाकी नहि । रविक मृत्युक कामनाक बात रवि बूझि गेलनि, सेहो सूनि लालकाकीकेँ कनियो ँ ग्लानि नहि भेलनि ।

ओइ लालकाकीसँ स्नेह आ आशीर्वादक आशा करबा लेल रविकेँ अपने ग्लानि भेलैक । ओ ओतऽसँ हँटि बाहर दलान दिस गेल ।

दलान खचाखच भरल छलैक । एतबे कालमे लालकाका सौँसे गामकेँ जमा कऽ लेने छलथिन । रविकेँ अबैत देखि चारू कात चुप्पी पसरि गेलैक । रवि ओइ असह्य चुप्पीक बीच बड़ीकाल धरि ठाढ़ रहल । कखनो कोनो दिससँ आक्रमण शुरू भऽ सकैत छैक, रवि जनैत छल । मुदा आइ ओ सभ टा आक्रमण, सभटा आक्षेपकेँ सहि ओकर प्रत्युत्तर देबाक साहसक संग गाम घूरल छल ।

चुप्पी हरिश्चन्द्र चौधरी तोड़लथिन— 'किदन सभ सुनैत छियऽ रवि ! वसन्तक बेटीकेँ तोँ उठाकऽ अप्पन घर लऽ अनने छहक ! राम भाइ ओ श्रीकान्त काकाक परम्परामे एहन निर्लज्ज आ घृणित कार्य ! ओकरासभकेँ पहुँचा दहक अपन घर ।'

रवि दृढ़तापूर्वक कहलकनि—'अपने घर तँ पहुँचा देने छिऐक ! कविता हमर स्त्री थिक आ लव हमर बेटा । अपन स्त्री-बेटाकेँ अपन घर आनब निर्लज्ज आ घृणित कार्य छैक, से आइए जानल ।'

महेश बाबू बीचेमे बात कटैत कहलथिन—'केहन स्त्री आ केहन बेटा ! कविताक विवाह भरि गामक लोकक सामने भेल छैक, स्वामी आइयो जीवित छैक आ एक टा बेटो छैक । तकरा तोँ जबर्दस्ती अपन स्त्री-बेटा बना लेबहक आ हमरालोकनि मानि जयबह ! व्यभिचार लेल ई बाप-पुरखाक आङन चुनैत तोरा लाज नहि भेलह ? अही लेल गाम घूरल छह ?'

रवि ओहिना दृढ़तापूर्वक कहलकनि–'लाज हमरा भेल मास्टर काका ! आइयो होइत अछि । अपन स्त्रीकेँ असहाय छोड़ि कायर जकाँ पड़ा गेल रही, तकर लाज आइयो होइत अछि । मुदा, आइ जे ओइ दुनूकेँ अपन स्त्री-बेटा कहि अपना रहल छिऐक तकर कनियो लाज नहि अछि, ओकर गर्व भऽ रहल अछि । जे काज बहुत दिन पहिने करबाक चाहैत छल, से आइ कऽ रहल छी । हमरा अहाँलोकनिक आशीर्वाद चाही ।'

पण्डित काका कहलथिन— 'विश्वास नै होइत अछि रवि जे ई तोँ बाजि रहल छऽ ! कतेक बदलि जाइत अछि मनुक्ख ! राम भाइक बेटा आ ओकर एहन कृत्य ! एहन काजमे हमरालोकनिक आशीर्वाद मङैत तोरा लज्जा हेबाक चाहियऽ ।'

रवि हुनक लग जा हुनकर पयर छूबि कहलकनि–'हम अहाँक पयर छूबि कहैत छी जे अइमे लजयबाक कोनो बात नहि छैक, अभिमानक बात छैक । अपन कर्त्तव्यक देरीसँ ज्ञान भेनाइ आ ओकर परिमार्जन कऽ लेब प्रत्येक मनुक्खक लेल गर्वेक बात होइत छैक, हमरो लेल अछि । हम कर्त्तव्यच्युत भऽ गेल रही । चुपचाप विवाह कऽ अपन स्त्रीक गर्भमे अपन नेना छोड़ि लाजे पड़ा गेल रही । चौदह वर्ष धरि पड़ायले रहलहुँ । एहि बीच लोक हमर स्त्रीक सीथमे दोसरक हाथेँ सिन्दुर दिया देलकै । ओ कमजोर स्त्री समाज लग साहस नहि कऽ सकलि, मुदा जे सिन्दूर देने छलथिन तनिका कहि देलकनि । ओ नीक लोक छलथिन, ओही दिन चल गेलथिन । तहियासँ हमर स्त्री दुख आ अपमान सहैत हमर प्रतीक्षा कयलक । आइ ओकरा स्वीकार कऽ हम अप्पन पापक प्रायश्चित्त कऽ रहल छी । अहाँलोकनि हमर मदति करू पण्डित काका, आशीर्वाद दियऽ । अहाँ बाजू बुधियार काका !'

–'यू हैव माइ ब्लेसिंग्स माइ चाइल्ड !' (हमर आशीर्वाद छौक)–बुधयार काका बाजि उठलथिन ।

–'हैव यू गौन मैड भजार !' (अहाँ पागल भऽ गेल छी भजार)–भजार काका टोकलथिन–'शी इज मैरिड टु समवन एल्स' (ओ अनकासँ बिआहलि छैक ।)

बुधिकार काका ठाढ़ होइत कहलथिन–'आइ नो, आइ नो भजार ! बट ट्राइ टु सी व्हाट आदर्स कान्ट सी ।' (हम जनैत छी, हम जनैत छी भजार ! मुदा, ओ देखबाक चेष्टा करू जे आन नहि देखि पाबि रहल छथि ।)

सभ बुधियार काकापर ठोठिया कऽ उठलनि–'अप्पन बुधियारी बन्द राखू

एतऽ । ई गाम आ समाजक मर्यादाक प्रश्न छैक । धर्म आ सामाजिक रीति-रेबाजक अपरिहार्यताक प्रश्न छैक ।'

भजार काका जाइत-जाइत कहलथिन–'दे विल नाट लिसन टु मी, बट यू हैव माइ ब्लेसिंग्स रवि !' (ईलोकनि इमर बात नहि सुनता, मुदा हमर आशीर्वाद छौक तोरा रवि !)

रवि आगू बढ़िकऽ गोड़ लगलकनि । बुधियार काका चल गेलथिन । उपस्थित लोकसभमे एक बेर फेर एक टा चुप्पी पसरि गेलैक । रवियो चुपचाप ओइ कटाह चुप्पीक बीच ठाढ़ रहल ।

चुप्पी लालकाका तोड़लथिन–'अहाँलोकनि आइ एकर फैसला कऽकऽ जाउ । हमर आङनमे ई अनाचार नहि चलि सकैत अछि ।'

रवि चारू कात तकलक । किम्हरोसँ ओकरा अपन समर्थनक आशा नहि लगलैक । सभ जेना लालेकाकाक बातक समर्थन कऽ रहल छलनि ।

महेश बाबू कहलथिन–'लाल ठीक कहै छथुन । हमरालोकनिक आङनमे ई अनाचार नहि चलि सकैत छऽ । तोरा जे करबाक होअऽ, गामसँ बाहर जाकऽ करऽ । एतऽ रहबाक छऽ तँ अइ दुनू माय-बेटाकेँ अप्पन आङन पहुँचा दहक ।'

रविक शरीर क्रोध, घृणा आ उत्तेजनासँ काँपऽ लगलैक–'हम अपन स्त्री-बेटाकेँ अपन आङनमे अनलहुँ से भेलैक अनाचार ! आ, दोसरक बेटी-बहुक इज्जतिपर हाथ देब सदाचार छैक ? राति-विराति कोनो घर पैसब सदाचार छैक ? ओ गाममे चलि सकैत अछि ? अइ दुनू माय-बेटाकेँ आब अइ आङनसँ क्यो नहि निकालि सकैत छैक । हमर आङन अछि आ हम अपन स्त्री-बेटाकेँ राखब, हमरा क्यो रोकि नहि सकैत अछि ।'

तेजू बीचमे छड़पिकऽ बजलैक–'हम एतेक काल संगीक लेहाजे चुप्प रही, मुदा आब हमरा बाजऽ पड़त । ई नै चलि सकैत छौ रवि ! ई गाम थिकैक । एकर अपन नियम, मर्यादा आ कायदा-कानून छैक । जकरा मोन हेतैक, ओ अइ कानूनकेँ तोड़ि नहि सकैत अछि । समाज ओकर निष्कासन कऽ दैत छैक ।'

रविकेँ तेजूक बातपर हँसी लगलैक । तेजू आ मर्यादाक गप्प ! ओ रुच्छतासँ कहलकै–'हमहूँ एतेक काल दोस्तिएक लेहाजसँ नाम नै लेने छलियौक । तोँ अपने बीचमे कूदि नाम खोलि देलहिक । ककरो घरमे, अनकर स्त्री लग जायब

मर्यादाक उल्लंघन नहि छैक गामक लेल, आ हम अपन स्त्रीकेँ अपन घरमे राखब से भेल अनाचार आ व्यभिचार ?'

फकीरकाका कहलथिन– 'अनेरो तखनसँ स्त्री-बेटाक रट मारने छऽ आ सभपर मिथ्या आरोप लगा रहल छहक। कहिया भेलह तोहर विवाह आ के छऽ साक्षी ?'

रवि कनेकाल लेल चुप्प भऽ गेल । कोनो जवाब नहि फुरलैक । फेर कहलकनि–'हमर साक्षी छथि भगवान ।'

महेशबाबू फेर तरङलाह–'फेर मिथ्या आ ओकर संग भगवानक नाम ! विवाहक लेल समाज साक्षी होइत छैक, भगवान नहि। के छलऽ पण्डित ? कहिया भेलऽ विवाह ?'

रविकेँ किछु बाजि नहि भेलैक। महेशबाबूक साहस बढ़लनि— 'आ यदि भगवान लग तोहर विवाह भेल छलऽ, भगवाने साक्षी छलथुन, तँ पड़यलऽ किएक ? तोँ पड़ा गेलह, तँ कविता झट दोसरक कनियाँ बनि किएक बैसलीह बेदी तर ? तोहर पड़यबाक तेसरे मास तँ विवाह भेल रहनि ! भरि गामकेँ मोन छैक । तोहर विवाह सत्य छलऽ, तँ ओ विवाह की छलैक जे सभक आँखिक सामने भेलैक ?'

रवि चुप्पी तोड़ैत दृढ़ स्वरमे कहलकनि–'दुनू सत्य छैक मास्टरकाका ! कविता हमर स्त्री अछि आ लव हमर बेटा, सेहो सत्य छैक । आ, ओकर विवाह कवीन्द्र बाबूक संग भेल रहैक, सेहो सत्य छैक । मुदा, कवीन्द्र बाबूक स्त्री ओ विवाहोक बाद नहि बनि सकलनि । ओ बूझि गेलथिन आ ओकरा छोड़ि चल गेलथिन । कहिओ घूरिकऽ नहि अयलथिन । घूरिकऽ अयलहुँ हम, किएक तँ कविता हमर स्त्री थिक, लव हमर बेटा अछि । समाजक सामने हमर विवाह नहि भेल अछि तँ ठहरू अहाँलोकनि । एखने अहीँ सभक समक्ष ओकर सीथमे सिन्दूर दऽ दैत छिऐक । ओना, ओकर सीथमे सिन्दूर आइयो हमरे नामक छैक, खाली हाथ कवीन्द्र बाबूक छलनि ।'

हरिश्चन्द्र चौधरी बिगड़ैत कहलथिन–'बन्द करऽ ई नौटंकी ! तोँ तँ नाटक-सिनेमावला गप्प करैत छऽ । विवाह भेलनि कवीन्द्र बाबूक संग तँ तोहर स्त्री कोना भेलथुन ? आ, दोसरक स्त्रीकेँ, चौदह वर्षक एक टा बेटाक मायकेँ तोँ आइ सिन्दुर कोना देबहक ? चुपचाप दुनूकेँ वसन्त ठाकुरक घर पठा दहक, काल्हि विचार कऽ गामोसँ बाहर कयल जेतैक ।'

रवि हुनकोसँ बेसी जोरसँ गरजल–'ककर मजाल छैक जे ओकरा गामसँ

बहार करतैक ? हमर स्त्री आ बेटा हमर घरमे रहत । जे समाज व्यभिचार आ कुरीतिकेँ प्रश्रय दैत छैक, मुँह झाँपिकऽ पाप करबाक अनुमति दैत छैक, ओकरा हम चिचियाकऽ कहैत छिऐक जे ई पाप नहि छैक । ई थिक हमर कर्त्तव्य, हमर धर्म । एहिसँ कोनो समाज हमरा रोकि नहि सकैत अछि । ई केहन समाज अछि अहाँलोकनिक औ ? एक दिन ई सरपंच हरिकाका आयल छलाह हमरा लग जे तोँ हमरा पावर आफ एटरनी दऽ दैह, हम लालकेँ नाच नचा देबनि, तोहर हिस्सा हड़पऽ चाहैत छथुन । एक दिन ई मास्टरकाका आयल रहथि जे पुरना घराड़ी हमरा लिखि दैह, तोहर रक्षा हम करबऽ तोहर पित्तीसँ, ओ बैमान छथुन, तोरो हिस्सा खा जयथुन । ई लालकाका एक दिन सर्वे आफिसमे कहि आयल छथिन खानापूरीमे जे हिनकर जेठ भाइ निस्संतान मुइल छथिन...।'

लालकाका ओकरोसँ बेसी जोरसँ चिचिया उठलथिन–'हम आइयो कहैत छियनि जे हमर भाइ निस्संतान मुइला । भरि गामक समक्ष कहैत छियनि । हमर भाइ साधु छलाह, बेटो हुनकर हीरा छलनि । कोनो दुश्मनक नजरि लागि गेलैक । ओ हेरा गेल, मरि गेल । ई जे घूरिकऽ आयल अछि, से हमर राम भाइक बेटा नहि अछि, कोनो बहुरुपिया अछि । ठकऽ आयल अछि हमरासभकेँ । ई रवि नहि थिक...कोनो बहुरुपिया थिक । एकरा भगाउ एखने गामसँ...'

लालकाका अपन असल रङमे आबि गेल छलथिन । रविकेँ एहने आशा छलैक । मुदा, ओकरा गामसँ भगयबाक लेल एतेक नीचतापर उतरि औथिन, से ओकरा आशा नहि छलैक । ओकरा रवि मानबेसँ मुकरि गेलथिन । जहिया घुरल छल चौदह वर्षक बाद, कान्हपर हिचुकि-किचुकि कऽ कानल रहथिन यैह लालकाका ।

दु:ख आ क्रोधसँ विकृत स्वरमे रवि कहलकनि–'एतेक आसान नहि छैक लालकाका ककरो हक छीनि ओकरा गामसँ भगा देब ! हम तँ अपन हक छोड़ि गाम छोड़ि विदा भऽ गेल रही । मुदा, अपन स्त्री-बेटा लेल घूरिकऽ आबऽ पड़ल । ओकर हक ओकरा अबस्से भेटतैक । सर्वेमे एखन तसदीक बाँकी छैक, ओतहु अहाँलोकनिक प्रपंच चलत तँ आगूक रस्ता छैक । हमरा मृत घोषित कयने ओ हक आब नहि पचत लालकाका ! हम बहुरुपिया छी– कोनो धोखेबाज बदमाश ! की फकीरकाका, अहाँ चीन्हैत छी हमरा ? अहाँक बेटा तँ हम्मर सङी छल । आ अहाँ पण्डितकाका ! अहूँक बेटा हमर सङी छल । आ तोँ तेजू ! तोँ तँ सङे पढ़ैत छलैं, तोँ चीन्है छैं की नहि हमरा ?'

क्यो किछु नहि बजलैक । रविक आकृतिपर दुख आ घृणाक चेन्ह आर

जगजिआर भऽ गेलैक–'क्यो नहि चीन्हैत छी हमरा एहि गाममे ? हम एक टा धोखेबाज बहुरुपिया छी । बजा लियऽ पुलिसकेँ अहाँसभ ! मुदा एक टा बात जानि राखू । सत्यकेँ देखार होबऽ पड़तैक, ओकरा क्यो नहि झाँपि सकैत छैक, आ तहिया सौँसे इलाका बूझत जे बहुरुपिया के ? धोखेबाज के ? हम अपन स्त्री-बेटाक सङ एही गाममे, अपने घरमे रहब । अहाँलोकनिक आशीर्वाद चाहैत छलहुँ, तकर बदलामे अहाँलोकनि बहुरुपिया आ धोखेबाजक विशेषण देलहुँ, ई बात मुदा हमरो मोन रहत ।'

रवि जाय लागल, तखन बिलटा आबि गेलैक–'सभटा चीज आनि देली मालिक, आरो कोनो काज हय ?'

रविक आकृति चमकि उठलैक । पाछाँ घूरिकऽ तकैत कहलकनि–'ई बिलटा मुदा हमरा चीन्हैत अछि । एकरासँ पूछि लियौक जे हम के छी ? की बिलट, के छी हम ?'

बिलटा अकबकाइत बजलैक–'हे लू, ई की पुछै छी मालिक ! अहाँकेँ के नै चीन्है हय ? अहाँ बड़का मालिक, रामबाबू के बेटा रविबाबू ।'

रवि एक बेर फेर उपस्थित ग्रामीण दिस तकलक आ पुछलकनि–'आबो चीन्हैत छी अहाँलोकनि हमरा कि नहि ?'

क्यो कोनो जबाब नहि देलकै । रवि भीतर आङन दिस चल गेल ।

कविताक आँखिमे निन्न नहि छलैक । ओ लगातार कनने जा रहलि छलैक । रवि बुझबैत-बुझबैत हारि गेलैक मुदा कविताक आँखिक नोर बहिते रहलैक । ओहिना कनैत कोठलीमे भानस कयलकै साँझमे, रवि आ लवकेँ खुआ देलकै । अपन कण्ठ तर एको टा दाना नहि गेलैक । रवि आग्रह कऽ हारि गेलैक ।

लव चौकीपर सूति रहल छलैक । नीचा माँटिपर बिछौन कऽ रवि पड़ल छल आ कविता ओकर छातीपर पड़लि कानि रहलि छलैक । कनिते जा रहलि छलैक ।

रवि एक बेर फेर चेष्टा कयलक–'एना नहि कान कविता ! आइ तऽ खुशीक दिन छौक– हमर-तोहर विवाहक पहिल राति ! एकरा कानिकऽ एना अशुभ

आ व्यर्थ नहि बना ! देख, आँखि उठाकऽ देख ! चौकीपर तोहर बेटा सूतल छौक आ तोँ घरमे अपन स्वामीक छातीपर पड़ल छेँ ! हँस कविता, गीत गा ! एना कान नहि ! नहि तँ हमरो साहस कमि जायत ।'

कविता मूड़ी उठौलकै ! कनैत-कनैत आँखि लाल भऽ गेल छलैक आ भीजल आकृतिसँ जतऽ-ततऽ केशक लट पसरि गेल छलैक । लालटेनक इजोतमे कविताक ओ आकृति बड़ नीक लगलैक रविकेँ ! सभटा नोर पोछैत, ओकर छिड़िआयल केशकेँ समेटि देलकै रवि । मुदा कविता फेर कानऽ लगलै–'किएक लऽ अनलहुँ हमरा एतऽ ? हम तऽ खाली लवकेँ पठौने छलिऐक ओकर बाप लग, ओकरा लऽ जाय लेल कहने रही ! हम तँ ओहिना जीवि लितहुँ बाँकियो दिन ! हमरा लेल धरती नहि फटैत जे ओइमे विलीन भऽ जैतहुँ ! अही गाममे, एहने लोकसभक बीच जीवि लितहुँ हम ! मुदा अहाँ एतऽ लऽ अनलहुँ । नहि जानि हमरो की भऽ गेल ! कनियाँ जकाँ अइ घरमे चल अयलहुँ ! आब कोन उपाय हैत ? गामक लोक एकरा किन्हुँ नहि मानत । कोन सबूत देबैक हमरालोकनि ? आ अनेरो अहाँ आफतमे पड़ि गेलहुँ । लवक भविष्य अंधकारमय भऽ गेलैक ! सभ टा हमरे लेल !'

रवि ओकरा स्नेहसँ डँटलकै–'बताहि भेल छेँ तोँ ! हम किएक आफतमे पड़ब आ रविक भविष्य किएक अन्धकारमय हेतैक ! तोँ दुनू गोटे अपन उचित स्थानपर पहुचि गेल छेँ, तोहर दुनू गोटेक हक क्यो नहि मारि सकैत छौ ! अपन हक तऽ हम छोड़ि देने रहियनि, एकर हमरा लोभ नहि छल । मुदा आब ओ हक हमर नहि थिक, तोहर छौक, लवक छैक । ओकरा हम लऽकऽ छोड़बनि ।'

कविताक स्वरमे डर आर बढ़ि गेलैक–'तेँ कहै छी जे अहाँ आफतमे पड़ि गेलहुँ ! अहाँ बुते गामक छल-प्रपंचमे सकब मस्किल हैत । अहाँ तऽ हँसैत-हँसैत अपन अधिकार छोड़ऽवला लोक छी आ एतऽ लोक एक टा अबलासँ ओकर मुँहक आहार छीनि लैत छैक ! बाबूकेँ आगि देबाक बदलामे हमर पितिऔत सभटा जथा हथिया लेलनि । श्राद्धमे बड़ खर्च भेलनि, मस्किलसँ एगारह ब्राह्मणकेँ हाथ अइँठ करौलथिन, ताहीमे सभ टा लऽ लेलनि । अहाँ नहि सकब हिनकालोकनिक संग ! भरि गामक स्त्रिगण घर पैसि कथा कहि गेली ! अहाँ दलानपर रही आ आङनमे सभ सतबरता आ पतिव्रता बनि हमरा रण्डी-वेश्या सभ कहि गेलीह । हमर जन्मे बुझाइत अछि ओही लग्नमे भेल अछि । जकरा लग रहैत छिऐक, दुखे दैत छिऐक ! माय-बाप जिनगी भरि हमरा लेल दुख पौलनि । हमरे लेल अहाँक जीवन नष्ट भेल, लालकाकाक स्वप्न नष्ट भेलनि । आ, आब फेर ओही कार्यक पुनरावृत्ति ! अहाँकेँ

हाथ जोड़ैत छी, लवकें लऽकऽ चल जाउ गामसँ आ हमरा छोड़ि दियऽ अही नग्रमे ! हम सहि लेब, सभ टा सहि लेब । हमरा कोनो दुख नहि हैत ! खाली लवकें अहाँ लऽ जैयौक !' कविता झोंकमे कहि गेलैक !

रवि ओकर देहकें नीक जकाँ अपन बाँहिमे समटैत कहलकै–'हम जनै छी कविता, तों सहि लेबें । सभ टा सहि लेबें । मुदा, हम ईसभ सहबा लेल अइ गाममे एकसरि नहि छोड़ि सकैत छियौक । एतेक दिनपर तों भेटल छैं, तोरा छोड़ि नहि सकैत छियौ हम ।'

कविता ओकर आलिंगनमे निरीह शिशु जकाँ समर्पित बाजि उठलैक–'हमरापर दया करबा लेल सौँसे गामसँ राड़ि किएक मोल लेब ? अहाँ लवकें स्वीकार कऽ लेलिऐ, यैह हमरा ऊपर अहाँक असीम कृपा भेल । बस्स, एकर बाद किछु नै चाही ।'

रवि कविताक मुँहपर अपन आङुर रखैत कहलकै–'ई दया-कृपाक गप्प किएक कविता ? हमरा तोहर स्नेह चाही । एतेक दिन धरि एक टा प्रेत जकाँ बौआइत रहल छी । हमरो तँ ककरो स्नेहक छाहरि चाही !'

कविता ओकर आङुरकें अप्पन मुट्ठीमे लैत कहलकै–'हमरा परतारू नहि । हम की दऽ सकब अहाँकें ? की अछि हमरा लग ? रुग्न गलल अस्थिपंजर मात्र । जाहि देह लेल एक बेर अहाँ अपन आदर्शसँ खसल रही, से देह आ लावण्य तँ ई चौदह टा वर्ष गीड़ि गेल । ओहू लावण्यमयी कविता लेल अहाँक मनमे प्रेम नहि छल, छल एक टा उद्दाम इच्छा । ओइ इच्छाक बड़ पैघ मूल्य चुकबऽ पड़ल अहाँकें । तैयो हमरा लेल असीम दया अछि अहाँक मोनमे । हमरा अपनाकऽ सम्पूर्ण समाजसँ लड़ऽ चाहैत छी । मुदा हमरा लज्जा भऽ रहल अछि । की अछि हमरा लग जे अहाँकें देब ? एकटा मोन छल से तँ अपनो पता नहि लागल जे कहिया देलहुँ अहाँकें । एकटा देह छल से गलिकऽ कंकाल भऽ गेल । हमरा अपन आलिंगनमे लऽ आर लज्जित नहि करू ।'

रवि कने स्नेहभरल क्रोधसँ कहलकै–'तों सत्ते बताहि भेल छें कविता ! सभकिछु तँ छौके तोरा लग हमरा देबऽ वास्ते । तोहर कुमारि देह आ मोन आ तोहर क्षमा । तों हमर नेनपनक सङी आ नवयौवनक प्रेयसी छें । हमर नेनाक माय छैं । तोहर इच्छा चिरदिनसँ हमर मोनमे छल आ आइ तोरा साधिकार अपन कोठलीमे लऽ अनने छियौक । ई तोहर चतुर्थीक राति थिकौक, तों कान नहि कविता ! अइ

रातिकें, अइ क्षणकें, अपन हँसीसँ नमराकऽ ततेक पैघ कऽ दे जे बाँकी जिनगी कटि जाय ओकरे हिलकोरमे ।'

कविता तैयो कनिते रहलैक–'कोना हँसू हम ? की लऽकऽ समर्पित होउ । ई पपड़ी पड़ल ठोर, ई सुखायल-पचकल गाल आ खधियामे धँसल आँखि । सुखाकऽ टाँट भेल हाथ-पयर आ खड़खड़ करैत तरहत्थी । हमरा लाज होइत अछि अपनापर । हमरा पहुँचा दियऽ अपन घर आ लवकें लऽ जैयौक कतहु, जहाँ ओ मनुक्ख बनि सकय, जतऽ ओकर मायक अभाग्यक छाया ओकर पछोड़ नहि करैक ।'

रवि कने आहत अभिमानसँ कहलकै–'हमरा की बूझि लेने छैं कविता तों ? आइयो तों हमरा वैह कामान्ध रवि बूझि रहलि छें ? तों केहन छें, हमर आँखिमे देख । ओइमे आइयो तोरा वैह लावण्ययुक्त आकृति भेटतौक । हमरा लेल तँ तों आइयो ओहिना छें, आतबे आकर्षक, मुदा ओइसँ बेसी अप्पन । आइ तों हम्मर छें । सौँसे गाम लग चिचियाकऽ कहि आयल छिऐ जे कविता हमर स्त्री अछि आ लव हमर बेटा । एना मासुक लोभी कामान्ध रवि कहि अपमान नहि कर हमर । एकदिन तोरा लग अपराध भेल छल, मुदा आइ अपन सम्पूर्ण होश-हवाशमे पूर्ण दायित्वक संग....

कविता बीचमे बात काटि देलकै–'सैह तँ हमहूँ कहैत छी जे अहाँ अपनाकें दोषी मानि पापक प्रायश्चित्त कऽ रहल छी । जाहि कविताकें अहाँ प्रबल आवेगसँ अपन आलिंगनमे बन्हने छलिऐक, ओकरोसँ अहाँक प्रेम नहि छल । आइ जाहि कविताक कंकाल अहाँक आलिंगनमे सिकुड़ल पड़ल अछि, ओकरो लेल अहाँक हृदयमे प्रेम नहि, दया अछि, अपराधक प्रायश्चित्त करबाक संकल्प अछि । मुदा ई कविता अहाँकें ओइ दायित्वसँ मुक्त करैत अछि । ओकर मोनमे अहाँ लेल कोनो कुभाव नहि छैक, मात्र प्रेम छैक अहाँ लेल सभ दिनसँ, ओही प्रेमक बलपर ओ खेपि गेल एतेक वर्ष । लवकें अहाँ लग पहुँचा देलक । ओकर काज समाप्त भऽ गेलैक । ओ सुखी अछि । ओकरा आर सुख नहि चाहिऐक ।'

रविक हाथक बंधन ढील भऽ गेलैक आ अभिमानसँ मुँह फेरि करौट लऽ लेलक रवि–'जतेक इच्छा होउ, गारि दऽ ले हमरा । आब नहि टोकबौ हम । हम अपन स्त्री आ बेटाकें घर अनने छी, कोनो अनाथाश्रमक स्त्री आ ओकर नेनाकें आश्रय देबऽ नहि अनने छिऐक । एखन एतेक हृदयहीन नहि भेल छी हम !'

कविता पाछाँसँ ओकर गरदनिमे बाँहि धऽ ओकर मुँह अपन दुनू हाथमे लऽ

लेलकै–'एना नहि तमसाउ । अइ अभागलिकें एतेक सुख नहि सहि हेतैक, हम फेर कहै छी । हमरा घृणासँ दुतकरि दितहुँ तँ सहि लितहुँ हम ।'

रवि घूमिकऽ कविताकें अपन देहसँ साटि लेलकै । कविताक कानब बन्द भऽ गेल छलैक, मुदा देह थरथरा रहल छलैक । अपन ठोर आ हाथक स्पर्श कविताक आकृति आ शरीरकें बेर-बेर देलकै रवि । ओकर देहक थरथरी बन्द भऽ गेलैक आ तखन अयलैक ऊष्मा । एकटा स्निग्ध आलोड़न । रविक छातीपर अपन देहक बोझ दैत ठोरसँ ओकर कण्ठ छुबैत कविता कहलकै–'अइ बेर मुदा भागिकऽ पड़ाय नहि देब अहाँकें ।'

ओ आलोड़न अन्तहीन भऽ गेलैक । आरो स्निग्ध, आरो तीव्र । कविता शिथिल भऽ पड़लि रहैत छलैक । मुदा रविक स्पर्श होइते फेर वैह स्निग्ध आलोड़न, ओहने उन्मादक वेग । रवि शिथिल भऽ पड़ि रहैत छल । कविताक स्पर्श होइते फेर वैह सिरहन, वैह स्निग्ध कम्पन ।

भोर तखनो नहि भेल छलैक । लालटेन मिझा देने छलैक कविता । कोठलीक अन्हारमे इजोतक एको टा रेख नहि छलैक । मुदा कविता देखि रहलि छलैक । रविओ देखि रहल छलैक । स्पर्शमे जेना दृष्टि आबि गेल छलैक । एक-एक टा भाव, एक-एक टा सिहरन आ आलोड़नकें देखि रहल छलैक दुनू । अनुभव कऽ रहल छलैक प्रतिक्षण ।

'सूतब नहि ?' – कविता पुछलकै ।

–'आइ कोना सूतब ? आइ तँ पहिल मिलन-राति थिक ! आइ सुतबाक गप्प नहि कविता !'

कविता रविक छातीपर हाथ रखैत कहलकै–'तखन आर गप्प कहू । ओतेक दिनुका गप्प । चौदह वर्ष धरि कहाँ रही अहाँ ? कतऽ-कतऽ गेलहुँ ? आइ सभ टा कहू हमरा.....

आ, रवि सभटा कहलकै ।

बरौनीसँ फेर गाड़ी । मुदा मोकामासँ कलकत्ता नहि गेल रवि । चल गेल पटना ।

भूखल-पिआसल-विवर्ण आ डेरायल आकृति देखि गेटपर धऽ लेलकै टिकट कलक्टर । बड़ी काल धरि रोकने रहलैक, जहल पठा देबाक धमकी देलकै । रवि कोनो जवाब नहि देलकै । चुपचाप ठाढ़ रहल । फेर नहि जानि की भेलैक ! ओकर विपन्न स्थितिपर दया वा अपात्र लग व्यर्थ आशा करबाक अपन गलत निर्णयपर आक्रोश कि एक्के बेर चिचियाकऽ कहलकै–'जाओ, भाग जाओ ।'

रवि स्टेशनक बाहर आबि गेल । सड़कक कातमे लागल दोकानसभमे चाह पिबैत, बिस्कुट खाइत लोककें ललचायल आँखिएँ तकैत रहल । पड़ाइत-पड़ाइत गामसँ एतेक दूर आबि गेलाक बाद आब भूख-पियासक अनुभव भऽ रहल छलैक । मुदा एको टा पाइ संग नहि लेने छल । देहपर एक टा गंजी छलैक आ डाँड़मे एकटा धोती ! बस्से एतबे । ने पयरमे चप्पल, ने देहमे कमीज । रविकें पड़यबाकाल कोनो चीजक होश नहि रहलैक ।

मुदा दोकानदारसभकें पूरा होश छलैक । ओकरा ओना तकैत देखि सभ साकांक्ष भऽ गेल छलैक–'कहीं किछु लऽ ने पड़ाय ।' रवि आगू बढ़ैत गेल ।

एक टा होटलमे गरम पूरी छना रहल छलैक । ओतहि किछु काल निहारैत रहल रवि । भोर भेले छलैक आ गर्मी मासक भोरमे दोकानसभ जल्दिए खुजि गेल छलैक । रवि लेल शहर नव छलैक, कहियो पटना आयल नहि छल ।

ओकरा टकटकी लगौने देखि दोकानदार टोकलकै–'क्या बात है ? चलो, आगे बढ़ो ।'

रवि आगू बढ़ऽ लागल, मुदा फेर किछु सोचि ठहरि गेल आ कहलकै–'हमरा कोनो काज भेटि सकैत अछि ?'

दोकानदार एकबेर ऊपरसँ निच्चाँ धरि देखलकै ओकरा । आ फेर पुछलकै–'कोन काज अबै छौ तोरा ?'

रवि कने आशान्वित होइत बाजल–'कोनो काज ! जे कहब से कऽ देब हम, हमरा राखि लियऽ ।'

दोकानदार कहलकै–'अइँठ उठाबऽ पड़तौक । थारी-बाटी धोबऽ पड़तौक ।

रवि आर आशान्वित होइत बाजल–'हमरा मंजूर अछि ।'

दोकानदार मुदा सभ टा बात साफ कऽ लेबऽ चाहैत छल–'भोजन आ पन्द्रह टाका भेटतौक । ड्यूटी भोर छौ बजेसँ राति बारह बजे धरि । मंजूर छौक ?

रवि फेर कहलकै–'हमरा सभ टा मंजूर अछि ।'

आ, रवि ओही दोकानमे रहि गेल । अइँठ-कूठ साफ करऽ लागल । साहुजी बेसी निर्दयी नहि छलैक । अठारह घण्टा खटौलाक बदला दिनमे मोटका चाउरक भात आ पानिवला दालिक संग कहिओ-काल बचल-खूचल तरकारियो दऽ दैत छलैक । रातिकेँ गनिकऽ मोट-मोट चारि टा रोटी । रविक काज चलि जाइत छलैक ।

पहिल मास पन्द्रह टाका भेटलैक, तँ एकटा दोसर खण्ड मोट सन धोती कीनि लेलक । दोसर मास भेटलैक फेर पन्द्रह टाका, तँ एकटा कमीज बनबा लेलक रवि । मुदा, तेसर मासक दरमाहा हाथमे दैत साहुजी कहलकै–'देख बौआ, कोनो आन ठाम काज ताकि ले । तोहर काजसँ कोनो शिकायत नहि अछि हमरा । मुदा नहि जानि किएक, लगैत अछि जेना ई काज तोरा जोगर नहि छौ, पढ़ल-लिखल बुझाइत छेँ, ब्राह्मण छेँ । अइ ठाम अइँठ-कूठ खाकऽ दोकानक पट्टापर पड़ल रहैत छेँ तँ अगलो-बगलोक लोक पूछऽ लगैत अछि । कैकबेर कतेक ग्राहको पूछि चुकल जे ई के छौक । अधलाह नहि मानिहेँ बौआ, तोँ कोनो नीक सन दोसर काज ताकि ले, पढ़ल-लिखलवला ।'

रवि पन्द्रह टाका पाटिकमे राखि, हाथमे दोसर खण्ड धोती लेने ओतऽसँ विदा भेल । एक टा झोरा किनलक आ धोती ओइमे राखि लेलक । पयर पाकऽ लगलैक, एक टा मामूली चप्पल कीनि लेलक । पाकिट फेर खाली । दिन भरि बौआकऽ आबय आ भरि छाक पानि पीबि रातिकेँ झोरा माथ तर राखि गांधी मैदान वा प्लेटफार्मपर जाकऽ बेंचपर सूति रहय । भोरे गंगाजीमे स्नान कऽ, धोती सुखा लेअय आ फेर ओकरा झोरामे राखि, दिन भरि बौअयनी, आ अन्तमे फेर वैह कलक भरि छाक पानि ।

भूखे तेसरे दिन आँखि चोन्हराय लगलैक । फेर साहुजी लग पहुँचल–'अही ठाम रहऽ दियऽ हमरा, भूखे प्राण तँ नहि जायत ।'

साहुजी भोजन देलकै आ देलकै एक टा पता – 'ओइ ठाम चल जो बौआ ! सम्हरिकऽ गप्प करिहेँ, जज साहेब छथिन् । धीया-पूता लेल एक टा मास्टर चाहियनि, हमरे गामक छथिन–एक बेर कोशिश कर । बेलीरोडपर छैक ।'

पेट भरि गेलासँ तृप्त आ उल्लसित रवि नव उत्साहक संग विदा भेल आ जज साहेबक क्वार्टरमे डेराइत पैसल । बरण्डेपर आरामकुर्सीपर बैसल छलथिन । पुछलथिन–'की थिक ?'

रवि कण्ठ साफ करैत बाजल–'जी, हमरा अपने गामक साहुजी पठौने छथि, जिनकर स्टेशन लग दोकान छनि । अपनेकेँ धीया-पूता लेल एक टा मास्टर चाही ?'

जज साहेब चश्मा उतारि एक बेर नीक जकाँ देखलथिन आ फेर प्रश्न कयलथिन–'अहाँ पढ़ा सकबै ? अहाँ तँ अपने स्कुलिया विद्यार्थी लगैत छी, पैघ-पैघ विद्यार्थी छैक–अठमा आ छठाक । कोन क्लास तक पढ़ा सकैत छिऐक ?

रवि विश्वासपूर्वक बाजल–'मैट्रिक धरिक ।'

रविक उत्तर आ ओकर स्वरमे झलकैत आत्मविश्वाससँ जज साहेब आकृष्ट भेला–'कहाँ धरि पढ़ल छी ? कोनो सर्टिफिकेट अछि ?'

रवि किछु आशंकित भेल, मुदा फेर ओतबे विश्वाससँ कहलकनि–'सर्टिफिकेट तँ कोनो नहि अछि, मुदा अपने विद्वान् लोक छी । पहिने हमर परीक्षा लऽ लेल जाय ।'

जज साहेब आर प्रभावित भेलथिन । एक बेर नीक जकाँ ओकरा ऊपरसँ नीचाँ धरि देखलथिन आ पुछलथिन–'दू टा विद्यार्थी अछि, अठमा आ छठाक । तकर अतिरिक्त एक टा आरो छोट नेना अछि । एखन स्कूल जायब शुरू नहि भेल छैक । तीनू अहीँक संरक्षणमे रहत । की लेब अहाँ ?'

आशान्वित होइत बाजल–'माथपर छाहरि लेल एक टा आश्रय आ दू संध्या भोजनक अतिरिक्त अपनेकेँ जे इच्छा हो, सैह दऽ देब ।'

'नाम की अछि ?'- जज साहेब दोसर प्रश्न कयलथिन ।

'रवि ।'–छोटसन उत्तरसँ जज साहेब संतुष्ट भऽ गेलथिन ।

रविक माँथपर छाहरि भेटि गेलैक–जज साहेबक सरबेण्ट्स क्वार्टर । दुनू संध्या भोजनोक ब्योँत भऽ गेलैक । एक बेर फेर साहुजी ओकर प्राणरक्षा कयने छलैक ।

विद्यार्थी दुनू नीक छलैक–तरुण आ अरुण । बुद्धि तीक्ष्ण रहैक दुनूक ।

खाली खेलौड़िया बेसी । जल्दिए रितिया गेलैक रविक संग । तेसर नेना चारिए वर्षक छलैक–खूब सुन्दर आ गोल-मटोल । रविकेँ नीक लगैक ओकरो पढ़बैत आ कोरामे लैत ।

मुदा, ओहू ठाम टिकि नहि सकल बेसी दिन रवि । जज साहेबक स्त्रीक कुदृष्टि पड़ि गेलनि । अधिक काल चीज-वस्तु लाबऽ पठबऽ लगलथिन रविकेँ–तरकारीसँ लऽ लिपिस्टिक धरि । अरुण-तरुण टोकबो करनि तँ डाँटि लेथिन– 'बैसले तँ रहैत छथुन तोहर मास्टर साहेब ! खाइत छथुन आ ढेकरैत बैसल रहैत छथुन । भोर-साँझ एक घण्टा पढ़ा देलथुन, बस्स ।'

रविकेँ चीज-वस्तु आनि देबऽमे कोनो आपत्ति नहि छलैक । मुदा, ओकर आनल कोनो चीज जज साहेबक कनियाँकेँ पसिन्द नहि होइत छलनि । सभमे खराबी निकालि फज्झति करैत रहैत छलथिन । जज साहेबक लेहाजे रवि चुप रहि जाइत छल ।

मुदा, एक दिन जज साहेब अपने सुनि लेलथिन आ कनियाँकेँ टोकलथिन–'एना मास्टर साहेबकेँ बेइज्जति नहि करियनु । जेहने मूर्ख अपने छी, तेहने सभकेँ बूझि लैत छिऐक आ सभकेँ एक्के लाङनिसँ लाड़ि दैत छिऐक । माँफी मङियनु मास्टर साहेबसँ ।'

माँफी मङबाक सती अट्ठाबज्जर खसा देलथिन जज साहेबक कनियाँ– 'आब तँ अइ घरमे ई मस्टरबे रहत कि हमहीँ रहब ! एकरा द्वारे बेइज्जति कयलनि हमरा, एकरे सामने मूर्ख कहलनि । जा धरि जायत नहि ई घरसँ, हम अन्न-पानि नहि छूअब ।'

आ, सत्ते अन्न-पानि त्यागि देलथिन ओ । जज साहेब हारि मानि गेलथिन । रविक हाथमे एक सय टाका दैत कहलथिन–'हमर स्थिति देखि हमरा क्षमा कऽ देब मास्टर साहेब ! अहाँ अपन घर घूरि जाउ । नीक कुल-शीलक बुझाइत छी । कोनो आवेश आ प्रतिक्रियामे जीवन नष्ट नहि करी ।'

रवि टाका घुरबैत कहलकनि–'सभ मास तँ पचास टाका देबे कयल अपने– भोजन आ आवास अलग । ऊपरसँ अपनेक असीम स्नेह । ई टाका राखू अपने । हमरा मात्र आशीष दियऽ ।'

मुदा जज साहेब नहि मानलथिन । टाका पाकिटमे राखि देलथिन । अरुण-तरुण विदा होयबा काल कानऽ लगलैक ।

रविकेँ घूरि जाय लेल कहने छलथिन जज साहेब । मुदा, ओ घूरि नहि सकल । बेर-बेर एक टा धमकी मोन पड़लैक आ मोन पड़लैक उपहास करैत आकृतिसभक बीच दुखी आ हताश बाबूक आकृति । ओकरा घूरि जयबाक साहस नहि भेलैक ।

घूरिकऽ साहुजी लग गेल । ओहो नहि छलैक । गाम गेल छलैक । एक वर्ष जज साहेबक घरमे बिता रवि फेर बेकार भऽ गेल छल । मुदा, अइ बेर स्थिति दोसर छलैक । देहपर नीक वस्त्र छलैक आ पाकिटमे दू सय टाका । एक सय बचाकऽ रखने छल आ एक सय जज साहेब देलथिन ।

पटनामे ओ असुरक्षित सेहो अनुभव करैत छल । कोनो दिन गामक कोनो लोक देखि लेतैक आ सभ टा भण्डा फूटि जयतैक । ओ आर दूर जाय चाहैत छल । एक दिन एक टा गाड़ीमे बैसि हाबड़ा पहुँचि गेल ।

स्टेशनेपर रविक माथ नाचऽ लगलैक । एतेक भीड़, एतेक लोक आ एतेक चहल-पहल ! कल्पना नहि छलैक ओकरा । विशाल भीड़क संग बाहर आबि रवि किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ गेल । लगलैक जेना एतऽ अयबाक निर्णय लऽ पैघ गलती भऽ गेलैक । किम्हर जाय, की करय, किछु फुरा नै रहल छलैक । सुनने छल जे बड़ाबाजारमे बड़ मैथिल छथि । ओ कन्हापर झोरा आ हाथमे टिनही बक्सा लेने आबू बढ़ल । एकटा ट्राममे कहुना चढ़ि गेल ।

कन्डक्टर लग अयलैक–'टिकट !'

रवि बक्सा राखि पाकिटमे हाथ देलक । हाथ आर-पार चल गेलैक । पाकिट नदारद । कन्डक्टर बिगड़ि उठलैक–'उतरो, अगले स्टॉपपर ।'

ट्राम ठाढ़ होइते ओकरा जेना क्यो धकिया देलकै ट्रामसँ । ओ बक्सा हाथमे लेने ओंघराइत-ओंघराइत बाँचल ! मूड़ी उठा देखलक– खाली ऊँच-ऊँच विशाल अट्टालिका ! नीचाँ तकलक— खाली अपार जनसमूह आ जोरसँ पड़ाइत मोटर-ट्राम— बस्स । बीच-बीचमे रिक्सा सेहो, साइकिल-रिक्सा नहि, मनुक्खकेँ घोड़ा जकाँ जोतने रिक्सा ! रवि सुनने छलैक, मुदा देखिकऽ आरो अजीब लगलैक ।

मुदा, सेसभ अधिक देखबाक मनोदशा नहि छलैक । पाकिट काटल आ संगमे एको टा पाइ नहि । महानगर कलकत्ताक अपरिचित भीड़मे ओकरा अपन स्थितिपर बेर-बेर कनबाक इच्छा भऽ रहल छलैक । पटना छोड़बाक अपन निर्णयपर क्रोध आ पश्चात्ताप भऽ रहल छलैक ।

मुदा, पटना पाछाँ छूटि गेल छलैक आ महानगरक फुटपाथपर हाथमे एक टा टिनही बक्सा आ कान्हपर झोरी लेने रवि आगू बढ़ल जा रहल छल । पियास लगलैक तँ एक टा कलमे चुरू लगा पानि पीबि लेलक । फेर आगू बढ़ल । सामने बड़का मैदान आबि गेलैक । ओ ओहीमे पैसि गेल । बीच मैदानमे पहुँचि गेल । ओतऽसँ चारू कात ठाढ़ अट्टालिका आ दौड़ैत लोक आ सवारीसभकेँ देखलकै एक बेर । थाकिकऽ चूर भऽ गेल छल । रौद तीव्र भऽ गेल छलैक । झोरासँ अखबार बाहर कयलक आ माथ तर बक्सा आ झोरा राखि मैदानमे पड़ि रहल । आँखिपर रौदसँ बचवा लेल अखबार राखि लेलक । किछु काल बाद अखबार हँटा फेर चारू कात तकलक ।

मैदानमे बहुत रास लोक आबि-जा रहल छलैक । खोमचावलासभ सामान बेचि रहल छलैक जहाँ-तहाँ । सामने एकटा ताजमहल ठाढ़ छलैक । ताजमहल नहि, विक्टोरिया-मेमोरियल । बाबू देखौने रहथिन फोटो अलबममे ।

बाबू मोन पड़लासँ हताश मोन कानऽ-कानऽ सन भऽ गेलैक । एक टा क्षणिक आवेशमे बाबूक सभटा स्पप्न खण्ड-खण्ड कऽ ओ एकटा विशाल नगरमे असहाय-निरुपाय पड़ल छल ।

ओ फेर अखबार आँखिपर राखि लेलक । निन्न भऽ गेलैक । उठल तँ साँझ भऽ गेल छलैक । चारू कात जगमग प्रकाशमे महानगरक वैभव छिड़िआयल छलैक । रवि ऊठिकऽ बैसि गेल । भूखसँ पेट कुलबुला रहल छलैक । बक्सा उठा मैदानसँ बाहर दिस विदा भेल । ग्रैण्ड मेट्रोक बत्ती चमकि रहल छलैक । सड़क पार कऽ ओतऽ जयबामे रविकेँ बड़ी काल लगलैक । लगैत छलैक जेना सभटा देहेपर चढ़ि जयतैक भीड़ आ सवारी ! ओइ भीड़मे एम्हरसँ ओम्हर आ ओम्हरसँ एम्हर बौआइत रहल ।

भीड़ कम्म होइत-होइत खतम भऽ गेलैक । रोशनियो मिझाइत-मिझाइत आधा भऽ गेलैक । आखिरी बस आ ट्राम सेहो चल गेलैक । सिनेमाक दोसर 'शो'क पसिंजर लऽ टैक्सी आ मिनीबस सभ चल गेलैक । रवि ओइ बाटसभपर तैयो ओहिना टहलैत रहल । एक ठाम एक टा हाथ-रिक्शावला पछोड़ धऽ लेलकै । म्यूजियमक सामने । बड़ी काल धरि पछोड़ धयने रहलैक–'जाबेन बाबू ? खूब भालो जीनिस !'

रविकेँ पहिने कोनो अर्थ नहि लगलैक । फेर अर्थ बूझि हँसी लगलैक । ओकरो क्यो पैसावला गहिकी बूझि सकैत छलैक एहनो हालतिमे, से सोचि ओकरा

आरो हँसी लगलैक । रिक्सावला निराश भऽ बैसि गेलै सड़कक कातमे रिक्सा लऽकऽ आ रवि आगू बढ़ि गेल । मुदा, लगलैक जेना एना रातिमे घूमब निरापद नहि छलैक । बहुत रास मौगीसभ श्रृंगार-पटार कयने सड़कपर आबि गेलि छलैक आ हाथरिक्शा आ टैक्सीसभ लग ठाढ़ि छलैक । ओ चुपचाप फेर मैदानमे पैसि गेल आ बीच मैदानमे पहुँचि बक्सा माथ तर राखि पड़ि रहल । ऊपर महानगरक आकाश छलैक आ चारू कात पसरल मैदानमे डेराओन अन्हार छलैक । ओ आँखि बन्द कऽ लेलक ।

आँखि खुजलैक तेँ चारू कात रौद पसरल छलैक । एक टा बूढ़ सन लोक एकटा काठक बक्सामे माँटिक चुक्कड़सभ आ हाथमे केतली लेने ठाढ़ छलैक–'चा खाबेन दादा !'

रवि अर्थ बूझि गेलैक आ कहलकै–'बिना पाइए पिअयबै ?'

रवि ई बूझि कहने छलैक जे ओकर बोली नहि बुझतैक चाहवला । मुदा ओ बूझि गेलै आ कहलकै–'कोनो बात ने ! पी लियऽ बिना पाइए ।'

रविकेँ आश्चर्य भेलैक । चाहक चुक्कड़ हाथमे दैत चाहवला कहलकै–'हमरो घर ओम्हरे अछि, मधुबनी लग । अहाँ कोना आबि गेलिऐक इम्हर ? रातिभरि एतहि सूतल छलिऐक ?'

सहानुभूति पाबि रविक मोन फेर कनौन भऽ उठलैक । सभ टा कहलकै चाहवलाकेँ । सभटा सुनि ओ कहलकै–'अहाँ एतहि रहू ! हम कने ई चाह बेचने अबै छी । फेर चलब हमरा संग । कोनो इन्तजाम भैए जायत । हमरासभ चारि जन एक टा कोठलीमे छिऐ ! तीन जन रिक्शा चलबै अछि ।'

रवियो ओही कोठलीमे आबि गेल– बड़ाबाजारक ओ पिजड़ानुमा कोठली । किम्हरोसँ कोनो इजोत नहि । ओही कोठलीमे रवि पाँचम प्राणी आबि गेलैक । ओकरो दिया देलकै एक टा हाथ-रिक्शा चाहवला भिखारी आ रिक्शावला महिन्दर, नागेश्वर आ चलित्तर । ओकरेसभक संग चारिम रिक्सावला रवि । आठ वर्ष धरि रिक्शा लेने दौड़ैत रहल । हकमिकऽ सुस्ता लैत छल, फेर दौड़ऽ लगैत छल । सभ वर्षमे गाम जाइत छलैक एक बेर । जयबाकाल सभ एक बेर पुछैक–'तोँ नहि जयबैं रवि गाम ? कतऽ घर छौक तोहर ?'

रवि ककरो नहि कहि सकलै । एक टा धानुख, एक टा ततमा आ दूटा दुसाध छलैक । चारू संग रहैत छल । पाँचम भेलैक रवि । बड़ मानैत छलैक रविकेँ सभ आ गाम जाइत काल पुछैत छलै–'गाम किएक ने जाइ छेँ रवि ?'

रवि कोनो उत्तर नहि दैत छलैक । मुदा वर्षमे एक बेर गाम जयबाक संग ओसभ बीचमे कहिओ काल इम्हरो-ओम्हरो जाइत छलैक । एक बेर पुछने रहैक–'तोहूँ चलबे रवि ?'

रवि संग देने रहैक । फेर एकसरो जाय लागल कहिओ काल । मासमे एकाध बेर । अभ्यास भऽ गेलैक, जेना रिक्शा चलयबाक अभ्यास भऽ गेलैक । पहिल दिन लागल रहैक जे उनटिए जयतैक । फेर लगलैक जेना सामनेसँ अबैत, पाँछासँ अबैत सभ टा ट्राम-बस ओकरेपर चढ़ि जयतैक । फेर अभ्यास भऽ गेलैक। रवि सीटपर भारी-भारी सवारी लेने बेजान दौड़ऽ लागल ।

आठ वर्षक बाद ओहो छोड़ि देलक । एक टा दोकान रहैक बड़ाबाजारमे। कहलकै ओकर मालिक–'अढ़ाइ सय टाका देबौक, छोड़ ई रिक्शा ।'

रवि बेसी कमा लैत छल, मुदा रिक्शासँ पिण्ड छुटबाक अवसर ओ छोड़ऽ नहि चाहैत छल । कपड़ाक दोकान छलैक । रवि सभ टा देखैत छलैक, कपड़ा फाड़बासँ लऽकऽ केस धरि ।

शुरूमे तीन मास बढ़ियाँ चललैक । समयपर पाइ देलकै । फेर दू-दू मासपर देबऽ लगलैक । बादमे सेहो नहि । छओ मासक बकियौता भऽ गेलैक तँ एकदिन रवि कहलकै–'एना तँ नहि काज चलत सेठजी ! हमर दरमाहा तँ देबऽ पड़त । छओ मास भऽ गेल । ई तँ उचित नहि !'

सेठजीक आँखि रङि गेलनि–'आइ तोँ हमरा उचित-अनुचित सिखा रहल छेँ ? काल्हि धरि रिक्शा घीचैत छलैँ, जानवर जकाँ । हम बाबू बना गद्दीपर बैसा देलियौ आ आइ हमरे शिक्षा दऽ रहल छेँ ?'

आ, प्राते भेने बदला लेलकै सेठजी । कैशबक्साक सभ टा पाइ बहार कऽ लेलकै आ ओकर कोटमे राखि देलकै । दोकान बन्द करऽ काल कहलकै–'हिसाब देखियौ ?'

रवि अवाक् ! कैशबक्सामे एक्को टा रुपैये नहि । पुलिस बजबा लेलकै सेठजी आ तलाशी शुरू करबा देलकै । ओकर कोटमे तीन हजारक गड्डी बहरयलैक ।

बड़ कोशिश कयलकै भिखारी, महिन्दर, नागेश्वर आ चलित्तरा, मुदा सेठ ओकरा जहल पठबाइए देलकै ।

जहलसँ छूटल तँ सोझे सेठ लग गेल आ कहलकै–'हम जहलसँ छूटि

आयल छी आ दोबारा जहल जयबामे हमरा डर नहि हैत । चोरिक इलजाम लागि चुकल अछि, खूनोक लेल आब हमरा चिन्ता नहि हैत । अखन खाली हाथ आयल छी, मुदा छओ मासक दरमाहा पन्द्रह सय यदि तुरत नहि देब, तँ चक्कुओ लऽकऽ आबि सकैत छी ।

सेठजी डेरा गेलैक आ ओकर पन्द्रह सय टाका दऽ देलकै । चलित्तर कहलकै–शुरू कऽ दे फेर रिक्शा । मुदा, रविकेँ दोबारा रिक्शा चलायब शुरू करबाक इच्छा नहि छलैक । ओ दोसरे काज शुरू कयलक । ठेलापर फलसभ लेलक आ फल आ ओकर रस बना बेचऽ लागल घूमि-घूमिकऽ । बेसी काल एसप्लानेडक मैदानेमे रहैत छलैक ओकर ठेला एक कातसँ दोसर कात । कौखन विक्टोरिया मेमोरियलक गेटपर तँ कखनो म्यूजियम लग वा लाइटहाउस सिनेमा लग । खूब बिक्री होबऽ लगलैक ।

चारि वर्ष ओहुना बीति गेलैक । तखन रविक मोन छटपटाय लगलैक । बेर-बेर दुःस्वप्न आबऽ लगलैक जे फेर बाबूसँ भेंट नहि होयतैक । ओ गाम घूरिकऽ जयबाक निर्णय लऽ लेलक ।

चौदह वर्षमे रवि बदलि गेल छल । अट्ठारह वर्षक ओ सुकुमार आकृति कठोर श्रम आ रौद-पानिमे बौआइत कठोर आ झामर भऽ गेल छलैक । केश असमयमे ठाम-ठाम पाकि गेल छलैक आ गौरवर्ण जरिकऽ ताम्रवर्ण भऽ गेल छलैक। रिक्शा-ठेला चलबैत-चलबैत सोझ देह कने आगू दिस झुकि गेल छलैक आ हाथ खुरदुर आ सक्कत भऽ गेल छलैक ।

रवि अपन बगय-बाना बदलि लेलक । साहेबी लेबास बनबा लेलक । नीक सूटकेस आ बिछौन लऽ लेलक आ सभ टा कमायल टका पाकिटमे भरि लेलक । ओ बाबूकेँ कनियो भनक नहि लागऽ देबऽ चाहैत छलनि जे ई चौदह वर्ष ओकर कोना बीतल छलैक । ठेला चलित्तरकेँ दऽ देलकै आ तेरह-चौदह वर्षक संगी ओइ कोठली आ अपन चारू मित्रसँ विदा लेलक । सभसँ बूढ़ छलैक भिखारी, ओ नेना जकाँ कानऽ लगलैक ।

नेना जकाँ कनलथिन लालोकाका, मुदा फेर सभक सामनेमे कहलथिन जे रवि बहुरुपिया अछि, धोखेबाज अछि । रामबाबू निस्संतान मुइल छलाह, हुनकर कोनो बेटा नहि छनि ।

–'हम ठीके मरि गेल रही कविता ! जीबिकऽ चौदह वर्षक बाद आबि

गेल छी– मात्र तोरे लेल, लवक लेल ! आयल तँ रही बाबूक लेल, मुदा हुनकासँ भेंट नहि भेल । मुदा, तोँ दुनू गोटे भेटि गेलेँ । आर क्यो देअय वा नहि देअय, बाबू अबस्स आशीर्वाद देताह हमर साहस लेल, तोरा आ लवकेँ ग्रहण करबाक लेल ।'

भोर भऽ गेल छलैक । रविक कथा सुनैत-सुनैत कविता फेर कानऽ लागलि छलैक– दहो-बहो नोर ! कहबाक धुनिमे रवि नहि देखने छलैक, मुदा अपन बात समाप्त कऽ भोरक इजोतमे देखलकै जे कविता कानि रहलि छैक । ओ टोकलकै–'तोहर आँखिमे फेर नोर' ?

कविता ओइ नोरकेँ पोछलकै नहि–'एकरा बहऽ दियौक ! अहाँक कथा सुनैत-सुनैत नहि जानि कखन बहऽ लागल, हमहूँ ने बुझलिऐक । अहाँक चौदह वर्ष जतेक दुख आ कष्टमे बितल से देखि लागल जे हमर दुख तँ किछु नहि छल । गाममे रही, माय-बाप जीबै छलाह, सम्हारने रहलाह । ओ दुनू नहि रहला तँ लव बुझनुक भऽ गेल ! माय कष्ट बुझलक आ सभ टा सम्हारि लेलक । मुदा, अहाँ एतेक पैघ राजपाट, सुख आ सुविधा छोड़ि रिक्शा चलबैत रहलौँ, अइँठ-कूठ उठबैत रहलौँ, एकसर सभ टा दुख-कष्ट सहैत रहलौँ ! ओही दुखसँ नोर बहऽ लागल ।'

रवि ओकरा रोकलकै–'हमरापर घृणा नहि भेलौ कविता ? जे-से काज करैत रहल छी हम । बजारू स्त्रिगणक सम्पर्कोसँ परहेज नहि रहल हमरा, कहियो काल नशा सेहो करैत रहल छी । एहन नीच आ कापुरुषक हाथ अपनाकेँ सौँपबाक लज्जा-ग्लानि नहि भेलौक ऐक्को बेर ! सत्त-सत्त बाज कविता !

–'भेल लज्जा आ ग्लानि ! एक बेर नहि, कतेको बेर भेल । सत्त कहै छी ।' कविता कहलकै– 'ठीके लज्जा आ ग्लानि भेल अपनापर । हमरे कारण ई सभ टा दुःख आ अभाव देखलहुँ अहाँ ! हमहीँ अहाँक समस्त दुर्भाग्यक कारण बनलहुँ । तकर ग्लानि तँ जीवन पर्यन्त रहत । अहाँकेँ अपनयबामे ग्लानि केहन, गौरव रहत आ मृत्यु पर्यन्त ओ गौरव चमकत हमर सीथमे । अहाँ आशीर्वाद दियऽ हमरा । जन्म-जन्मान्तरमे अहीँकेँ स्वामी रूपमे पाबी ! आशीर्वाद दियौक लवकेँ, सभबेर हमर कोखमे जन्म लेअय ओ ।

लव तखनो सुतले छलैक । ओकरा दुनू मुग्ध भऽ निहारैत रहल ।

लालकाका साफ जबाब दऽ देलथिन–'एक कनमा अन्न नहि देबह हम तोरा । तोरा हम नहि चीन्हैत छियऽ ।'

रवि फेर एक बेर कहलकनि–'शान्त भऽकऽ बिचारि लिअऽ लालकाका ! आधा हिस्सा हमर अछि । मुदा से नहि माङि रहल छी हम । हमरा एक टा भनसाघर आ किछु अन्न चाही । बाँकी हिसाब बादमे कऽ लेब ।'

लालकाका उत्तेजित होइत कहलथिन–'तोरा हमरा संग कोनो हिसाब नहि छऽ । तोँ फ्रॉड छऽ, तोरा हम जहल पठबाकऽ रहबऽ । आबऽ दहक बौआकेँ, रातिए चिट्ठी लिखि देने छिऐक । ओ ओकील अछि, ओकरा सभ टा इन्तजाम बूझल छैक, तोरा सन-सन बदमाशकेँ बन्हबा देबा लेल ।'

उत्तेजनामे लालकाका आपत्तिजनक बात बाजि रहल छलथिन, मुदा अपन क्रोध दबबैत रवि कहलकनि–'ककरो बजा लियऽ लालकाका, जे हमर अछि से हमरे रहत । अनेरो एक टा नाटक हैत आ घरक बदनामी हैत । तेँ कहै छी जे फेर एक बेर सोचि लियऽ ।'

लालकाका आरो उत्तेजित होइत कहलथिन–'तोँ हमरा घरक बदनामीक बात कहि रहल छऽ ? घरक बदनामीमे बाँकी की छैक ? जाहि कोठलीमे भाइ रहैत छलाह, ताहीमे तोँ खुल्लमखुल्ला व्यभिचारक अड्डा बना लेने छऽ ।'

रवि क्रोधसँ चिकरि उठल–'बस्स करू लालकाका ! बर्दाश्तक एकटा सीमा होइत छैक । अपन पुतहु आ पोताकेँ आगू बढ़ि आशीर्वाद देबाक सत्ती अहाँ ओइ भाइक नामक दोहाइ दऽ रहल छी जकर बेटाकेँ जबर्दस्ती मृतक घोषित कऽ हुनक सम्पत्ति हथिअयबाक लालचमे अहाँ आन्हर भऽ गेल छी । हमर हिस्सा अहाँ पचा नहि सकब, तेँ कहने जाइ छी जे बिना कोनो विवादक हमर हिस्सा बाँटि दियऽ ।'

रवि ओइठामसँ हँटि गेल । लालकाका बेर-बेर अवाच्य कथा कहि ओकरा उत्तेजित कऽ रहल छलथिन आ ओ उत्तेजनामे हुनकर अपमान कऽ सकैत छलनि, जे ओ नहि चाहैत छल ।

मुदा, गामोमे नवतुरिआसभ ओकर मखौल करऽपर लागल छलैक । ओकरा देखिते एकटा छौँड़ा बजलैक–'हँटि जो बाबू ! मजनू मियाँ आबि रहल छथुन ।'

दोसर छौँड़ा बजलैक–'मुदा लैलाकेँ एतेक टा बेटा कोना भऽ गेलै भाइ ? बिआहसँ पहिने बेटा ? ई तँ सिनेमोक हीरोसभकेँ जितलक रौ ! ससपेन्स मूवी !'

तेसर ठिठिआइत कहलकै–'आब दरभंगा जयबाक नहि काज । गाममे देखि लेब सिनेमा । बुढ़िया हीरोइन आ बूढ़ हीरोक रोमान्स– हवेली मोहनपुरक रूपहले परदेपर !'

रवि लग आबि गेलैक आ छौँड़ासभकेँ कहलकै–'लैला-मजनूक गप्प बुझबाक वयस नहि भेल अछि बाउ ! स्कूल जयबाक तैयारी करू आ घर जाउ ।'

–'तकर चिन्ता छोड़ू ने अहाँ ! स्कूल किएक, कालेज जायब हमसभ' एक टा छौँड़ा उद्दण्डतापूर्वक कहलकै–'अहूँ अपन काज करू गऽ ।' फेर तीनू ठिठियाकऽ हँसलैक आ तकर बाद सभक सम्मिलित पिहकारी गामभरिमे पसरि गेलैक ।

हवेली मोहनपुरमे एकटा नव सभ्यता जन्म लऽ लेने छलैक– उद्दण्ड आ दिशाहीन नव पीढ़ी । सभ भोरे गाड़ीसँ दरभंगा जाइत छलैक कालेजक नामपर आ साँझकऽ घुरैत छलैक । पढ़ाइक नामपर सभ दिन बिना टिकट यात्रा आ शहरमे मारि-पीट आ बौअयनी । गामोमे ककरो कोनो लेहाज नहि । आब अपन बाप छोड़ि अनकर कोनो गप्प गुनब नवका पीढ़ी अपन अपमान बुझैत छलैक । ककरो क्यो टोकितो नहि छलैक । आ, अपनो बापक कोन गप्प सुनैत छलैक ओसभ ! सभक बापे डरे सुनि लैत छलथिन, जे कहैत छलनि, मानि लैत छलथिन । लंका मोहनपुरक नरेश आ शिबूक संग इहोसभ चक्कू-छूरा रखैत छल आ सदिखन ओकरे तावमे रहैत छल ।

रविकेँ किछु-किछु अंदाज गाम अबिते लागि गेल छलैक । स्कूल ओ अपने देखि आयल छल । नवका पीढ़ी दिशाहीन भऽ, एम्हर-ओम्हर बौआ गेल छलैक, रविकेँ अफसोस भेल रहैक । मुदा आइ तँ रविएपर सभ अपन रंग देखा देलकै । ओना ओ सभ भोरसँ अही ताकमे रहिते अछि । नै रवि तँ आने क्यो । कोनो अनर्गल गप्पपर ठिठियाकऽ हँसब आ तखन एक टा पैघ सन पिहकारी ।

हवेली मोहनपुरमे आब कोनो गरिमा, कोनो पैघत्वक लक्षण नहि रहि गेल छैक । ओकर गौरवशाली अतीतक ध्वस्त समाधिपर उपजल छैक एक टा लज्जास्पद सभ्यता । अपन अध:पतनक बीच एकटा अर्थहीन अकड़–'हमरालोकनि आइयो किछु कहबैत छी, दस कोसक परगना छल हमरालोकनिक ।'

रवि बहुत-किछु करऽ चाहैत छल गाममे, मुदा लोक किछु करऽ नहि देने छलैक । ओ हारिकऽ फेर गामसँ विदा भऽ गेल छल । तहिआ अपनो नहि जनैत छल जे एना कविता आ लवक संग फेर घूरि आओत आ घुरिकऽ अयलापर धीयोपूतासभ ओकर उपहास करतैक ।

ओ ओइठामसँ हँटि गेल । ओइ नवतुरियासभसँ मुँह लगौनाइ बेकार छलैक । ओइमेसँ तीन टा छौँड़ाकेँ चिन्हलकै— एकटा हरिश्चन्द्र चौधरीक पोता आ दोसर महेशबाबूक पोता । भजारकाकाक छोटका बेटाकेँ सेहो ओ चिन्हलकै । बाँकी छौँड़ासभकेँ चीन्हि नहि सकलैक ।

ओ बुधिकारकाका लग गेल । ओकरा दुखी आ हताश देखि कहलथिन – 'एना नहि रवि, यू लुक कम्प्लीटली अपसेट' (एकदम व्याकुल लागि रहल छैँ) । ई तँ एक टा पैघ संघर्षक शुरुआत छौक– जस्ट ए बीगिनिंग । डोन्ट लूज हर्ट माइ चाइल्ड ! (मोनके छोट नहि करू बाउ !)'

बुधियारकाका रविकेँ मानैत छलथिन । रवि जखन छोट छल, अपन बाड़ीक लताम आ शरीफा दैत छलथिन आ देखिते कहैत छलथिन–'इन्टेलिजेन्स, दाइ नेम इज रवि, (प्रतिभाक नाम थिक रवि) ।'

रवि लग बैसैत कहलकनि–'अपसेट नहि बुधियारकाका, दुखी भऽ गेल छी, गामक हालति देखि मोन बड़ दुखी भऽ गेल अछि । सत्ते कहू बुधियारकाका ! हमरासँ कोनो पाप भऽ रहल अछि ? अपन गलतीक प्रायश्चित्त करब पाप थिकैक ?'

बुधियारकाका कहलथिन–दोबारा ई प्रश्न किएक ? हम अपन आशीर्वाद काल्हिए दऽ आयल रहियऽ । फेर शंका किएक ?'

रवि कहलकनि–'शंका नहि बुधियारकाका, खाली मोनक सन्तोष । अहाँक मुँहसँ दोबारा सुनि फेर हमर विश्वासकेँ ताकति भेटतैक, हमर संकल्प दृढ़ हैत आ भरि गामसँ लड़ि सकब ।'

बुधियारकाका कहलथिन–'लड़ाइ नहि रवि, ई गाम दया करबाक योग्य भऽ गेल आब– एन आबजेक्ट आफ पिटी– की छल आ की भऽ गेल ? तोहर पुरखाक अर्जित पुण्यसँ बसल ई गाम । श्रीकान्तकाका धरि गामक हालते दोसर छलैक– द गेन्ज्योर एण्ड डिगनिटी । भरि गाममे हुनकर धाक छलनि । एहन नहि छलैक जे ओइ दिनमे क्यो अधलाह लोक नहि छल, कोनो खराब काज नहि होइत छलैक गाममे । अपन भाइये तँ छलथिन नामीकाका आ गोवर्धनकाका– सेलफिस एण्ड डिबौच । भरि गाम जनैत छलैक जे दुनू स्वार्थी आ डड़ाँडोरिक ढील छलाह । बहुए घर चलबैत छलथिन । बेटा महेश आरो आगू बढ़ि गेलथिन नामीकाकाक–वर्दी सन आफ वर्दी फादर, मुदा जाधरि श्रीकान्तकाका जीवैत रहलाह, सभकेँ डर होइत छलैक । हुनकर इच्छा गामक निर्णय छलैक आ ओइ एक व्यक्तिक इच्छामे भरि

गामक मंगलकामना आ प्रतिष्ठा निहित छलैक– इट वाज कम्पलीटली वन मैन शो रवि, ए बेनीभोलेन्ट डिकटेटरशिप ।'

रवि जिज्ञासा कलयकनि–'तखन एतेक जल्दी ई परिवर्त्तन कोना भेलैक बुधियारकाका ?'

बुधियारकाका हँसलथिन–'जल्दी नहि, आस्ते-आस्ते रवि ! श्रीकान्तकाकाक जीवनमे एकर लक्षण शुरू भऽ गेल रहैक । ओ बूझि गेल छलथिन । ओहन स्थानसँ अपने हँटि जाइत छलाह–ही कुड नोट टोलरेट एनीथिंग इनडिसेन्ट !'–जमींदारी छोट भऽ गेल रहैक–पट्टीदारसभमे बँटैत-बँटैत । कर्ज सधबऽमे मौजे बिका गेलैक । अंग्रेजी शिक्षा लेल प्रोत्साहित कयलथिन श्रीकान्तकाका–'दिस टू वाज हिज कन्ट्रीब्यूशन । रामेश्वर जज बनलाह, तोहर बाप बी.ए. पास कयलथुन आ घरेघर लोक पढ़ऽ लागल अंग्रेजी– सेहो हुनके प्रेरणा छलनि । पढ़ि-लिखि लोकक दृष्टिकोण उदार नहि भेलैक, संकीर्णता अबैत गेलैक– छोट-छोट परिवारक स्वार्थ । सभ ओहीमे बाझि गेल– हू केयर्स फॉर पास्ट ट्रेडिशन्स एण्ड इमेज आफ दऽ भिलेज ! (पुरान परम्परा आ गामक प्रतिष्ठा लेल चिन्ते ककरा छैक ?) हम तँ दिन गनि रहल छी बाउ ! एकदिन तेजकेँ कहने रहियैक–सब मूर्खनाथ । आब लगैत अछि जे वैह सभसँ बुधियार अछि, हमहीं लोकनि बकलेल छी । गामक नेता वैह अछि, इलाकाक नेता हैत, सभ ओकरा वोट देबऽ लेल कपर-फोड़ौऔलि करत । गामेमे किएक, सौंसे देशमे एहिना भऽ रहल छैक । मूर्खनाथ अछि जनता–वी, द इलेक्टोरेट ! अपन बहुमूल्य वोट चोर-चोहारकेँ दऽ फेर अपन भाग्यपर कनैत रहैत अछि– प्रत्येक पाँच वर्षपर । अपन गल्तीसँ कोनो शिक्षा नहि लैत अछि– फेर वैह नागनाथक भाइ साँपनाथ ।

रविक बात करैत-करैत बुधियारकाका दोसर गप्प पर आबि गेल छलथिन । बुधयारकाकासँ विदा लैत कहलकनि रवि–'अखन चलै छी कक्का ! फेर आयब ।'

दुर्गापूजा आबि गेलैक ।

फकीरकाका आ पण्डितकाका कहने रहथिन–'पूजाधरि रुकि जा रवि ! मिहिर आ नारायण आबि रहल छऽ । भेँट भऽ जयतह !'

तहिया हुनकर बात नहि मानि रवि गामसँ विदा भऽ गेल छल । मुदा रवि गाममे रहि गेल तँ क्यो एक्को बेर पूछऽ नहि अयलैक । पूजामे भरि गामक लोक आयल छलैक– सभ टा नौकरियाहा ।

गाम भरिक लोक धरोहि लागल छलैक मिहिर आ नारायणक घर दिस । किछु नगद आ बेसी नौकरीक प्रत्याशी । विशेष उम्मीदवारक संग महेशबाबू अपने जाइत छलाह । रवि अधिक काल देखैत छलैक ।

नारायण आ मिहिर जखन जाइतो छल दुर्गास्थान दिस, पचीस-पचास लोक संग रहैत छलैक पाछाँ-पाछाँ । जाड़ शुरू होबऽ लागल छलैक, तैयो माथपर छत्ता लगौने रहैत छलैक दुनू कातसँ लोकसभ ! रवि सेहो देखने छलैक ।

रविसँ भेंट करऽ क्यो नहि आयल छलैक । ओ पूजोस्थानमे कम्मे जाइत छल । एकदिन प्रणाम करबा लेल गेल तँ नारायण सामने पड़ि गेलैक । चीन्हिकऽ कहलकै–'सुनने छलियौ । आरो किदन सभ सुनै छियौ ।'

रवि लपकऽ जा रहल छल, मुदा अन्तिम बात सुनि थकमका गेल– 'सुकुर चीन्हि तऽ गेलैँ ! लोक तँ इहो कहने हेतौ जे कोनो बदमास बहुरुपिया अछि ।'

नारायण पैघत्वसँ हँसलैक–एकटा बलधकेल हँसी–'बताह नहितन ! अपन नेनपनक संगीकेँ चिन्हबामे धोखा हैत ! मुदा एक टा बात कहै छियौ भाइ ! ई गाम छैक, एहि ठाम गामेक कायदा-कानून चलैत छैक । तोहर उदारवादी आ प्रगतिशील दृष्टिकोण अपनयबामे एकरा समय लगतैक । फेरसँ एक बेर विचारि लितेँ, तऽ तोरे नीक होइतौ ।'

रविकेँ अइ उपदेशपर हँसी लगलैक–आब नारायण ओकरा सिखबऽ लागल छैक ! पैघ लोक भऽ गेल छैक, ओकरा उपदेश देबाक हक छैक । आब सबक छरपा देबऽ लेल खोशामद करऽबला नारायण नहि छलैक ।

–'बात उदारवादी आ संकुचित दृष्टिकोणक नहि छैक नारायण ! बात छैक सत्य आ न्यायक । एक टा स्त्री आ नेनासँ ओकर अधिकार छिनबाक साजिशक विरोधक छैक । प्राण अछैत ई लड़ाइ छोड़ऽवला नहि छी हम ।' रवि दृढ़तासँ कहलकै ।

नारायण रुष्टता आ उपेक्षासँ कहलकै— 'तोहर मामला छौक, तोँही जान । मुदा गामक लोक एहन-एहन कृत्यपर आङुर उठयबे करैत छैक, नै तँ फेर सामाजिक बंधन की रहतैक ?'

नारायण अपन पछलगुआ सभक संग चल गेलैक । रविओ घर घूरि

आयल। लव घरमे माये लग घोसिआयल छलैक । ओकरा रवि कहलकै–'एना घरमे किएक घोसिआयल छेँ ? जो पूजास्थान, खेलो सभक संग ।'

लव नहि उठलैक तैयो । रवि जिद कयलकै तँ लव कनौन भऽ बाजि उठलैक–'हम नहि जायब कतउ । सभ खौंझबैत अछि हमरा, गारि पढ़ैत अछि।'

रविक आँखि रँगि गेलैक–'चल तोँ, हमर संग चल, देखैत छिऐक जे के तोरा गारि पढ़ैत छौक ? चल, आ हमर संग !

आ, विदा होइत कहलकै–'आ तोहूँ भऽ आ कविता ! दुर्गाजीकेँ गोड़ लागि आ । एना घरमे नुकायलि नहि रह ।'

लवक संग फेर दुर्गामन्दिर पहुँचल । आरतीक बेर छलैक । मिहिर देखलकै ओकरा, मुदा अपन स्थानेपर ठाढ़ रहलैक । लग नहि अयलैक । रवियो आरती लऽकऽ घुरि आयल । गाममे ककरोसँ कोनो आशा करब व्यर्थ छलैक ।

लवकेँ कतबो कहलकै ओतहि खेलाय लेल, मुदा ओ नहि मानलकै । संगे घुरि अयलैक । कविता ओहिना कोठलीमे काजमे व्यस्त छलैक । रवि पुछलकै–'तोँ नहि गेलेँ आरती लेबऽ ?

कविता टारैत कहलकै–'लऽ लेबै काल्हि । आइ फुरसतिए नहि भेल ।

रवि जिद नहि कयलकै । कविता बाहर जाय नहि चाहैत छैक । मास दिनसँ एहिना घरेमे बन्द छैक । कोठलीसँ कने बहरायलि चोराइत आ फेर बन्द ! बौआ, लल्लू आ छोटकू सभ गाम आयल छैक । क्यो रविकेँ गोड़ लागऽ नहि आयल छैक । जहिआ कविताकेँ लऽ घुरल रहय, मनोज हँसिकऽ कहने रहैक–'घाट-घाटक पानि पीबि अन्तमे एतऽ टिकलेँ ब्रदर ! आइ पिटी योर च्वाइस (अहाँक पसिन्दरपर दया अबैत अछि) । रवि तमसाओकऽ किछु कहने नहि छलैक। मनोज ओहिना छलैक सभदिन । ओकर बातक विचार करब व्यर्थ।

मुदा, रविक हकक बारेमे सुननाइ आ विचार कयनाइ सेहो भरि गामक लोक व्यर्थे बूझि रहल छलैक । एतेक दिनसँ न्याय आ सद्भावक आशामे एक टा कोठलीमे पड़ल गाम भरिक लोकक, नेनासँ बूढ़ धरिक– कटाक्ष आ आरोप सहि रहल छल । मुदा, लगैत छैक जेना न्यायक आशा व्यर्थ छैक । ओकरा अपने कोनो उद्यम करऽ पड़तैक । कलकत्ता प्रवासमे अर्जित धन आस्ते-आस्ते समाप्त भऽ रहल छलैक । किछु दिन आर, मास-वर्ष दिन खेपि जायत । तकर बाद । सौँसे जीवन पड़ल छैक, अप्पन आ कविताक आ लवक सम्पूर्ण भविष्य छैक ।

लवकेँ पढ़बैत काल रवि सभ टा चिन्ता, सभ टा अपमान बिसरि जाइत अछि । एक बेर जे पढ़ा दैत छैक से कण्ठस्थ भऽ जाइत छैक । ने दोबारा पढ़ऽक काज, ने बेर-बेर धोखबाक काज । रविक आखिमे नोर आबि जाइत छैक । अप्पन महत्त्वाकांक्षा आ विद्यार्थी जीवन मोन पड़ैत छैक । लव विलम्बसँ पढ़ब शुरू कयने छैक, मुदा तकर कोनो चिन्ता नहि । ओ सभ टा करैतक लव, जे रवि नहि कऽ सकल । ओ सभ टा पढ़तैक, ज्ञानक ओइ ऊँचाइ धरि जयतैक लव, जतऽ रवि नहि जा सकल । रवि गर्वमिश्रित उत्साह आ प्रसन्नतासँ ओकरा पढ़बऽ लगैत छैक ।

कवितामे ने उत्साह छैक, ने प्रसन्नता । दिन भरि घरक भीतर गुमसुम घोसिआयल रहैत छैक । रवि कतबो हँसबऽ चाहैत छैक, उत्साहित करऽ चाहैत छैक, कविता ओहिना मुरझायल आ सर्द रहैत छैक । पहिल राति रवि सफल भेल छल, कविताक सर्द देह-मोनमे ऊष्मा आयल छलैक । मुदा, प्रात होइते कविता फेर ओहिना मुरझा गेलैक । दिन भरि उदास भेल सभ टा काज करैत छैक आ रातिकऽ सर्द भेल, बर्फक सिल जकाँ रविक बाँहिमे पड़लि रहैत छैक । कहियो रवि टोकि दैत छैक तँ कानऽ लगैत छैक । कनिते-कनिते राति बिता दैत छैक । रवि डरक लेल ओकरा टोकबो नहि करैत छैक । कविताक सर्द-हेमाल देह आ ठिठुरल ठोर सभ राति रवियोकेँ सर्द आ आतंकित करैत रहैत छैक ।

पूजामे ओकरा आशा छलैक जे बाहरक लोकसभ ओतैक आ ओकरा आ लालकाकाक मामिलामे पड़ि तसफीया करा देतैक । मुदा, क्यो नहि अयलैक । ओकरा बुझबामे आबि गेलैक जे गाममे महेश बाबू आ हरि बाबूक खिलाफ जल्दी क्यो मुँह नहि खोलतैक आ लालकाकाक पीठपर अइ मामलामे दुनू छलथिन । सभ ठाम एक-दोसराक विरोधी महेश बाबू आ हरिश्चन्द्र बाबू रविक हकक लड़ाइमे लालकाकाक संग छलथिन । लालकाकासँ दुनूमे ककरो स्नेह वा विशेष हेम-क्षेम नहि छलनि, मुदा रवि अपनहि दुनूकेँ दुश्मन बना लेने छल, हुनका लोकनिक प्रस्ताव नहि मानने छलनि । आइयो यदि समाद पठा दैनि दुनूमे ककरो, जे हुनकालोकनिक प्रस्ताव ओकरा स्वीकार छैक, तँ लगले सभ टा ठीक भऽ सकैत छैक । मुदा, से रविकेँ मंजूर नहि छैक । गाममे रहबाक पहिल शर्त्त– दूमे एक पार्टीमे रहू । स्वतंत्र भऽकऽ रहब तँ कत्तहु ने रहब– अनमन रवि जकाँ ।

गेनमो स्वतंत्र होबऽ चाहलक । महेश बाबूक आधिपत्यसँ स्वतंत्र । उपटि गेल । अइ गाममे पट्टी धऽकऽ रहऽ पड़ैत छैक, गोल बनाकऽ रहऽ पड़ैत छैक । कोनो मालिककेँ धऽकऽ रहू, नै तँ एकबाली मुखियाकेँ पकड़ू । बलुआही, वा

पीपरपाँती वा चौधराना धऽकऽ रहू । गाममे टिकल रहबाक एतबे शर्त छैक । स्वतंत्र भऽ जीवाक चेष्टामे एकोढ़बा बना देल जाइत छैक । उजाड़ि देल जाइत छैक गेनमा जकाँ ।

गेनमाकेँ भरि गामक लोक, ओकर अपनो टोल-पड़ोसक लोक बुड़बके बुझैत छैक । जवान छल, कड़गड़ देह छलैक । सुन्दर आ समाङवाली बहु छलैक। एहन बहुवलाकेँ मलिकान आ गिरहतक घरमे बेसी काल काज भेटैक छैक, नीक आँटी कटनीमे आ बढ़ियाँ पनपिआइ हरबाहीमे भेटैत छैक । गेनमाकेँ तँ एखन दस-पाँच वर्ष सभ ठाम बेसी मान होइतैक । मौगी बेस उठानपर छलैक । बूढ़ पुरुष आ स्त्रीकेँ, आ बिनु बहुवाली मरदकेँ कटनी-रोपनीमे छोट आँटी आ छाँटल बोनि भेटैत छैक । बताह छल गेनमा आ ओकर बहु । दुनू गेल अपने करनीसँ ।

रवियो जायत, बेसी लोक सैह बुझैत छैक । अनेरो सभसँ दुश्मनी बेसाहने अछि । लालबाबू अपन ओकील-बेटाक बलेँ ओकरा बहुरुपिया आ धोखेबाज साबित करऽमे कोनो कसरि नहि रखथिन । भरि गाम ओकरा डकैत आ नक्सलाइट बना प्रचार कऽ देने छथिन-'आँखि नै देखैत छिऐक-एकदम कठोर आ निर्मम । ककरो खून कऽ सकैत छैक कखनो ।' आ, अइ प्रचारमे सहयोग छनि महेश बाबू आ हरिश्चन्द्र चौधरीक, तेजू आ गुणाकरक । रविकेँ आश्चर्य भेलैक जखन ओ देखलकै जे पण्डितकाका आ फकीरकाका सेहो ओही गुटमे छलथिन । नारायणक गप्पसँ आरो निराश भऽ गेल रवि आ मिहिर तँ देखियोकऽ लग नहि अयलैक । खाली बुधियारकाका कहलथिन-'यू हैव माइ ब्लेसिंग्स माइ चाइल्ड !' (हमर आशीर्वाद छौ बौआ !)

रवि कतबो कहलकै, कविता एको दिन दुर्गास्थान नहि गेलैक । रविक तामसोपर ध्यान नहि देलकै । एतबे कहलकै-'अही ठामसँ गोड़ लगैत छियनि । सभटा मंगल करतीह ।'

रविक कहलापर ओकर संग लव जाइत छलैक, मुदा लगले भागि पड़ाइत छलैक वा ओकरे संग घुरि अबैत छलैक । गामक लोक आ अपन सङतुरियासँ लव डेराइत छलैक जेना ! एकदम शान्त आ गम्भीर भऽ गेल छलैक एतबे दिनमे, जेना बड़ पैघ भऽ गेल होइ । रविकेँ ओकर ओ गम्भीर आकृति आ एकान्त मोह भीतरसँ हिला दैत छलैक आ ओकर मोनसँ धधरा उठऽ लगैत छलैक । कतेक चंचल, प्रसन्न आ आत्मविश्वाससँ भरल छलैक लव । एकसर मायक भार उठयबाक साहस रखैत छलैक । आब बापक लग आबि जेना एकदम निरीह भऽ गेल छलैक । शान्त आ

गम्भीर । जतबे पुछैत छलैक रवि, ततबेक उत्तर । कोनो जिज्ञासा नहि, कोनो अतिरिक्त उत्साह नहि । ओकर आकृति देखि रविकेँ फेरसँ अपराधबोध होबऽ लगैत छलैक-नहि लाबऽ चाहैत छल कविता आ लवकेँ गाममे ।

मुदा, पड़ा गेनाइ, फेरसँ पड़ा गेनाइ कविता आ लवकेँ लऽकऽ एक टा आर निन्दनीय कार्य होइतैक, जेहन पहिल पलायन भेल छलैक । लोक बुझतैक जे एकटा परित्यक्ता आ ओकर बेटाकेँ लऽ रवि पड़ा गेल । गाम भरिकेँ सम्पूर्ण कथा सुनायब आवश्यक छलैक- कविता आ ओकर बेटाक कथा । रवि आ ओकर स्त्री-बेटाक कथा ।

रवि बेर-बेर अपनाकेँ बुझबैत अछि जे ओकर निर्णय ठीक छलैक । कविता आ लवकेँ घर आनब उचित आ न्यायसंगत छलैक । सामाजिक विरोध आ आक्रमणकेँ सहन करऽ पड़तैक, ओइपर विजय प्राप्त करऽ पड़तैक ।

मुदा, कविता संग नहि दऽ रहलि छलैक । एके टा रट मारने छैक-'लवकेँ लऽ चल जाउ । हमरा अपन हालपर छोड़ि दियऽ । जहिना चौदह वर्ष बिता लेलहुँ, शेष जीवनो बिता लेब । हमर चिन्ता जुनि करू ।'

आ, कविता लेल रविक चिन्ता बढ़ले जा रहल छैक । एना कविता टूटि जयतैक, अपनाकेँ मारि लेतैक कविता । ओ गुमसुम आ उदास रहि नित्य अपनाकेँ मारि रहलि छैक, जेना ओकर जीवाक इच्छा समाप्त भऽ गेल होइ ! ओकरामे फेरसँ जीवाक, उमंगसँ जीवाक इच्छा आ शक्ति उत्पन्न करबाक जतबे चेष्टा करैत अछि रवि, ततबे ओकर निराशो बढ़ल जाइत छैक ।

दुर्गापूजोमे बड़ निराशा भेलैक । पूजाक व्यवस्था अस्त-व्यस्त, पुजेगरी उदासीन आ दुर्गास्थानमे लागल मेलामे निस्संकोच बौआइत अबण्ड छौँड़ासभ । पिहकारी आ ठहक्का । दुर्गास्थान कलश-स्थापने दिनसँ उदास-उदास । ने नाच ने गबैया ! खाली गर्द मचबैत लाउडस्पीकर आ लाउडस्पीकरपर अपन-अपन फिल्मी ज्ञानक परिचय दैत गामक नवतुरिया ! ने कोनो लेहाज, ने कोनो शिष्टता ।

अष्टमी आ नवमीक राति नाटक देखैत काल एहि अव्यवस्था आ अशिष्टताक पराकाष्ठा देखलकै रवि । मंचक बाद ने शामियाना, ने शतरंजी । फर्दमे घासपर छीटल पोआर । ओइपर बैसल किछु बूढ़ लोक । बाबू-भैयासभ घर-घरसँ कुर्सी आ बेंच आनि कातेकात आ बीचो-बीचमे जगह दफानने । फर्दमे बैसल स्त्रिगण ! स्त्रीगण-पुरुष मिम्झर भेल । फक-फक करैत लाइटसभ आ कनिऐ टा स्टेजपर

धक्कम-धुक्की करैत लोक । नाटक देखि लाजसँ कानऽ-कानऽ सन मोन भऽ गेलैक रविकेँ । लंका मोहनपुरक बदरी मिसर एखनो दुर्गापूजामे हवेलीक नाटक देखैत छथि आ अपन गामक लोककेँ कहैत छथिन– तोँ सभ तँ नौटंकी करैत छऽ, हवेलीक परतर करबह ?'' मुदा, नाटक देखि रविकेँ लगलैक जेना नौटंकियोसँ खराब प्रथा भऽ गेल होइ गामक नाट्य संस्थाक ।

रविकेँ अपन समय मोन पड़लैक । स्टेज बनबायब श्रीकान्त चौधरीक बाद राम बाबूक जिम्मेदारी छलनि । लम्बा-चौड़ा स्टेज बनबा, घरे-घरसँ चौकी मङबा, ओकरा नीक जकाँ बैसबा दैत छलथिन । दू-दू टा शामियाना ठाढ़ होइत छलैक आ सौंसे पैघ-पैघ शतरंजी बिछाओल जाइत छलैक । कुर्सी-बेंच राखब मना छलैक– राम बाबूक आज्ञा । सभ शमियानामे बैसैत छल । ने पिहकारी, ने उद्दण्डता । नीक-नीक दृश्यपर थपड़ी पड़ैत छलैक आ नीक गीतपर जोरसँ फरमाइश होइत छलैक– 'वन्स मोर, वन्स मोर ।'

डे-लाइटसभक रोशनीमे राति दिन बनि जाइत छलैक । स्टेज-डाइरेक्टर रहैत छलथिन उतरबारि टोलक निरसू बाबू । एकदम कड़ा डाइरेक्टर । ककरो स्टेजपर टपऽ नहि दैत छलथिन । बाबा आ बाबू कहियो नाटकमे पार्ट नहि लेलथिन, मुदा रवि नेन्नेसँ पार्ट लैत छल । पैघ-पैघ भूमिका । 'कृष्ण-सुदामा'मे सुदामाक भूमिका, आ सामाजिक नाटकमे, क्रान्तिकारी नाटकमे क्रान्तिकारी नायकक भूमिका रवि करैत छल । एक बेर भेलैक तीन भाषामे नाटक । रविक भूमिका तीनू भाषामे छलैक । ओ नवम वर्गक विद्यार्थी छल, मुदा उच्चारण साफ रहैक आ स्मरणशक्ति तीव्र । 'कालिदास'मे शकुन्तलाक पहिल दृश्य भेल रहैक । रथपर सवार दुश्यन्त आ सारथि ! भगैत हरिण आ निषेध करैत ऋषिकुमार ! रवि ऋषिकुमार बनल छल– 'भो भो राजन्, आश्रम मृगोऽय न हन्तव्यो न, हन्तव्य...।' पैघ करतल-ध्वनि भेल रहैक ।

आ 'मेकवेथ'क ओइ अन्तर्द्वन्द्वात्मक दृश्यमे तँ रवि जेना आत्मविस्मृत भऽ गेल छल–

दिस हैण्ड आफ माइन विल रादर
टर्न दऽ मल्टिच्यूड्स कार्नाडाइन
मेकिंग दऽ ग्रीन वन रेड ।

आ, सात महारथी द्वारा घेरायल एकसर अर्जुनपुत्र अभिमन्युक भूमिकामे जेना रवि महाभारतक युद्धक ओइ दृश्यकेँ जीवन्त कऽ देने रहैक । वीरतापूर्ण मृत्युक वरण करैत अभिमन्युक समक्ष अधर्ममे लागल सभ महारथी श्रीहीन भऽ गेल रहथि ।

अभिमन्यु फेर घेरायल अछि । चक्रव्यूह फेर रचल छैक आ भागिकऽ पड़ायवला रवि नहि अछि । वीरतापूर्ण मृत्युक वरण कऽ सकैत अछि, मुदा पीठ नहि देखा सकैत अछि । इतिहासकेँ फेरसँ लिखऽ पड़तैक । चक्रव्यूहकेँ तोड़ऽ पड़तैक ।

बहुत रास व्यूहकेँ तोड़लक रवि !

दुर्गापूजाक बाद पंचायतक चुनाव छलैक । एकबाली चौधरी अन्तमे पैतरा बदललनि–'लोक नहि मानैत अछि, ठाढ़ तँ होबहि पड़त ।'

तेजुओकेँ लोक नहि मानलकै, ठाढ़ होबऽ पड़लैक ! गफूरगंजमे मक्खन साहु पहिनेसँ डटल छल । मुखियाक तीन उम्मेदवार । तीनिए टा उम्मेदवार सरपंचोक— हवेली मोहनपुरक हरिश्चन्द्र चौधरी, गफूरगंजक खान साहेब आ लंका मोहनपुरसँ शिबू— बलुआहीक रामोतारक पोता । चुनाव अभियान जोर पकड़लक ।

यादवजीकेँ धनुखटोलीमे पकड़लकनि रवि । माइंजन गङबाकेँ बुझा रहल छलथिन– 'ई बभनासभ सब बेर ठकि दैत छौक तोरासभकेँ । सब छोटका लोककेँ मिलिकऽ एकर सभक राजपाट छीनऽ पड़तौक । मोन रखिहेँ— मुखियामे मक्खन साहुक कोल्हु-छाप आ सरपंचमे खान साहेबक ऊँट-छाप ।'

रवि हुनका बोकिऔलक–'कथी लेल परतारै छिऐक यादवजी 'छोटका लोक'क नामपर ? ई गङबा 'छोटका लोक' भऽ सकैत अछि अहाँ–हमरा दृष्टिमे । साधनहीन अछि । मुदा, अहाँ कहियाक 'छोट लोक' ? ई मक्खन साहु जे सभसँ बड़का सेठ अछि इलाकाक, हमरा-अहाँ सभकेँ उधार-कर्ज दैत अछि, ओ कहियाक 'छोटका लोक' ? ओकर भैयारी गङबा सन गरीबक संग छैक कि छैक सेठ-साहुकारक संग ? भोट लेल भैयारी ! ओ जामाना गेलैक यादवजी ! धर्मशास्त्रीसभ धर्मक नामपर, स्वर्ग-नरकक नामपर, जाति-धर्मक नामपर शोषण कयलकै । आइ अहाँसभ नेतालोकनि शोषण कऽ रहल छिऐक कल्हुका स्वप्न देखाकऽ । ई सवर्ण आ अछोपक तर्क बेकार अछि । दुइए टा जाति अछि– शोषक आ शोषितक । मक्खन साहु आ गङबा धानुख एक जातिक कहिओ ने भऽ सकैत अछि । गङबा लेखे जेहने महेश चौधरी, एकबाली चौधरी, तेहने अहाँक नौरंगी यादव आ मक्खन साहु ।'

यादवजी बिगड़िकऽ टोलसँ पड़ा गेलथिन । जहियासँ तिवारीजीक संग धनुखटोली आ खतबेटोलीमे गङबा, प्रबोधन, ढोढ़बा आ बटेसर बकतूत कयने रहनि, तहियासँ तिवारीजी छिटकले रहैत छलाह, पंचायतक चुनावमे हुनका कोनो बेसी मतलबो नहि रहनि । मुदा, यादवजी सक्रिय रहैत छलाह ।

दोसर दिन खतबेटोलीमे भेटलथिन यादवजी । रविकेँ देखिते उठिकऽ जाय लगलथिन, मुदा रवि रोकि लेलकनि–'पड़ाइ किएक छी यादवजी ? हमहूँ एक टा मतदाता छी ।

यादवजी खिसिआइत कहलथिन–'मतदाता नहि, मतभक्षक छी अहाँ । सभठाम पाछाँ लगले रहैत छी ।'

रवि कने दृढ़तासँ कहलकनि–'लगले नहि छी, लागल रहब । परछाँही जकाँ संग लागल रहब । एक टा भोट एकर सभक नहि खसऽक चाहिऐक अइबेर। ई शोषित प्राणीसभ जकरा अहाँ छोटका लोक कहैत छिऐक, अइ बेर नहि ठकल जैत अहाँ सभसँ । अही छोटका लोकक एक टा भाइ निरपराध चोरीक इलजाममे जहलमे बन्द छैक । ओकर स्त्रीपर खून करबाक चेष्टाक मोकदमा चलि रहल छैक । अयलिऐक एक्कोबेर ओकर मदतिमे आ ओकरासभकेँ छोड़बऽ लेल ? आ ई भोट बेरमे 'छोटका लोक'क एकता मोन पड़ल अछि ?'

यादवजी तरङिकऽ कहलथिन–'अहूँ तँ भोटे बेरमे आयल छी । एतेक दर्द छल तँ अहीँ किएक ने देलिऐक जमानति ? अहीँ छोड़ा दियौक एखनो । अहूँ तँ भोटे बेरमे बौआ रहल छी । की अपने ठाढ़ हैब ?'

सभ जिद्द धऽ लेलकै–'हँ मालिक, अहीँ ठाढ़ होउ । हमरा-आर सभ अहीकेँ भोट देब । मलहटोली, खतबेटोली, धनुखटोली, दुसधटोली, चमरटोली आ गफूरगंजोकेँ भोट मिलि जायत अहाँके, अहीँ ठाढ़ होउ मालिक !'

रवि सभकेँ बुझौलकै–'ठाढ़ भेलासँ कोनो समाधान नहि हेतौक । सभ कहतौक जे अपने ठाढ़ होयबा लेल रवि एतेक सिद्धान्त बघारने छल । अइ बेर तोँ सभ बहिष्कार कर । अपन रोष आ विरोध प्रकट करबा लेल मतदानक बहिष्कार कर। तोरालोकनि क्यो वोट नहि देबहिक अइ बेर– सम्पूर्ण वहिष्कार । हम जनैत छी जे इहो ठीक उपाय नहि । मतदानमे ई तटस्थता खराब तत्त्वकेँ प्रश्रय दैत छैक। तोँ नहि देबहिक वोट, तैयो वैह असामाजिक तत्त्वसभ जीतिकऽ आबि जेतौक । मुदा, अइ बेर उपाय नहि छौक । तोरासभमे ठाढ़ होयबा लेल जा धरि कोनो साहसी

आ विचारवान लोक तैयार नै भऽ जाउ, बहिष्कारे एकमात्र उपाय छौक ।'

सभ मानि गेलैक आ चारू तरफ प्रचार भऽ गेलैक–'अइ बेर छोटका लोकसभ ककरो वोट नहि देतैक– मक्खनो साहुकेँ नहि ।'

तेजू धड़फड़ायल अयलैक रविक लग–'ई तँ खूब उपकार कयलेँ भाइ ! अही लेल भोट धरि रुकऽ कहने छलियौ हम ! ई छोटका लोक सभ भोट नहि देतै, तँ एकबाली फेर बाजी मारि लेत । ओकर ओइ पारमे ब्राह्मण-वोट अनकट्ट छैक । सभकेँ बुझा दहिक एक बेर ।'

रवि कोनो आश्वासन नहि देलकै । तेजू नेहोरा कऽ प्रलोभन देबऽ लगलैक— 'तोँ अप्पन हिस्सा ले' चिन्ता नै कर भाइ ! मजाल छनि लालकाकाक जे नहि देथुन तोहर हिस्सा ! खाली भोट खतम भऽ जाय दहिक, सभ ठीक भऽ जयतौक । अपने ठाढ़ भऽ हम करा देबौक सभ ठीक-ठाक । तोँ खाली ई 'छोटका लोक' सभक टोलकेँ ठीक राख, एको टा वोट अनका नहि खसैक ।'

रवि तैयो कोनो आश्वासन नहि दऽ सकलैक । तेजू क्रुद्ध भऽ उठलैक–'दोस्तीमे अनुरोध करै छियौ तँ ऐंठल जाइ छैँ ! गुमाने नहि रहिहैँ । तोरे भरोसे नहि ठाढ़ भेल छी हम । ओकर सभक सब वोट हमरे खसत, देखि लिअहिक तोँ । हमरो अबैत अछि घोड़किल्ली ।'

रवि कोनो जवाब नहि देलकै । एकबाली चौधरी सेहो अयलथिन–'अहाँ संग अन्याय भेल अछि, हम जनैत छी । मुदा, हम रूकल रही जे अहाँ लोकनिक, हवेलीक मर्यादाक प्रश्न अछि, अहाँलोकनि अपने फड़िया लेब । मुदा, आब चिन्ता नहि करू अहाँ । वोटक बाद लालबाबूकेँ दू मिनटमे ठीक कऽ देबनि हम । खाली ई छोटका लोकसभकेँ बुझा दियौक अहाँ । सभ टा भोट हमरेलोकनिक मारल जायत आ जीति जायत मक्खन साहु ! गफूरगंजक समर्थन ओकरा 'सोलिड' छैक ।'

रवि हुनको कोनो आश्वासन नहि देलकनि । ओ अपन निर्णयपर अडिग छल– अइ बेरक रणनीति— वहिष्कार । मतदानक वहिष्कार ।

सम्पूर्ण वहिष्कार भेलैक । भोरसँ एक बजे दिन धरि एक्को टा मतदाता धनुखटोली, मलहटोली, चमरटोली, खतबेटोली आ दुसधटोलीसँ मतदान केन्द्र दिस नहि गेलैक । घण्टे-घण्टे आबि बिलटा खबरि दैत रहलैक, गेनमा रिपोर्ट लबैत रहलैक ।

गेनमा छूटि गेल रहैक । रवि दरभंगा जा रामकरण मिसरकें कहने रहनि– 'यैह थिक अहाँक पार्टीक साम्यवाद ! एक टा गरीब बेकार जहलमे पड़ल अछि आ तिवारीजी अहाँकें झूठ-फूस खबरि दऽ जाइत छथि जे सभ टा गरिबहा अहीँक संग अछि ।'

मिसरजी एकदम बिगड़ि गेलथिन तिवारीजीपर । मुदा, ओहूसँ बेसी रुष्ट भेलनि नौरंगी यादव । ओकरो रवि जाकऽ कहि आयल रहैक–'अहाँ अइ इलाकाक प्रतिनिधि छी आ अपनाकें पछिला वर्गक प्रतिनिधि आ रक्षक सेहो कहैत छी । कहाँ गेल अहाँक ओ समर्थन ? गेनमा आ ओकर बहु जहलमे पड़ल अछि निरपराध । कतहु कोनो सुगबुगी नहि भेल ।'

नौरंगी आ रामकरण मिसर हंगामा कऽ देलकै । अखबारोमे वक्तव्य बहरयलैक । समाचारक संग गेनमा आ ओकर बहुक फोटो छपलैक । दुनूक जमानतियो भऽ गेलैक । केसोमे दम नहि रहलैक । दुनूकें रिहाइ भेटतैक, तकरे हल्ला बेसी छलैक । गेनमा गाममे काज नहि करैत छल, दरभंगामे रिक्शा चलबैत छल । पंचायत-चुनाव-वहिष्कारमे अपन टोलमे, दुसधटोलीमे आ आनो-आनो टोलमे अगुआ बनल छल गेनमा ।

मुदा, ओइ दिन अगुआ खाली बिलटे आ गेनमा नहि छलैक । दौड़ि-दौड़िकऽ माइंजन गङबा, चौकीदार ढोढ़बा आ माइंजन कल्लू सहनी सेहो रविकें समाचार दऽ जाइत छलैक– 'एको टा लोक वोट देवे वास्ते नै गेल ।'

एक बजेमे मुदा कोनो जादू भेलैक । साइकिलपर हनहनाइत तेजू मतदानकेन्द्रसँ घुरलाह आ पहिने मलहटोली आ धनुखटोली गेलाह । फेर साइकिल अही पार छोड़ि धार टपि गेलाह । खतबेटोली आ दुसधटोली गेलाह ।

आ, तेजूक टोलसँ बहराइत हाँजक हाँज लोक बूथ दिस गेलैक । पहिने मलहटोलीसँ, फेर धनुखटोलीसँ हाँजक स्त्रीगण-पुरुष आ बच्चो बूथ दिस गेलैक । तकर बाद खतबेटोली आ दुसधटोलीक लोक सेहो लंका मोहनपुरक बूथ दिस विदा भेलैक । वहिष्कारक आह्वान जेना सभ बिसरि गेलैक । कोनो जादू भेल होइ जेना ! तेजू मुसकियाइत अपन हवेली मोहनपुरक बूथपर घुरि आयल ।

धनुखटोलीसँ जाइत गङबा माइंजनकें ललकारलकै बिलटा–'की हौ माइंजन भाइ ! तोहूँ चललह ! अही दमपर हमसभ विरोध करबै अन्याय आ जुलुमके ? हरियर नोट देखिते ललचाकऽ सभ बिसरि गेलह हौ गङबा भाइ !'

गङबा कोनो उत्तर नै देलकै, जेना किछु सुननहि ने होइ । सभकें हाँजमे लेने बूथ दिस चल गेलै ।

माइंजन कल्लू सहनीकें छेकलक बिलटा–'की हौ सहनी भाइ ! एकरे खातिर सप्पत खयले छलऽ जे अइबेर चाहे जे हो जाय, ककरो वोट नहि देब ? कतना मिलल हऽ जे एकदम सब टा बिसरि गेलऽ ?'

ओहो बात नहि सुनलकै । बिलटा रवि लग दौड़ल । लंका मोहनपुरसँ गेनमा सेहो दौड़ल अयलैक ! रवि चुपचाप सभ टा सुनलक— 'सभ चल गेल मालिक ! पाँचो टोलमे यैह हमही दू गो बाँचल छी, ने तऽ सभ गेल । जे बन्हेज कयने छलिऐक से तोड़ि देलक !'

बन्हेजक संग रविक आशा सेहो टूटि गेल छलैक— गाम आ ओकर लोकक लेल किछु कऽ सकबाक आशा । किछु दिनसँ एक टा आशा पनपऽ लागल छलैक ओकर मोनमे । बिलटा आ गेनमाक खबरि ओइ आशाकें मुरझा देने छलैक ।

तेजूक आशाकें हरिश्चन्द्र चौधरी लंका मोहनपुरक बूथसँ आबि क्षीण कऽ देलथिन–'भरोसे नहि रहै जैब ! चौबे गेला छब्बे बनऽ, दुब्बे भऽकऽ अयला । सैह हैत ! पाँचे सय वोटपर कमसँ कम सरपंची तऽ भेटि जाइत छल, मुदा मुखिया-सरपंची दुनूपर दृष्टि रखलासँ दुनू गेल । मारलक एकबाली फेर पटका । जाकऽ देखि आउ लंका मोहनपुरक बूथपर ! अहाँक हरियर नोट डाँड़मे खोसने दुसधटोली, खतबेटोलीक टोलक लाइनमे ठाढ़े अछि, साँझ धरि ठाढ़े रहत । लाइनमे खाली एकबालीक गुण्डासभ ठाढ़ छैक । आँगा आ पाछाँ दुनू ! आखिरीमे दुनू टोलक बैलट आ बचलाहा बैलटपर मोहर मारि खसा लेत । प्रेजाइडिंग आफिसर आ अहाँक एजेन्ट डरे सुटकल छथि । हमरा तऽ एकबाली साफ कहलक- 'अहाँसँ मेल कऽ की हैत देयाद ? अहाँक हवेली मोहनपुरमे मुखियाक सभ भोट गेलैक तेजूकें आ सरपंचमे सभ भोट गेलैक खान साहेबकें । तेजू अपन पैसाक बलपर नचैत छथि, तऽ पैसा लाठी आ बुद्धि तीनूक कमाल देखिए लेथु एहि बेर । पैसा लऽकऽ ओइ पारक सभ गुण्डबा मोस्तैज छैक एकबालीक वास्ते । आर तऽ आर, जकरा बले नचै छलाह महेश, से रामौतारक घरानि सेहो धोखा देलकनि । शिबू टाका लऽ बैसि गेल अछि आ गामक नामपर एकबालीकें जितबऽमे लागल अछि । लंका मोहनपुरमे सभ वोट

मुखियामे एकबालीकेँ, सरपंचमे खान साहेबकेँ । पुरान खेलाड़ी अछि खान । तेजूकेँ एके पटकामे चित्त कऽ देलकनि । सरपंचमे हवेली मोहनपुरक सभ टा वोट लऽ लेलकनि जे मुखियामे गफुरंगजक मुसलमानक वोट दिया देब ! मुदा, सभ टा वोट दिया देलकै एकबालीकेँ । मुँह तकैत रहला मक्खन साहु आ तेजू । हमरासँ रिजल्ट बूझि लियऽ–मुखिया एकबाली आ सरपंच खाँ साहेब । आब मनबै जाउ खुसी ।'

हवेली मोहनपुरमे सभ टा हलचल शान्त भऽ गेलैक । उदासी पसरि गेलैक । तेजू साइकिल दौड़ौलक– लंका मोहनपुर गेल, गफूरोगंजसँ भऽ आयल । कतहु किछु बजबाक साहस नहि भेलैक । लंका मोहनपुरमे बड़का-बड़का लाठी लेने बलुआहासँ पीपरपाँती धरिक सभ लठैत ठाढ़ छलैक आ नवतुरिआ शिबू-नरेश सभक हाथमे छलैक लम्बा-लम्बा चक्कू ! गफूरगंजमे खान साहेब बूथपर अपने मोस्तैज छलथिन आ तेजूकेँ तखनो ठकलथिन–'कोइ चिन्ता मत कीजिए ! यहाँ सभ ठीक-ठाक है— मुखियामे तेजूबाबू का दीया-छाप' ।

मुदा दीप मिझा गेल छलैक से बुझबामे कोनो भाङठ नहि रहलैक तेजूकेँ । अपन घरमे आबि माथपर हाथ दऽ बैसि रहल ।

मुदा जखन गफूरगंजमे वोटक गिनती शुरू भेलैक, तेजू खतबेटोली आ दुसधटोलीमे जाकऽ फनकऽ लागल— 'निकाल, निकाल हमर नोट बैमनमासभ ! मूड़ी पाछु बीस टाका देलियैक सभ घरकेँ, आ जाकऽ चुपचाप घुरि अयलैँ सभ क्यो ! एक टा वोट नहि खसा सकलैँ। देखियौ, कहाँ छौ आङुरमे निशान ? आ तोँ ढोढ़बा, देखियौ, तोहर निशान ? बड़का नेता बनल छलैँ, फराकसँ दस टा दसटकिया देलियौ ।'

ढोढ़बा गोङिआइत बाजल–'हे लू ! हमरा आरपर कैले बिगड़ै छी तेजूबाबू ! सभ क्यो तऽ ठाढ़े छलिऐ लाइनमे । आखिरी तक पहुँचे नहि देलक, तँ हम सब की करती ?'

तेजू ओकर घेंट धऽ लेलकै–'निकाल हमर सभ टाका ।'

पाँच टा दसटकिया फेकैत कहलकनि ढोढ़बा–'लऽलू जे बाँचल हय । जे खर्च हो गेल, से कहाँ से देब !'

मुदा टोलभरिक लोक झौहरि करऽ लगलैक–'हमरासभकेँ कहाँ देलक मूड़ी पीछू बीस टाका ? मूड़ी पीछू दसे टाका देले हय ।'

ढोढ़बा ऊठिकऽ तरमड़ाइत बाजल–'झूठ बोलै हय सभ, ताड़ी पीले हय । अहाँ जाउ तेजूबाबू– कल्ले-बल्ले जाउ इहाँ से, सभ ताड़ी पीले हय अखनी ।'

ढोढ़बा ठीके ताड़ी पीने छल, मुदा तेजू ओकर गरदनि नहि छोड़लथिन–'डर देखबै छैं हमरा ? बिना टाका ओसूलने नहि छोड़बौ । आ, तोँ सभ की तमाशा देखै छैं ? निकाल दसे-दसे टाका सभ क्यो...'

सभ ओतऽसँ सहटऽ लागल— 'से की धयले हय ! सभ तँ खर्च हो गेल । कहब तँ एकदिन बेगारीमे खटि देब ।'

तेजू गारि दैत कहलकै– 'चोरा सब नहितन ! नहि चाही तोरासभक बेगारी ! सभसँ दसटकिया बोकराकऽ छोड़बौ आ ढोढ़बाकेँ तऽ गनाकऽ सभ टाका लेबैक । चौकीदारी देखबैत अछि हमरा !'

ढोढ़बा ऊठिकऽ पड़ा गेल । तहिना पड़ायल खतबेटोलीसँ प्रबोधन । मूड़ी पीछू दस टाका ओहो मारने छलैक आ एक सय फराके । खौँझायल तेजू टोलक लोक सभपर तामस उतारलनि–'कुकुर छैँ तोँ सभ ! दया कऽ चारि टा कौर फेकि देलियौ तऽ हाथेमे हबकि लेलैँ। मुदा छोड़बौ नहि ककरो ।'

गेनमा ठाढ़ भऽ सभ टा सुनैत छल । सौंसे टोलकेँ चिचियाकऽ कहलकै–'आरो गारि आ लात-जूता मिले के चाहियौ तोराआरके । ओही लायक छेँ तोँ सभ ! रवि बाबूकेँ धोखा देलही । एकटा दसटकहीपर सभ ललचा गेलेँ ! ओहीपर अपन ईमान आ इज्जति बेचि देलैँ— आक् थू ।'

साँझमे जुलूस बहरयलैक । आगू-आगू पैघ-पैघ लाठी-भाला चमकबैत लंका मोहनपुरक लठैत आ गुण्डासभ आ खाँ साहेबक तन्दुरुस्त मोछैल पछिलगुआसभ । बीचमे एकबाली आ खाँ साहेब मालासँ लदल । पाछाँ-पाछाँ सैकड़ो लोक । कुदैत-चिचिआइत– 'एकबाली-खान जिन्दाबाद' हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई । जो हमसे टकरायेगा, चूर-चूर हो जायेगा ।'

जुलूसक आगाँ बड़का-बड़का पेट्रोमेक्स । ओइ अन्हार रातिमे सभठाम ओ जुलुस गेलैक– लंका मोहनपुरसँ गफूरगंज आ गफूरगंजसँ हवेली मोहनपुर । हवेली मोहनपुरक सभ दरबज्जा सुन्न छलैक । सभ अप्पन-अप्पन घरमे घोसिआयल छल । खाली बुधिआर काका अप्पन दरबज्जापर बैसल छलाह । लाठी-भाला चमकबैत आ कण्ठ फाड़िकऽ चिचिआइत जुलूसक लोककेँ देखि अपनहि बड़बड़ा उठलाह–'खुशी उत्साह आ उत्सव । ह्वाट फार (कथी लेल ?) फेर साँपकेँ चुनबा लेल ? अपन

हाथे अपन गरदनि कटबा लेल ? फॉर योर सूसाइड्ल टेन्डेन्सी ? (आत्महत्याक प्रवृत्ति लेल ?) फेर अगिला चुनाव धरि अपने छटपटयबैँ, शिकाइत करबैँ, ममोड़ल जयबैँ, मुदा फेर ओही खिस्साक दोहरौअलि–अगेन...एण्ड अगेन...एण्ड अगेन (फेर, फेर आ फेर) । चीन्है छियौ- नीक जकाँ चीन्है छियौ तोरासभकेँ । अनका इशारापर, अनकर बलेँ, कुदैत मूर्खसभ– शेमलेस एण्ड स्पाइनलेस क्रीचर्स (निर्लज्ज-रीढ़विहीन कीड़ा) हमरा लग नहि कूद, चीन्है छियौ तोरासभकेँ, नीक जकाँ चीन्है छियौक–सभ मूर्खनाथ, आल आफ यू ।'

गेनमा-बहु आङनमे गुमसुम बैसलि छलि ।

भोरसँ गाम आ इलाकामे हड़कम्प मचल छलैक । पुलिस-दारोगा आयल रहैक– धड़-पकड़ भेल रहैक । भोरे कुसुमदाइक आङनक मुहथरि लग एकबालीक देह पड़ल छलैक–धड़ अलग, मूड़ी अलग । शोणितक पमार बहल छलैक । हाथक टार्च ठामहि ओँघरायल रहैक ।

मुँहथरि लग लत्तीक झोँझमे बैसलि छलि गेनमा-बहु । तीन घण्टा धरि बैसलि रहलि । भोरुकबा उगक बेर होबऽ लगलैक । जीतक खुशीमे एकबाली उमकल छलैक । कुसुमदाइ उमकलि छलीह । भोर होबऽमे बेसी देरी नहि रहैक ।

गेनमा-बहु हताश होबऽ लागलि । नियारिकऽ ई राति आ स्थान चुनने छलि । जहियासँ छूटिकऽ आयलि, गुनधुनमे छलि । कखनो ठोरपर हँसी नहि पसरलैक । कखनो देहमे हाथ नहि लगबऽ देलकै गेनमाकेँ । छुबैत देरी सिकुड़ि जाइ । देहकेँ काठ कऽ लैक ।

गेनमा खिसियाकऽ एक दिन कहलकै–'एना किएक करै हइ ? हमरा छूलासे देह मैल हो जैते एकर ?'

गेनमा-बहु कानऽ लगलैक— 'आर की मैल होतैक ई देह ? ई तऽ घोकल हइ । पहिले मुखिया, फेर दारोगा ...फेर सिपाही...। ई देह तऽ सड़ि गेल हइ, एकरा काटि देबैक एकदिन ।'

गेनमा फेर डँटलकै । मुदा क्रोधसँ नहि, दुलारसँ–'बताहि भेले हैं ! तोहर देह किएक घोँकल रहतौ ? ओ तऽ साफ हउ, एकदम गंगाजल नाहित । कोनो पापी आ राक्षसके घोँकलासे गंगाजल गंदा नै होइ हइ ।'

गेनमा-बहु मुदा जिद्द धयने रहलैक–'नै छूबौ ई हमरा । असर्ध हय हमर ई देह । के के गिजलक एकरा ! हम अपने गिजबौलिऐक । इज्जति बचबे खातिर दबिला चलौले रहलिऐक आ फेर वैह इज्जति अपने बेचि देलिऐक–चुपचाप पसरि गेलिऐक मुखिया लग । फेर थानोमे । आ, नहि जानि ककर हइ अइ पेटमे ? मुखियाके कि दारोगा के वा सिपहिया के ! सुगबुग करै हय पेटमे कोनो पपिआहा कीड़ा नाहित, तऽ सौंसे देह घिरना से भरि जाइ हइ । मोन करै हय जे पेट चीरि बाहर कऽ दिऐ अखनिए अइ पापकेँ...'

गेनमा बुझौलकै–''जहलमे एकसरे बैठल-बैठल सोचि-सोचिकऽ एकर माथा खराप हो गेल हइ । ई जे हइ से ककरो ने हइ । हमर हय गे ! एकरा पाप मानिके एकरा से घिरना नहि कर । आ, जे भेलौ एकरा संग तकरा बिसरि जाउ । ओकरे से लड़े वास्ते तऽ खड़ा भेल छी हम । जे एकरा साथे हौलौ, आरो कतना साथे हो रहल हइ, फेनू ककरो साथ नै होइ । जकर हाथमे न्याय हइ, जुलुम रोकेक भार हइ, सैह जुलुम करै हइ कमजोर आ गरीबपर । ई मुखिया, ई दारोगा-पुलिस ! ई रक्षा नै कयलकै एकर । एगो राच्छस से अपन इज्जति बचा लेलकै ई, मुदा कानून आ सरकार के रखबारी करेवला जोँकसभ एकरा लूटि लेलकै । आब ई लूटि नहि चले देबै हमसभ । एकरे लड़ाइ लड़बै । मुदा ई एना बताहि जकाँ करतैक, हिम्मत हारि देतैक, तखन कोना लड़बै हम ?'

गेनमा स्नेहसँ देहपर हाथ राखऽ चाहलकै, मुदा गेनमा-बहु छिटकिकऽ पड़ा गेलैक 'नै, ई नइ छूतै हमरा । जाले अइ गन्दगीकेँ धो नहि लेबैक हम, शुद्ध नहि भऽ जयबै, ई नै छूतै हमरा ।'

गेनमा नहि छुलकै । छोड़ि देलकै ओकरा एकसर । मुदा, ओकरा कोनो अन्दाज नहि छलैक जे ओकर मोनमे की छैक । ओ गुमसुम रहैत छलैक । एकसरि बैसलि दबिलाक धारकेँ पिजबैत रहैत छलैक । गेनमा सेहो नहि देखलकै ।

देखलकै यदुआ-माय । दबिलाक धार पिजबैत भवानी । यदुआ-माय बताहि भेल गामे-गाम बौआइत छलै– भीख मडै नै छलै । जे दऽ देलकै क्यो, खा लैत छलै । लाल-लाल आँखि आ गुद्दरसँ आधा झाँपल देह । हाथ हरदम गोहारिमे ऊपर उठल आ ठोर पटपटाइत । ओइ दिन अङना आबि धार पिजबैत भवानीकेँ देखलकै–'घुरि अयलै भवानी ? गेनमा कहा हौ ?'

गेनमा-बहु आदरसँ बजौलकै–'अबैत होतै ! बैठ ने ! कहाँ चल गेल रहलेँ माय !'

यदुआ-माय हाथ उठौने नचैत रहलैक–'नै भवानी, बैठबौ नहि । जाइ छियौ ! मुदा, तोँ छोड़ दबिला भवानी....खतम कर ई अपन खेल ।'

भवानीक क्रोध, मुदा शान्त नहि भेलैक । कुसुमदाइक मुँहथरि चुनने छलैक ओ, आ हाथमे रहैक पिजाओल दबिला ! तीन घण्टा बैसले रहि गेलि । हताश होबऽ लागलि । भोर होबऽमे देरी नहि छलैक । इजोत होइते क्यो देखि लेतैक ।

देखलकै यदुआ-माय ! ओइ लत्तीक झोंझमे नुकायल भवानीकेँ नहि जानि कोना देखि लेलकै– 'दबिला हमरा दऽ दे भवानी ! तोँ घर जो ।'

बतही सासुकेँ ओतऽ देखि गेनमा-बहु डेरायलि–'सभ टा चौपट कऽ देतैक ई ।' फुसफुसाकऽ डँटलकै–'ई जाउ माय एन्ने से ! हमरा अपन काज करऽ दौ ।'

यदुआ-माय नहि मानलकै–'नै भवानी ! आइ ई काज हम करबै । तोँ भागि जो एतऽसँ ।'

तखने आङनक दरबज्जा खुजलैक । मुखिया एकबाली चौधरी बहरयलैक । दरबज्जा फेर बन्द भऽ गेलैक । मुखिया लग्घी करऽ ओही लत्तीसभक झोँझ लग बैसि गेल ।

यदुआ-माय लपकिकऽ दबिला लऽ लेलकै आ दौड़िकऽ दुहत्थी चला देलकै गरदनिपर । मूड़ी दूर जा खसलैक । आ, दबिला लेने दौड़लि यदुआ-माय चल गेलैक । दू खण्ड भेल धड़ आ मूड़ीकेँ गेनमा-बहु किछु काल निचैनसँ देखैत रहलैक आ फेर अपन टोल दिस चल गेलि ।

भोरसँ इलाकामे हड़कम्प मचल छलैक, धड़-पकड़ जारी छलैक । कनैत-कनैत कुसुमदाइक सभ टा श्रृंगार बहि गेल छलनि आ सभ दिन सुन्नर लागऽवला मुँह असर्ध लागऽ लागल छलनि । लहास हुनके मुँहथरिपर छलनि आ जेठका बेटा घरेपर छलनि । पुलिस ओकरो फँसबऽपर छलैक । चेतन नेन्ना मायक संग आखिर कतेक दिन तक बर्दाश्त करैत एक टा दोसर पुरुषकेँ ?

तेजू आ मक्खन साहु अलगे डरे त्रस्त । दुनू एकबालीसँ हारल छल आ जीतेक राति एकबाली दू खण्डी भऽ गेलाह । पुलिस बहुतरास नछोड़ देलोक बाद मक्खन साहु आ तेजूकेँ सन्देहक सूचीमे रखने छलनि । थैली पैघ कऽ देने छलथिन दुनू, मुदा डरे तैयो त्रस्त छलाह ।

अपन आङनमे गुमसुम बैसलि छलि गेनमा-बहु । गेनमा बाहरसँ घुरल छल

आ आस्तेसँ डेराइत बहुकेँ कहलकै— 'फेर एक टा खून कयलकै ई ! ओइ बेर बाँचि गेलैक, मुदा अइ बेर नहि बँचतैक । ओइ बेर इज्जतिक सवाल छलैक, अइ बेर की कहतैक ? के विश्वास करतैक एकर बातक ? ओइ बेर अपने कहने छलैक अदालतिमे जे गुणाकर आ महेश मास्टर छलाह । आब मुखियाक नाम कोना लेतैक ? के विश्वास करतैक एकर बातक ? हथकड़ी लगबे करतैक अइ बेर आ फाँसी हेतैक ।'

गेनमा-बहु निधोख कहलकै– 'तँ भऽ जाय दो फाँसी ! दू खण्डी काटि देलिऐ, बस्स, हमर काम हो गेल । आब जहल-फाँसी के हमरा डर नै हय ।'

लग आबि गेनमा देहपर हाथ देलकै । ओकरा आश्चर्य भेलैक जे आइ ओ छिटकि कऽ दूर नहि गेलैक । हाथसँ ओकर पीठ सोहरओबैत स्नेहसँ कहलकै– 'डर एकरा नै हइ, मुदा हमरा हय । एकरा लऽ जेतै, फाँसी दऽ देतै, तँ हम कोना रहबै ?'

नै जानि किम्हरसँ दबिला लेने यदुआ-माय आबि गेलै आङनमे– 'रहबेँ तोँ दुनू, चैनसँ रहबेँ आब । पापीकेँ काटि देने छिऐक अही दबिलासँ । जय भवानी ।'

गेनमा हुलसिकऽ उठल–'बैठ माय ! तू कहाँ चल गेल रहलेँ ? नै जाय देबौ आब तोरा कहीँ ।'

दबिला छीनि लेलकै । घरक भीतर जाकऽ नीक जकाँ ओकरा धोलक आ सुखा-पोछिकऽ चारमे नुकाकऽ खोँसि देलकै । तैयो मोन नहि मानलकै । फेर निकाललक । फेर धोलक ! सुखाकऽ आगिपर धिपौलक । फेर सेराकऽ चारमे खोँसि देलकै, नुकाकऽ ।

यदुआ-माय शान्त स्थिर बैसलि छलैक अपन पुरना स्थानपर । पुतहु खाय ले' देने छलैक । नव कपड़ा देने छलैक । शान्त भेल बैसलि बुढ़िया बीड़ी पीबि रहलि छलैक ।

गेनमा-बहु घरमे अयलैक । दबिलाकेँ धोऐत-पोछैत पसेना-पसेना भऽ गेल छलैक गेनमा । बहु कने लग आबि कहलकै– 'आब सुस्ता लौ कने । थाकि गेल हेतै ।'

गेनमा बहुत दिनपर बहुक एहन बोली सुनने छल । हाथ बढ़ा समेटि लेलकै ओकरा बाँहिमे । बाहिमे लेने बिछायल चपतापर बैसि गेलैक आ ओकरा सुता

देलकै । फेर ओकर उघरल पेटपर अपन कान सटा देलकै–बड़ी काल तक सटौने रहलैक । हँसिकऽ कहलकै–'मर बहिँ, ई तँ कुदकै हइ पेटमे !'

गेनमा–बहु लजाकऽ उठि बैसलैक आ बाहर जाइत कहलकै–'भारी निर्लज्ज हइ ई तँ ! फट्टक खूजल हइ आ माय बैसलि हइ अङनामे ।'

गेनमा ओही ठाम चपतापर ओँघराइत आनन्दसँ कहलकै–'आहि रौ बा ! एक सिकंड खेला देलिऐ अपन चेङनाकेँ तँ निर्लज्ज हो गेलिऐ ?'

ओइ राति कविता कानऽ लगलैक–'ई की भऽ गेल ? कोना मुँह देखयबैक लोककेँ ?'

रविकेँ तामस भेलैक–'ओना तँ बड़ मुँह देखबैत छहीक तोँ लोककेँ ?'

कविता ओहिना कनैत रहलैक–'लाजे मरि जयबाक गप्प छैक । एतेक दिनुका बाद....पन्द्रह वर्षक बाद, अइ बुढ़ारीमे ई लाजक नहि तँ कोनो गर्वक विषय थिकैक ?'

रवि डाँटि देलकै ओकरा–'यैहसभ अण्ट-शण्ट सोचि दिनानुदिन अपन स्वास्थ्य खराब कयने जा रहलि छैँ । अपना नहि, तँ पेटक जीवपर दया करहिक । अपना संग एकरो जान लेबहिक ।'

कविता कनैत-कनैत हँसलैक आ कहलकै–'जान तँ अबस्से लेत ई हमर ! बुढ़ारीमे ओहिना पेटमे आयल अछि ! मुदा, ओइ मृत्युसँ पहिलुका धिक्कार आ तिरस्कार बेसी कष्टकर हैत सहबामे ।'

रविक क्रोध बेसम्हार होबऽ लगलैक–'फेर वेह गप्प ! कथीक धिक्कार आ कथीक तिरस्कार ? अपन पतिक संतानकेँ धारण करब धिक्कारक विषय थिकैक ? एखनो धरि तोहर मनसँ ओ बात नहि गेल छौ । तोँ ककरा लग छैँ ? के छियौ हम तोहर आ लवक ? ई बात पहिने तोरे बुझबऽ पड़त हमरा ?'

कविता अनुनयसँ कहलकै–'बिगड़ू नहि ! दुख नै करू हमर बातक । हमर माथ खराब भेल जा रहल अछि । अहाँक दुख आ स्थिति आब आर अधिक सहन

नहि भऽ रहल अछि हमरासँ । अही सोचमे प्राण जैत हमर ।'

रवि ओहिना बिगड़ल रहलैक–'बस्स, भऽ जयतै सभ टा खिस्सा समाप्त । तोँ अपन प्राण दऽ देबैँ आ भरि गाम लवकेँ छातीसँ लगा लेतैक । एतबे चीन्हैत छहीक गामक लोककेँ ।'

कविता कानब बन्द कऽ देलकै । रविक केशमे अपन आङुर चलबैत कहलकै–'निर्बुद्धी छी हम ! हमर बातपर एतेक क्रोध नहि करू । फेर नै बाजब एना हम कहियो । मुदा, नहि जानि किएक, बड़ डर लगैत अछि । होइत अछि जेना बेसी बाँचब नहि हम । एकटा बात मानब हमर ?'

रवि ओकरा आर लग खीचिकऽ कहलकै–'एक टा किएक, हजार टा बात मानबौ तोहर । तोँ कह तँ पहिने ।'

कविता आस्तेसँ कहलकै–'कोनो उपाय होअय तँ लवकेँ उपनयन करा दियौ, एतेक टा भऽ गेल । अहाँ तँ करबे करबैक सभ टा । एखन कऽ देबैक तँ हमहूँ देखि लेब ।'

रवि कविताकेँ दूर ठेलि देलकै–'फेर वैह बात ! तोँ सभ टा देखबैँ । लवक उपनयन देखबहिक, ओकर बियाहो देखबहिक ! खाली दुख देबऽ लेल ई सभ बजैत रहै छैँ तोँ ।'

लग सटि मुँहपर हाथ राखि देलकै कविता– 'तामस नै करू । आब नै बाजब हम । मुदा, उपनयन कहुना भऽ जाइक ।'

प्रातेसँ रवि चेष्टामे लागि गेल । गाममे ककरोसँ आशा नहि छलैक । तैयो चर्चा कयलक बुधियारकाका लग । ओ उत्साहित कयलथिन, मुदा रवि जनैत छल जे हुनकर घरक लोक रविक संग नहि देतैक । रवि दरभंगा गेल मोहन भाइ लग । ओतऽ ओकरा आशा छलैक ।

रविकेँ देखि मोहन भाइक मुँह लटकि गेलनि, जेना हजार मोन पानि पड़ि गेल होइनि देहपर । रवि गोड़ लगलकनि तँ हड़बड़ाइत पुछलथिन–'कोम्हर अयलऽ रवि ?'

रवि अपन उद्देश्य कहलकनि आ अनुरोध कयलनि–'अहाँ आ भौजी चलिकऽ आशीर्वाद दिऐक तँ सभटा काज भऽ सकैत अछि । गामक हमरा चिन्ता नहि अछि । टाको-पैसा लेल हमरा चिन्ता नहि अछि । मुदा, कविता रोगाहि

आ एकसरि सभटा नहि कऽ सकति ! अहाँ आ भौजी चलि यदि आशीर्वाद दितिऐक लवकें ।'

मोहन भाइ चुप्पे रहलथिन । बड़ी काल बाद कहलथिन–'बात तोरा साफ-साफ कहि दियऽ ताहीमे नीक हैत दुनू गोटेकें । एना दोसरक स्त्री आ बेटाकें तों जबर्दस्ती अपन घर रखने छऽ आ आइ हमरा सेहो ओइमे चलबा लेल कहैत छऽ ? ई कहऽसँ पहिने तोरा सोचऽ चाहैत छलऽ । हमरा चारि टा बेटी अछि, समाजमे रहबाक अछि हमरा । तोहर भौजी जहिया सुनलथुन, तहिएसँ अवाक् छथुन । अवाक् तँ हमरालोकनि ओहू दिन भेल रही जहिया विक्रम तोहर चालि-चलन दऽ कहलनि । मामा हमरालोकनिकें बसौलनि आ तों एना अपने घरमे, विक्रमक स्त्रीपर कुदृष्टि देलहुन । अविश्वास भेल छल । मुदा, तखन तों दोसर काण्ड कयलह । खुल्लम-खुल्ला परित्यक्ता स्त्रीकें ओकर बेटाक संग अपन घर बसा लेलह । लाजे मरि गेलहुँ हमरालोकनि । राम मामाक बेटाक एहन कृत्य ! नीक भेलनि जे ओ नहि देखलनि ईसभ ! आ, तों हमरा गाम चलि ओही स्त्रीक बेटाक उपनयनमे सम्मिलित होयबाक निमंत्रण दऽ रहल छऽ ? तोरामे लज्जा-संकोच नामक कोनो चीज बाँचल नहि छऽ ?'

रवि विदा होइत कहलकनि–'ठीके नहि बाँचल अछि मोहन भाइ ! नै तँ आजुक अहाँक आचरणपर लाजे मरि जैतहुँ हम । अहाँसँ बड़ आशा रहनि बाबूकें । बड़ खर्च आ आशासँ अहाँकें ओकालति पढ़ौने छलाह । अहाँ दुनू भाइकें बसौने छलाह । बड़ आशा रहनि अहाँ दुनू भाइक, खासकऽ अहाँक चरित्रपर बाबूकें । की बनौलनि अहाँकें ओ एतेक यत्नसँ ? यैह एक टा झूठ-सत्तक मोकदमा लड़ऽवला स्वार्थी ओकील, जे बिना पूरा बात बुझने फैसलापर आबि जाइत अछि ? अहाँसँ एकटा बात कहबा लेल आयल रही, मुदा से आब बेकार अछि । अहाँक परिचय भेटि गेल । अपन स्त्रीक कहलापर एकदिन अहाँक छोट भाइ अपन परिचय देने छलाह आ आइ अहूँ अपन परिचय दऽ देलहुँ । हमरा एतबे दुःख रहत जे एकदिन हम अहाँ दुनूकें श्रद्धा कयने छलहुँ । पश्चात्ताप रहत जे ओहू स्त्रीकें श्रद्धा करैत छलियनि जनिकर मोनमे जहर छलनि आ शरीरमे खाली वासना ।'

मोहन भाइ बिगड़ि उठलथिन–'तों हमरालोकरिकें गारि पढ़िकऽ जा रहल छऽ रवि ?'

रवि ओइसँ दुन्ना कोधसँ कहलकनि–'अहाँलोकनि हमर सम्बन्धी छी, सैह आब एक टा गारि थिक हमरा लेल । लालकाका, विक्रमभाइ आ आब अहूँ । सभ

सम्बन्धसँ मुक्त भऽ गेल छी, हम आब एकसर छी– बन्धु-बान्धव रहित ।'

गाम घूरिकऽ नव समस्या सामने आबि गेलैक । सभ टा सामान घरक बाहर फेकल छलैक आ कविता आ लव ओकरा ओगरने बैसल छलैक । कोठलीमे ताला लगा ओकर आगूमे लालकाका बैसल छलथिन । रविकें देखिते गरजऽ लगलथिन– 'हँटाबऽ ई पापक मोटरी-चोटरी हमर आङनसँ । एतेक दिन बर्दाश्त कऽ गेलहुँ हम । आब ई उपनयनक गप्प ! सेहो हमर आङनमे ! प्राण दऽ देब हम, मुदा ई नहि होबऽ देबऽ अप्पन आङनमे । लऽ जा अप्पन असला-खसला आ ढीढ़वाली रखैल मौगीकें.....'

'लालकाका !' –ततेक जोरसँ गरजल रवि जेना ठनका खसल होइ । सौंसे गाममे ओकर ओ गर्जना प्रतिध्वनित भेलैक । लालकाका डरे सिटपिटा गेलथिन । मदतिक लेल चारू बेटा– मनोज, लल्लू, बौआ आ छोटकू लग आबि गेलनि । लालकाकी सेहो आबि गेलथिन ।

कविता हाथ धऽ लेलकै । क्रोधसँ सौंसे देह थरथर काँपि रहल छलैक रविक । कविता ओकरा घीचैत कहलकै–'जाय दिऔ ! चलू अइ ठामसँ ।'

कविता नहिओ पकड़ितैक तैयो ओकर हाथ नहि उठितैक लालकाकापर । रवि बूझि गेल छल । सभ टा क्रोधक बादो लालकाकापर आक्रमण करब ओकरा बुते सम्भव नहि छलैक । ओ क्रोधे थरथराकऽ रहि गेल छल । नहि तँ एहन बातपर नरेटी धऽ लितैक बजनिहारक ।

लालकाका मुदा डेरा गेल छलथिन । ओ अही विश्वासक संग दरबज्जा बन्द कऽ बैसल छलथिन जे रवि हमरा ठेलिकऽ घर नहि जायत किन्हुँ । मुदा ओकर क्रोध देखि ओ भीतरे-भीतर डेरा गेल छलथिन ।

कविता हाथ घीचि लेने छलैक– जाय दियौ । चलू अइ ठामसँ ।'

ओ जीप सरसराइत कवितेक घर लग ठाढ़ भेल रहैक ।

रवि अपन आङनसँ कविताक घर चल आयल छल । सभ टा बाहर फेकल सामान बेरा-बेरी लवक संग उठा अनने छल । एतेक दिनसँ बन्द घरकें

कविता झाड़ि-पोछि लेने छलैक । रविक मोन तखनो तामसे घोरे छलैक । गुमगुम क्रोधमे जरैत बैसल छल । कविता कहलकै–'चलू, नीके भेल । लालकाका अहाँक एक तरहे उपकारे कयलनि । सासुरमे रहबाक सऽख पुरा देलनि । भरि जनम उपराग दितहुँ जे सासुरमे एक्को दिन मुँह नहि अइँठौलहुँ ।'

रविकें हँसी लागि गेलैक । मुदा, तखने बगलक घरसँ क्यो गरजि उठलैक— 'आब ई छिनरपनक नाटक हमरालोकनिक घरमे शुरू हैत ! आगि लगा देबैक घरमे हम ! रण्डी-वेश्या लेल जगह नहि छैक अइ टोलमे ।'

रवि अकचकाइत पुछलकै–'ई के ?'

कविता एक टा करुण हँसी हँसिकऽ कहलकै–'हमरे पितिऔत छथि मुन्नू। बहिनक सभ टा जथा हड़पने बैसल छथि आ आब सम्मानो कऽ रहल छथि ओकर । मुदा अहाँ अनठाउ हिनकर बात । ई तऽ सभ दिन एहिना छथि ।'

खाली मुन्नुए नहि, भरि गाम ओहिना छलैक । उद्योग कऽ देलकै रवि । मुदा क्यो नहि अयलैक । एकसर रवि, कविता आ बरुआ ।

गेनमा आ बिलटा अयलैक–'जे काज हो, बोलि दू मालिक, सभ हो जायत । कोनो फिकिर करेके काम नहि हय ।'

दुनू एक टा चार ठाढ़ कऽ बाहर दिससँ ओसारा बना देलकै । गेनमा-बहु आ यदुआ-माय अयलैक । सौँसे आङन साफ कऽ नीपि देलकै । मड़बा ले' माटि आनि ऊँच चबुतरा बना देलकै गङबा, खढ़-बाँस आबि गेलैक । मुदा गामक कोनो लोक नहि अयलैक । माटि-माङर, कुमरम आ उपनयन । गनले दिन रहि गेल छलैक । गामक कोनो स्त्रीगण-पुरुष एको बेर हुलकी देबऽ नहि अयलैक ।

बिलटा कहलकै ओइ दिन–'कोनो परवाहि नै मालिक ! हमरा आर छी । टोलाक सभ लोक मदति वास्ते आबै चाहै य । ओकरा सभकें लाज होइ हइ । माइंजन गङबाकें सभसँ वेशी लाज हइ । टाका वास्ते बिका गेलैक ।'

गेनमो कहलकै— चौकीदारका आ हमर भाइ प्रबोधनो लजायल हइ । ओकरो सभकें बोला लू मालिक ! माँफी दऽ दिऔ ओकरा सभकें ।'

रवि नहि मानलकै–'नै गेनमा, ओकरासभकें हमरासँ माँफी माङक कोनो काज नहि छैक । हमरा कोनो धोखा नहि देने अछि ओसभ । ओसभ धोखा देने अछि अपनाकें । रुपैयापर भोट खाली वैहसभ नहि बेचने अछि, भरि देशमे एकर

खरीद-बिक्री होइ छैक, लाठीक जोरपर छीना-झपटी सेहो होइत छैक । अइमे कोनो नव बात नहि छैक । दुनियाँमे सभ वस्तु बिकाइ छैक । ओकरा खरीदल जा सकैत छैक । चाहे ओ वोट होइ, इज्जति होइ, पसेना होइ वा देशक भविष्य । पैसावला लोक सभ दिन अही सिद्धान्तपर काज करैत छैक जे दाम दऽ ओ सभ चीज खरीदल जा सकैत अछि । एकरे तोड़बाक छल । अइ विश्वासकें, अइ पद्धतिकें जे प्रत्येक वस्तु बिकाउ नहि होइत छैक । गेनमा-बहु एकर आशा जगौने छलि, तोँ जगौने छलें, बिलटा आ माइंजन जगौने छल । मुदा पंचायतक चुनावक बाद हमरा बुझबामे आबि गेल जे ई सिद्धांत, ई पद्धति अखन नहि हँटतैक । पैसावला एहिना खरीदत वोट, इज्जति आ मनुक्ख । लाठीवला एहिना जीतत वोट आ सम्मान । शोषकक नव-नव रूप अबैत रहतैक आ कमजोर लोक पिसाइत रहत । किएक तऽ ओ बिकायत... ओकर दाम लगतैक । कहियो एकजुट भऽ अन्यायक विरोध नहि कऽ सकत । साधनहीनक बल थिकैक ओकर एकता, मुदा से हमरा भ्रम भेल छल । तोरालोकनि निर्धन अइ लेल नै छैँ जे भूमिहीन छैँ । तोहर इज्जति अइ लेल नै लेल जाइ छौ, जे अभाव छौक । तोँ सभ बिकाउ छैँ... तोहर बोली लगै छौक । तोँसभ बिकाउ छैँ... तोरा लोक कीनि लैत छौक ।'

बिलटा आ गेनमा किछु बुझलकै आ किछु नहि बुझलकै । मुदा, एतबा बुझि गेलैक जे रविक तामस अखन धरि शान्त नहि भेल छैक । ओकर टोलक आन लोक सभक मदति नहि लेतैक ओ । बिलटा आ गेनमा मुदा सभ टा सम्हारने गेलैक ।

ओइ दिन ओ जीप सरसराइत कविताक दरबज्जापर ठाढ़ भऽ गेलैक । बारह बजैत छलैक–फरवरी मास । रौद कटाह नहि भेल छलैक । लोकसभ अपन-अपन दरबज्जापर रौदमे पड़ल छल । जीपक घड़घड़ाहटि सूनि उठि बैसल । रवि आङनसँ बाहर दरबज्जापर आयल– एक टा सुन्दर आ बलिष्ठ युवक जीपसँ उतरि लग अयलैक–'अपने हमरा नहि चीन्हब... हमर नाम कवीन्द्र अछि... हरिबाबूक सार ।'

रवि प्रसन्नतासँ कहलकै– 'नीक जकाँ चीन्हि गेलहुँ हम । दर्शन नहि भेल छल अपनेक, मुदा अपनेक प्रति कृतज्ञतासँ नित्य नतमस्तक होइत छी । सत्ते बड़ उपकार कयने छी अपने हमरापर ।'

कवीन्द्र रोकैत कहलथिन–'ई उपकारक हिसाब-किताब रहऽ दियऽ । केहन उपकार कयने छी से हमरा बूझल अछि । हमर बहिन लिखने छलीह हमरा। ओ एखनो रुष्ट छथिन कवितापर । हमरा पत्र आनन्द लैत लिखने छलीह जे केहन

विपत्तिमे पड़ल छी अपनेलोकनि । पत्र पाबि रहल नहि गेल । दौड़ले आयल छी । अपने कोनो चिन्ता नहि करू । एखने हम सौँसे गामकेँ घूमि-घूमि कहि दैत छियनि जे कविता ककर स्त्री थिकीह ।'

कवीन्द्र जीप छोड़ि आगू बढ़लाह । रवि रोकलकनि-'कने पानि पीबि लितहुँ पहिने ।'

कवीन्द्र नहि मानलथिन-'एखन नहि, घूरिकऽ आबऽ दियऽ पहिने । एतेक पवित्र यज्ञ ठनने छी अपने आ गामक लोकक एहन बहिष्कार ! एकर इन्तजाम करऽ दियऽ पहिने ।'

साँझखन कवीन्द्र उदास घुरि अयलथिन । आकृति गम्भीर छलनि । रवि हँसी कयलकनि-'हारि गेलहुँ ?'

गम्भीर आकृतिपर हँसी पसरि गेलनि-'एतेक जल्दी हारि मानऽवला लोक नहि छी हम ।' सभकेँ हरदा बजाकऽ छोड़बनि । मुदा विचित्र अछि अहूँक गाम ! कतबो कहलिऐक-क्यो ध्यान नहि देलक ! आजुक युगमे एकटा स्त्रीक जीवनकेँ सीथमे सेन्नुर भरि जयबाक नामपर नष्ट कऽ देबा लेल उद्यत छथि । हम कहिकऽ थाकि गेलियनि जे चलू सभ क्यो ! अहीँ लोकनिक सामने हम सीथमे सेन्नुर देने छलियनि । अहीँलोकनिक सामने मेटाइओ दैत छियनि । रविबाबू फेर सेन्नुर दऽ देथिन । क्यो टस्ससँ मस्स नहि भेल । मनुक्खसँ उपर नहि होइत छैक कोनो रीति-रेवाज। मनुक्खक रक्षा लेल ओकरा बदललो जा सकैत छैक, से नहि मानैत छथि अहाँक गामक लोक । मुदा चिन्ता नहि करब अपने । हम काल्हि फेर आयब ।'

कोनो आग्रह नहि सुनलथिन कवीन्द्र भोजन-पनपिआइक ! जीप दौड़ैने चल गेलथिन आ दोसर दिन फेर अयलथिन- दू टा जीप । एक जीपमे सामान आ दोसरमे लोकसभ- हुनकर तीनू भाउजि आ दू टा काकी । सभक संग अपने आङनक मुँहथरि धरि अयलथिन कवीन्द्र आ जोरसँ कविताकेँ सुनबैत कहलथिन-'ककरोसँ कोनो संकोच नहि करब अहाँ । लाजसँ छोट हैबाक कोनो प्रयोजन नहि । सभ जनैत छथि हमर घरमे अहाँक गप्प । आ, ई सभ छोट नहि छथि- हमर सम्बन्धी छथि । अहाँ सम्मानपूर्वक सामने अबियनु सभक ।'

कविता की लऽ सामने अबितैक कवीन्द्रक ! एकदिन ओ कहने छलथिन- 'एक बेर जे ई मुँह देखि लेत, जीवन पर्यन्त नहि बिसरत ।' आइ देखिओकऽ चिन्हथिन ओइ मुँहकेँ ? लवकेँ आगू बढ़बैत कहलकै कविता— 'जा, गोड़ लगहुन ।'

लव गोड़ लगलकै आ कवीन्द्र ओकरा उठा छातीसँ सटा लेलथिन ।

कविताक आङनमे गीत-नाद भेलैक, सभ टा बीधो-व्यवहार भेलैक आ भरि गामक लोक दूरसँ देखैत रहलैक । रातिमक बाद विदा भेलथिन कवीन्द्र ! सभ जीपर बैसि गेलनि । रवि विदा करबा लेल ठाढ़ छलनि । लव दौड़ल अयलनि-'माय बजबै अछि अहाँकेँ ।'

कवीन्द्र फेर आङनक मुँहथरि लग गेला । एकदिन अही मुँहथरिपर चुमाओन भेल रहनि । कविता अही आङनमे कनगुरिया लागल रहनि । आइ विदा होइत काल कवीन्द्रकेँ सभ टा मोन पड़लनि । भरिसक ई अन्तिम छलनि । फेर देखादेखी वा भेँट-घाँटक आशा नहि छलनि ।

कविता लग आबि जमीन छूबि गोड़ लगलकै— 'एतेक दया कयलहुँ अइ अभागलिपर, तँ एक टा अन्याय किएक भेल ?'

कवीन्द्र अकचकाकऽ तकलथिन !

कविता कहलकै-'सभकेँ अनलियनि तँ अपन स्त्रीकेँ किएक छोड़ि देलियनि ? एक बेर हुनको देखि लितियनि !'

कवीन्द्र हँसलाह-'से तँ मुदा संभव नहि छल ।'

कविता कने अभिमानसँ कहलकै-'कोनो अपमान नहि होइतनि हमर घरमे । अपन माथपर रखितियनि हम !'

कवीन्द्र तैयो हँसिते रहलथिन-'से मुदा अहाँ रखितियनि कोना ? विवाह तँ भेल छल हमर, मुदा स्त्री कहाँ भेटलीह ?'

कविता आँखि उठा देखलकै । कवीन्द्रक ठोरपर वैह हँसी छलनि चतुर्थी-रातिवला । कविताक आँखिसँ भटभट नोर खसऽ लगलैक । खसिते रहलैक ।

जीप चल गेलैक । रवि घूरिकऽ आङनक मुहथरिपर अयलाह । कविता ओहिना ठाढ़ि छलैक- आँखिसँ भटभट खसैत नोर ।

रवि कने देह छूबि कहलकै- 'आङन चल कविता !'

कविता चौँकलैक आ चारू कात तकैत कहलकै-'ओ सभ जाइत गेलाह ?'

लवो चल गेलैक । कविता छाती पीटैत रहि गेल । रवि दौड़ैत अपस्याँत भऽ गेल । भरि-भरि राति लवक कमजोर देहकेँ अपन छातीसँ सटौने बैसल रहि गेल । मुदा लव चल गेलैक ।

नहि जानि, केहन बोखार छलैक ! कमबे नहि कयलकै । तैंतीस दिन धरि चढ़ले रहलैक बोखार । रवि लग जे बाँचल छलैक, सभटा लगा देलकै । दरभंगोसँ डाक्टर अनलकै । मुदा सभ बेकार ! ओइ दिन दुपहरियामे लव विदा भऽ गेलैक । तैँतीस दिनमे ओकर ओ स्वस्थ सुन्दर शरीर गलि गेल छलैक । मात्र कंकाल अवशिष्ट ।

कनैत-कनैत बताहि भऽ गेलैक कविता ! रविकेँ कुर्त्ता पकड़ि झिकझोरऽ लगलैक –'अहाँ खूनी छी ! अहीँ जान लेने छिऐक एकर । ओइ दिन स्टेशनपर पहुँचा देने रही एकरा जे लऽ जेयौक एतऽसँ दूर, अइ गामसँ दूर । मुदा अहाँ घुरि अयलहुँ, हमर लवकेँ खा गेलहुँ अहाँ !'

रवि जेना बहीर भऽ गेल छल ! कविताक कोनो बात जेना ओकर कानमे नहि जा रहल छलैक । ओकर कोरामे लवक मुर्दा-देह पड़ल छलैक, तकरो उतारबाक होश नहि छलैक ओकरा ! तैँतीस रातिक लगातार जागरन, दौड़धूप आ चिन्ता आ तकर बाद अइ बज्राघातसँ सुन्न भऽ गेल छल रवि । कविता बताहि जकाँ चिकरैत ओकर कुर्त्ता तीरी-तीरी कऽ रहलि छलैक— 'अहाँ खूनी छी, अहीँ जान लेने छिऐक लवक !'

रवि कविताक प्रलाप नहि सूनि रहल छलैक । ओ लवक कंकाल देह आ उनटल आँखिकेँ देखि रहल छलैक । अहीपर ओकर समस्त आशा केन्द्रित छलैक– लवे छलैक ओकर स्वप्न ! ओकरे लेल ओ सभसँ लड़ल छल । ओकर देह ओकरा कोरामे निर्जीव पड़ल छलैक । नहि जानि, कोना एहन गम्भीर भऽ गेल छलै लव ! जहियासँ स्टेशनसँ घूरिकऽ गाम अयलैक, कहिओ हँसलैक नहि खुलिकऽ । एक्केबेर एकदम चेतन आ सज्ञान भऽ गेल छलैक जेना ! रवि ओकर मुँह देखि सिहरि जाइत छल आ कहैत छलै–'तोँ एना नहि रह बाउ ! हँस-बाज, खेलो गऽ सभक संग ।'

लव कहिओ ने गेलैक ! सदिखन माय-बापक संग लागल रहैत छलैक । उपनयनोमे ओहिना गम्भीर रहलैक– ने कोनो उल्लास, ने कोनो फरमाइश ! ओहन बुझनुक आ सज्ञान लवकेँ देखि रवि सिहरि जाइत छल, ओकरा डर होइत छलैक, अपराध-बोध होइत छलैक ।

कोरामे लवक मुर्दा देह लेने बैसल रविक ओ अपराध-बोध आर बढ़ि गेल छलैक ! कविताक आरोप ओ नहि सुनलकै, मुदा तैयो लगलैक जेना सत्ते वैह हत्या कयने होइ ओइ मेधावी आ निडर बालकक । जहियासँ ओकर बाप बनि घुरलैक रवि, ओकर निडरता, ओकर हँसी हेरा गेलैक । रवि छीनि लेलकै सभ टा !

कोरा महक बोझ असह्य भऽ उठलैक–अपन संतानक मृत देहक बोझ । ओही बोझसँ धरतीमे धसि जाइत तँ नीक होइतैक । मुदा धरती निस्सन छलैक आ रवि बोझ तर जाँतल छल ।

अङनासँ गेनमा बजलै–'ले चलू मालिक आब ! साँझ हो गेल ! करेजा मजगूत करू ।'

रविकेँ होश भेलैक । लवकेँ ओहिना कोरामे उठौने आङनमे आयल । बिलटा बाँस काटि अनने छलैक । रवि धऽ देलकै चचरीपर लवक देह । आरो वस्तुक इन्तजाम कयने छलैक बिलटा–'चलू आब ।'

चारि टा कान्ह नहि पुरलैक । बिलटा, गेनमा आ रवि । तीनिए गोटे मिलि बिदा भेल ! आङनमे चिकरैत कविता रविकेँ कहैत रहलैक— 'कलेजा ठण्डा भेल अहाँक ! अही लेल अनने छलिऐक गाममे एकरा ! भेल सऽख पूर ! अपने कान्हपर अपन बेटाक लहास...!

रविक डेग आगू नहि बढ़ि रहल छलैक, जेना समस्त सृष्टिक बोझ ओकरे कान्हपर होइ ! ओकरा हँटा देलकै बिलटा–'हमही दुनू लऽ चलै छी । अहाँ छोड़ि दियौ ।'

घुरैत बेस राति भऽ गेलैक । चिता मिझा गेलाक बादो रविकेँ साहस नहि होइत छलैक आङन जयबाक । कोना देखतैक कविताक मुँह ? लवकेँ मङतैक तँ कहाँसँ अनतैक ? ई गाम अन्ततः छीनिए लेलकै ओकर सभ-किछु, ओकर लव... ओकर स्वप्न... ओकर भविष्य... !

गेनमा आ बिलटा जबर्दस्ती आङन पहुँचा घुरि गेलैक ! आङनमे अन्हार छलैक । सौँसे घरमे अन्हार छलैक । ओहि डेराओन अन्हारमे बड़ी काल ठाढ़ रहल रवि । कविता कानि नहि रहलि छलैक । कुहरि रहलि छलैक । अन्हार घरमे कविता कुहरि रहलि छलैक– अनवरत ! आ, ओकर कुहरनाइ आङनक अन्हारक संग पसरल छलैक ।

बड़ी काल बाद साहस कऽ कोठलीमे पैसल रवि–'किए कुहरै छें कविता ?'

कविता जेना कुहरब बिसरि चिचिया उठलैक–'निकल बाहर, तों किएक अयलें हमर घरमे...तों खूनी छें...'

रवि डेराकऽ बाहर पड़ा आयल । आङनेमे ठाढ़ रहल । कविताक कुहरब बढ़िते गेलैक । रातुक उत्तरार्धमे ओ कुहरब चिकरबमे बदलि गेलैक । एकबेर फेर साहस कऽ घरमे पैसल रवि–'की होइ छौ कविता ? एना चिकरै किएक छें ?'

कविता फेर चिकरब बन्द कऽ ओकरेपर गरजलैक–'निकल-निकल अइ घरसँ, तों किए अयलैं एतऽ... तों खूनी छें... हत्यारा छें ! निकलि जो हमर घरसँ...।'

रवि फेर पड़ा आयल आङन । कविता ओहिना चिकरैत-कुहरैत रहलैक । प्रमादमे बड़बड़ाइत रहलैक । आङनक अन्हारमे ठाढ़ रवि कनैत रहल । लव गेलैक आ कविता बताहि भेल छैक ।

भोरुकबामे एक टा नवजात शिशुक कानब घर-आङनमे पसरि गेलैक आ ओकरे संग दौड़ल फेर कोठलीमे गेल रवि–'कोना छें कविता ? बच्चा कोना छौ ?'

कविताक स्वर अइ बेर क्षीण आ बदलल छलैक–'भागू एतऽसँ अहाँ ! भीतर किएक अयलहुँ ?'

रवि बाहर आबि गेल । कनेकाल नेना कनलैक । फेर सभ शान्त भऽ गेलैक । कोठली ओहिना शान्त छलैक । ने कविताक चीत्कार, ने नेनाक कानब । रविकें डर होबऽ लगलैक ।

फेर साहस कऽ कोठलीमे पैसल । इजोत घरोमे पैसि गेल छलैक । नीक जकाँ कपड़ामे लपेटिकऽ एक टा नेना राखल छलैक– आ बगलमे कविता पड़लि छलैक । ओहिना लथपथ आ श्रान्त । रविकें देखि ओकर ठोरपर हँसी पसरलैक–'लव फेर घुरि आयल अछि, देखू ।'

आँखिसँ नोर टघरि गेलैक आ गरदनि एक कात लटकि गेलैक । रवि दौड़िकऽ लग आबि बैसि गेलैक । देह छुलकै– सर्द-हेमाल । नाड़ी पकड़लकै– कतहु कोनो स्पन्दन नहि । स्पन्दनयुक्त नेना हाथ-पयर फेकैत बगलमे राखल छलैक– कपड़ामे लपेटल ।

रवि कानऽ लागल । छाती फाटि गेलैक । इच्छा भेलै जे एतेक जोरसँ चिकरि कऽ कानय जे सौसें गाम जमा भऽ जाइ । मुदा, निःशब्द कोठलीमे कनैत रवि कविताक सर्द-हेमाल देहकें अपन छातीसँ साटि लेलक । कवितो छोड़ि देलकै ओकरा । पहिने लव, तखन कविता । रवि हारि गेल । सभ किछु हारि गेल । अपन हेहर प्रानपर आश्चर्य भेलैक रविकें जे कोना एखन धरि शरीरमे टिकल छलैक !

रौद पसरि गेल छलैक आङनमे । बेटाक उत्तरी गरामे छलैक आ स्त्रीक लहास कोरामे । रवि उठल । कपड़ामे झाँपल नेनाकें बामा हाथसँ उठौलक आ दहिना हाथसँ कविताक देहकें उठा कान्हपर राखि लेलक । घरसँ बाहर आयल, आङनमे । आङनसँ बाहर भेल आ गामसँ बाहर विदा भेल ।

कान्हपर मृत स्त्रीक देह आ बाँहिमे नवजात शिशुकें लेने जाइत रविकें हवेली मोहनपुरक लोक अवाक् भऽ देखलकै ।

चिता धधकि रहल छलैक ।

ओकर समीपे रवि ठाढ़ छल । कने दूरपर ओहिना कपड़ामे लपेटल नवजात शिशु पड़ल छलैक ।

बिलटा फेर आबि गेल छलैक । लकड़ी-काठी जुटौने छलैक आ रविक पाछाँमे ठाढ़ छलैक ।

चिताक आगिमे रविक सभ किछु जरि रहल छलैक । रातिए लवक देहक संग अपन स्वप्न आ आकांक्षाकें जरा गेल छल । आब कविताक देहक संग ओकर जिनगी जरि रहल छलैक । सभ किछु समाप्त भऽ गेल छलैक ।

कपड़ामे लपेटल नेना जोर-जोरसँ कानि उठलैक । रवि पाछाँ तकलक । दौड़िकऽ लग आयल आ नेनाकें समेटिकऽ कोरामे लऽ छातीमे सटा लेलकै । ओ चुप्प भऽ गेलैक ।

कविता लवकें स्टेशन पहुँचा देने रहैक– एकरा लऽ जैयौ, मनुख बना

दियौ । रवि ओकर आङुर धऽ आ कविताकेँ लऽ गाम घुरि आयल । लवकेँ छीनि लेलकै, कविताकेँ छीनि लेलकै ई गाम, मुदा जाइत काल कविता कहने छलैक– 'लव फेर घुरि आयल अछि, देखू ।'

लव सत्ते घुरि आयल छलैक । एकरा ओ लऽ जयतैक– दूर– अइ गामसँ दूर...। बहुत दूर लऽ जयतैक एकरा...कविता मनुक्ख बनाबऽ कहने छलैक लवकेँ... कविताक बात मानऽ पड़तैक– लवकेँ मनुक्ख बनबऽ पड़तैक ।

रवि फेर कानि उठल । एतेक पैघ भार दऽ कविता ओकरा एकसर छोड़ि गेलि छलै– सौँसे पृथ्वीपर एकाकी । ओकर डेगमे डेग मिलाकऽ के चलतैक ? चौदह वर्ष ओकर प्रतीक्षा कयलकै कविता, मुदा भेटि गेलाक बाद निष्ठुर भऽ छोड़ि गेलैक । लवोकेँ लऽ गेलैक...

नहि, लवकेँ फेर दऽ गेल छलैक कविता । ओकर अन्तिम उपकार । उपकारे नहि, उपहारो । ओकरा छातीसँ सटा लेने छल रवि आ ओ चुपचाप पड़ल छलैक ओकर बाँहिमे । जीवि लेबाक सम्बल ओकर बाँहिमे छलैक ।

ओ बिलटाकेँ कहलकै– 'चलै छियौ बिलट, तोँ बहुत मोन रहबेँ । एकटा निष्ठुर आ हृदयहीन बस्तीमे तोहर हृदयक विशालता आ उदारता सभ दिन मोन रहत ।'

बिलटा दौड़िकऽ लग अयलैक– 'नै मालिक, अहाँ नहि जायब । हमरा सभ अज्ञान छी, अज्ञानपर क्रोध कऽ छोड़ि नहि सकै छी अहाँ !'

रवि बुझौलकै–'क्रोध नहि बिलट, तोरा लेल कृतज्ञता आ स्नेह भरल अछि मोनमे, मुदा खबरदार ! आब ई मालिक नहि कहियहिक ककरो कहिओ । क्रांति कतहु बाहरसँ उधार नहि अबैत छैक बिलट, ओ अपन सोनितमे रहैत छैक । हम्मर काज नै छौक तोरासभकेँ...तोरासभकेँ काज छौक अपन सोनितकेँ चिन्हबाक, ओइमे सुप्त चेतनाकेँ जगयबाक ... ई तोँसभ अपने कऽ सकै छैँ बिलट... क्यो आन कहिओ ने कऽ सकतौ ।'

बिलटा नहि मानलकै–'हमरासभ बुते कुच्छो नै होत मालिक ! अज्ञानी छी, मूर्ख छी हमरासभ । हमरासभपर बिगड़ि कऽ नै जाउ मालिक...अहाँकेँ नहि जाय देब हमसभ ! देखू, पाछाँ सौसेँ गाम ठाढ़ हय ।'

रवि घूरिकऽ तकलक । श्मशानमे सौसेँ गाम ठाढ़ छलैक । उतरबारि,

पछबारि आ बिचला टोलक सभ लोक । खतबेटोली, दुसधटोली, मलहटोली आ धनुखटोलीक सभ लोक । आगूमे ठाढ़ छलथिन बुधियारकाका । सौँसे गाम जेना कबुला कयने छलैक जे स्त्री-बेटा मरतैक तऽ रविक संग देतैक सभ । रविक आँखिसँ नोर बहऽ लगलैक । बुधियारकाका लग चल अयलथिन–'कान नहि रवि...नो टियर्स । यू आर ए ब्रेव सोल्जर माइ सन (नोर नहि, तोँ एकटा बहादुर सिपाही छै) ।

मुदा, बुधियारकाका अपने कानऽ लगलथिन । सभटा बुधियारी धयले रहि गेलनि– खाली नोर– दहो-बहो ।

नोरमे रविक संकल्प नहि बहलैक ! ओ गामसँ बाहर दिस बिदा भेल...! एकटा छौँड़ा बाट छेकि ठाढ़ भऽ गेलैक–'अहाँकेँ नहि जाय देब रविकाका !'

एकटा छोट छौँड़ा ! रवि ओकर मुँह तकलकै । छौंड़ा अनुरोधपूर्वक बजलैक– 'सत्ते, रविकाका ! अहाँ नै जाउ ! हमरा सभकेँ पढ़ाओत के अहाँ बिना ?'

रवि तैयो अकचकाइत ओकर मुँह देखैत रहलैक । छौँड़ा फेर कहलकै–'हमरा नै चिन्हलौँ रविकाका ! हम, अहाँक विद्यार्थी...सुन्दरकान्त झा...लवक संगी...आब पचमामे पढ़ै छी...

रवि फेर कानि उठल । लवकेँ तीनिए वर्षमे मैट्रिक पास करयबाक योजना छलैक ओकर । केहन प्रतिभा आ आत्मविश्वास छलैक लवमे ! ओहो छोड़ि देलकै ओकरा ।

ओइ छौँड़ाक माथपर हाथ रखैत रवि भीजल स्वरमे कहलकै–'आशीर्वाद दै छी बाउ, अहाँ खूब पढ़ू...यशस्वी होउ...'

रवि आगू बढ़ल । कोरामे बच्चा रहबाक कारणेँ हाथ ऊपर नहि उठि रहल छलैक । मुदा, दुनू हाथ जोड़ि लेने छल प्रणामक मुद्रामे ।

रवि आगू नहि बढ़ि सकल बेसी । नवतुरिआ सभ पयर छानि लेलकै– 'हमरा सभकेँ क्षमा कऽ दियऽ । बड़ अपमान कयने छी हमसभ अहाँक । अहाँ पैघ छी... चरित्रवान छी अहाँ ! हमरासभकेँ बाट देखाउ... गामकेँ देखबियौक...

रवि ओकरोसभकेँ कहलकै–'अहाँसभ लेल कोनो कुभाव नहि अछि हमर मोनमे, मुदा अपन बाट सभकेँ अपनहि ताकऽ पड़ैत छैक...निर्मित करऽ पड़ैत छैक ! अहाँलोकनि अपन बाट आ कर्त्तव्य चीन्हू, सैह आशीर्वाद दैत छी ।'

रविक लेल एखन आरो आश्चर्य बाँकी छलैक । आगू ठाढ़ छलथिन लालकाका आ लालकाकी । लालकाका लग आबि गेलथिन–'घुरि चलऽ रवि ! अपन घर चलऽ । लालकाकाकेँ क्षमा कऽ दहुन ।'

लालकाकी आगू आबि हाथ पसारि देलथिन–'अइ नेनाकेँ हमर कोरामे दऽ दे रवि ! तोरा दूध पिऔने छलियऽ, मुदा हमर ममता मरि गेल छल । दूध सुखा गेल अछि हमर, मुदा अपन ममतासँ पोसि लेबैक एकरा ।'

रविक आँखिसँ नोर फेर बहऽ लगलैक–'नै लालकाका ! आब घुरबाक साहस नहि अछि । अहाँ चीन्हि लेलहुँ हमरा जे हम अहींक भातिज रवि छी, सैह बहुत ! अहाँ चिन्हलहुँ, लालकाकीक ममता फेर भेटल । आर किछु नहि चाही । जकरासभकेँ चाहैत छलैक, से सभ चल गेल ।'

कनैत रवि कने जोरसँ सभकेँ सम्बोधित करैत कहलकै–'चिता मिझा रहल छैक आब । बगलेमे लवक चिता मिझायल पड़ल छैक । चारि टा कन्हा नहि भेटलैक ओकरा । तीन जन श्मशान अनलिऐक । बापक कान्हपर बेटाक लहास । आ, कविताकेँ ओहो तीन टा कान्ह नहि भेटलैक । अपने कन्हापर टाङिकऽ अनने छलिऐक एकसरे । एखन अहाँसभ आयल छी । तऽ दऽ दियौक सभ क्यो पाँच-पाँच टा काठी दुनूकेँ । ओकर सभक आत्माकेँ शान्ति भोटि जयतैक । हमरो शान्ति भेटत जे हमर स्त्री-बेटाकेँ मुइलेक बाद सही, स्वीकार कयलिऐक अहाँलोकनि !

पाँच-पाँच टा काठी उठा सभ देलकै दू बेर— दूनू चितापर बेरा-बेरी । रवि विदा भेल सभकेँ कृतज्ञतापूर्वक तकैत । कोरामे नवजात शिशु छलैक । ओकर खाली छातीसँ सटल ! केश छिड़िआयल छलैक । दाढ़ी बढ़ल, महीनो दिनसँ । आँखिक चमकैत नोरमे मुदा एकटा विश्वास छलैक आ डेगमे दृढ़ता ।

कनिये दूर जाकऽ नेना कानऽ लगलैक । जोर-जोरसँ चिकरऽ लगलैक । रवि जतबे चुप्प करबाक चेष्टा कयलकै, ततबे कानब बढ़िते गेलैक । चुप्प करबाक चेष्टामे अपस्याँत भऽ गेल रवि ।

–'बच्चा हमरा दऽ दू मालिक !'

एकटा नारी-स्वरसँ चौंकि गेल रवि ! सामने गेनमा ठाढ़ छलैक, कोरामे अपन बच्चाकेँ लेने ! हाथ पसारने गेनमा-बहु छलैक–'बच्चाकेँ दऽ दू मालिक !'

रविकेँ थकमकाइत देखि गेनमा कहलकै–'हँ मालिक, बच्चाकेँ दियौ एकरा ! ई चिलकाउर हय, बच्चाकेँ पोसि लेत ।'

रवि बच्चाकेँ गेनमा-बहुक कोरामे दऽ देलकै...। ओ ओही ठाम ओकर मुँहमे दूध लगा देलकै । बच्चा चुप्प भऽ गेलैक ।

रवि कहलकै–'ला दे, हमरा आब !'

गेनमा बीचमे आबि गेलैक–नै मालिक ! बच्चाकेँ ओकरे लग रहऽ दियौ । अहाँ घुरि चलू आ हमरासभकेँ देखू ! ई हमर कोरामे हमर बेटा हय— एकरा सभकेँ देखबै अहाँ ! हमरा आर तऽ एहिना रहि गेली मालिक ! मुदा एकर सभकेँ जिनगी शुरू हो रहल हइ ! हमरे आर नाहित इहो मारि-गारि खाइत अन्हारमे बौआइत नै रहि जाय, तकर भार लियौ अहाँ ! एकरा सभकेँ गियान दियौ...एकरा सभकेँ मनुक्ख बना दियौ अहाँ...

कविता कहने छलैक– लवकेँ लऽ जैयौक गामसँ बाहर, मनुक्ख बना दियौक ! गेनमा कहैत छैक–'गाम घुरि चलू...! हमरा सभक नेनाकेँ मनुक्ख बना दियऽ...'

कविताक नेना गेनमा-बहुक दूध पीबि रहल छलैक । सिंहनी छैक गेनमा-बहु...ओकर दूध पीबि कविताक नेना जीबि जयतैक...! रवि कोनो निर्णय नहि कऽ पाबि रहल छल ।

पछोड़ धयने बिलटा संग आबि गेल छलैक–'घूरि चलू मालिक ! हमर घर खाली पड़ल हय ! जहिया से कजरी गेल, कहिओ पैर नै देली ओइ घरमे । आइ अहींक साथे हमहूँ घर घुरब अप्पन...! साथमे एगो बेटा रहत आ एगो पोता...सभ मनोरथ पूरि जायत एक्के संग ।'

रवि ओकर मुँह देखलकै । बिलटा कानि रहल छलैक–'आब बूढ़ हो गेली हमहूँ ! अकेले स्टेशनक प्लेटफार्मपर पड़ल-पड़ल बूढ़ हो गेली हम ! मुदा अभी कूबत हय अइ हाथमे ! अपन बेटा-पोताकेँ पोसि सकै छी हम...! बेघर छी हम कहियासे मालिक– हमरा घर दिया दू...मनुक्ख बना दू ।'

रविक मोन डोलऽ लगलैक ! गेनमा कहैत छैक– घूरि चलू ! हमरा सभकेँ अन्हारसँ निकालू, ज्ञानक प्रकाश दियऽ । बिलटा कहैत छैक– घूरि चलू...हमरा घर दिआ दियऽ...बेटा-पोता दिआ दियऽ...मनुक्ख बना दियऽ । कविता कहने छलैक– लव फेर घुरि आयल अछि, देखू ! लवकेँ कविता अपने गामसँ

बाहर दऽ आयलि छलैक ! रवि घुरि आयल छल— लव छिना गेल छलै । कविता खूनी कहने छलैक ओकरा । दोबारा लव हेरा जयतैक तँ माफ नहि करतैक कविता ओकरा, किन्नहु नहि ।

मुदा, कविताक लव गेनमा-बहुक दूध पीबि रहल छैक । सिंहनी छैक गेनमा-बहु ।

रवि निर्णय लऽ लेलक । कविताक मिझायल चिता दिस देखि मोनेमोन कहलकै–'हम फेर घूरि रहल छियौक कविता ! तोहर बात काटि रहल छियौक, क्षमा करिहैं ! तोँ लवकेँ मनुक्ख बनबऽ कहने छलेँ, हम तोहर लवक संग आरो-आरो लवकेँ मनुक्ख बनयबाक संकल्पक संग घुरि रहल छियौक । हमरा करऽ दे एक टा नवारम्भ, नव मनुक्ख, नव समाजक निर्माणक चेष्टा...तोहर लवक लेल । तोहर लव सन-सन हजारो-लाखो लवक लेल...'

तोँ खुशी भेलेँ ने कविता !'



राजा पोखरिमे कतेक मछरी ?